एम.ए. पूर्वार्द्ध
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व
चतुर्थ प्रश्नपत्र

प्राचीन सभ्यताएं

(ANCIENT CIVILIZATION)

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय – भोपाल
MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY - BHOPAL

Reviewer Committee

1. Dr. Manisha Sharma
   Associate Professor
   Govt. PG College, Beena (M.P.)
2. Dr. Amita Singh
   Associate Professor
   Govt. MLB College, Bhopal (M.P.)
3. Dr.Mamta Chansoria
   Professor,
   Govt.MLB College, Bhopal (M.P.)

Advisory Committee

1. Dr. Jayant Sonwalkar
   Hon'ble Vice Chancellor
   Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (M.P.)
2. Dr. L.S. Solanki
   Registrar
   Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (M.P.)
3. Dr. L.P. Jharia
   Director
   Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (M.P.)
4. Dr. Manisha Sharma
   Associate Professor
   Govt. PG College, Beena (M.P.)
5. Dr. Amita Singh
   Associate Professor
   Govt. MLB College, Bhopal (M.P.)
6. Dr.Mamta Chansoria
   Professor,
   Govt.MLB College, Bhopal (M.P.)

COURSE WRITERS

Dr. Naveen Vashishta, Assistant Professor, Department of History, Government College for Women, Sonipat
Units (1-5)

Copyright © Reserved, Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

All rights reserved. No part of this publication which is material protected by this copyright notice may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the Registrar, Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal.

Information contained in this book has been published by VIKAS® Publishing House Pvt. Ltd. and has been obtained by its Authors from sources believed to be reliable and are correct to the best of their knowledge. However, the Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal, Publisher and its Authors shall in no event be liable for any errors, omissions or damages arising out of use of this information and specifically disclaim any implied warranties or merchantability or fitness for any particular use.

Published by Registrar, MP Bhoj (Open) University, Bhopal in 2020

Vikas® is the registered trademark of Vikas® Publishing House Pvt. Ltd.

VIKAS® PUBLISHING HOUSE PVT. LTD.
E-28, Sector-8, Noida - 201301 (UP)
Phone: 0120-4078900 • Fax: 0120-4078999
Regd. Office: A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi 1100 44
• Website: www.vikaspublishing.com • Email: helpline@vikaspublishing.com

SYLLABI-BOOK MAPPING TABLE

प्राचीन सभ्यताएं

Syllabi	Mapping in Book
इकाई–1 प्राचीन मिस्र की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास प्राचीन मिस्र में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां प्राचीन मिस्र में विज्ञान एवं संस्कृति	**इकाई 1** : प्राचीन मिस्र की सभ्यता **(पृष्ठ 3–44)**
इकाई–2 मेसोपोटामिया की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास मेसोपोटामिया में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां विज्ञान एवं संस्कृति	**इकाई 2** : मेसोपोटामिया की सभ्यता **(पृष्ठ 45–76)**
इकाई–3 प्राचीन ग्रीस (यूनान) की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास प्राचीन ग्रीस (यूनान) में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां प्राचीन ग्रीस (यूनान) में विज्ञान एवं संस्कृति	**इकाई 3** : प्राचीन ग्रीस (यूनान) की सभ्यता **(पृष्ठ 77–108)**
इकाई–4 प्राचीन रोम की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास प्राचीन रोम की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां प्राचीन रोम में विज्ञान एवं संस्कृति	**इकाई 4** : प्राचीन रोम की सभ्यता **(पृष्ठ 109–142)**
इकाई–5 प्राचीन चीन की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास प्राचीन चीन की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां– शांग वंश, चाऊ वंश; विज्ञान एवं संस्कृति	**इकाई 5** : प्राचीन चीन की सभ्यता **(पृष्ठ 143–168)**

विषय–सूची

परिचय **1**

इकाई 1 प्राचीन मिस्र की सभ्यता **3–44**

1.0 परिचय
1.1 उद्देश्य
1.2 प्राचीन मिस्र की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास
1.2.1 राज्य संरचना 1.2.2 राजनीतिक इतिहास
1.3 प्राचीन मिस्र में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां
1.3.1 सामाजिक स्थिति
1.3.2 आर्थिक स्थिति
1.3.3 धार्मिक स्थिति
1.4 प्राचीन मिस्र में विज्ञान एवं संस्कृति
1.4.1 विज्ञान 1.4.2 संस्कृति
1.4.3 साहित्य 1.4.4 कला
1.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
1.6 सारांश
1.7 मुख्य शब्दावली
1.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
1.9 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 2 मेसोपोटामिया की सभ्यता **45–76**

2.0 परिचय
2.1 उद्देश्य
2.2 मेसोपोटामिया की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास
2.2.1 राज्य संरचना 2.2.2 राजनीतिक इतिहास
2.3 मेसोपोटामिया में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां
2.3.1 सामाजिक स्थिति
2.3.2 आर्थिक स्थिति
2.3.3 धार्मिक स्थिति
2.4 विज्ञान एवं संस्कृति
2.4.1 विज्ञान 2.4.2 संस्कृति
2.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
2.6 सारांश
2.7 मुख्य शब्दावली
2.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
2.9 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 3 प्राचीन ग्रीस (यूनान) की सभ्यता **77–108**

3.0 परिचय
3.1 उद्देश्य
3.2 प्राचीन ग्रीस (यूनान) की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास
3.2.1 राज्य संरचना 3.2.2 राजनीतिक इतिहास

3.3 प्राचीन ग्रीस (यूनान) में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां
3.3.1 सामाजिक स्थिति
3.3.2 आर्थिक स्थिति
3.3.3 धार्मिक स्थिति
3.4 प्राचीन ग्रीस (यूनान) में विज्ञान एवं संस्कृति
3.4.1 विज्ञान 3.4.2 संस्कृति
3.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
3.6 सारांश
3.7 मुख्य शब्दावली
3.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
3.9 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 4 प्राचीन रोम की सभ्यता **109–142**

4.0 परिचय
4.1 उद्देश्य
4.2 प्राचीन रोम की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास
4.2.1 राज्य संरचना 4.2.2 रोम का राजनीतिक इतिहास
4.3 प्राचीन रोम की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां
4.3.1 सामाजिक स्थिति
4.3.2 आर्थिक स्थिति
4.3.3 धार्मिक स्थिति
4.4 प्राचीन रोम में विज्ञान एवं संस्कृति
4.4.1 विज्ञान 4.4.2 संस्कृति
4.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
4.6 सारांश
4.7 मुख्य शब्दावली
4.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
4.9 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 5 प्राचीन चीन की सभ्यता **143–168**

5.0 परिचय
5.1 उद्देश्य
5.2 प्राचीन चीन की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास
5.2.1 राज्य संरचना 5.2.2 राजनीतिक इतिहास
5.3 प्राचीन चीन की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां
5.3.1 शांग वंश
5.3.2 चाऊ वंश
5.4 विज्ञान एवं संस्कृति
5.4.1 विज्ञान
5.4.2 संस्कृति
5.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
5.6 सारांश
5.7 मुख्य शब्दावली
5.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
5.9 सहायक पाठ्य सामग्री

परिचय

टिप्पणी

प्रस्तुत पुस्तक 'प्राचीन सभ्यताएं' का लेखन विश्वविद्यालय के एम.ए. इतिहास (पूर्वार्द्ध) के निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार किया गया है।

आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व विश्व के अनेक भागों में कई सभ्यताओं का जन्म हुआ। इनमें मिस्र की सभ्यता, मेसोपोटामिया की सभ्यता, यूनान की सभ्यता, रोम की सभ्यता, चीन की सभ्यता, सिंधु घाटी की सभ्यता इत्यादि प्रमुख थीं। ये सभी सभ्यताएं सामान्यतया नदियों के किनारे विकसित हुई। मिस्र की सभ्यता विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में सबसे प्राचीन मानी जाती है। यह सभ्यता नील नदी के आसपास विकसित हुई। इसी प्रकार ज्यादातर सभ्याताओं का विकास नदियों के किनारे ही हुआ। सभ्यता और संस्कृति का विश्व में अपना गौरवपूर्ण इतिहास रहा है।

इस पुस्तक में विश्व की प्राचीन सभ्यताओं के विविध पक्षों का सारगर्भित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक इकाई के आरंभ में विषय–विश्लेषण से पूर्व निहित उद्देश्यों को स्पष्ट कर दिया गया है। विद्यार्थियों की योग्यता–परख के लिए इकाई के बीच–बीच में 'अपनी प्रगति जांचिए' कॉलम के अंतर्गत अभ्यास प्रश्न भी दिए गए हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए संपूर्ण पुस्तक को पांच इकाइयों में समयोजित किया गया है, जिनका विवरण इस प्रकार है–

पहली इकाई मिस्र की सभ्यता पर आधारित है। इसमें मिस्र की राज्य संरचना, इसके राजनीतिक इतिहास, इसकी सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थितियों तथा विज्ञान और संस्कृति से संबंधित सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरी इकाई में मेसोपोटामिया की सभ्यता का अध्ययन किया गया है। इसमें वहां की राज्य संरचना, इतिहास, धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक स्थितियों एवं संस्कृति को समझाया गया है।

तीसरी इकाई प्राचीन ग्रीस (यूनान) की सभ्यता पर आधारित है। इसमें यूनान की संस्कृति, विज्ञान, कला व राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण किया गया है।

चौथी इकाई में प्राचीन रोम की राज्य संरचना, वहां के राजनीतिक इतिहास, विज्ञान एवं सांस्कृतिक जीवन के सभी पहलुओं का अध्ययन किया गया है।

पांचवीं और अंतिम इकाई में प्राचीन चीन की सभ्यता पर प्रकाश डाला गया है। प्राचीन चीन की राज्य संरचना, राजनीतिक इतिहास, शांग वंश एवं चाऊ वंश की सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक स्थितियों का विवेचन किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में विश्व की प्राचीन सभ्यताओं जैसे मिस्र, मेसोपोटामिया, यूनान, रोम व चीन आदि देशों की संस्कृति, राज्यों की संरचना, राजनीतिक इतिहास, उनकी धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों आदि विभिन्न पहलुओं का सांगोपांग अध्ययन किया गया है। इन इकाइयों के अध्ययन से विद्यार्थी प्राचीन सभ्यताओं से भलीभांति अवगत हो सकेंगे। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक छात्र–छात्राओं की जिज्ञासा को शांत कर उनका ज्ञानवर्द्धन करने में सफल सिद्ध होगी।

इकाई 1 प्राचीन मिस्र की सभ्यता

टिप्पणी

संरचना

1.0 परिचय
1.1 उद्देश्य
1.2 प्राचीन मिस्र की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास
  1.2.1 राज्य संरचना
  1.2.2 राजनीतिक इतिहास
1.3 प्राचीन मिस्र में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां
  1.3.1 सामाजिक स्थिति
  1.3.2 आर्थिक स्थिति
  1.3.3 धार्मिक स्थिति
1.4 प्राचीन मिस्र में विज्ञान एवं संस्कृति
  1.4.1 विज्ञान
  1.4.2 संस्कृति
  1.4.3 साहित्य
  1.4.4 कला
1.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
1.6 सारांश
1.7 मुख्य शब्दावली
1.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
1.9 सहायक पाठ्य सामग्री

1.0 परिचय

प्राचीन मिस्र ने राजनीतिक चिन्तन तथा राजनीतिक संस्थाओं के क्षेत्र में काफी विकास किया था। मिस्र की प्रशासनिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का ज्ञान हमें समय–समय पर मिस्र के शासकों द्वारा खुदवाए गए अभिलेखों भित्तिचित्रों एवं समाधियों से मिले अवशेषों से होता है। मिस्र में राज्य तथा राष्ट्र जैसी अवधारणाओं का विकास धीरे–धीरे हुआ। प्रागैतिहासिक काल में लोग कबीलों में रहते थे तथा कबीलों के सरदार ही सर्वोपरि माने जाते थे। धीरे–धीरे ये सरदार ही कबीले की भूमि के स्वामी माने जाने लगे तथा ये लोग सरदार से सामंत बन गए। इन सामंतों के छोटे–छोटे राज्य प्रशासनिक इकाइयों के रूप में कार्य करते थे। पिरामिड युग के शासकों जेसौरे (Djoser), खूफू (Khufu), खेफ्रे (Khafra) आदि ने राज्य की सीमाओं का विस्तार करके विजित प्रदेशों एवं देश के विभिन्न भागों में व्यवस्थित प्रशासन की नींव डाली। ऐतिहासिक दृष्टि से मिस्र में एक स्वस्थ प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित हो गई थी।

पिरामिड युगीन मिस्र का समाज उच्च रूप से स्तरीकृत था और सामाजिक स्थिति को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाता था। यह मुख्य रूप से उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग में विभाजित था।

मिस्र में विशुद्ध विज्ञान विकसित नहीं हो सका, क्योंकि वहां के लोग व्यावहारिक जीवन की आवश्यकता के अनुरूप ही वस्तुओं पर ध्यान देते थे। उनकी बड़ी समस्या नील की बाढ़ के समय का पूर्वानुमान लगाना था जिसके लिए खगोल का ज्ञान

आवश्यक था उसी प्रकार पिरामिडों आदि के निर्माण के लिए गणित अनिवार्य था। लेकिन अपनी जिज्ञासा सीमित होने के बावजूद उन्होंने विज्ञान के विभिन्न अंगों का विकास कर लिया था।

टिप्पणी

इस इकाई में हम प्राचीन मिस्र की राज्य संरचना, इसके राजनीतिक इतिहास, इसकी सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति तथा विज्ञान और संस्कृति से संबंधित सभी पक्षों का सविस्तार अध्ययन करेंगे।

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- पिरामिड युग के मिस्र की राजनीतिक संरचना का वर्णन कर पाएंगे;
- प्राचीन मिस्र के राजनीतिक इतिहास को जान पाएंगे;
- पिरामिड युगीन मिस्र की सामाजिक स्थिति को समझने में सक्षम हो पाएंगे;
- पिरामिड युगीन मिस्र के लोगों के आर्थिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण कर पाएंगे;
- पिरामिड युगीन मिस्र के लोगों की धार्मिक स्थिति के बारे में जान पाएंगे;
- प्राचीन मिस्र में विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति का अध्ययन कर पाएंगे;
- प्राचीन मिस्रवासियों के सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन कर पाएंगे।

1.2 प्राचीन मिस्र की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास

प्राचीन काल में मिस्र में अनेक राज्यों का उत्थान हुआ। मिस्र के लोगों ने बाढ़ों की रोकथाम, नहरों का निर्माण तथा कृषि की सुरक्षा के लिए अपने अधिकारों को कुछ

टिप्पणी

विशिष्ट लोगों अर्थात् सामंतों के हाथों में सौंप दिया। धीरे–धीरे इन लोगों ने शक्ति ग्रहण करनी आरम्भ की। कालांतर में मिस्र में अनेक छोटे–छोटे नगर राज्य स्थापित हो गए। कुछ समय पश्चात् समस्त मिस्र दो भागों में विभाजित हो गया– (i) ऊपरी मिस्र और (ii) निचला मिस्र। 3400 ई. पू. में मेनीज नामक शासक ने इन दोनों राज्यों का एकीकरण किया। इसके पश्चात् हमें मिस्र का क्रमबद्ध इतिहास देखने को मिलता है। 3400 ई.पू. से 332 ई.पू. तक मिस्र में 31 राजवंशों के शासकों ने शासन किया।

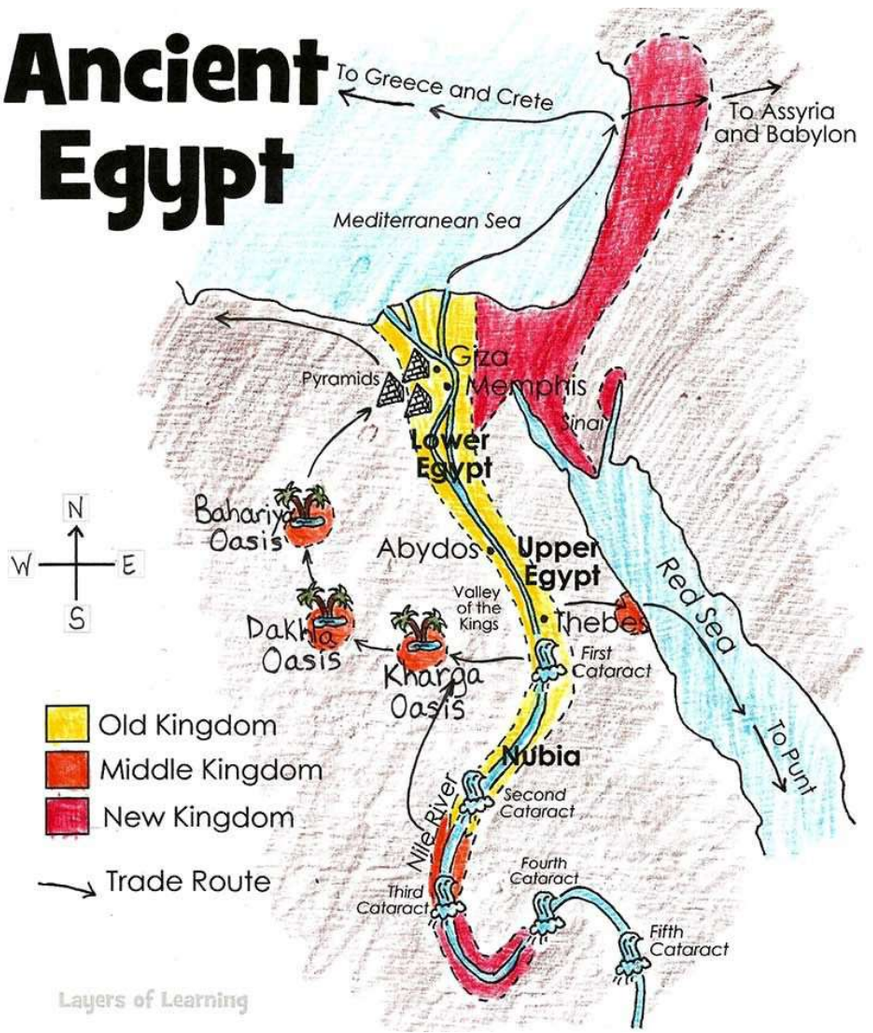

1.2.1 राज्य संरचना (State Structure)

प्राचीन काल अथवा पिरामिड युग में मिस्र पर 6 राजवंशों के राजाओं ने शासन किया। उन्होंने विभिन्न प्रदेशों की विजय करने के अतिरिक्त लोक निर्माण कार्यों में भी रुचि दिखलाई। जहां उन्होंने मिस्र में एक अच्छी शासन प्रणाली की नींव डाली व यहीं उन्होंने लोगों के सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए भी अनेक कार्य किए।

राजा या फराओ (King or Pharao)

प्राचीन काल में मिस्र के समस्त प्रशासन का मुखिया राजा या फराओ कहलाता था। सारा प्रशासन उसके इर्द–गिर्द घूमता था। मिस्र की जनता उसकी आज्ञाओं का पालन

टिप्पणी

करना अपना प्रमुख कर्तव्य समझती थी। पिरामिड काल में जोसेर, हरशेपसुट, खूफू, खफ्रे, पेपी द्वितीय आदि शक्तिशाली फराओ गद्दी पर बैठे, जिन्होंने मिस्र में उच्चकोटि की शासन व्यवस्था स्थापित की। फराओ को एक देवता होरुस का अवतार माना जाता था। इसके अलावा उसे पृथ्वी पर ईश्वर का पुत्र भी माना जाता था, इसलिए मिस्र की जनता फराओ को सूर्य देवता रे के रूप में पूजती थी। फराओ बहुत शक्तिशाली एवं निरंकुश शासक की तरह कार्य करता था। वह स्वयं कानून बनाता था, कानूनों को लागू करता था तथा कानूनों का उल्लंघन करने वालों को दंड देता था। किसी भी देश से युद्ध तथा संधि करने का अधिकार केवल फराओ के पास था। वह अपने देश का प्रधान पुरोहित भी होता था। समस्त धार्मिक कार्य केवल उसकी देख–रेख में ही सम्पन्न किए जाते थे। उसका सबसे बड़ा पुत्र अपनी बहन से विवाह करके साम्राज्य का उत्तराधिकारी बनता था। प्रशासन को सही ढंग से चलाने के लिए वह विभिन्न अधिकारियों की नियुक्ति करता था। देखने में फराओ की शक्तियां निरंकुश थीं। लेकिन वह निरंकुश नहीं था। वह प्रजा की भलाई के लिए कार्य करता था। वैसे भी फराओ चाहकर भी निरंकुश नहीं बन सकता था, क्योंकि पुरोहित, शक्तिशाली सामंत तथा प्रिय महारानी उसकी निरंकुश शक्तियों पर अंकुश लगाकर रखते थे। दुनिया के इतिहास में मिस्र में ही सबसे पहले राजा को देवता माना गया। लोग उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने का अर्थ ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन मानते थे। यही कारण था कि लोग मृत्यु के बाद उसकी पूजा करने के लिए मंदिर बनाते थे जिन्हें पिरामिड कहा जाता था।

फराओ काफी शान–शौकत से रहते थे। उनकी सेवा के लिए अनेक दास होते थे। ये दास इथोपिया से लाये जाते थे। 20 व्यक्ति मिलकर फराओ को सजाते थे। इन सेवकों पर भी एक अधिकारी होता था। जब वह अपने सेवकों से ऊब जाता था तो नौका–विहार के लिए जाता था, तब वहां खूबसूरत युवतियां उसका मन बहलाती थीं। ये युवतियां जाली की एक चादर के अतिरिक्त कुछ भी नहीं पहनती थीं क्योंकि मिस्र में संपत्ति का उत्तराधिकारी स्त्रियों के द्वारा प्राप्त होता था। अतः राजकुमार (फराओ) अपनी सगी बहन के साथ विवाह करता था ताकि उसका हक दृढ़ हो जाए।

प्रधानमंत्री (Prime Minister)

प्रशासन को सही ढंग से चलाने के लिए फराओ एक परामर्शदात्री सभा (परिषद) का गठन करते थे, जिसे सारू कहा जाता था। इसके अलावा वे अपनी सहायता के लिए प्रधानमंत्री की नियुक्ति करते थे। इस पद पर फराओ किसे नियुक्त करे यह फराओ पर निर्भर था। फराओ के पश्चात् प्रधानमंत्री को अन्य पदाधिकारियों में प्रथम स्थान प्राप्त था। डॉ. श्रीराम गोयल के अनुसार, "वह राज्य का प्रधान वास्तुकार, प्रथम न्यायाधीश और राजअभिलेख संग्रहालय का अध्यक्ष होता था।" आरम्भ में प्रधानमंत्री के पद पर योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति की जाती थी। परन्तु चौथे राजवंश के शासन काल में केवल राजपुत्रों को ही प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किया जाने लगा। जैसे–जैसे मिस्र का प्रशासन विस्तृत होता चला गया वैसे–वैसे ही फराओ ने एक साथ दो–दो प्रधानमंत्रियों की नियुक्ति करनी आरम्भ कर दी। एक उत्तरी मिस्र के लिए जिसका कार्यालय हेलियोपोलिस में था और दूसरा दक्षिणी मिस्र के लिए जिसका कार्यालय थेब्स में था जहां फराओ भी रहता था। इनमें दक्षिणी प्रधानमंत्री ज्यादा शक्तिशाली था। विश्व के इतिहास में मिस्र ही शायद पहला ऐसा देश था जिसमें एक साथ दो–दो प्रधानमंत्रियों

टिप्पणी

की नियुक्ति की जाती थी। प्रधानमंत्री को प्रशासन संबंधी विस्तृत अधिकार प्राप्त थे। प्रधानमंत्री का मुख्य कार्य लगान वसूल करवाना, राजा की आज्ञा का पालन करवाना, आय–व्यय का हिसाब रखना, मुकदमों का फैसला करना, जनगणना करवाना आदि था। वह अन्य मंत्रियों के कार्यों की देखभाल करता था तथा निम्न अदालतों से आए हुए अपील संबंधी मुकदमों को भी सुनता था। यहां तक कि प्रजाहितकारी समस्त कार्य भी उसकी देख–रेख में ही किए जाते थे। इस प्रकार प्रधानमंत्री फराओ का पूरक था तथा फराओ के बाद राज्य का दूसरा सबसे शक्तिशाली व्यक्ति अथवा अधिकारी था। अमेनहोटेप, टाहोटेप, के–गेमने आदि प्रधानमंत्रियों ने प्रशासन संबंधी कार्यों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। मिस्र में पिरामिड आदि भी प्रधानमंत्री की देख–रेख में बनाए जाते थे। इस प्रकार प्रशासनिक दृष्टि से प्रधानमंत्री का पद बहुत महत्त्व और जिम्मेदारी का था।

मंत्रिमंडल (Council of Ministers)

फराओ का दरबार ही उसका मंत्रिमंडल होता था। इसमें राजस्व अधिकारी, कोषाध्यक्ष, सेनापति, वास्तुविद, प्रधानमंत्री, स्थापत्य अधिकारी, कोषाध्यक्ष, सेनापति व सामंत होते थे। इसमें राजमहिषी (प्रधान रानी) का भी प्रमुख स्थान था। राजकुमार भी प्रशासन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे। फराओ उन्हें अपने संरक्षण में शासन की कला, दरबारी शिष्टाचार तथा अन्य गुणों से परिचित करवाते थे। मिस्र राज्य का एक महत्त्वपूर्ण पदाधिकारी प्रधान कोषाध्यक्ष था। वह समस्त देश की वित्त व्यवस्था की देख–रेख करता था। उसके अधीन दो उप–कोषाध्यक्ष भी होते थे जो राजमहलों, मंदिरों तथा पिरामिडों के निर्माण के लिए खानों को खुदवाकर पत्थर व अन्य सामग्री की व्यवस्था करते थे।

राजकुमार (Prince)

प्रधानमंत्रियों के अतिरिक्त राजकुमार भी प्रशासन संबंधी कार्यों में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। उन्हें विभिन्न पदों पर नियुक्त किया जाता था। वे अपने प्रत्येक कार्य को बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभाते थे। फराओ अपने संरक्षण में अपने पुत्रों को रखकर उन्हें प्रशासन की कला, दरबारी शिष्टाचार तथा अन्य गुणों से परिचित कराते थे। कुछ राजकुमार प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त हुए और कुछ शासन के उच्च पदों पर। फराओ के दरबार में राजकुमार प्रबंधक और मार्शल भी होते थे जो प्रशासन के विभिन्न कार्य करते थे।

प्रांतीय एवं स्थानीय शासन (Provincial and Local Administration)

फराओ ने मिस्र के साम्राज्य को विभिन्न प्रांतों में बांटा हुआ था। प्रारम्भ में उन्होंने मिस्र को दो भागों– उत्तरी मिस्र तथा दक्षिणी मिस्र में विभाजित किया। उन्होंने आगे चलकर समस्त मिस्र को 40 प्रांतों में विभाजित किया। ये प्रान्त वही प्राचीन राज्य थे, जिनका एकीकरण मेनीज द्वारा किया गया था। उस समय प्रांतों को नोम तथा इनके मुखिया को नोमार्क कहा जाता था। नोमार्क के पद पर प्रायः राजकुमारों की ही नियुक्ति की जाती थी। उनका (नोमार्कों का) प्रमुख कार्य नोम (प्रांतों) में शांति व्यवस्था बनाए रखना, अपने प्रांत में फराओ के आदेशों को लागू करना, प्रजा की भलाई के लिए कार्य करना, कर इकट्ठा करके केन्द्रीय कोषागार में जमा करना, कृषि की दशा सुधारना तथा न्याय

टिप्पणी

करना आदि था। उनकी सहायता के लिए भी कुछ पदाधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी। नोमार्क अपने कार्यों के लिए फराओ के प्रति उत्तरदायी होते थे। फराओ उन्हें जब चाहे पद से हटा सकता था, लेकिन बारहवें राजवंश के समय प्रान्तों पर इनका स्वामित्व स्थापित हो गया।

न्याय व्यवस्था (Judicial System)

फराओ ने प्राचीन मिस्र में एक कुशल तथा संगठित न्याय प्रणाली की स्थापना की। कुछ इतिहासकारों के अनुसार प्राचीन मिस्र में कुल 6 न्यायालय थे। इन न्यायालयों में एक प्रमुख न्यायाधीश होता था जिसकी नियुक्ति फराओ के द्वारा की जाती थी। योग्य तथा विश्वासपात्र व्यक्तियों को ही न्यायाधीश के पद पर नियुक्त किया जाता था। फराओ का दरबार सर्वोच्च न्यायालय था। उसके नीचे प्रधानमंत्री का न्यायालय था। प्रान्तों में नोमार्क या गवर्नर न्यायाधीश का कार्य करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि फराओ के पास केवल पुनरावेदन संबंधी (अपील) मामले आते थे। फराओ केवल तीन दिन में मुकदमों का फैसला कर देता था। शेष मामलों में प्रधानमंत्री ही मुख्य न्यायाधीश था। प्रान्तों में नोमार्क अर्थात् गवर्नर न्याय संबंधी कार्य करते थे। उनके पास भी स्थानीय न्यायालयों के अपील संबंधी मुकद्दमे आते थे। मिस्र में विभिन्न स्थानों की खुदाई में कुछ पट्टियां प्राप्त हुई हैं, जिन पर गवर्नरों के न्याय संबंधी आदेश लिखे हुए हैं। मिस्र में न्यायपालिका पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं थी। फराओ तथा नोमार्क का न्यायप्रणाली तथा न्यायाधीशों पर पूर्ण अधिकार था। वे न्यायाधीशों के कार्यों में अकसर हस्तक्षेप करते रहते थे।

इस काल में न्याय प्रणाली अति सरल थी। लिखित कानून के आधार पर न्याय होता था। झूठी गवाही देने वालों को मृत्युदंड की सजा दी जाती थी। दण्ड विधान कठोर था। राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने वालों को अंग–भंग की सजा मिलती थी इसके अलावा डंडों से पीटना, देश निकाला देना तथा जीवित मनुष्य की ममी बना देना आदि सजाएं थीं। इस युग के न्याय की महत्त्वपूर्ण विशेषता थी कि कानून सबके लिए, समान होता था। राजपरिवार से संबंधित व्यक्ति को भी अपराध करने पर उतनी ही सजा मिलती जितनी कि आम आदमी को अपराध करने पर। इस युग में कानूनों का संग्रह करके उनके आधार पर न्याय किया जाता था। ब्रिटेन तथा जर्मनी के कुछ संग्रहालयों में मिस्र के पिरामिड युग के कुछ कानून सुरक्षित रख गए हैं।

राजस्व प्रशासन (Revenue Administration)

इस युग में राज्य की आय का मुख्य साधन भू–राजस्व था जो उपज का 1/10 से 1/20 तक लिया जाता था। चूंकि मिस्र में फराओ को राजस्व से बहुत आय होती थी इसलिए उन्होंने राजस्व प्रशासन को बहुत ही कुशल ढंग से संगठित किया हुआ था। प्राचीन मिस्र में राज्य की आय, धन, अन्न, पशु, मधु तथा अन्य प्रकार के सामान के रूप में होती थी। इन करों को सुरक्षित करने के लिए एक केन्द्रीय कोषागार की स्थापना की गई, जिसका मुखिया कोषाध्यक्ष कहलाता था। वह वित्त विभाग का मुखिया भी कहलाता था। मिस्र में कोषागार को लाल महल कहा जाता था।

मिस्र में कोषाध्यक्ष की सहायता के लिए दो उप–कोषाध्यक्षों की नियुक्ति की जाती थी। इसके अलावा प्रत्येक प्रान्त में भी दो कोषाध्यक्ष नियुक्त किए जाते थे। कर

संग्रह के अतिरिक्त वे खानों से प्राप्त सामग्री को भी सुरक्षित रखते थे और पिरामिड, मंदिर तथा देवालय आदि बनवाते थे।

सार्वजनिक निर्माण कार्यों के लिए फराओ जनता से बेगार भी लेते थे। सूडान से सोना आता था। फराओ अपनी आय में बढ़ोतरी करने के लिए व्यापार भी करते थे। एशियाई प्रदेशों से लूट का माल भी राज्य की आय का साधन था। अन्य राजा फराओ को नजराना भी देते थे। सामंत व अभिजात्य वर्ग के लोग राजा को उपहार तथा भेंट भी देते थे। एक शिलालेख से जानकारी मिलती है कि "एक सामंत ने आमेनहोटेप को सोने–चांदी के रथ, हाथी दांत तथा कीमती लकड़ी की मूर्तियां, जवाहरात, कांसे की 680 ढालें, 140 तलवारें तथा कीमती धातु के बने घड़े भेंट किए थे।" सामंतों के उपहार के बदले में फराओ उनके पुत्र को दरबार में नियुक्त करते थे।

टिप्पणी

दंड विधान (Penal Law)

पिरामिड काल में मिस्र में दंड विधान बहुत कठोर था। आरंभ में मिस्र में कानूनों का संग्रह नहीं किया जाता था। परंतु पांचवें राजवंश के दौरान कानूनों का संग्रह करना शुरू हो गया था। कानून संग्रह करने से न्याय प्रशासन में सुविधा अवश्य आई क्योंकि कानूनों के आधार पर न्याय करने से काम सरल हो गया, किंतु इन कानूनों ने न्याय–प्रशासन को जटिल भी बना दिया। न्यायाधीशों द्वारा न्याय अतिशीघ्र देने का प्रयास किया जाता था। हालांकि न्याय समानता के आधार पर किया जाता था। कानून की दृष्टि में राजा, पदाधिकारी तथा जनसामान्य में कोई अंतर नहीं था। गवाहों के बयान भी लिखे जाते थे और झूठी गवाही भयंकर अपराध मानी जाती थी। साधारण अपराधों के लिए अपराधी का अंग–भंग कर दिया जाता था। भयंकर अपराध या राजद्रोह के लिए मृत्यु दंड का प्रावधान था। इस काल में उत्तराधिकार संबंधी झगड़े के मुकदमों का विवरण आज भी ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित रखा हुआ है।

सैन्य संगठन (Military Organization)

पिरामिड युग सैन्य संगठन की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता। इसके लिए कुछ विशेष कारण थे– एक तो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण सदैव विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रहा और दूसरा फराओ विजयों की अपेक्षा निर्माण कार्यों को ज्यादा प्राथमिकता दिया करते थे। यही कारण था कि फराओ ने अपने साम्राज्य में स्थायी सेना की नियुक्ति नहीं की। मिस्र के तीसरे राजवंश काल की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति वाले फराओ ने सैनिक संगठन करना प्रारंभ कर दिया। हालांकि वे अभी पूर्ण रूप से नोमार्कों तथा मंदिरों के पुरोहितों की सेनाओं पर आश्रित रहते थे। सैनिकों की आवश्यकता आंतरिक विद्रोहों के दमन के लिए होती थी। अतः इस युग में मिस्र का सैनिक संगठन सुदृढ़ नहीं था। सैनिक प्रशिक्षित नहीं थे और युद्ध तथा विद्रोह के समय किसी भी व्यक्ति को सेनापति के पद पर नियुक्त किया जा सकता था। स्थायी सेना के अभाव ने राज्य की राजनीति को भी प्रभावित किया। उत्तर पिरामिड युग के फराओ के शासनकाल में जब मिस्र के नोमार्कों तथा सामंतों ने अपनी शक्ति बढ़ा ली और शासन पर अधिकार करना आरंभ कर दिया, तब फराओ की स्थिति दुर्बल हो गई। वे चाहकर भी सैनिक कमजोरी के कारण कुछ न कर सके। परिणामस्वरूप एक दिन ये सामंत स्वतंत्र शासक बन गए।

टिप्पणी

18वें वंश के शासकों ने सेना में अनेक सुधार किए। उन्होंने भाले, तीर–धनुष, तांबे व कांसे की कुल्हाड़ियों में सुधार किए तथा युद्ध क्षेत्र में घोड़े तथा रथों का प्रयोग आरम्भ किया। वे जल सेना के गठन पर भी बल देते थे। किसी भी प्रकार की आपातकालीन परिस्थितियों में राजा या फराओ मंदिरों तथा प्रांतों से सैनिक मंगवाकर उनका नेतृत्व किसी भी व्यक्ति को सौंप देते थे।

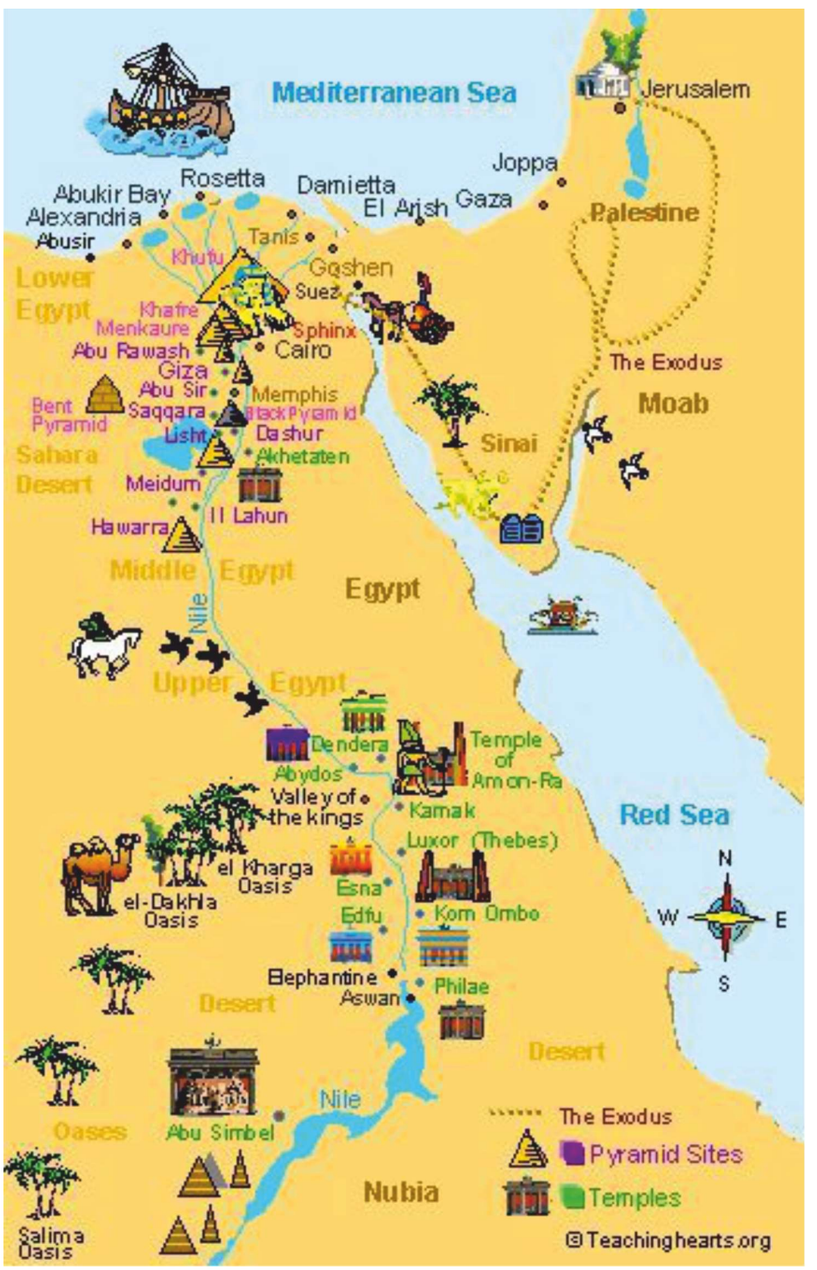

1.2.2 राजनीतिक इतिहास (Political History)

मिस्र में सभ्यता का विकास दस हजार ई.पू. में हो गया था। प्रो. अमर फारुखी ने लिखा है कि, "लगभग 9200 ई.पू. में मिस्र के पश्चिमी रेगिस्तान में नवपाषाण काल का उद्‌भव

टिप्पणी

हो गया था।" 4000 ई.पू. के आसपास तक मिस्र में बदरी, गेरजई, अम्राई आदि संस्कृतियां विकसित हुईं। इस काल में मिस्र में अनेक छोटे–छोटे नगर–राज्य थे जो आपस में लड़ते रहते थे। ये नगर–राज्य कालान्तर में दो बड़े राज्यों में बंट गए। पहला राज्य– ऊपरी मिस्र अथवा नील नदी के मुहाने का राज्य तथा दूसरा राज्य– निचला मिस्र अथवा नील नदी की घाटी का राज्य। उत्तरी मिस्र राज्य की राजधानी बूटो थी। इस राज्य की संरक्षिका 'नाग देवी' थी तथा इसका विशिष्ट रंग लाल था। इसका राज्य चिह्न मधुमक्खी था। यहां का राजा लाल मुकुट धारण करता था तथा लाल रंग के महल में रहता था। दक्षिणी या निचले मिस्र राज्य की राजधानी तेखेब थी। इसकी संरक्षिका का रंग श्वेत होने के कारण राज्य का रंग सफेद या। यहां के शासक सफेद रंग का मुकुट धारण करते थे। इस राज्य का राज्यचिह्न पेपीरस का गुच्छा था। 3400 ई.पू. के आसपास मिस्र के इन दोनों राज्यों को मेना अथवा मेनीज नामक व्यक्ति ने मिलाकर एक कर दिया। इस प्रकार मेना मिस्र का पहला राजा बना जिसने मिस्र का एकीकरण किया। मेना थिस अथवा थिनिस नामक स्थान का रहने वाला था। अतः उसका राजवंश थिनिस राजवंश कहलाया। मेना ने मिस्र पर 62 वर्ष तक शासन किया। थिनिस नगर प्रथम तथा द्वितीय राजवंशों की राजधानी रहा। इस प्रकार मिस्र के प्रथम दो राजवंश थिनिस राजवंश कहलाए। इतिहासकार डेविस ने लिखा है कि "मेनीज से मिस्र में वंशीय शासन की शुरुआत होती है और वह इस वंश का प्रथम शासक था।" उसके शासनकाल से ही मिस्र का क्रमबद्ध इतिहास आरंभ होता है। मिस्र में 3400 ई.पू. से 332 ई.पू. तक 31 राजवंशों ने शासन किया। 382 ई.पू. में सिकन्दर ने मिस्र पर अधिकार करके उसे अपना उपनिवेश बना लिया।

प्राचीन मिस्र के राजनीतिक इतिहास को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा जा सकता है–

(i) प्राचीन काल अथवा पिरामिड युग (3400 ई.पू.–2500 ई.पू.)

(ii) मध्यकाल अथवा सामंतवादी युग (2500 ई.पू.–1580 ई.पू.)

(iii) नवीन काल अथवा साम्राज्यवादी युग (1580 ई.पू.–1090 ई.पू.)

प्राचीन काल या पिरामिड युग, 3400 ई.पू. से 2500 ई.पू. (Old or Pyramid Age, 3400 B-C to 2500 B-C)

मिस्र के इतिहास का 3400 ई.पू. से 2500 ई.पू. तक का काल प्राचीन राज्य काल के नाम से जाना जाता है। इसे इतिहासकार 'पिरामिड युग' भी कहते हैं क्योंकि मिस्र को विश्व इतिहास में अमर बनाने वाले पिरामिड इसी युग में बने। इन पिरामिडों का निर्माण तीसरे राजवंश के राजा (फराओ) जोसेर के प्रधानमंत्री इम्होतोप द्वारा कराया गया था। इसलिए कुछ इतिहासकार पिरामिड युग अथवा प्राचीन राज्य युग का आरंभ तीसरे राजवंश के शासक काल के आरंभ से अर्थात् (2980 ई.पू.) से छठे राजवंश के शासन काल के अन्त तक (2500 ई.पू.) तक मानते हैं। परन्तु मेनिस द्वारा एकीकृत मिस्र की स्थापना से ही प्राचीन युग का प्रारंभ माना जा सकता है।

पहला एवं दूसरा वंश (First and Second Dynasty)

इस काल के प्रथम शासक मेना अर्थात् मेनीज या मनीज ने ही ऊपरी तथा निचले मिस्र का एकीकरण किया। वह मिस्र के पहले वंश से संबंध रखता था। मिस्र के आरम्भिक

टिप्पणी

दो वंशों के 18 शासकों ने 420 वर्ष (3400 ई.पू. से 2980 ई.पू.) तक शासन किया। लिखित स्रोतों के अभाव के कारण इन सभी शासकों का राजनीतिक इतिहास बताना बहुत मुश्किल है, परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उन्होंने मिस्र के राज्य को स्थायित्व प्रदान किया और उत्तरी मिस्र में लिबियनों तथा सेमाइटों के विद्रोहों का दमन किया। उनके शासनकाल में मिस्र के विदेशों से अच्छे व्यापारिक तथा सांस्कृतिक संबंध भी स्थापित हुए। प्राप्त स्रोतों में पहले तथा दूसरे वंश के शासकों के नामों के आगे उत्तरी तथा दक्षिणी (ऊपरी तथा निचला) राज्यों के एकीकरण के प्रतीक रूप मधुमक्खी तथा पेपीरस का गुच्छा अर्थात् लिली के पौधे की शाखा, दक्षिण की गृहदेवी नेखबत और उत्तर की नागदेवी बूटो और कभी–कभी होरुस के साथ सेत नामक देवता का उल्लेख होता था। इसीलिए मिस्र के सभी शासक लम्बा श्वेत (दक्षिण का रंग) तथा लाल (उत्तर का रंग) या इन दोनों के मिश्रण वाला मुकुट धारण करते थे। इस वंश ने मिस्र के राज्य का बहुत विस्तार किया। पहले राजवंश के शासकों ने सिनाई अभियान किया, जिसकी पुष्टि एक खान से प्राप्त एक चित्र से होती है। इस चित्र में सेमेरखेत नामक राजा को प्रहार करते दिखाया गया है। इस अभियान का उद्देश्य सिनाई से ताम्बा प्राप्त करना था। दूसरे वंश के शासकों में पेरष्टेन प्रमुख था। उसने मिस्र में शान्ति की स्थापना की। उसकी मृत्यु के पश्चात मिस्र का पुनः एकीकरण किया गया। इस समय मित्र की राजधानी हेलियोपोलिस (Heliopolis) थी। दूसरे वंश के पतन के पश्चात् जोसेर ने 2980 ई.पू. में मित्र के तीसरे वंश की स्थापना की। इस वंश के शासनकाल में मिस्र ने सांस्कृतिक तथा भौतिक क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की।

तीसरा वंश (Third Dynasty)

इतिहासकार मिस्र के इतिहास में तीसरे से छठे राजवंश तक के काल को पिरामिड युग के नाम से पुकारते हैं। सम्राट जोसेर के समय मेम्फिस राज्य का उत्थान हुआ। उसके प्रधानमंत्री इम्होटेप ने 190 फुट ऊंचे सक्कर के सीढ़ीदार पिरामिड का निर्माण कराया। इम्होटेप एक उच्चकोटि का वास्तुकार, निपुण दस्तकार, सुप्रसिद्ध वक्ता, कुशल वैद्य तथा लिपि शास्त्र का ज्ञाता भी था। उसकी मृत्यु के 2400 वर्ष पश्चात् भी यूनानी उसे चिकित्सा का देवता मानते थे। उसने मिस्री लिपि में भी अनेक सुधार किए। जोसेर के उत्तराधिकारियों ने भी मिस्र में विकास के कार्यों को जारी रखा। इस वंश के अंतिम शासक नेफ्रू ने 170 फुट लम्बे तथा 50 मीटर चौड़े जलपोत का निर्माण कराया था। उसने अपने शासनकाल में सिनाई प्रदेश में मिस्र के हितों की सुरक्षा ही नहीं की अपितु उत्तरी नूबिया में विदेशी जातियों को भी पराजित किया। उसके शासनकाल में भी दो पिरामिडों का निर्माण हुआ। उसके समय में व्यापार तथा वाणिज्य के क्षेत्र में मिस्र ने बहुत उन्नति की। इस वंश की राजधानी मेम्फिस थी।

चौथा वंश (Fourth Dyansty)

मिस्र के चौथे वंश की स्थापना खूफू ने की थी। उसने गीजा में मिस्र का सबसे विशाल पिरामिड बनवाया था। उसके शासनकाल में राजा फराओ की शक्तियां बहुत बढ़ गईं। उस समय राज्य का प्रमुख उद्देश्य फराओ के लिए अनश्वर समाधियां (पिरामिड) बनवाना था। खूफू के बाद उसका बड़ा पुत्र डेडेफ्रे गद्दी पर बैठा। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई खेफ्रे गद्दी पर बैठा। वह पहला फराओ था जिसने स्मारक (स्फिंक्स) बनाने की कला का विकास किया। उसके काल में हेलियोपोलिस के देवता

रे (Ray) के पुजारियों की प्रतिष्ठा में अत्यधिक वृद्धि हो गई। उसने भी पिरामिड का निर्माण कराया। इस वंश के अन्तिम शासक मेन्कुरे के पश्चात् मिस्र राज्य की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई।

टिप्पणी

पांचवां वंश (Fifth Dynasty)

2750 ई.पू. के लगभग हेलियोपोलिस के यूसरेकाफ नाम के एक पुजारी ने मिस्र में नए वंश की स्थापना कर दी। उसके पुत्र सहुरे ने मिस्र में नौ–सैनिक शक्ति का विस्तार किया। उसके उत्तराधिकारियों के काल में नूबिया पर कई बार सफल आक्रमण किए गए। इनके समय में पुजारियों, सामंतों तथा सेनापतियों की शक्ति में अत्यधिक वृद्धि हुई और फराओ की शक्ति कम हो गई। इस वंश के शासनकाल में धर्म और राजनीति का घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हुआ।

छठा वंश (Sixth Dynasty)

छठा राजवंश पिरामिड युग का अंतिम राजवंश था। सामंतों, पुजारियों तथा सेनापतियों की बढ़ती हुई शक्ति पर रोक लगाने तथा राजपद की प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करने के लिए छठे वंश के दो फराओ में पेपी द्वितीय तथा पेपी प्रथम ने अनेक कार्य किए। पेपी प्रथम के सैनिक अभियानों में एक ऊनी नामक सरदार ने निर्णायक भूमिका निभाई। उसके नेतृत्व में मिस्र की सेनाओं ने नूबिया तथा फिलिस्तीन पर आक्रमण किए। पेपी प्रथम के पुत्र मनेरे ने भी मिस्र राज्य को बहुत सुदृढ़ता प्रदान की। अपने शासनकाल में उसने दक्षिणी सरदारों का दमन किया तथा एलीफेन्टाइन, भीतरी अफ्रीका तथा दक्षिणी लाल सागर तक आक्रमण किए। पेपी द्वितीय के शासन काल में मिस्र ने सभी क्षेत्रों में उन्नति की। प्रो. श्रीराम गोयल ने उसके शासनकाल को विश्व में सबसे लम्बा माना है। उसके समय में भी उत्तर तथा दक्षिण में आक्रमण किए गए तथा सफलता प्राप्त की। पेपी द्वितीय के उत्तराधिकारी नितोकीस, इत्ती, अमेनहोटेप आदि दुर्बल एवं अयोग्य साबित हुए जिनकी कमजोरी का लाभ उठाकर एक बार पुनः पुरोहित तथा सामंत विद्रोह करने लगे। परिणामस्वरूप लगभग 2500 ई.पू. में इस वंश का पतन हो गया। इस प्रकार छठे वंश के पतन के साथ ही मिस्र के इतिहास का 'पिरामिड युग' समाप्त हो गया। इस युग में जहां एक तरफ राज्य एवं प्रशासन को सुदृढ़ता मिली वहीं दूसरी तरफ मिस्र का सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास भी हुआ।

पिरामिडों का निर्माण (Construction of Pyramids)

प्राचीन काल के मिस्र की प्रमुख विशेषता पिरामिडों का निर्माण थी। उस समय मिस्र में यह अंधविश्वास प्रचलित था कि मृत्यु के पश्चात् भी मनुष्यों को उन सभी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है जिन वस्तुओं का उपयोग वह अपने जीवन काल में करता है, इसलिए मिस्र के लोग अपने मृतकों के लिए विशाल समाधियां बनाते थे। इन विशाल समाधियों को ही पिरामिड कहा जाता है। मिस्र में सर्वप्रथम पिरामिड बनाने का श्रेय सम्राट जोसेर के प्रधानमंत्री इम्होटेप को जाता है। प्राचीन काल में राजा तथा सामंत दोनों ही पिरामिड बनवाते थे। परन्तु राजा (फराओ) के पिरामिड ही विश्वप्रसिद्ध माने जाते हैं। इन पिरामिडों में एक सुरंग बनाई जाती थी, जिसमें प्रकाश की पूर्ण व्यवस्था होती थी। इसके अंदर की दीवारों पर चित्र बने हुए थे। इनमें एक कमरा होता था जहां पर सम्राट् की ममी अर्थात् सम्राट् का शव रासायनिक लेप लगाकर सुरक्षित रखा जाता

टिप्पणी

था। मिस्र में अब तक लगभग 80 से अधिक पिरामिडों की खोज की जा चुकी है। इनमें गीजा का पिरामिड विश्व के सात अजूबों में से एक माना जाता है, जिसकी लंबाई 755 फीट और चौड़ाई 484 फीट है। इस पिरामिड के विषय में इतिहासकारों का मानना है कि इसमें बहुत संख्या में चट्टानों के टुकड़े लगे हुए हैं जिनसे सैंकड़ों भवनों का निर्माण किया जा सकता था। यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस के अनुसार, लगभग 12000 मजदूरों ने 20 वर्षों के कठोर परिश्रम के उपरान्त इस विशाल पिरामिड का निर्माण किया। इसका निर्माण चौथे राजवंश के सम्राट् खूफू ने करवाया था।

मध्य काल अथवा सामंतवादी युग 2500 (ई.पू. से 1580 ई.पू) (Middle Age or Age of Feudalism, 2500 B-C to 1580 B-C)

2500 ई.पू. में छठे राजवंश के पतन के साथ ही मिस्र की राजनीति पर सामंतों का आधिपत्य स्थापित हो गया। स्थानीय सामंतों ने अपने–अपने क्षेत्रों में शक्ति धारण कर ली तथा उन्होंने अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित कर ली। सातवें राजवंश की स्थापना के साथ ही सामंती युग का प्रारंभ माना जाता है। यह काल मिस्र के इतिहास का अशान्ति तथा विदेशी आक्रमणों का काल था। सामंत आपस में लड़ते रहते थे। देश में चारों तरफ अशान्ति एवं अराजकता व्याप्त हो गई थी। साधारण लोगों का जीवन दुःखमय हो गया या। उन्हें अनेक कष्ट उठाने पड़ते थे। तत्कालीन अभिलेखों में प्रजा की इस निराशा की झलक दिखाई देती है। उदाहरण के लिए एक अभिलेख में लिखा है, "सरदार शोकमग्न है। जनसाधारण आनन्दमग्न है। प्रत्येक नगर कहता है कि, "हम लोग इकट्ठे हों और अपने बीच के शक्तिशाली को दबाएं।" इस काल में चोर तथा लुटेरों के मंदिरों तथा समाधियों पर आक्रमण बढ़ गए थे। सरकारी गोदामों पर हमले करके अनाज लूट लिया जाता था। इपुवेर ने अपने गीतों में इस काल की अव्यवस्था का वर्णन इस प्रकार किया है, "देखो, जिनके पास दौलत थी वो रातों में प्यासे रह जाते हैं, जो बूंद–बूंद के लिए तरसते थे अब शराब के मटकों के मालिक बन गए हैं। जिनके पास शानदार वस्त्र थे, वे चिथड़ों में हैं और जो अपने लिए तनिक–सा कपड़ा बुनते थे अब उत्कृष्ट कोटि के वस्त्रों के स्वामी हैं।" मिस्र की इस अव्यवस्था एवं अराजकता का काल 7वें राजवंश के शासनकाल से 10वें राजवंश के शासनकाल तक रहा।

सातवें व आठवें राजवंशों के शासनकाल (2500 ई.पू.–2445 ई.पू.) में शासक अयोग्य एवं दुर्बल थे एवं सामंत तथा दूरस्थ प्रान्तों के गवर्नर शक्तिशाली हो गए। इस काल में मेम्फिस नगर की प्रतिष्ठा समाप्त हो गई। नौवें तथा दसवें राजवंशों के शासनकाल (2445 ई.पू.–2260 ई.पू.) में सामंत वर्ग का राजनीति में प्रभाव अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया। इस काल में हेरिक्लिओपॉलिस नगर राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। दसवें वंश के काल में दक्षिण मिस्री नगर थेब्स के सामंत बहुत शक्तिशाली हो गए जिन्होंने अपनी शक्ति बढ़ाकर ग्यारहवें राजवंश की स्थापना की। इस राजवंश ने 2160 ई.पू. से 2000 ई.पू. तक मिस्र में शासन किया। इस वंश के शासकों ने राजनीतिक अराजकता का अन्त करके मिस्र में पुनः राजनीतिक एकता की स्थापना की। इस वंश के शासकों इंतेफ तथा मेनुहोतेप ने केन्द्रीय सत्ता को मजबूत बनाया। इतिहासकार इस वंश के शासनकाल को मिस्र के इतिहास के स्वर्णयुग का प्रारंभ मानते हैं।

टिप्पणी

ग्यारहवें वंश के अन्तिम शासक के मंत्री अमेनहोटेप ने 2000 ई.पू. में बारहवें राजवंश की स्थापना की। इस वंश के छः शासकों के शासनकाल में मिस्र में एक बार पुनः राजनीतिक एकता स्थापित हुई तथा केन्द्रीय सत्ता मजबूत बनी। यद्यपि इस वंश के शासक थेब्स के रहने वाले थे परन्तु उन्होंने पूरे देश पर प्रभावशाली ढंग से शासन चलाने के लिए मेम्फिस तथा फ्यूम को अपनी राजधानी बनाया। अमेनहोटेप का उत्तराधिकारी सेनवो सरेत प्रथम काफी प्रसिद्ध था। उसने एक नहर द्वारा नील नदी को लाल सागर से जोड़ा तथा नूबिया के आक्रमणकारियों को पराजित किया। उसने हेलियोपोलिस, इबाईडोस तथा कार्नक में विशाल मंदिर भी बनवाए। उसके उत्तराधिकारी सेनयो सरेत तृतीय ने फिलिस्तीन पर आक्रमण किया। इस वंश के छठे शासक अगनहोटेप तृतीय ने नील नदी को हरा–भरा करने के लिए फ्यूम नामक स्थान पर बीस मील लम्बा बांध बनाकर एक झील का निर्माण करवाया। उसने प्रसिद्ध लेब्रिंथ भवन का निर्माण करवाया। स्टेबोर्क के अनुसार, "इस भवन का प्रत्येक कक्ष केन्द्रीय कार्यालय के सदृश्य था।" अमेनहोटेप तृतीय की मृत्यु के साथ ही इस वंश का अन्त हो गया क्योंकि उसके उत्तराधिकारी अमेनहोटेप चतुर्थ तथा सेवेक्नफुरे निर्बल शासक हुए। इस प्रकार 1788 ई.पू. में बारहवें राजवंश का अन्त हो गया तथा इसके साथ ही मिस्र में एक बार फिर से अराजकता एवं अव्यवस्था फैल गई।

1789 ई.पू. में बारहवें वंश के शासन के अन्त के साथ ही मध्यकाल के गौरवपूर्ण युग का अन्त हो गया तथा सामंत व जागीरदार एक बार फिर से सत्ता हड़पने के संघर्ष में लग गए। 13वें तथा 14वें राजवंश के शासक देश की एकता बनाए रखने में असफल रहे। मिस्र में फैली इस अराजकता का लाभ उठाकर एशिया–माइनर के सेमेटिक जाति के एक कबीले हिक्सोस अथवा हाइक्सोस ने 1765 ई.पू. में मिस्र पर आक्रमण करके अपना अधिकार स्थापित कर लिया। मनेथो ने हिक्सोस अथवा हाइक्सोस का अर्थ चरवाहा–राजा या पशुपालक राजा बताया है। मिस्री भाषा में, इस शब्द का अर्थ होता है– विदेशी शासक। इस जाति के लोगों ने मिस्र पर लगभग 200 वर्षों तक शासन किया। अधिकतर इतिहासकार 13वें वंश से 17वें वंश के शासकों को हिक्सोस जाति के लोगों के साथ जोड़ते हैं क्योंकि मिस्र के इतिहास के 13वें से 17वें वंश के शासकों के विषय में कोई विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं होती। हां, इतना निश्चित है कि यह युग, अराजकता, बर्बरता एवं अव्यवस्था का युग था। इस युग में मिस्र की सांस्कृतिक गरिमा नष्ट हो गई। मिस्रवासियों ने इस युग को क्रूर एवं बर्बर युग की संज्ञा दी है। इस तथ्य की पुष्टि मिस्र के एक लोकगीत से भी होती है जिसमें कहा गया है कि "मिस्र भ्रष्ट लोगों के अधिकार में था।" ("Egypt was in the possession of the polluted—people")

हालांकि हिक्सोस जाति ने मिस्र की संस्कृति को चोट पहुंचाई परन्तु कुछ क्षेत्रों में इनके आक्रमणों से मिस्रवासियों को लाभ भी हुआ। डॉ. श्रीराम गोयल ने लिखा है कि "मिस्रवासियों को इस राजनीतिक दासता से दो लाभ हुए। एक, ये नई युद्ध कला (घोड़ों व रथों का प्रयोग) से परिचित हो गए जिसका उपयोग उन्होंने आगामी युद्धों में किया। दूसरे, विदेशी शासन ने उनके मन में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न की जिसकी बाढ़ में प्रादेशिक स्वतन्त्रता की भावना बह गई।" इसी राष्ट्रीयता की भावना के परिणामस्वरूप 16वीं सदी के प्रारंभ में अहमोस प्रथम के नेतृत्व में लोगों ने हिक्सोस विरोधी आन्दोलन चलाया तथा अन्ततः हिक्सोस जाति को मिस्र से खदेड़ दिया।

नवीन युग अथवा साम्राज्यवादी युग, 1580 ई.पू.–1090 ई.पू. (New Age or Imperialistic Age, 1580 B-C to 650 B-C)

टिप्पणी

तेरहवें से सतरहवें राजवंश के शासन काल तक मिस्र पर हिक्सोस जाति का आधिपत्य रहा। हिक्सोसों ने मिस्र पर 200 वर्षों तक शासन किया। 16वीं शताब्दी ई.पू. में मिस्र में हिक्सोस विरोधी आन्दोलन चला। अहमोस प्रथम के नेतृत्व में मिस्रवासियों ने हिक्सोस लोगों को हराकर मिस्र से भगा दिया। इसके पश्चात् उसने मिस्र में अठारहवें वंश की स्थापना की। उसके उत्तराधिकारी अमेनहोटेप प्रथम ने एशिया, नूबिया तथा लीबिया पर आक्रमण किए। उसके पश्चात् थुतमोस प्रथम फराओ बना। राजखानदानी मां का यह पुत्र वीर तथा साहसी योद्धा था। उसने नूबिया से जल युद्ध के पश्चात् सम्पूर्ण दक्षिणी क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। उसने अपनी पुत्री को प्रशासन चलाने की शिक्षा दी। उसकी मृत्यु के बाद उसकी पुत्री हरशेपसुट मिस्र की शासिका बनी, क्योंकि उसका पुत्र थुतमोस तृतीय अभी नाबालिग था। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक थुतमोस तृतीय था। उसने एशिया पर 15 बार आक्रमण किए और अनेक प्रदेशों को अपने साम्राज्य में मिलाया। उसे प्राचीन मिस्र का नेपोलियन कहकर पुकारा जाता है। उसने कर्नाक में विशाल मन्दिरों के निर्माण के साथ–साथ जल बेड़ों का भी निर्माण कराया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों में से अमेनहोटेप द्वितीय, थुतमोस चतुर्थ तथा अमेनहोटेप तृतीय ने मिस्र साम्राज्य को स्थायी बनाए रखने के लिए हर सम्भव प्रयास किए। अमेनहोटेप तृतीय की मृत्यु के पश्चात् अमेनहोटेप चतुर्थ गद्दी पर बैठा। उसने अपना अधिकतर समय सौर देवता एटन की उपासना में लगाया। इसी देवता के नाम पर उसने अपना और अपनी राजधानी का नाम भी अखनाटन रखा। उसकी मृत्यु के पश्चात् अठारहवें वंश का पतन हो गया। अखनाटन का कोई पुत्र नहीं था, इसलिए उसकी मृत्यु के पश्चात उसका दामाद तूतनखामुन शासक बना।

तूतनखामुन की 18 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई और उसके बाद लगभग 1350 ई.पू. में हमहाब नामक सेनापति ने सत्ता पर अधिकार करके उन्नीसवें वंश की स्थापना की। इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक रेमेसेस द्वितीय था। वह एक अयोग्य तथा विलासी शासक था। वह युद्धों व प्रशासनिक कार्यों की बजाय सुन्दर–सुन्दर स्त्रियों के साथ प्रेमालाप करने में अपना अधिकतर समय व्यतीत करता था। लगभग 67 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। उसने अनेक सुन्दर लड़कियों से विवाह किए थे, इसलिए उसकी सन्तानें भी बहुत सुन्दर थीं। कहा जाता है कि उसके 100 से अधिक पुत्र तथा 50 से अधिक पुत्रियां थीं। उसकी मृत्यु के बाद 19वें वंश का पतन हो गया। इसके पश्चात् सेतनाख्त नामक व्यक्ति ने लगभग 1250 ई.पू. में बीसवें राजवंश की स्थापना की। रेमेसेस तृतीय इस वंश का सबसे योग्य तथा शक्तिशाली शासक हुआ। उसके शासन काल में मिस्र साम्राज्य का बहुत विकास हुआ। उसकी मृत्यु के पश्चात् मिस्र साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया। इस काल में मिस्र को पश्चिमी एशिया, यूरोप तथा अन्य पड़ोसी राज्यों से युद्ध करने पड़े। लगभग 1090 ई.पू. में इक्कीसवें वंश के शासक गद्दी पर बैठे। मिस्र पर 21वें वंश से 25वें वंश तक विदेशियों का शासन रहा। 663 ई.पू. में साईत में साम्तिक नामक व्यक्ति ने 26वें राजवंश की स्थापना की। इस वंश के शासकों ने मिस्र के गौरव को पुनः लौटाने का प्रयास किया, परन्तु 525 ई.पू. में इस वंश का पतन हो गया और मिस्र को हखामशी साम्राज्य में मिला लिया गया। इसके पश्चात् मिस्र के स्वतन्त्र इतिहास का पतन हो गया। 30 ई.पू. में मिस्र पर रोम का

अधिकार स्थापित हो गया। इस प्रकार मिस्र रोम साम्राज्य का एक प्रान्त बन गया। इस प्रकार मिस्र की 5000 वर्ष पुरानी सभ्यता का अंत हो गया।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

1. मिस्र में फराओ कौन था?
   (क) समस्त प्रशासन का मुखिया (ख) प्रधानमंत्री
   (ग) पुरोहित (घ) इनमें से कोई नहीं
2. सारू से क्या तात्पर्य है?
   (क) एक प्रकार की दारू (ख) फराओ हेतु परामर्शदात्री सभा
   (ग) खदान (घ) इनमें से कोई नहीं
3. मिस्र का सबसे विशाल पिरामिड कहां स्थित है?
   (क) लक्सर (ख) कर्नाक
   (ग) गीजा (घ) इनमें से कोई नहीं

1.3 सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां

पिरामिड युगीन मिस्र की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियों का अध्ययन निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

1.3.1 सामाजिक स्थिति

पिरामिड युगीन मिस्र आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और समुन्नत था। चूंकि इस युग में पिरामिडों, मंदिरों तथा अन्य कलात्मक कृतियों का अधिक निर्माण हुआ था, इसलिए निर्माण कार्य के लिए फराओ ने अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ आधार देने का प्रयास किया। उन्होंने देश की कृषि, व्यापार, उद्योग–धन्धों तथा आर्थिक साधनों को समुन्नत करने में व्यक्तिगत अभिरुचि ली। शासनतंत्र धर्मतान्त्रिक था और आर्थिक संगठन का उद्देश्य धार्मिक संस्थाओं का विकास और धर्मविषयक स्मारकों के निर्माण में सहायता देना था। नागरिक जीवन और देश के शासन से धर्म का इतना अटूट सम्बन्ध था कि यूनानियों ने मिस्र के नागरिकों को 'विश्व के सर्वाधिक धर्मनिष्ठ मनुष्य' की संज्ञा दी।

प्राचीन मिस्र की सामाजिक संरचना का प्रमुख आधार परिवार था। समाज में विभिन्न वर्ग थे, जिनके बीच आपसी सहयोग एवं अच्छा तालमेल था। पिरामिड युगीन मिस्र की सामाजिक स्थिति का विवरण इस प्रकार है–

सामाजिक वर्गीकरण (Social Classification)

पिरामिड युगीन मिस्र का समाज मुख्य रूप से तीन वर्गों में बंटा हुआ था– उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग तथा निम्न वर्ग। उच्च वर्ग में राजा (फराओ), सामंत, पुरोहित, दरबारी, अमीर एवं उच्च पदाधिकारी आदि आते थे। यह वर्ग समृद्धि एवं विलासिता का जीवन व्यतीत करता था। वे बड़े–बड़े भवनों में रहते थे। वे तड़क–भड़क वाले वस्त्र पहनते थे तथा सोने–चांदी के बर्तनों में खाना खाते थे। उनके कमरों में पर्दों एवं फर्शों पर दरियां बिछी

टिप्पणी

रहती थीं। कमरों में सुन्दर पलंग, कुर्सियां, अल्मारियां तथा सोने–चांदी व कीमती पत्थरों का बहुमूल्य सामान सजा रहता था। 'फराओ' को लोग देवता के समान पूजते थे। फराओ का अपना हरम होता था जिसमें रखैलें होती थीं। सरदार, सामंत तथा सैनिक राजकर से मुक्त थे। उनके पास काफी जमीनें व विशेषाधिकार थे। शासन के महत्त्वपूर्ण पदों पर इन्हीं को नियुक्त किया जाता था। पुरोहित या पुजारियों का भी समाज पर पूरा नियंत्रण एवं प्रभाव था। वे मनुष्यों तथा देवताओं के बीच कड़ी का काम करते थे। ये लोग जादू–टोनों, तन्त्र–मन्त्र एवं ताबीज बेचकर धन–संपत्ति इकट्ठा करते थे। फराओ जब बड़ी मात्रा में धन दान देता था तो भी वह इन्हीं को मिलता था। अपार धन–संपत्ति इकट्ठा होने के कारण ये लोग भोग–विलास का जीवन व्यतीत करने लगे थे।

प्राचीन मिस्र में लिपिक, व्यापारी, कारीगर तथा स्वतंत्र किसान मध्यम वर्ग में आते थे। समाज में इन लोगों को ज्यादा अधिकार प्राप्त नहीं थे। इनका कार्य उच्च वर्ग के लोगों की सहायता करना था। उस समय मध्यम वर्गीय समाज में लिपिक का बहुत महत्त्व था। खुदाई में प्राप्त पट्टियों से पता चलता है कि लिपिक सैनिकों व मजदूरों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। एक पट्टी में लिपिक कहता है : "सैनिक की क्या अवस्था है, युद्ध में उनकी पीठ टूट जाती है, और लुहारों की क्या अवस्था है, भूमि पर बैठकर वे काम करते रहते हैं और शुद्ध वायु में कभी श्वास लेने का मौका नहीं मिलता है।" पिरामिड काल में लिपिकों की उच्च पदों पर भी नियुक्ति की जाती थी। आमतौर पर मध्यम वर्ग के लोग साधारण जीवन व्यतीत करते थे।

तीसरे या निम्नवर्ग में कृषक, मजदूर एवं दास आते थे। समाज में इनकी स्थिति शोचनीय थी। इस वर्ग के लोग गंदी बस्तियों तथा गांव में झोपड़ियों में रहते थे। ये झोपड़ियां मिट्टी की कच्ची ईंटों से बनती थीं तथा उन पर घास–फूस का छप्पर होता था। उनके पास फर्नीचर के नाम पर लकड़ी के तख्त थे व चोकियां होती थीं। इनके बर्तन भी मिट्टी के थे तथा ये अत्यन्त साधारण भोजन करते थे। किसान का जमीन पर अधिकार नहीं था। सामंत या जमींदार उनसे बेगार एवं कर लेते थे। वे अपनी जमीन छोड़कर भाग भी नहीं सकते थे। 12वें राजवंश के समय उनको भूमि को बेचने व खरीदने का अधिकार मिल गया था। उन्हें उपज का 1/10 से 1/20 भाग कर के रूप में देना पड़ता था। मजदूरों का अलग वर्ग नहीं था। किसान ही मजदूरों के रूप में काम करते थे। उन्हें पिरामिड बनाने, बांध बनाने तथा अन्य जीर्णोद्धार के काम में लगाया जाता था। उन्हें मजदूरी के बदले राशन तथा कपड़े आदि मिलते थे। साम्राज्य के उत्कर्ष के काल में युद्ध में पकड़े गए लोगों को दास बनाया गया था। इन्हें खदानों तथा मंदिरों में काम पर लगाया जाता था। इन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता था परन्तु जब धीरे–धीरे इन्हें सेना में भर्ती किया जाने लगा तथा राजमहल में सेवा का काम मिलने लगा तब ये समाज में घुल–मिल गए।

मिस्र के समाज के विभिन्न वर्गों की स्थिति में समय–समय पर परिवर्तन आता रहा। प्राचीन राज्ययुग में जहां शासक के बाद सबसे अधिक प्रतिष्ठा सामंतों व पुरोहितों को प्राप्त थी वहीं मध्ययुगीन राजतन्त्र काल में व्यापारियों, सरकारी कर्मचारियों, दस्तकारों व बड़े किसानों ने फराओ के विरुद्ध विद्रोह करके अनेक रियासतें प्राप्त कर लीं। इस प्रकार सामंतों व पुरोहित की तुलना में उनकी स्थिति अब ऊंची हो गई। साम्राज्य युग में मध्यवर्ग की स्थिति और अधिक मजबूत हुई। इस युग में व्यापारियों

टिप्पणी

ने व्यापार बढ़ाकर राज्य की समृद्धि में अपना योगदान दिया तथा व्यापार से प्राप्त राजस्व से राजकोष में बढ़ोतरी हुई। परिणामस्वरूप इस वर्ग की स्थिति मजबूत हुई तथा शासन के विभिन्न पदों पर उच्च अधिकारियों का वर्चस्व स्थापित हुआ। परन्तु फराओ अखनाटन के काल में जब धर्म का बोलबाला हो गया तब पुरोहितों को अपनी खोई प्रतिष्ठा मिल गई तथा सामंतों की तुलना में वे शक्तिशाली हो गए। सभ्यता के अन्तिम चरण में फराओ कमजोर पड़ने लगे जिसके परिणामस्वरूप समाज में एक बार फिर सरदारों व सामंतों का वर्चस्व स्थापित हो गया।

पारिवारिक संगठन (Familial Structure)

मिस्र के समाज में सामाजिक जीवन का आधार परिवार था। समाज की न्यूनतम इकाई परिवार थी। प्राचीन मिस्री समाज नारी प्रधान था अर्थात् परिवार मातृसत्तात्मक थे। प्रत्येक व्यक्ति केवल एक विवाह करता था तथा उसी पत्नी की संतान को पारिवारिक संपत्ति उत्तराधिकार में मिलती थी। तलाक देने व लेने का अधिकार स्त्री–पुरुष दोनों को प्राप्त था। फराओ भी एक से अधिक विवाह नहीं करते थे परंतु उनके हरम में बहुत–सी स्त्रियां होती थीं तथा फराओ उनसे सन्तान भी पैदा करते थे। इसी प्रकार उच्च वर्ग में भी उप–पत्नियां रखने का प्रचलन था। परिवार के विभिन्न सदस्यों के बीच आपसी प्रेम को परिवार का एक आवश्यक गुण माना जाता था। बच्चे अपने माता–पिता की आज्ञाओं का पालन करते थे।

विवाह (Marriage)

प्राचीन मिस्र में सगोत्र विवाह एक उल्लेखनीय सामाजिक प्रथा थी। फराओ के लिए यह अनिवार्य था कि वह अपनी बहन के साथ विवाह करे। यदि उसकी सगी बहन नहीं होती थी तो वह अपनी सौतेली बहनों में से किसी एक के साथ विवाह करता था। इस प्रथा का अनुकरण जनता भी करती थी। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि अनेक प्रजाजनों में यह प्रथा प्रचलित थी। इस प्रथा का कारण स्त्रियों को संपत्ति संबंधी उत्तराधिकारी का नियम था। यद्यपि मिस्र में एक–विवाह का प्रचलन था परन्तु फराओ व अन्य उच्च वर्ग के लोग एक से अधिक उप–पत्नियां रखते थे। हिक्सोस जाति के आक्रमण के बाद बहु–विवाह प्रथा का प्रचलन चला था। लड़कियों को अपना पति चुनने का पूरा अधिकार था। विवाह से पहले लड़का तथा लड़की का मिलना बुरा नहीं माना जाता था। विवाह से पहले पति जीवन भर अपनी पत्नी की आज्ञा का पालन करने की शपथ लेता था। व्यभिचार का आरोप सिद्ध होने पर पत्नी को तलाक दिया जा सकता था। मिस्र में लड़कियां प्रेम–पत्र लिखकर प्यार की पहल करती थीं। खुदाई में ऐसे विभिन्न प्रेम पत्र प्राप्त हुए हैं जिनमें स्त्रियों–पुरुषों के प्रेमालापों के बारे में पता चलता है। अनुमान लगाया जाता है कि उस समय स्त्रियां प्रेमालाप करने में भी पुरुषों से आगे थीं। प्रेम संबंध में प्रायः प्रियतमा ही पहल करती थी और बेझिझक होकर वह अपने प्रेमी से प्रेम का निवेदन करती थी। प्रो. गोयल के अनुसार, "परवर्ती युगों की मिस्री महिलाओं द्वारा प्रेमियों को लिखे गए अनेक प्रेम–पत्र आजकल उपलब्ध हैं।"

महिलाओं की स्थिति (Position of Women)

यह प्रसन्नता और आश्चर्य का विषय है कि मिस्र में महिलाओं की स्थिति प्राचीन काल के अन्य सभ्य देशों की तुलना में बड़ी अच्छी थी। उन्हें पुरुषों के समान राजनीतिक तथा

टिप्पणी

आर्थिक अधिकार प्राप्त थे। वे स्वतंत्र संपत्ति रख सकती थीं। चूंकि समाज का रूप मातृसत्तात्मक था, अतः स्त्रियां पूर्ण रूप से स्वतंत्र थीं। आवश्यकता पड़ने पर वे शासन की बागडोर को संभालने में भी सक्षम थीं। इस संदर्भ में रानी हरशेपसुट के शासन काल को हम कदापि नहीं भूल सकते हैं। वह मिस्र की पहली महिला शासक थी। स्त्रियों को तलाक का अधिकार भी प्राप्त था, परदे की प्रथा नहीं थी। समाज और परिवार में महिलाओं की काफी प्रतिष्ठा थी। विवाह के मामले में उन्हें पूरी स्वतंत्रता प्राप्त थी। लोगों का दाम्पत्य जीवन सुखी था और तलाक कम होता था। वे प्रशासनिक, धार्मिक तथा सामाजिक अनुष्ठानों में स्वतंत्र रूप में हिस्सा लेती थीं। बाद के यूनानी लेखकों को मिस्र में महिलाओं की स्थिति को देखकर आश्चर्य होता था और उन्होंने तो यहां तक लिख दिया है कि मिस्र में पुरुष महिलाओं के गुलाम थे। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि मिस्र में संपत्ति का उत्तराधिकारी लड़की ही हुआ करती थी। इसलिए प्राचीन मिस्र में भाई–बहन के साथ विवाह हुआ करता था। स्पष्ट है कि मिस्र में नारियों की स्थिति बड़े ही महत्त्व की थी। ऐसा अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है। निस्संदेह यह मिस्र की सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता थी। मैक्समूलर ने लिखा है : "किसी भी प्राचीन समाज में स्त्री को इतना ऊंचा स्थान प्रदान नहीं किया गया था जितना मिस्त्र में।" मिस्र के चित्रों में नारी को पुरुष के साथ भोजन करते हुए, आनंद–प्रमोद करते हुए तथा अपने काम से अकेला जाते हुए चित्रित किया गया है। किंतु सामंत युग में विशेष रूप से हिक्सोस आक्रमण के बाद बहुविवाह की प्रथा तथा अन्य परिवर्तनों के कारण नारियों की स्थिति में गिरावट आई।

मिस्री समाज में माता को आदर की दृष्टि से देखा जाता था। मां के अतिरिक्त अन्य अपरिचित स्त्री को शंका व संदेह की दृष्टि से देखा जाता था। एक लेख में मां स्वयं अपने लड़के को समझाती है कि "अनजान स्त्री से होशियार रहना। रास्ते में अगर वह मिल जाए, तो उसकी तरफ मत देखना और उससे जान पहचान मत करना। यह गहरे पानी में एक भंवर की तरह है, जिसके चरित्र का अन्दाजा लगाना कठिन है।"

मिस्र में सबसे सुन्दर नारी को प्रति वर्ष बड़ी धूम–धाम से बाढ़ भरी नील नदी में फेंक दिया जाता था, ताकि नील देवता प्रसन्न रहें तथा अन्य लोगों की जान न लें। थेब्स नगर में उच्च परिवारों में सबसे सुन्दर कन्या को अमीन देवता की प्रेमिका मानकर मंदिर में भेंट चढ़ा दिया जाता था। समाज में कुछ स्त्रियां वेश्यावृति भी करती थीं जिनका कार्य अमीरों का मनोरंजन करना एवं उन्हें शारीरिक सुख देना था।

स्त्रियां विभिन्न प्रकार के आभूषण जैसे अंगूठी, कुंडल, कंगन, कंठहार आदि धारण करती थीं। उनके आभूषण सोना, चांदी तथा कांसे से बने होते थे। उस समय स्त्रियां सुगन्धित द्रव्य, काजल, तेल, कंघी, दर्पण, लाली, रंग आदि सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग करती थीं। कुछ स्त्रियां अपने बाल भी कटा कर रखती थीं। वे शतरंज तथा चौसर आदि खेल भी खेलती थीं। इसके अतिरिक्त स्त्रियां नृत्य तथा गायन में रुचि लेती थीं। मेम्फिस नगर से प्राप्त चित्रों में 14 स्त्रियों को नृत्य करते हुए दर्शाया गया है। नृत्य के समय स्त्रियां पारदर्शी कपड़े पहनती थीं, जिसके कारण उनके शरीर का प्रत्येक अंग दिखाई देता था। जनसाधारण वर्ग की महिलाएं और दासी स्त्रियां अनाज पीसने, खेतों में फसल बोने व काटने, कताई–बुनाई आदि करने के कार्य करती थी। इसके साथ–साथ वे घर के सभी कार्य और बच्चों का पालन–पोषण भी करती थीं। परंतु कालांतर में स्त्री भोग विलास की वस्तु बन गई थी।

टिप्पणी

आवास (Houses)

मिस्र में उच्च वर्ग के लोगों के निवास स्थानों तथा जनसाधारण लोगों के निवास स्थानों में बहुत अंतर था। उच्च वर्ग के लोग सुंदर तथा हवादार महलों में निवास करते थे। उनके मकानों में विभिन्न रंगों के पर्दे लगे रहते थे और नीचे फर्श पर कालीन व दरियां बिछी रहती थीं। उनके मकानों में पलंग, मेज, कुर्सी, गद्दे, अलमारियां, बहुमूल्य पाषाण की वस्तुएं, सोने, चांदी, तांबे के बर्तन आदि देखने को मिलते थे। उच्च वर्ग के घरों के पास उपवन तथा तालाब इत्यादि भी होते थे। इस प्रकार जहां एक ओर उच्च वर्ग के लोगों के पास सभी प्रकार की वैभवपूर्ण वस्तुएं व सुंदर महल होते थे, वहीं पर दूसरी ओर जनसाधारण तथा निम्न वर्ग के लोग कच्चे मिट्टी व घासफूस के बने मकानों में निवास करते थे। उनके पास जीवनयापन की नाममात्र की वस्तुएं ही होती थीं जिनमें टूटी चारपाई, स्टूल, कुछ बर्तन इत्यादि शामिल थे। यहां तक कि किसान व मजदूरों को भरपेट खाना भी नहीं मिल पाता था।

खान–पान (Food and Drinks)

प्राचीन मिस्र में लोग उच्चकोटि का पौष्टिक व स्वादिष्ट भोजन करते थे। वे गेहूं, चावल, जौ, चना, मक्का तथा विभिन्न प्रकार की दालें तथा सब्जियां आदि को भोजन के रूप में प्रयोग करते थे। भोजन में घी, दही, दूध, मक्खन भी बहुत मात्रा में लिया जाता था। उच्च वर्ग के लोग बहुत स्वादिष्ट तथा पौष्टिक भोजन करते थे। वे नाना प्रकार के पकवान, हलवा, मिठाइयां, बढ़िया प्रकार के मांस आदि का प्रयोग भी करते थे। उस समय भोजन के साथ अच्छी प्रकार की शराब भी प्रयोग की जाती थी। मांसाहारी लोग सुअर, घड़ियाल, मछली, कबूतर, बत्तख, सारस तथा हंस का मांस खाते थे। परन्तु निम्न वर्ग के लोगों का भोजन सादा होता था।

वस्त्र और आभूषण (Dresses and Ornaments)

मिस्र के लोग ऊनी तथा सूती दोनों प्रकार के वस्त्र पहनते थे। आरम्भ में उनके वस्त्रों में तड़क–भड़क नहीं पाई जाती थी, परन्तु धीरे–धीरे उनके वस्त्रों में तड़क–भड़क आने लगी। अमीर लोग सफेद सूती वस्त्र पहनते थे जिन पर प्रायः सोने–चांदी के तारों से कसीदा किया होता था। उच्च वर्ग के सूती कपड़े भी इतने सुन्दर थे कि वे रेशमी जैसे लगते थे। पुरानी कब्रों से मिलने वाले कपड़े हजारों वर्षों बाद भी ज्यों के त्यों सुरक्षित हैं।

मिस्र में 10 वर्ष की आयु तक बच्चे प्रायः नग्न रहते थे। पुरुष कमीज और तहमत का प्रयोग करते थे और स्त्रियां मेक्सी की तरह का वस्त्र धारण करती थीं। नौकर और कृषक दास केवल कमर पर एक वस्त्र लपेटते थे। आभूषण पहनने का चाव स्त्री, पुरुष दोनों को था। पुरुष तथा स्त्रियां दोनों ही अंगूठी तथा कर्णफूल पहनते थे। स्त्रियां जंजीर, बाजूबन्द, गले का हार तथा कंगन भी पहनती थीं। पिरामिडों व कब्रों की खुदाइयों से सोने–चांदी के कीमती पत्थरों के उपरोक्त आभूषण बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं। साधारण स्त्रियां मिट्टी की गोलियों की मालाएं धारण करती थीं। आभूषणों में कंगन, कमरबंद, पायजेब, चूड़ियों, अंगूठी, कंठहार, कुंडल आदि पहने जाते थे। उच्च वर्ग के लोग बहुमूल्य आभूषण पहनते थे।

टिप्पणी

प्रसाधन सामग्री (Cosmetics)

मिस्री समाज में पुरुष एवं स्त्रियां दोनों ही सजने संवरने के शौकीन थे। उस समय विभिन्न प्रकार के सुगन्धित तेल, उबटन तथा इत्र आदि का प्रयोग किया जाता था। स्त्रियां सुंदर दिखने के लिए विभिन्न प्रकार से बालों में जूड़े बांधती थीं तथा लिपिस्टिक, काजल, नेलपॉलिश व लाली इत्यादि लगाती थीं। शवों के साथ भी सात प्रकार की क्रीम, आभूषण, सौन्दर्य पेटिका आदि रखे जाते थे। इतिहासकारों का मत है कि मिस्र की प्राचीन स्त्रियां कृत्रिम केश (Wig) विग भी धारण करती थीं। पुरुष आमतौर पर दाढ़ी को काट कर रखते थे और वे सिर पर बड़ी–बड़ी विगें धारण करते थे। फराओ भी बड़ी–बड़ी विग धारण करते थे। कभी–कभी पुरुष कृत्रिम दाढ़ी–मूंछ भी लगाते थे। ये कृत्रिम केश भेड़ की ऊन से बने होते थे। दर्पण, उस्तरे तथा श्रृंगारदानियां पिरामिडों में भारी मात्रा में मिले हैं।

मनोरंजन का साधन (Means of Amusement)

उत्खनन में प्राप्त विभिन्न अवशेषों से हमें पता चलता है कि मिस्र के लोग अनेक साधनों द्वारा अपना मनोरंजन करते थे। वे गीत गाकर, संगीत बजाकर, शिकार करके तथा कुश्ती खेलकर एवं तैरकर व शराब पीकर अपना मनोरंजन करते थे। धनी लोग जुआ खेलते थे तो गरीब लोग कुश्ती लड़ते थे। नील की धारा में तैरना तथा नौकायन द्वारा भी मनोरंजन किया जाता था। उस समय सांडों तथा बाज जैसे पक्षियों तथा मुर्गों को लड़ाना भी बड़ा शौक था। अश्वारोहण, मुष्ठि युद्ध एवं सैनिकों में युद्ध भी मनोरंजन के साधनों में थे। फराओ अपने दरबार में संगीतकार भी रखते थे। उस समय संगीत में वीणा, झांझ, बांसुरी आदि यंत्र बजाए जाते थे। कवि गीत लिखते थे तथा संगीतकार उन्हें वाद्ययंत्रों पर धुन के रूप में प्रस्तुत करते थे तथा स्वर देते थे। मिस्र की महिलाओं की नृत्य को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने में प्रमुख भूमिका थी। मिस्र से कुछ ऐसे चित्र प्राप्त हुए हैं, जिन्हें देखने से पता चलता है कि स्त्रियां नग्न या अर्द्ध नग्न अवस्था में नृत्य करके लोगों का मनोरंजन करती थीं। नृत्य नाटिकाओं द्वारा भी लोग मनोरंजन करते थे। बच्चे मिट्टी, लकड़ी तथा धातु के बने विभिन्न प्रकार के खिलौनों से खेलकर अपना मनोरंजन करते थे। बड़ों की तरह बच्चों के पालन–पोषण एवं मनोरंजन के साधनों में अन्तर था। अमीरों के बच्चे चमड़े की गेंद से खेलते थे तो गरीबों के बच्चे मिट्टी व लकड़ी की गेंद से।

आचरण और व्यवहार (Conduct and Behaviour)

मिस्र के लोगों का आचरण एवं व्यवहार भी उच्च कोटि का था। वे एक–दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते थे। इस तथ्य की पुष्टि एक कवि के लेख से होती है जिसमें कहा गया है कि "जिसके पास खेती नहीं है उसे रोटी दो और सदा के लिए सुयश प्राप्त करो।" बूढ़े, बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाते थे। उदाहरण के लिए, "किसी विधवा की जमीन मत हड़पना। जबरदस्ती प्राप्त किए गए मण भर अनाज से ईश्वर द्वारा दिया गया एक सेर अनाज बेहतर है।" इस प्रकार प्राचीन मिस्र में उच्च नैतिक मूल्य विद्यमान थे।

1.3.2 आर्थिक स्थिति (Economic Conditions)

मिस्र के आर्थिक ढांचे के विभिन्न पहलुओं का विवरण इस प्रकार है–

कृषि (Agriculture)

टिप्पणी

प्राचीन मिस्र की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। मिस्र एक कृषि प्रधान देश था जिसकी 20 प्रतिशत जनसंख्या कृषि करती थी। प्रति वर्ष नील नदी में आने वाली बाढ़ जहां मिस्र में उपजाऊ मिट्टी लाती थी वहीं नील नदी के पानी को रोककर किसान ग्रीष्म ऋतु में सिंचाई की व्यवस्था भी कर लेते थे। नील नदी मिस्र वासियों के लिए भगवान का वरदान थी जिसने मिस्र में कृषि के लिए उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण किया। फराओ भी कृषि की ओर विशेष ध्यान देते थे। फराओ भूमि का स्वामी था तथा वही किसानों को खेती के लिए जमीन देता था। मिस्र के किसान काफी उत्साही थे तथा सरकारी कर्मचारी भी उनकी मदद करते थे। राज्य की तरफ से किसानों को विकसित खेती करने का प्रशिक्षण दिया जाता था। सरकारी कर्मचारी कृषि कार्यों का निरीक्षण करते थे। सरकार की तरफ से किसानों को सिंचाई के लिए जल, बाढ़ आने की सूचना और उपज बढ़ाने के तरीकों की जानकारियां मुफ्त में दी जाती थीं। प्रो. गोयल ने लिखा है कि "मित्र में सौर पंचांग का आविष्कार किसानों की सुविधा के लिए ही हुआ था।" उपरोक्त सुविधाओं के बदले किसानों को अपनी उपज का 10 से 20 प्रतिशत भाग सरकार को करों के रूप में देना पड़ता था। लगान न देने वाले किसानों को सिंचाई करने के लिए पानी पर रोक लगा दी जाती थी तथा कई बार कठोर कदम उठाते हुए नील नदी में उल्टा लटका दिया जाता था। मिस्र के किसानों के लिए दस्तावेज में मेर्ते शब्द का प्रयोग किया गया है। उन पर लगने वाले कर को मेजेद कहते थे।

मिस्र की मुख्य फसलें गेहूं, जौ, कपास, सरसों, सन (जूट), अंजीर, जैतून, खजूर, फ्लेक्स आदि थीं। मिस्र की काली मिट्टी कपास एवं सन की पैदावार के लिए उपयुक्त थी। यहां खेती करना इतना आसान था कि कई किसान बिना हल चलाए भी फसल पैदा कर लेते थे। भूमि को लोहे की फाल वाले लकड़ी के हल से जोता जाता था। हल को दो बैल खींचते थे। हल के पीछे दो आदमी चलते थे। एक बैलों की रस्सी पकड़कर चलता था तथा दूसरा हल को थामे रखता था। एक अन्य मजदूर हाथ में बीज का थैला लेकर हल के पीछे–पीछे बीज छिटकता चलता था। फसलों के पकने पर उन्हें हंसिये से काटा जाता था तथा सूखने पर खलिहान में डालकर पशुओं के खुरों से मड़वाकर भूसा व अनाज अलग कर लिया जाता था। नेमिशरण मित्तल ने लिखा है कि "मिस्र को उन दिनों भूमध्य सागर का खलिहान कहा जाता था।" मित्र के लोगों ने नील नदी के पानी को रोककर नहरें निकालकर सिंचाई की उत्तम व्यवस्था की थी। उन्होंने पानी को उठाकर (नीचे स्तर से) ऊपर ले जाने के लिए शाडूफ (ढेकुली) का भी आविष्कार किया था।

फराओ राज्य की समस्त भूमि का स्वामी होता था। वह कृषि के विकास के लिए हर संभव प्रयास करता था। फराओ बाढ़ के आने की पूर्व सूचना किसानों को प्रदान करते थे। राज्य द्वारा किसानों पर कठोर नियंत्रण भी रखा जाता था। जब कोई किसान सरकार को भूमिकर अदा नहीं करता था तो उसे नील नदी से पानी नहीं दिया जाता था। फराओ ने एक सिंचाई विभाग भी स्थापित कर रखा था, जिसका मुखिया सिंचाई

टिप्पणी

अध्यक्ष कहलाता था। सरकार द्वारा निलोमीटर (बाढ़ मापक) बनाकर प्रतिवर्ष नील नदी में पानी के उतार–चढ़ाव का लेखा–जोखा रखा जाता था। मिस्र में भूमि के पंजीकरण भी होते थे और जल संबंधी विवादों के निपटारे के लिए अलग न्यायालय भी स्थापित थे। अच्छी फसल के लिए सूर्य देवता रे तथा नील नदी की पूजा की जाती थी। खुदाई में एक पेपीरस मिला है जिस पर लिखा है : "हे नील नदी! हम तुम्हारी उपासना करते हैं, कि तुम इस पृथ्वी (मिस्र) पर प्रकट हुई। तुम खेतों को सींचती हो, जिसको 'रे' (सूर्य देवता) ने उत्पन्न किया। तुम पशुओं की जन्मदाता हो, क्योंकि तुम स्वर्ग से उतरी हो। हर समय हमको पीने का जल देती हो। तुम रोटी–पानी की मित्र हो, तुम अन्न को शक्ति देती हो, उसको पनपाती हो– अगर तुम पुनः स्वर्ग वापस चली जाओ तो मानव जाति का नाश हो जाएगा– जब तुम धरती पर आईं तो चारों ओर मानव प्रसन्नता से भर गए। सबको भोजन मिलता है– तुम फसलों को उत्पन्न कर सबको संतुष्ट करती हो। फिर भी तुम कभी निर्धन नहीं हुई।" मिस्र की उन्नतशील खेती के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी 'द स्पलेण्डर दैट वाज इजिप्ट' नामक पुस्तक में उपलब्ध है।

पशुपालन (Animal Husbandry)

मिस्र के लोग कृषि के साथ–साथ पशु पालन भी करते थे। ये लोग गाय, बैल, भेड़, बकरी, गधा, हिरण, सुअर, मछलियां, मुर्गी तथा बंदर आदि पालते थे। इन पशुओं को पालने के पीछे उनका उद्देश्य भोजन में पशुओं का मांस आदि प्राप्त करना, बोझा ढोना, दही और मक्खन प्राप्त करना तथा मनोरंजन करना आदि था। मिस्र के लोग गाय बहुत अधिक संख्या में पालते थे। डॉ. आर. पी. त्रिपाठी लिखते हैं कि बहुत से सामंतों के पास तो 1500 तक गायें होती थीं। 17वीं शताब्दी ई.पू. पहले मिस्रवासियों को घोड़ों की जानकारी नहीं थी। पारसिक आक्रमण के पूर्व मिस्र के लोग ऊंट से भी परिचित नहीं थे, क्योंकि भग्नावशेषों में ऊंटों के चित्र नहीं मिलते। कुक्कुट पालन, मछली पालन व पकड़ने तथा पशु–पक्षियों के शिकार का भी पर्याप्त प्रचलन था। उस समय व्यक्तियों की आर्थिक सम्पन्नता भी पशुओं के द्वारा आंकी जाती थी।

बैलों तथा खच्चरों से हल जोतते थे तथा गधों व बैलों से सामान ढोया जाता था। पालतू बंदरों से हल्का बोझ ढोने तथा फल तोड़ने का काम लिया जाता था। मिस्र के लोग जाल द्वारा मछलियां भी पकड़ते थे तथा रात को इसी जाल को ओढ़कर मच्छरों से रक्षा करते थे। फराओ की समाधियों पर बने भित्ति चित्रों से विभिन्न पशु–पक्षियों की जानकारी मिलती है।

उद्योग (Industry)

पिरामिड कालीन मिस्र में उद्योगों का भी बहुत विकास हुआ। यद्यपि मिस्र में पत्थरों, लकड़ी एवं खनिजों की कमी थी तो भी मिस्र के लोग पड़ोसी प्रदेशों में खानें खोदकर तथा माल का आयात करके इस कमी को पूरा कर लेते थे। मिस्र के लोग विभिन्न उद्योग–धंधों जैसे– बर्तन बनाना, कपड़ा बुनना, भवन बनाना, आभूषण बनाना, लकड़ी का सामान तैयार करना, धातु का कार्य, नौकाओं का निर्माण, तीर–धनुष का निर्माण आदि में लगे हुए थे। यहां के लोग तांबे को पिघलाकर उससे अस्त्र–शस्त्र, बर्तन एवं अन्य उपकरण बनाने की कला में निपुण थे। रिलीफ चित्रों में स्वर्णकारों को काम करते दिखाया गया है जो स्वर्णकारी का बोध कराते हैं। फराओ तथा सामंतों के लिए

टिप्पणी

असीरिया व नूबिया से देवदार, हाथीदांत एवं आबनूस का आयात करके कलाकार फर्नीचर एवं अन्य सजावट के उपकरण बनाते थे। यहां के कलाकार जलपोत बनाने की कला में भी निपुण थे। माल ढोने के लिए भारी तथा उच्च वर्ग के लोगों की यात्रा के लिए हल्के जलयान बनाए जाते थे। यहां मृदभाण्ड कला भी काफी लोकप्रिय हुई। सामंतों तथा फराओ के लिए तेल, सुरा तथा खाद्यान्न रखने के मिट्टी के बड़े–बड़े बर्तन बनाए जाते थे। पशुओं की खाल के चमड़े से वस्त्र व रस्सियां आदि बनाई जाती थीं। पेपीरस के पौधे से कागज, हल्की नाव, चप्पलें, चटाइयां तथा रस्सियां बनाई जाती थीं। उल्लेखनीय है कि प्राचीन मिनियों ने पेपीरस नामक घास से कागज बनाने की कला विकसित की थी। ईंट बनाने का काम भी किया जाता था।

सूत कातने व कपड़ा बुनने में निम्न वर्ग की स्त्रियां काफी निपुण थीं। अच्छे प्रकार के लिनन कपड़ों की उच्च वर्ग के लोगों में भारी मांग थी। मिस्र के लोग इस कला में इतने निपुण थे कि तैयार कपड़े सिल्क जैसे लगते थे तथा वे इतने बारीक थे कि पहनने वाली महिलाओं के अंग स्पष्ट रूप से दिखाई देते थे। बिल डयूरेण्ट ने लिखा है कि "यदि हम प्राचीन मिस्रियों के आविष्कारों की तुलना अपने आविष्कारों से करें, तो ऐसा लगता है कि वायु शक्ति से चलने वाले यंत्रों के आविष्कार से पहले हम किसी भी दृष्टि से उनसे आगे बढ़े हुए नहीं हैं।"

व्यापार और वाणिज्य (Trade and Commerce)

पिरामिड युग में व्यापार भी विकास की चरम सीमा पर था। व्यापार जल एवं स्थल दोनों मार्गों से किया जाता था। सड़क मार्ग से होने वाले व्यापार के लिए गधों का प्रयोग होता था। मिस्र में जल परिवहन बहुत सस्ता था इसलिए अधिकतर लोग इसी परिवहन का प्रयोग करते थे। व्यापार के विकास में भी नील नदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी क्योंकि यातायात का प्रमुख साधन नील नदी ही थी। अनेक विद्वानों का मत है कि उस समय मिस्र में विभिन्न प्रकार की नावों का उपयोग किया जाता था, जिनमें व्यापारी अनाज, पशु तथा आवश्यक सामान एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते थे। मिस्र के लोग सोना, मसाले, संदल, रंग आदि का भारत तथा अरब से आयात करते थे। वे सोना, हाथी दांत का सामान सूडान से आयात करते थे। अनातोलिया से चांदी मंगाई जाती थी। सिनाई प्रायद्वीप से तांबा आयात किया जाता था। मिस्र के लोग अनाज, कपास, मिट्टी के बर्तन, कागज, जैतून आदि का निर्यात विभिन्न देशों में करते थे। लोगों द्वारा आर्डर देने पर भी वस्तुएं मंगवाई जाती थीं। व्यापारियों द्वारा खरीददारों को सामान खरीदते समय रसीद दी जाती थी। व्यापारी आय–व्यय का हिसाब–किताब रखने के लिए लिपिकों की नियुक्ति करते थे। फराओ का व्यापार पर पूर्ण नियंत्रण होता था। प्राचीन मिस्र में राज्य सबसे बड़ी व्यापारिक संस्था बनता जा रहा था और निजी व्यापार का पतन हो रहा था। इसलिए व्यापारियों ने व्यापार में रुचि लेना बहुत कम कर दिया था।

मिस्र में व्यापार का माध्यम वस्तु विनिमय नहीं अपितु मुद्रा पर आधारित था। यद्यपि राजाओं द्वारा मुद्रा जारी नहीं की गई थी, परन्तु निश्चित वजन की तांबे व सोने की अंगूठियां मुद्रा के रूप में प्रयोग की जाती थीं। व्यापारी अपने हिसाब किताब को व्यवस्थित रूप से रखते थे। वे बही खाता लिखने की कला से परिचित थे। अनेक भित्ति चित्रों में सरकारी कर्मचारियों को कर वसूल करके उन्हें सरकारी बही–खाते में दर्ज करते दिखाया गया है। माल मंगवाने के लिए व्यापारी आजकल की तरह एक विशेष

टिप्पणी

परिपत्र का उपयोग करते थे जिसे आर्डर फार्म कहा जा सकता है। माल प्राप्ति की रसीद भी दी जाती थी। संविदाएं अथवा अनुबंध लिखित रूप में होते थे। न्यायालयों में वसीयतनामे (हुण्डी) भी लिखे जाते थे। 26वीं शताब्दी ई.पू. के एक सामंत के व्यापारिक पत्र एलिफेसंटाइन से प्राप्त हुए हैं। साहूकारी (बैंकिंग) का भी व्यवसाय प्रचलित था। धनी लोग गरीब लोगों को वस्तुएं उधार देते थे तथा फसलें आने या माल तैयार होने पर कर्ज लेने वाले निर्धारित मात्रा में वस्तुएं या माल लौटा देते थे। ब्याज की दरों के बारे में निश्चित रूप से कहना मुश्किल है परन्तु इतना कहा जा सकता है कि कर्ज लेने वाला व्यक्ति जितनी मुद्रिकाएं उधार में लेता था उनका सवाया या ड्योढ़ा लौटाता था।

प्राचीन मिस्र में नाप–तोल के साधन भी विकसित हो गए थे। तराजू का आविष्कार हो चुका था क्योंकि अनेक चित्रों में मनुष्य की मृत्यु के बाद स्वर्ग के देवताओं द्वारा उसका हृदय तोलते हुए दिखाया गया है। मनुष्य के हदय की पवित्रता के वजन के आधार पर ही उसे स्वर्ग में प्रवेश मिलता था। इन चित्रों में दिखाई गई तराजू बड़ी कलात्मक है जिनके मध्य में पूंछ वाला बंदर चित्रित किया गया था।

उपरोक्त विशेषताओं के बाद भी मिस्र का व्यापार संतोषजनक नहीं था, इसमें अनेक दोष थे। इसका सबसे बड़ा दोष केन्द्रीयकरण था। व्यापार पर राज्य का नियंत्रण था तथा आय का अधिकांश भाग राज्य ले लेता था। अतः सामंत व व्यापारी इसमें कम रुचि लेते थे। फराओ तथा पुरोहितों के बीच एक भ्रष्ट गठबंधन बन गया था। फराओ युद्ध में बंदी बनाए गए बहुत से कारीगरों को पुरोहितों को सौंप देता था जो उनसे ताबीज व अन्य वस्तुएं बनवाकर भारी पैसा कमाते थे। प्रो. नेमिशरण मित्तल ने इतिहासकार एडवर्ड, एम. बर्नस को उद्धृत करते हुए लिखा है कि "अन्त में जब राज्य की संपत्ति मंदिरों व पुरोहितों, राजमहलों व पिरामिडों के अंधाधुंध निर्माण और विदेशी विजय अभियानों पर खुले हाथ लुटाई जाने लगी, तो मिस्र की अर्थव्यवस्था का चौपट हो जाना स्वाभाविक था तथा वही हुआ।"

1.3.3 धार्मिक स्थिति (Religious Conditions)

मिस्र के प्राचीन निवासियों के जीवन पर धर्म का गहरा प्रभाव था। उनके जीवन–दर्शन के प्रत्येक पहलू में धर्म की प्रधानता थी अर्थात् धर्म का प्रभाव मिस्र के लोगों को व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक जीवन के प्रत्येक पक्ष में दिखाई देता है। प्राचीन मिस्र की कला, साहित्य, दर्शन, स्थापत्य, राजनीति एवं अर्थव्यवस्था सभी पर धार्मिक प्रतीकों व आस्थाओं की गहरी छाप थी। मिस्र का राजतन्त्र धार्मिक राजतन्त्र था जिसमें राजा ईश्वर के नाम पर शासन करता था तथा वे मंदिरों, पुरोहितों और धार्मिक कर्मकांडों व संस्कारों पर आर्थिक संसाधनों का खुले रूप से दुरुपयोग करते थे। इसलिए यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने मिस्रवासियों को प्राचीन विश्व के सबसे धर्मनिष्ठ व्यक्ति कहा है। मिस्र के इस रोचक धार्मिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का विवरण इस प्रकार है–

देवता–देवी (God and Goddesses)

पिरामिड कालीन मिस्र की सभ्यता में धर्म का बहुत महत्त्व था। मिस्रवसियों का जीवन धर्म से बहुत प्रभावित था। वे विश्व के सबसे धर्मनिष्ठ लोग थे। उनकी राज्य व्यवस्था, साहित्य तथा दर्शन धर्म पर ही आधारित थे। मिस्र के लोग बहुदेववादी थे। प्रत्येक नगर

टिप्पणी

राज्य में उनका एक अलग देवता होता था। कुछ इतिहासकारों का मत है कि उस समय मिस्र के समाज में 2000 देवी–देवताओं की उपासना की जाती थी। मिस्र के राजनैतिक एकीकरण से पहले ऊपरी मिस्र में प्रमुख देवता अमन था, जिसका मंदिर थेब्स में था, निचले मिस्र में रे देवता की उपासना की जाती थी। मिस्र के राजनैतिक एकीकरण के पश्चात् इन दोनों देवताओं का भी एकीकरण हो गया। उन्हें अमन रे के नाम से जाना जाने लगा। मिस्र के लोग आकाश तथा पृथ्वी की अनेक रूपों में उपासना करते थे। वे प्रकाश से पृथ्वी पर रोशनी देने वाले सूर्य देवता (रे) की पूजा करते थे। मिस्र के लोग रात्रि के घोर अंधेरे को मिटाने वाले चन्द्रमा (सिन), प्रत्येक वर्ष उर्वरा शक्ति बढ़ाने वाली नील नदी (ओसिरिस), उसकी प्रतिनिधि (इसिस), आकाश (नुत) तथा झरनों, पशु–पक्षियों, विविध वनस्पतियों आदि की उपासना भी करते थे। मिस्रवासी सूर्य देवता (रे) तथा नील नदी (ओसिरिस) को बहुत प्रधानता देते थे। यह देवता बाढ़ से होने वाले विनाश के बाद सारे देश को नया जीवन देता था। यह आशा तथा अमरत्व देने वाला तथा सत्य का प्रतीक था। यह देवता मृतक की आत्मा को पाप–पुण्य के आधार पर नरक व स्वर्ग प्रदान करता था। ओसिरिस के दरबार में अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए पुरोहित तन्त्र–मन्त्र, जादू–टोने व ताबीज आदि बेचते थे। चन्द्रमा को सिन देवता का प्रतिनिधि माना जाता था। मिस्री लोग पृथ्वी की केब देवी और आकाश की नुत देवता के रूप में पूजा करते थे। डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी के अनुसार, गाय, कुत्ता, शृंगाल, बाज, हंस, सर्प, बैल तथा बकरे की पूजा भी मिस्र में प्रचलित थी। मेम्फिस नगर में टाः नाम का देवता प्रसिद्ध था, जिसका प्रधान पुजारी फराओ का प्रमुख सलाहकार होता था। वृक्षों में खजूर की पूजा की जाती थी। मिस्री लोग जानवरों के प्रति सद्भावना रखते थे और उन्हें मारना पाप समझते थे। वे पशुओं के शरीर पर मनुष्यों के चित्र बनाते ये जिसे स्फिंक्स (Sphinx) कहा जाता था। प्राचीन काल में सूर्य देवता को रे, अमन तथा होरस के नाम से भी जाना जाता था। होरस नामक देवता ओसिरिस व इसिस देवता का पुत्र माना जाता था। इन दोनों का दाम्पत्य जीवन मिस्र के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत था। यही कारण था कि राजकुमार अपनी सगी बहन से विवाह करते थे।

फराओ की पूजा (Worship of Pharaohs)

मिस्री लोग फराओ को भी देवता के रूप में पूजते थे। वे फराओ को अन्य देवताओं की तरह नश्वर मानते थे, इसलिए फराओ की मृत्यु के पश्चात् बड़े–बड़े पिरामिड बनाए जाते थे। उन पिरामिडों में फराओ के शव को सुरक्षित रखा जाता था। पिरामिड के अन्य कमरों में उसके साथ खाने–पीने की वस्तुएं, आवश्यक सामान आदि भी रख दिया जाता था। क्योंकि मिस्र के लोगों का विचार था कि मनुष्य को मृत्यु के पश्चात् भी उन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है जिन वस्तुओं का उपयोग वह अपने जीवन काल में करता था। खुदाई में मिले एक पिरामिड से हमें फराओ के मृत्युलोक के कार्यों के बारे में पता चलता है, जिसमें लिखा है– "वह सूर्य देवता का सहायक बनाया जाता है, वह सूर्य देवता के साथ बैठता है, कागजों को खोलता है, उसकी आज्ञाओं को संसार में भेजता है, फराओ वह सब कार्य करता है जो सूर्य देवता चाहते हैं।" फराओ तूतनखामुन की कब्र से मृत शरीर के अतिरिक्त रथ, राजगद्दी, स्टूल, भाला, इत्र, मदिरा और 143 सोने की बनी वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। फराओ के मृत शरीर को सुरक्षित रखने के लिए मिस्रवासी रासायनिक लेप करते थे।

टिप्पणी

मंदिर और पूजा की विधियां (Temples and Methods of Worship)

मिस्र के प्राचीन धर्म में मंदिरों का भी प्रमुख स्थान था। वे मंदिरों को देवताओं का घर मानते थे। अतः मिस्र के लोग अपने देवताओं के रहने के लिए मकान उसी प्रकार बनाते थे जैसे उनके अपने घर। मिस्र में देवी–देवताओं के लिए अनेक मंदिर बनाए थे। मंदिरों में पुजारियों की देखरेख में पूजा कार्य सम्पन्न होता था। धनाढ्य लोगों की ओर से मंदिरों को जागीर, दान तथा भेंट प्रदान की जाती थीं। मिस्र में प्रधान पुरोहित स्वयं फराओ अर्थात् राजा होता था।

पिरामिड युग के मंदिरों में आगे एक खुला आंगन होता था जिसके पीछे स्तंभों वाले बड़े कक्ष तथा उनके पीछे छोटे कक्ष होते थे जिनका उपयोग भंडार के रूप में किया जाता था। छोटे कक्षों के बीच में गर्भगृह होता था जिसमें लकड़ी की प्रतिमा स्थापित होती थी जिसकी लम्बाई एक फुट से छः फुट तक होती थी। इस देव प्रतिमा को सोने–चांदी एवं कीमती पत्थरों द्वारा सजाया जाता था। देवता की प्रतिमा को उत्तम प्रकार का भोजन, पेय तथा वस्त्र अर्पित करना तथा गायन व वादन से प्रसन्न करना पूजा करने के तरीके थे। राजा मंदिरों के व्यय के लिए राजकोष से खाद्यान्न, सामग्री सुरा, मधु तथा तेल आदि देता था। मंदिरों की अपनी भूमि से भी आय होती थी तथा उपासकों द्वारा दिया गया दान भी मंदिरों की आय के मुख्य स्रोत थे। देवताओं को अर्पित की जाने वाली सामग्री का उपयोग पुजारी करते थे परन्तु विशेष अवसरों पर इसे उपासकों को प्रसाद के रूप में बांट दिया जाता था। मिस्र में कर्नाक से लक्सर तक सूर्य देवता (अमेन–रे) के विशाल मंदिर थे। कर्नाक के मंदिर का निर्माण तुतमोस प्रथम ने किया था। उसकी बेटी हरशेपसुट ने भी दो मंदिरों का निर्माण करवाया था।

पुरोहित वर्ग की सर्वोच्चता (Supremacy of the Preistly Class)

मिस्र के धर्म में फराओ (राजा) देवता का एकमात्र सेवक या। सिद्धान्तः रूप से देवता की पूजा उपासना करने का एकाधिकार उसी के पास था परन्तु व्यवहार में उसने अपना यह कर्तव्य सहायक पुजारियों को सौंप दिया था क्योंकि फराओ सब मंदिरों में एक साथ व हर समय उपस्थित नहीं हो सकता था। इस प्रकार मिस्र के मंदिरों में अनेक पुजारी अथवा पुरोहित रखे जाते थे जो देवता की विधिपूर्वक पूजा करते थे, मंदिर की संपत्ति की देखभाल करते थे तथा युद्ध के समय सेना का संचालन भी करते थे। इस बात के भी उल्लेख मिलते हैं कि मंदिरों में देवदासियां भी रखी जाती थीं जो देवताओं की मूर्तियों के सामने नृत्य करती थीं तथा गाना गाती थीं। मध्य युग तक पुजारियों की स्थिति सुदृढ़ हो गई।

ओसिरिस के जन्म मृत्यु एवं पुनः जीवन संबंधी घटनाओं को मंदिरों में नाटकों के रूप में दिखाया जाने लगा। साम्राज्य युग तक आते–आते पुजारी वर्ग पथभ्रष्ट हो गया तथा वे सुरा, सुन्दरी व धन के प्रति आकर्षित होने लगे। वे धर्मभीरु जनता का शोषण करने लगे। शोषण करने के लिए उन्होंने यह घोषणा करनी आरंभ कर दी कि वे परलोक में व्यक्ति को कष्टों से मुक्ति दिला सकते हैं। वे पाप–मोचन मन्त्रों द्वारा मुक्ति दिलवाने का प्रचार करने लगे। वे पेपीरस के पत्र पर मन्त्र व जादू–टोने लिखकर इन्हें बेचने लगे। इस प्रकार मंदिरों में आने वाली अतुल धनराशि, सैनिक शक्ति एवं विशेषाधिकारों के कारण पुजारियों की प्रतिष्ठा, अत्यधिक बढ़ गई। पुजारियों की बढ़ती

शक्ति ने उन्हें अनैतिकता व दुराचार की ओर धकेल दिया। मंदिरों में भोगविलास, व्यापार, पशुबलि एवं नरबलि होने लगी। इस प्रकार पुजारियों ने प्राचीन मिस्र के साधारण धर्म को आडंबरपूर्ण बना दिया।

टिप्पणी

इस व्यवस्था को सम्राट आमेनहोटेप चतुर्थ (अथवा अखेनातेन) ने चुनौती दी। उसने पुजारियों के पारलौकिक जीवन संबंधी पत्रों एवं मान्यताओं को अवैध घोषित करके ऐटन देवता के मंदिरों को छोड़कर सभी मंदिरों को नष्ट करने की घोषणा कर दी। परन्तु अखेनातेन की मृत्यु के पश्चात् पुजारी वर्ग का प्रभाव पुनः स्थापित हो गया। पुजारियों ने उसे नास्तिक घोषित करके विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा फिर शुरू करवा दी। उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि अखेनातेन के शासन काल को छोड़कर मिस्र में पुरोहित वर्ग का प्रभाव काफी व्यापक था।

पारलौकिक मान्यताएं (Otherworldly Beliefs)

मिस्र निवासी कट्टर परलोकवादी थे। मिस्र के इतिहास में प्रागैतिहासिक काल से ही पारलौकिक मान्यताएं विद्यमान थीं। प्रो. गोयल ने लिखा है, कि "परलोकवाद को जितना महत्त्व मिस्री धर्म में मिला उतना शायद किसी अन्य धर्म में नहीं। मिस्र में जलवायु शुष्क होने के कारण मृतक शरीर लम्बे समय तक नष्ट नहीं होते थे इसलिए उनका मृत्यु के उपरांत जीवन के सिद्धांत में विश्वास उत्पन्न हुआ।" मिस्र के लोग मृत्यु को जीवन का अन्त न मानकर उसे एक घटना मात्र मानते थे। उन्होंने ऐहिक जीवन के अनुरूप ही पारलौकिक जीवन की कल्पना की थी। इस युग में इस धारणा ने जन्म लिया कि मनुष्य के जन्म के साथ ही 'टाः' या 'का' नामक शक्ति का समावेश होता है। यह शक्ति मनुष्य की मृत्यु के बाद भी उसके साथ रहती है। यह शक्ति शरीर नष्ट होने पर भी समाप्त नहीं होती। अतः उसके लिए पदार्थों की आवश्यकता होती है। उनकी धारणा थी कि यदि समाधि में खाद्य एवं पेय पदार्थ नहीं रखे जाएंगे तो 'का' नामक शक्ति मल का भक्षण करने लगती है। इसी 'का' नामक शक्ति की मान्यता ने मिस्र में पिरामिडों के अस्तित्व को जन्म दिया। इस विश्वास से प्रभावित होकर समृद्ध लोग अपनी जीवित अवस्था में ही किसी पुजारी को यह दायित्व सौंप देते थे कि उसकी मृत्यु के पश्चात् पुजारी उसकी समाधि पर खाद्य सामग्री अर्पित करता रहेगा। 'का' नामक शक्ति के अतिरिक्त मिस्र के लोग 'आत्मा' में भी विश्वास करने लगे थे; परन्तु 'आत्मा' व 'का' का आपस में क्या संबंध था इस बारे में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। आज भी मिस्र में अनेक मृत शरीर जिन्हें ममी कहा जाता है, हजारों वर्षों से सुरक्षित हैं। प्रो. अमर फारुखी मिस्रवासियों के मरणोपरान्त जीवन की कल्पना को असत्य मानते हैं। उन्होंने लिखा है कि, "अगर यह बात होती तो दफन करने का तरीका समाज के प्रत्येक वर्ग में होता। परन्तु ज्यादातर मिस्रवासियों को आडंबरहीन कब्रों में दफन किया गया है। गरीबों को एक संकरे गड्ढे में घुटने मोड़कर बड़ी लापरवाही से दफन किया गया है।" अतः स्पष्ट है कि वहां के निवासियों में यह धारणा केवल फराओ को अमरत्व प्रदान करने के लिए थी।

मिस्र के लोगों ने इस युग में परलोक (मृतकों की दुनिया) की भी कल्पना कर ली थी। वे उसे अधोलोक थारुभूमि अथवा मृतकों का लोक व खाद्य भूमि कहते थे। इस लोक में मनुष्य की आत्माएं निवास करती थीं। "पिरामिड ग्रन्थावली" में इस लोक की

टिप्पणी

अनेक स्थानों पर कल्पनाएं की गई हैं। उनकी मान्यता थी कि यह दुनिया पश्चिम में स्थित है तथा इस दुनिया में प्रत्येक दिन संध्या को सूर्य का आगमन होता है। 'मृतकों की पुस्तक' (Book of Deads) में बताया गया है कि पाताल में मृत आत्माएं प्रतिदिन सूर्यदेवता की दैवीय नौका की प्रतीक्षा करती हैं तथा केवल सुकर्म करने वाले व्यक्तियों को ही मल्लाह नाव में बैठाता है। परलोक में मृत आत्मा को न्याय प्राप्त करने के लिए ओसिरिस नामक देवता के सामने प्रस्तुत होना पड़ता है। ओसिरिस के न्यायालय में 42 न्यायाधीश हैं जो मनुष्य की आत्मा को उसके कर्मों के आधार पर स्वर्ग और नरक देते हैं। इस प्रकार प्राचीन मिस्र के धर्म में कर्मों के आधार पर व्यक्ति को फल मिलने की भी कल्पना की गई थी। उनकी इसी धार्मिक भावना के फलस्वरूप मिस्र में जादू–टोना व कर्म–कांडों का बोलबाला हो गया था। शासक भी राजकार्यों की तरफ ध्यान न देकर धार्मिक कार्यों में ही लगे रहते थे। उन्होंने कभी भी अपने पास स्थाई सेना नहीं रखी। परिणामस्वरूप सामंतों की शक्ति बढ़ती चली गई और फराओ का महत्त्व नाममात्र का रह गया। अतः राजनीतिक दुर्बलता का लाभ उठाकर हिक्सोस नामक खानाबदोश सेमेटिक जाति ने मिस्र के लोगों को पराजित कर दिया और उनके मंदिरों को भी नष्ट–भ्रष्ट कर डाला।

उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि पिरामिड एवं मध्यराज्य युग में धर्म में नैतिकता की प्रधानता थी परन्तु साम्राज्यवादी युग में पुजारियों के भ्रष्टाचार ने धार्मिक जीवन में अनैतिकता को जन्म दिया।

अखेनातेन और धार्मिक क्रांति (Akhnaton and Religious Revolution)

सम्राट अमेनहोटेप चतुर्थ अथवा अखेनातेन ने मिस्र के धर्म में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए। उसने बहुदेववाद के स्थान पर एकेश्वरवाद का सिद्धान्त प्रचलित किया। उसने एटन (सूर्य) देवता को एकमात्र ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित किया। उसने एटन को संसार का सृष्टा, शासक तथा नियंता बताया तथा उसकी आराधना करने पर जोर दिया। वह निराकार था अर्थात उसकी मूर्ति पूजा नहीं की जा सकती थी। उसने एटन देवता को दयालु एवं शान्ति का प्रतिनिधि बतलाया तथा इस बात पर बल दिया कि कोई भी पुरोहित के बिना इस देवता की उपासना कर सकता है। उसने सभी अंध–विश्वासों, भूत–प्रेतों दैत्यों, देवी–देवताओं, स्वर्ग–नरक की कल्पनाओं को अस्वीकार करके पुरोहितों की सत्ता को नकार दिया। इस प्रकार अखेनातेन ने दुनिया के इतिहास में सबसे पहले एकेश्वरवाद को जन्म दिया। अखेनातेन का मूल्यांकन करते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार ब्रेस्टेड और आर्थर बीगेल ने लिखा है कि "अखेनातेन विश्व इतिहास में पहला मनुष्य था जिसने सामाजिक व धार्मिक बंधनों को तोड़कर अपने व्यक्तिगत आदर्शवाद को मूर्तरूप देने की चेष्टा की। इसलिए इतिहास में उसे इतिहास का प्रथम व्यक्ति कहा जाता है।" हालांकि वह ऐसे समाज में उत्पन्न हुआ जो निम्नतम प्रकार के बहुदेववाद व अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ था, लेकिन इसके बावजूद उसने देवत्व के सही अर्थ को समझा और एक सरल व आडंबरहीन नैतिक एकेश्वरवाद को प्रतिपादित किया।

1358 ई.पू. में अखेनातेन की मृत्यु के साथ उसके धार्मिक विचार समाप्त हो गए। बर्नस के अनुसार, "उसका धर्म उसके साथ ही समाप्त हो गया। इतने पर भी मिस्र के

लोग महान् धार्मिक लोग थे।" इस प्रकार अखेनातेन ने मिस्र के धर्म में नये विचार लाने का प्रयास किया जो धार्मिक क्षेत्र में किसी क्रान्ति से कम नहीं है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

4. पिरामिड युगीन मिस्र का समाज कितने वर्गों में बंटा हुआ था?

   (क) 3 (ख) 4

   (ग) 5 (घ) 6

5. प्राचीन मिस्र में लगान न देने वाले किसानों हेतु दंड के क्या प्रावधान थे?

   (क) नील नदी में उल्टा लटका देना (ख) सिंचाई हेतु पानी पर रोक

   (ग) उपरोक्त दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

6. प्राचीन मिस्र के किस शासक ने मानव इतिहास में सर्वप्रथम बहुदेववाद के स्थान पर एकेश्वरवाद का सिद्धांत प्रचलित किया?

   (क) सम्राट अमेनहोटेप IV (अखेनातेन) (ख) खूफू

   (ग) उपरोक्त दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

1.4 प्राचीन मिस्र में विज्ञान एवं संस्कृति

पिरामिड युग वस्तुतः सांस्कृतिक और कलात्मक प्रगति का युग था। इस बात का उल्लेख किया जा चुका है कि इस काल के फराओ निर्माण कार्य में अधिक अभिरुचि लेते थे और इसलिए वे युद्ध से अधिक संस्कृति और कला को समुन्नत बनाने की दिशा में प्रयत्नशील थे। इस क्षेत्र में उन्होंने शिक्षा, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, लिपि और कला का समुचित विकास किया।

1.4.1 विज्ञान (Science)

प्राचीन मिस्र में विज्ञान विकसित अवस्था में था। मिस्र के लोगों ने व्यावहारिक (ज्ञान) विज्ञान पर अधिक बल दिया। उनकी बड़ी समस्या नील की बाढ़ के समय का पूर्वानुमान लगाना था जिसके लिए खगोल का ज्ञान आवश्यक था उसी प्रकार पिरामिडों आदि के निर्माण के लिए गणित अनिवार्य था। अतः मिस्र में व्यावहारिक विज्ञान का विकास हुआ। विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति का विवरण इस प्रकार है–

यंत्र विद्या (Mechanics)

पिरामिड युग में यंत्र विद्या ने काफी उन्नति की थी और मिस्र के स्थापत्यकारों को यंत्र विद्या का आश्चर्यजनक ज्ञान या। पिरामिडों, स्फिंक्स आदि के निर्माण में पत्थरों को काटना–तराशना पड़ता था। पत्थर के विशाल खण्डों में खुदाई एवं नक्काशी करके अपने मनोनुकूल काम करना पड़ता था। इससे अनुमान लगाया जाता है कि पिरामिड युग में यंत्र विद्या ने समुचित प्रगति कर ली थी।

टिप्पणी

खगोलशास्त्र (ज्योतिष) (Astrology) :

मिस्र के लोगों को खगोलशास्त्र का ज्ञान था। उन्होंने आदिम यंत्रों की मदद से ग्रहों तथा उपग्रहों व आकाश के प्रमुख नक्षत्रों का अध्ययन करके 4236 ई.पू. में सौर पंचांग की रचना कर ली थी। यह पंचांग मानव जाति को मिस्र की महान देन है। इस पंचांग में मिस्रवासियों ने वर्ष को चार–चार माह की तीन ऋतुओं में बांटा था। उन्होंने प्रत्येक माह को 30 दिन तथा दिन को 24 घंटों में बांटा था। उन्होंने वर्ष में 365 दिन रखे थे। बारहवें मास के अन्त में पांच दिन जोड़कर वे सूर्य वर्ष चन्द्र वर्ष में साम्य बैठा लेते थे। इस आविष्कार के आगे मिस्र के वैज्ञानिक कुछ और न कर सके परन्तु ग्रहों के संबंध में उन्होंने कुछ सिद्धातों का प्रतिपादन अवश्य किया, यद्यपि ग्रहण के कारणों का वे पता नहीं लगा सके। समय की जानकारी के लिए उन्होंने जल घड़ी व धूप घड़ी का भी इस युग में आविष्कार किया था।

गणित (Mathematics)

मिस्रवासी गणित से भी परिचित थे। नील नदी में आने वाली बाढ़ तथा पिरामिडों के निर्माण ने मिस्रवासियों को गणित का ज्ञान करवाया। बाढ़ रोकने के लिए भूमि की पैमाइश एवं बांध बनाना अति आवश्यक था अतः गणित का ज्ञान आवश्यक था। वे 1 से 9 तक की संख्या के चिह्नों से परिचित थे। यद्यपि उन्हें शून्य का ज्ञान नहीं था। संभवतः वे दशमलव से परिचित थे। दस या सौ आदि संख्याओं के लिए वे सांकेतिक चिह्नों का प्रयोग करते थे। गणित के मुख्य नियम–जोड़, घटा और भाग– व्यापार और प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आविष्कृत हो चुके थे। परन्तु वे गुणा करना नहीं जानते थे। जोड़ से ही वे गुणा का काम चलाते थे। वे गणित तथा ज्यामिति की प्रारंभिक समस्याओं को हल कर लेते थे। वृत्त, वर्ग, आयत एवं त्रिभुज आदि का उन्हें ज्ञान था। वृत्त, अर्द्धवृत्त एवं सिलेण्डर (बेलन) का क्षेत्रफल निकालना उन्हें आता था परन्तु विषम चतुर्भुज का क्षेत्रफल निकालना उनके लिए प्रायः असंभव था। विभिन्न प्रकार की भुजाओं का उन्हें ज्ञान था, परंतु भवनों की आधार योजना बनाने में वे बहुत कुशाग्र थे। उनके कारीगर स्तंभों और मेहराबों के प्रयोग से परिचित थे।

चिकित्सा शास्त्र (Medical Science)

मिस्र के लोगों ने चिकित्सा विज्ञान में भी प्रगति कर ली थी। इस शास्त्र का ज्ञान पेपीरस पत्र पर लिखे लेख से होता है। इम्होतेप प्राचीन मिस्र का प्रसिद्ध चिकित्सक था व फराओ जोसर का मंत्री था। मिस्र में नेत्र रोग, उदर रोग एवं स्त्री रोगों के अलग–अलग चिकित्सक होते थे। नेत्र रोगों के उपचार के लिए मिस्र को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी। संभवतः शल्य चिकित्सा का ज्ञान उन्हें नहीं था क्योंकि वे शव की चीर–फाड़ करना अधार्मिक कार्य मानते थे। मिस्र में औषधि शास्त्र से संबंधित कुछ पत्र मिले हैं। इनमें द इडविन स्मिथ पेपीरस, द हर्स्ट पेपीरस, द बर्लिन मेडिकल पेपीरस, द लन्दन मेडिकल पेपीरस आदि प्रमुख हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मिस्र के लोग स्वास्थ्य के प्रति अति सजग थे। डिओडोरस के अनुसार, "मिस्रवासी आंतों की सफाई के लिए उपवास रखते थे।" यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने मिस्र के लोगों को लीबिया के बाद संसार के सबसे स्वस्थ व्यक्ति बताया था। मिस्र के लोगों ने रसायनशास्त्र में कुछ ऐसे लेप तैयार किए थे जिनसे शव को कई शताब्दियों तक

यथावत् सुरक्षित रखा जा सकता था। यह एक बहुत बड़ा आविष्कार था। किन्तु रसायन और भौतिक शास्त्रों में उनका ज्ञान अत्यन्त ही सीमित था।

1.4.2 संस्कृति (Culture)

टिप्पणी

प्राचीन मिस्र के निवासियों ने सांस्कृतिक क्षेत्र में भी काफी प्रगति की थी। पिरामिड युग में तो फराओ युद्ध से अधिक कला व संस्कृति को उन्नत बनाने के लिए प्रयत्नशील थे। इसलिए उन्होंने शिक्षा साहित्य, कला, विज्ञान, दर्शन, लिपि का समुचित विकास किया। सांस्कृतिक प्रगति का दौर मध्ययुग एवं साम्राज्यवादी युगों में भी जारी रहा। यद्यपि विदेशी हिक्सोस जाति के आधिपत्य एवं साम्राज्यवादी राजवंशों के पतन के काल में लुटेरों व असामाजिक तत्त्वों व बर्बर जातियों ने इस प्रगति को रोकने का प्रयास किया एवं अनेक कलाकृतियों एवं समाधियों को नष्ट भी किया तो भी मिस्र के सांस्कृतिक विचारों को दबाया नहीं जा सका। मिस्र में संस्कृति के विभिन्न अवयवों का विवरण इस प्रकार है–

लिपि (Script) :

लिपि और लेखन कला दोनों एक दूसरे पर आश्रित होती है। लेखन कला का ज्ञान होने पर व्यक्ति लिपि की खोज करता है। आदिकालीन मानवों में नील घाटी के लोगों ने प्रथम वंश के आरंभ में लेखन–विद्या सीखी तथा चतुर्थ वंश की समाप्ति तक इस क्षेत्र में काफी उन्नति कर ली। निश्चित रूप से लिपि और लेखन की खोज से मिस्र में अभिव्यक्ति सहज हो गई। परंतु प्रश्न यह है कि प्राचीन मिस्रवासियों को लेखन–कला के ज्ञान की क्या आवश्यकता पड़ी? इसके पीछे बहुत से कारण थे। एक तो मृतक संस्कार के लिए मंत्रों को याद रखना जरूरी था, किंतु प्रत्येक काल में ये मंत्र याद नहीं रखे जा सकते थे। अतः इसका संरक्षण बहुत जरूरी हो गया था। संरक्षण की भावना के साथ ही लिपि और लेखन की आवश्यकता की खोज की गई। इनकी खोज से ही आगामी संतति के लिए मृतक संस्कार के मंत्रों को सुरक्षित रखा जा सकता था। दूसरा, आर्थिक और प्रशासनिक कारणों ने भी लिपि और लेखन की खोज के लिए उत्प्रेरित किया। प्रारंभिक वंशीय युग से ही मिस्र के फराओ अपनी भू–संपत्ति की हर दूसरे वर्ष गणना करते थे। जब भू–संपत्ति बढ़ चली, तब गणना संभव नहीं रही। अब प्रति दूसरे वर्ष की भू–संपत्ति का ब्योरा रखना जरूरी हो गया। इसके अतिरिक्त कोषागार से संबंधित अधिकारियों को राज्य की आय और व्यय का विवरण रखना होता था। अतः ये सभी कार्य लेखन कला के ज्ञान के बिना संभव नहीं थे।

दुनिया के इतिहास में लेखन कला को विकसित करने का श्रेय मिस्रवासियों को ही प्राप्त है। प्रो. अमर फारुखी की मान्यता है कि लगभग 3200 ई.पू. तक मिस्र ने एक लिपि विकसित कर ली थी। इस लिपि को चित्राक्षर लिपि (hieroglyphic script) कहते हैं जिसका यूनानी भाषा में अर्थ होता है– पवित्र नक्काशी। यूनान के लोग जब मिस्र पहुंचे तो उन्होंने मंदिरों तथा पिरामिडों में पत्थरों पर इस लिपि को खुदे देखा। इस कारण इस लिपि को उन्होंने 'पवित्र नक्काशी' या 'पवित्र चिह्न' कहना शुरू कर दिया। मिस्र की लिपि के संकेत प्राचीन सुमेरी कीलाक्षर लिपि से एकदम भिन्न प्रकार के हैं। लेखन की पद्धति रेखुस सिद्धान्त पर आधारित बताई जाती है जिसमें वस्तुओं, शब्दों या अक्षरों को अंकित करने के लिए चित्र लेख समुच्चय या संकेत का प्रयोग होता है। इस

टिप्पणी

लिपि में कुल मिलाकर 2000 चित्राक्षर थे। इस लिपि में भावबोधक, ध्वनिबोधक व संकेतसूचक तीन प्रकार के चिह्न हैं। इन तीनों प्रकारों का प्रयोग एक साथ ही किया जाता था। उदाहरण के लिए प्रथम राजवंश के एक शासक का नाम नरमेर था। उसकी एक स्लेट की पट्टिका मिलती है जिसमें उसकी उपलब्धियों को भावों एवं संकेतों द्वारा दर्शाया गया है। पट्टिका के मध्य में राजा की आकृति है। वह एक पराजित शत्रु को अपनी गदा से आतंकित कर रहा है। पट्टिका के ऊपरी भाग में एक मछली का तथा दूसरा छेनी का चित्र अंकित है। इन चित्रों में पहला 'नर' नामक मछली है तथा दूसरा छेनी जिसका उच्चारण 'मेर' था। इस प्रकार दोनों को मिलाकर राजा का होरुस नाम 'नरमेर' लिखा गया है। इस लिपि में चित्रों को यथार्थ रूप में बनाने में समय लगता था। इसलिए मिस्रवासियों ने द्रुत अथवा फसीट लिपि का आविष्कार कर लिया। कालान्तर में इन्हीं चित्राक्षरों के आधार पर मिस्र के लोगों ने शब्दों तथा वर्णमालाओं का आविष्कार किया। इस युग में मिस्र में 24 अक्षरों की वर्णमाला तैयार की गई। वर्णमाला के आविष्कार के बाद भी चित्रलिपि व ध्वनि लिपि का प्रयोग पहले की तरह जारी रहा। वर्णमाला का प्रयोग भावबोधक व ध्वनिबोधक शब्दों, चित्रों के सहायक के रूप में प्रयोग किया गया। मिस्र के लोगों ने 8वीं सदी ई.पू. डिमाटिक लिपि का आविष्कार किया जो एक प्रकार की शार्टहैण्ड लिपि कही जा सकती है। इसका प्रयोग यूनानी व रोमन युग में हुआ। प्रसिद्ध रोसेटा प्रस्तर अभिलेख इसी लिपि में है। मिस्र के लोग इस लिपि का थोड़ा संशोधित रूप भी प्रयोग करते थे जिसे पुरोहित लिपि कहते हैं। इस लिपि में संकेत सरल थे तथा ज्यादा गोल थे। अतः इसमें जटिलता कम थी। इस लिपि (पुरोहिती) का प्रयोग दैनिक जीवन के कामों के लिए किया जाता था। मिस्र के लोग पेपीरस (पपाइरस) घास से कागज बनाते थे। गोंद की सहायता से इस पत्र को जोड़कर छोटा या बड़ा बताया जा सकता था। ब्रिटिश संग्रहालय में उपलब्ध पेपीरस कागज 135 फीट लम्बा तथा 17 इंच चौड़ा है। मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े, शिलाखण्डों पर भी लेखन कार्य होता था। सरकण्डे की कलम, ब्रुश, लकड़ी की दवात व स्याही का प्रयोग लिखने के लिए होता था। स्याही, कागज, गोंद तथा पानी मिलाकर बनायी जाती थी। तूतनखामन की समाधि से लिपिकों के अनेक उपकरण प्राप्त हुए हैं। मिस्री लिपि का महत्त्व स्पष्ट करते हुए एच.ए. डेविस ने लिखा है कि "लेखन कला का आविष्कार तथा विकास मिस्र में ही हुआ तथा यहां से अन्य भूमध्य सागरीय देशों में फैला।" सरदेसाई का भी मानना है कि "लेखन कला के आविष्कार ने मानव समाज में सबसे बड़ी क्रान्ति उत्पन्न की और उसके लिए संसार को मिस्र का कृतज्ञ होना चाहिए।"

शिक्षा (Education)

प्राचीन मिस्र में शिक्षा की समुचित व्यवस्था थी। संभवतः विश्व में सबसे पहले शिक्षा का विकास पिरामिड युग में मिस्रवासियों ने किया था। शिक्षा के क्षेत्र में प्रशंसनीय प्रगति की। फराओ भी शिक्षा और साहित्य में विशेष रुचि दिखाते थे। प्रारंभिक शिक्षा के लिए मिस्र में पाठशालाओं का निर्माण किया गया था। 4 वर्ष की आयु में ही बच्चों को पाठशालाओं में भर्ती कर दिया जाता था। चूंकि मिस्र में राजकार्यालयों और सामंतों के दफ्तरों में कार्य करने वाले लिपिकों की भारी संख्या में जरूरत थी, इसलिए संपूर्ण देश में पाठशालाओं का जाल–सा बिछा दिया गया था। इन पाठशालाओं के अतिरिक्त मंदिरों में भी शिक्षा प्रदान की जाती थी। राजकीय पाठशालाओं में विशुद्ध शिक्षक शिक्षा देने

का कार्य करते थे तथा मंदिरों में पुजारी। पूरे देश में शिक्षा की व्यवस्था करना मुख्य पुरोहित का काम था।

विद्यार्थियों को चित्र लिपि, गुणा–भाग व दशमलव का ज्ञान करवाया जाता था। उच्च शिक्षा में प्रायः खगोल विद्या व धर्म की शिक्षा दी जाती थी। मिस्रवासियों की खगोलविद्या में अत्यधिक रुचि थी। सेस तथा हैलियोपेलिस उस समय के शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। सभी छात्रों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती थी। पाठ्यक्रम, लेखनकला तथा सदाचार से संबंधित होता था। उस समय ऐसा मत प्रचलित था कि जब तक बच्चों को पीटा नहीं जाता, वे शिक्षा ग्रहण नहीं करते। इसलिए कहावत प्रचलित थी, "छात्रों की पीठ पर कान होते हैं, इसलिए वे तभी सुनते हैं जब उन्हें पीटा जाता है।" मिस्र में लड़कियों के लिए भी शिक्षा की व्यवस्था थी परन्तु यह केवल शाही परिवारों व उच्च वर्ग तक ही सीमित थी। रानी हातशेपसुत ने अपनी बड़ी बेटी की शिक्षा का दायित्व प्रसिद्ध विद्वान सेनेनमट को सौंपा था। प्राचीन मिस्र में किसानों तथा दासों के लिए शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। प्रो. गोयल ने लिखा है कि "मिस्र में शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को अच्छा पद पाने के योग्य बनाना था, विशुद्ध ज्ञानार्जन नहीं।" पाठ्यक्रम, लेखनकला और सदाचार से संबंधित होता था। एक वृत्तांत में शिक्षक कहता है, "विद्यार्जन में मन लगाओ और उससे अपनी माता के समान स्नेह करो।" एक अन्य स्थान पर वर्णन है, "देखो! ऐसा कोई व्यवसाय नहीं है जिसे कोई दूसरा नियंत्रित न करता हो। केवल ज्ञानी ही अपने को नियंत्रित करता है।"

टिप्पणी

1.4.3 साहित्य (Literature)

प्रो. नैमिशरण मित्तल ने डेवीस को उद्धृत करते हुए लिखा है कि "मिस्र के विकास का एक महत्त्वपूर्ण आयाम साहित्य था।" पटेर के कागज पर लिखा हुआ विशाल मिस्री साहित्य उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त मंदिरों व पिरामिडों में मिलने वाले लेख भी इस साहित्य का भाग हैं। कर्नाक व लक्सर के मंदिरों के पीछे पहाड़ियों में महान व्यक्तियों की कब्रों की दीवारों, मूर्तियों आदि पर अनेक गाथाएं मिलती हैं। अलाटन की राजधानी अल–अर्मना की खुदाई से मिले संग्रहालय में मिट्टी की पट्टियों पर खोदे गए लगभग 500 पत्र व अन्य दस्तावेज भी मिस्री साहित्य का भाग हैं। तत्कालीन उपलब्ध साहित्य को सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम– धार्मिक साहित्य, द्वितीय– लौकिक साहित्य एवं तृतीय– दार्शनिक साहित्य। इस साहित्य का विवरण इस प्रकार है–

(i) धार्मिक साहित्य : प्राचीन मिस्र के धार्मिक साहित्य की प्राचीनता हमें पिरामिड ग्रन्थ तक ले जाती है। पांचवें राजवंश के शासनकाल में बने पिरामिड की दीवारों पर खोदे गए मृतक संस्कारों से संबंधित मन्त्रों एवं प्रार्थनाओं आदि को पिरामिड ग्रन्थ कहा जाता है। धार्मिक साहित्य की श्रेणी में 'शासकीय सूर्य स्रोत', एमेनेमोप की रचना 'एमेनेमोप का उपदेश' को भी रखा जाता है। इस कृति में मानव को शान्त, उदार एवं ईश्वर से डरने की सलाह दी गई है। 'मृतकों की किताब' (The Book of Deads) भी धार्मिक साहित्य में शामिल है। इस पुस्तक में मृत्यु के बाद के जीवन पर गहन चर्चा की गई है। इस पुस्तक में राजा या फराओ के कार्य लिपिबद्ध हैं।

टिप्पणी

(ii) लौकिक साहित्य : प्राचीन मिस्र के लेखकों व साहित्यकारों ने लौकिक साहित्य की भी रचना की। नाटक, प्रेमगीत, विजयगीत एवं कहानियां लौकिक साहित्य के क्षेत्र में मिस्रवासियों की महत्त्वपूर्ण देन मानी जा सकती हैं। लगभग 300 ई.पू. की रचना मेम्फाइट ड्रामा में सौर सम्प्रदाय के सिद्धान्त का अभिभाषण है। सृष्टि नाटक, अभिषेक नाटक, होरुस एवं सेतेख नाटक भी उल्लेखनीय हैं। प्राचीन गीतों में भाई एवं बहन के बीच प्रेम का वर्णन मिलता है। इन गीतों में 'तुम्हारी भगिनी के सुन्दर एवं आनन्दायक गीत' महत्त्वपूर्ण है। रमिसीज द्वितीय एवं मर्नेष्य के विजयगीत भी उल्लेखनीय हैं। कहानियों में सिनुहे की कहानी, अभागे राजकुमार की कहानी व दो भाइयों की कहानी महत्त्वपूर्ण हैं। विद्वानों का विचार है कि मिस्र का कथा साहित्य उपन्यास शैली के अधिक निकट है। एम. मुरे ने सिनुहे की कथा को आधुनिक उपन्यासों की आधारशिला कहा है।

(iii) दार्शनिक साहित्य : प्राचीन मिस्र में दर्शन शास्त्र का भी विकास हुआ। इसलिए वहां नैतिक प्राकृतिक साहित्य में भी रचना हुई। इसमें अमनेहोप का विवेक, ताहोतेप के सिद्धान्त, सुवकता किसान के तर्क एवं वीणावादक का गान नामक पुस्तकें अत्यन्त महत्त्व की हैं।

1.4.4 कला (Arts)

तत्कालीन मिस्र की सभ्यता में निर्मित मस्तवों, मंदिरों तथा पिरामिडों को देखने से यह ज्ञात होता है कि मिस्र के लोगों को न केवल वास्तुकला, शिल्पकला और मूर्तिकला का ज्ञान था बल्कि वे हर दृष्टि से निपुण कलाकार थे तथा आज भी उनकी कला, उनकी क्षमता, सफाई आधुनिक कलाकारों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। अपनी पुस्तक 'दि स्टोरी ऑफ दि अर्ट थ्रूआउट दि ऐजेज' में सलोमन रेनच लिखते हैं, "बहुत सूक्ष्म परिवर्तन करके हमने मिस्र के लोगों की सौंदर्य कला को आज भी अपना रखा है जिसको उन्होंने कमल तथा पेपीस्स आदि से सीखा– आधुनिक स्वर्णकार तथा आभूषण निर्माता आज भी प्राचीन मिस्री आभूषणों से प्रेरणा लेते हैं– उन्होंने कब्रों, मस्तवों, पिरामिडों तथा मंदिरों की दीवारों पर ऐतिहासिक, धार्मिक तथा घरेलू दृश्यों का जो चित्रण किया है वह मिस्र के शक्तिशाली शासकों के महान कार्यों को आज भी उजागर करते हैं।"

वास्तुकला (Architecture)

मिस्र के प्रारंभिक मकान सरकंडे व मिट्टी की सहायता से बनाए जाते थे। छतें घास–फूस एवं पुआल की होती थी। मिस्र के प्रारंभिक भवनों के अवशेष नष्ट हो गए हैं क्योंकि घरों में लगने वाली सामग्री जल्दी नष्ट होने वाली थी। तृतीय राजवंश के पश्चात् मकानों में लकड़ी का प्रयोग किया जाने लगा था।

विश्व की स्थापत्य कला के इतिहास में मिस्र के पिरामिड भवन निर्माण कला के सुन्दर नमूने हैं। नीलवासियों के राष्ट्रीय जीवन के आदर्शों की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति उनके पिरामिडों में हुई। अगर फराओ अमर थे तो उनके शवों की सुरक्षा और निवास के लिए उनकी महत्ता के अनुरूप विशाल और स्थायी समाधियों का निर्माण जरूरी था। प्राचीन यूनानी इन पिरामिडों को विश्व के सात आश्चर्यों में मानते थे। आज भी ये प्राचीन विश्व के सभी अवशेषों में सबसे अधिक आकर्षण के विषय हैं। बिल डयूरेन्ट ने लिखा है कि "ये पिरामिड गगनमुखी हैं, जो अपनी भव्यता एवं विशालता की दृष्टि से

टिप्पणी

विश्व इतिहास में बेजोड़ सिद्ध हुए हैं तथा दुनिया के आश्चर्यों में इन्हें विशिष्ट स्थान प्राप्त है।" पिरामिड शब्द की व्युत्पति मिस्री शब्द पि–रे–मस से हुई है जो किसी ऊंचे निर्माण को स्पष्ट करता है। परन्तु व्यावहारिक रूप में पिरामिड का अर्थ मिस्र में निर्मित विशेष प्रकार के भवनों से है। प्रो. गोयल ने पिरामिड निर्माण के उद्देश्य को स्पष्ट करते लिखा है कि "मिस्र के लोगों ने पिरामिडों की रचना अपने राज्य तथा उसके प्रतीक फराओ की अनश्वरता और गौरव को अभिव्यक्त करने के लिए की थी। अगर फराओ अमर थे तो उनकी मृत देह की सुरक्षा और उनके निवास उनकी महत्ता के अनुरूप विशाल और स्थायी समाधियों का निर्माण आवश्यक था।"

मिस्र में लगभग 80 पिरामिडों की खोज की जा चुकी है। 2980 ई.पू. के आसपास जोसेर के मंत्री इम्होतेप ने सक्कर के निकट एक विशाल मस्तव के ऊपर पांच मंजिलें बनवाकर सुप्रसिद्ध 'सीढ़ीदार पिरामिड' (स्टेप पिरामिड) का निर्माण करवाया। अब तक मिले पिरामिडों में गीजा का पिरामिड विश्व प्रसिद्ध है जिसे सम्राट खुफू ने बनवाया था। यह पिरामिड 13 एकड़ जमीन पर बना हुआ है और यह 484 फीट ऊंचा और 755 फीट लंबा है। इसमें ढाई–ढाई टन भार के 23 लाख पाषाण–खंड लगे हैं। इनका निर्माण 20 वर्षों में पूरा हुआ। इतिहास के पितामह हेरोडोट्स के अनुसार इसे एक लाख कारीगरों ने बनाया था। आधुनिक काल के बहुत कम कारीगरों में ऐसे भवन बनाने योग्य दक्षता है। आधुनिक मशीनरी के अभाव में इस प्रकार के महान भवनों का निर्माण करना वास्तव में आश्चर्य की बात है। सादगी और विशालता इन पिरामिडों का विशेष कलात्मक गुण है।

पिरामिडों के अतिरिक्त मंदिरों का भी निर्माण किया गया। इनका निर्माण मध्य राज्य युग एवं साम्राज्य युग में हुआ। मिस्र के प्रसिद्ध मंदिरों में रानी हातशेपसुत के शासनकाल में बना कर्नाक का मंदिर, अमेनहोतेप तृतीय के शासनकाल में बना, लक्सर का मंदिर, आबूसिम्बेल का मंदिर प्रमुख हैं। इनसे मिस्र की विकसित भवन निर्माण कला की जानकारी होती है।

मूर्तिकला (Sculpture)

प्राचीन मिस्र में वास्तुकला के साथ–साथ मूर्तिकला का भी विकास हुआ। प्रो. श्रीराम गोयल ने इसे वास्तुकला की सहायक और धर्म से संबंधित माना है। वास्तुकला की भांति विशालता, सुदृढ़ता एवं रूढ़िवादिता मिनी मूर्तिकला की विशेषताएं हैं। समाधियों की खुदाइयों से पत्थर, लकड़ी एवं धातु की अनेक मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। इनमें शासक वर्ग, सामान्य वर्ग एवं पशु–पक्षियों की मूर्तियां हैं। खुदाई से प्राप्त मूर्तियों में राजाओं की पाषाण की विशाल आकार की भावविहीन मूर्तियां हैं। फराओ की यह मूर्तियां दो प्रकार की हैं– बैठी हुई तथा खड़ी हुई। मूर्तियों के आकार–प्रकार के पीछे एक विशेष उद्देश्य या इनके द्वारा राज्य एवं फराओ की शक्ति को दर्शाने का प्रयास किया गया है। कला की दृष्टि से फराओ की बैठी मूर्ति अत्यन्त प्रसिद्ध है। कड़े पत्थर से बनी इस मूर्ति में फराओ के आत्मविश्वास, दृढ़ता एवं उत्साह के दर्शन होते हैं। उस समय मूर्तियों को स्वाभाविक रंगों से रंगा जाता था। परंतु इनके मुखों को भावविहीन बनाया गया था। संभव है कि यह सोचा जाता हो कि अगर राज्य अनश्वर है तो उसके शासक को चिंता, क्रोध, सफलता और असफलता की भावना से रहित होना चाहिए। मूर्तियों को तराशते समय मूर्तिकार इनकी सुंदरता की ओर बहुत ध्यान देते थे। मूर्तिकार साधारण जनों की

मूर्तियां बनाते समय स्वतंत्र रहते थे, इसलिए उनकी प्रतिमाएं उन्होंने अधिक यथार्थिक शैली में बनाई हैं।

टिप्पणी

पत्थर की मूर्तियों में नरसिंह की मूर्ति (स्फिंक्स) बहुत प्रसिद्ध है। इस मूर्ति का शरीर सिंह का है और सिर फराओ का है। यह विशाल मूर्ति गीजा के पिरामिड के पास रेगिस्तान में स्थित है। काहिरा संग्रहालय में सुरक्षित निरीक्षक की मूर्ति को शेख की मूर्ति कहा जाता है। यह मूर्ति लकड़ी की है जिसमें निरीक्षक हाथ में दण्ड लिये हुए अधिकार मुद्रा में कदम बढ़ाते हुए दिखाया गया है। लकड़ी पर तांबा चढ़ाई हुई पेपी प्रथम की मूर्ति विश्वप्रसिद्ध है। यह भी काहिरा संग्रहालय में है। लुब्रे के संग्रहालय में पालथी मारे बैठी लिपिक की मूर्ति भी उल्लेखनीय है। इसको देखने से लगता है कि वह आदर्शों को लिख रहा है। काहिरा संग्रहालय में सुरक्षित तांबे व सोने से बनी हियराकोन पोलिस के पवित्र शयन की मूर्ति भी महत्त्वपूर्ण है। इन उपरोक्त मूर्तियों के अतिरिक्त रानी हातशेपशुत की ग्रेनाइट की मूर्ति, युत्मोस तृतीय की मूर्ति, अखनाटन की मूर्ति तथा बर्लिन संग्रहालय में रखी पशु–पक्षियों की मूर्तियां भी मिस्री मूर्तिकला के प्रमुख नमूने हैं। मिस्र की मूर्तिकला के बारे में चार्ल्स पैरी ने लिखा है कि "यह मानना होगा कि मिनी कलाकारों ने ऐसी कृतियां दी हैं, जिनकी तुलना आधुनिक यूरोप की कलाकृतियों से की जा सकती है।"

चित्रकला (Paniting)

मिस्र में चित्रकला का विकास भी वास्तुकला के सहायक के रूप में हुआ। पिरामिड काल में बर्तनों तथा आभूषणों पर बढ़िया प्रकार की चित्रकारी की जाती थी। कलाकारों ने सजीव चित्र बनाए हैं। ये चित्र मंदिरों की दीवारों पर, मकानों, पिरामिडों आदि पर बनाए जाते थे। चित्रकारों को रंगों का अच्छा ज्ञान था। तीसरे राजवंश की एक समाधि पर छः बत्तखों का चित्र प्राप्त हुआ है जो प्राचीन युग की चित्रकला का उत्कृष्ट नमूना है। सम्राट अखनाटन के समय पशुओं और फूलों के चित्र बनाए गए। बेसी हसन की समाधियों से प्राप्त किसान, शिकार में बैठी बिल्ली के चित्र तथा हिरण के झुण्ड उल्लेखनीय हैं। उस समय डिस्टेम्पर तथा फ्रेस्को दोनों प्रकार के चित्र बनाए गए थे। साम्राज्य युग के चित्रों में दलदल में कूदते जंगली बैल, हिरण तथा तालाब में तैरते हुए बत्तख मिस्री चित्रकला के प्रशंसनीय नमूने हैं। चित्रों में यथार्थता पर अधिक ध्यान दिया जाता था। बिल डयूरेन्ट ने लिखा है कि "इतिहास में अन्य किसी भी जाति ने अपनी कथाओं व अपने इतिहास को दीवारों पर इतनी मेहनत से कभी अंकित नहीं किया जितना मिस्रवासियों ने।"

संगीत एवं नृत्य कला (Dance and Music)

मिस्र में संगीत एवं नृत्यकला के क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई। वंशी, सितार, मृदंग आदि प्रमुख वाद्ययंत्र थे। अमेनहोटेप, नोफट, स्नेफेट तथा रेमरीप्रा आदि प्रमुख संगीतकार थे। सम्राट अमेनहोटप की तुलना अकबर के प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन से की जाती है। मिस्र के बर्तनों पर नृत्य की मुद्राएं यह सिद्ध करती हैं कि नृत्य कला का भी विकास हुआ था। देवदासियां मंदिरों में देवता के आगे नृत्य करती थीं।

अन्य कलाएं (Other Arts) :

उपरोक्त कलाओं के अतिरिक्त मिस्र में अनेक छोटी–छोटी कलाएं भी विकसित हुईं। इनमें मिट्टी के बर्तन बनाने की कला, आभूषण बनाने की कला एवं लकड़ी का सामान

बनाने की कलाएं महत्त्वपूर्ण हैं। तूतेनखामेन की समाधि से लकड़ी के बने विभिन्न उपकरण प्राप्त हुए हैं। मिस्र के सुनार मुकुट, मणिबंध, कंठहार, कर्णफूल आदि सुन्दर आभूषण बनाने में निपुण थे। लकड़ी के फर्नीचर, ताबूत आदि बनाए जाते थे। मिस्र में बने मिट्टी के बर्तनों की तुलना चीन के कलात्मक बर्तनों से की जाती है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

7. दिन (24 घंटे), महीना (30 दिन) एवं वर्ष में 365 दिन वाले सौर पंचांग की रचना का श्रेय किसे जाता है?

   (क) भारत (ख) रोम

   (ग) चीन (घ) मिस्र

8. दुनिया में लेखन कला को विकसित करने का श्रेय किसे प्राप्त है?

   (क) चीन (ख) भारत

   (ग) मिस्र (घ) रोम

9. फराओ के सिर एवं सिंह के शरीर वाली (नरसिंह) मूर्ति किस नाम से प्रसिद्ध है?

   (क) स्फिंक्स (ख) पिरामिड

   (ग) रिलीफ आर्ट (घ) इनमें से कोई नहीं

1.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (क)
2. (ख)
3. (ग)
4. (क)
5. (ग)
6. (क)
7. (घ)
8. (ग)
9. (क)

1.6 सारांश

प्राचीन मिस्र ने राजनीतिक चिन्तन तथा राजनीतिक संस्थाओं के क्षेत्र में काफी विकास किया था। मिस्र की प्रशासनिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का ज्ञान हमें समय–समय पर मिस्र के शासकों द्वारा खुदवाए गए अभिलेखों, भित्तिचित्रों एवं समाधियों से मिले अवशेषों से होता है। मिस्र में राज्य तथा राष्ट्र जैसी अवधारणाओं का विकास धीरे–धीरे हुआ।

टिप्पणी

प्रागैतिहासिक काल में लोग कबीलों में रहते थे तथा कबीलों के सरदार ही सर्वोपरि माने जाते थे। धीरे–धीरे ये सरदार ही कबीले की भूमि के स्वामी माने जाने लगे तथा ये लोग सरदार से सामंत बन गए। इन सामंतों के छोटे–छोटे राज्य प्रशासनिक इकाइयों के रूप में कार्य करते थे।

प्राचीन काल में मिस्र के समस्त प्रशासन का मुखिया राजा या फराओ कहलाता था। सारा प्रशासन उसके इर्द–गिर्द घूमता था। मिस्र की जनता उसकी आज्ञाओं का पालन करना अपना प्रमुख कर्तव्य समझती थी। पिरामिड काल में जोसेर, हरशेपसुट, खूफू, खफ्रे, पेपी द्वितीय आदि शक्तिशाली फराओ गद्दी पर बैठे, जिन्होंने मिस्र में उच्चकोटि की शासन व्यवस्था स्थापित की। फराओ को एक देवता होरुस का अवतार माना जाता था। इसके अलावा उसे पृथ्वी पर ईश्वर का पुत्र भी माना जाता था, इसलिए मिस्र की जनता फराओ को सूर्य देवता रे के रूप में पूजती थी। फराओ बहुत शक्तिशाली एवं निरंकुश शासक की तरह कार्य करता था। वह स्वयं कानून बनाता था, कानूनों को लागू करता था तथा कानूनों का उल्लंघन करने वालों को दंड देता था। किसी भी देश से युद्ध तथा संधि करने का अधिकार केवल फराओ के पास था। वह अपने देश का प्रधान पुरोहित भी होता था।

प्रशासन को सही ढंग से चलाने के लिए फराओ एक परामर्शदात्री सभा (परिषद) का गठन करते थे, जिसे सारू कहा जाता था। इसके अलावा वे अपनी सहायता के लिए प्रधानमंत्री की नियुक्ति करते थे। इस पद पर फराओ किसे नियुक्त करे यह फराओ पर निर्भर था। फराओ के पश्चात् प्रधानमंत्री को अन्य पदाधिकारियों में प्रथम स्थान प्राप्त था।

फराओ का दरबार ही उसका मंत्रिमंडल होता था। इसमें राजस्व अधिकारी, कोषाध्यक्ष, सेनापति, वास्तुविद, प्रधानमंत्री, स्थापत्य अधिकारी, कोषाध्यक्ष, सेनापति व सामंत होते थे। इसमें राजमहिषी (प्रधान रानी) का भी प्रमुख स्थान था। राजकुमार भी प्रशासन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे। फराओ उन्हें अपने संरक्षण में शासन की कला, दरबारी शिष्टाचार तथा अन्य गुणों से परिचित करवाते थे।

फराओ ने मिस्र के साम्राज्य को विभिन्न प्रांतों में बांटा हुआ था। प्रारम्भ में उन्होंने मिस्र को दो भागों– उत्तरी मिस्र तथा दक्षिणी मिस्र में विभाजित किया। उन्होंने आगे चलकर समस्त मिस्र को 40 प्रांतों में विभाजित किया। ये प्रान्त वही प्राचीन राज्य थे, जिनका एकीकरण मेनीज द्वारा किया गया था।

इस काल में न्याय प्रणाली अति सरल थी। लिखित कानून के आधार पर न्याय होता था। झूठी गवाही देने वालों को मृत्युदंड की सजा दी जाती थी। दंड विधान कठोर था। राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने वालों को अंग–भंग की सजा मिलती थी इसके अलावा डंडों से पीटना, देश निकाला देना तथा जीवित मनुष्य की ममी बना देना आदि सजाएं थीं। इस युग के न्याय की महत्त्वपूर्ण विशेषता थी कि कानून सबके लिए, समान होता था। राजपरिवार से संबंधित व्यक्ति को भी अपराध करने पर उतनी ही सजा मिलती जितनी कि आम आदमी को अपराध करने पर।

इस युग में राज्य की आय का मुख्य साधन भू–राजस्व था जो उपज का 1/10 से 1/20 तक लिया जाता था। चूंकि मिस्र में फराओ को राजस्व से बहुत आय होती थी इसलिए उन्होंने राजस्व प्रशासन को बहुत ही कुशल ढंग से संगठित किया हुआ

था। प्राचीन मिस्र में राज्य की आय, धन, अन्न, पशु, मधु तथा अन्य प्रकार के सामान के रूप में होती थी।

टिप्पणी

पिरामिड युग सैन्य संगठन की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता। इसके लिए कुछ विशेष कारण थे– एक तो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण सदैव विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रहा और दूसरा फराओ विजयों की अपेक्षा निर्माण कार्यों को ज्यादा प्राथमिकता दिया करते थे। यही कारण था कि फराओ ने अपने साम्राज्य में स्थायी सेना की नियुक्ति नहीं की। मिस्र के तीसरे राजवंश काल की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति वाले फराओ ने सैनिक संगठन करना प्रारंभ कर दिया। हालांकि वे अभी पूर्ण रूप से नोमार्कों तथा मंदिरों के पुरोहितों की सेनाओं पर आश्रित रहते थे। सैनिकों की आवश्यकता आंतरिक विद्रोहों के दमन के लिए होती थी। अतः इस युग में मिस्र का सैनिक संगठन सुदृढ़ नहीं था। सैनिक प्रशिक्षित नहीं थे और युद्ध तथा विद्रोह के समय किसी भी व्यक्ति को सेनापति के पद पर नियुक्त किया जा सकता था।

मिस्र में महिलाओं की स्थिति प्राचीन काल के अन्य सभ्य देशों की तुलना में बड़ी अच्छी थी। उन्हें पुरुषों के समान राजनीतिक तथा आर्थिक अधिकार प्राप्त थे। वे स्वतंत्र संपत्ति रख सकती थीं। चूंकि समाज का रूप मातृसत्तात्मक था, अतः स्त्रियां पूर्ण रूप से स्वतंत्र थीं। आवश्यकता पड़ने पर वे शासन की बागडोर को संभालने में भी सक्षम थीं।

प्राचीन मिस्र में लोग उच्चकोटि का पौष्टिक व स्वादिष्ट भोजन करते थे। वे गेहूं, चावल, जौ, चना, मक्का तथा विभिन्न प्रकार की दालें तथा सब्जियां आदि को भोजन के रूप में प्रयोग करते थे। भोजन में घी, दही, दूध, मक्खन भी बहुत मात्रा में लिया जाता था। उच्च वर्ग के लोग बहुत स्वादिष्ट तथा पौष्टिक भोजन करते थे। वे नाना प्रकार के पकवान, हलवा, मिठाइयां, बढ़िया प्रकार के मांस आदि का प्रयोग भी करते थे। उस समय भोजन के साथ अच्छी प्रकार की शराब भी प्रयोग की जाती थी। मांसाहारी लोग सुअर, घड़ियाल, मछली, कबूतर, बत्तख, सारस तथा हंस का मांस खाते थे। परन्तु निम्न वर्ग के लोगों का भोजन सादा होता था।

मिस्र के लोगों का आचरण एवं व्यवहार भी उच्च कोटि का था। वे एक–दूसरे के प्रति सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करते थे। इस तथ्य की पुष्टि एक कवि के लेख से होती है जिसमें कहा गया है कि जिसके पास खेती नहीं है उसे रोटी दो और सदा के लिए सुयश प्राप्त करो।" बूढ़े, बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाते थे। उदाहरण के लिए, "किसी विधवा की जमीन मत हड़पना। जबरदस्ती प्राप्त किए गए मण भर अनाज से ईश्वर द्वारा दिया गया एक सेर अनाज बेहतर है।" इस प्रकार प्राचीन मिस्र में उच्च नैतिक मूल्य विद्यमान थे।

पिरामिड कालीन मिस्र की सभ्यता में धर्म का बहुत महत्त्व था। मिस्रवसियों का जीवन धर्म से बहुत प्रभावित था। वे विश्व के सबसे धर्मनिष्ठ लोग थे। उनकी राज्य व्यवस्था, साहित्य तथा दर्शन धर्म पर ही आधारित थे। मिस्र के लोग बहुदेववादी थे। प्रत्येक नगर राज्य में उनका एक अलग देवता होता था। उस समय मिस्र के समाज में 2000 देवी–देवताओं की उपासना की जाती थी।

मिस्र में देवी–देवताओं के लिए अनेक मंदिर बनाए गए थे। मंदिरों में पुजारियों की देखरेख में पूजा कार्य सम्पन्न होता था। धनाढ्य लोगों की ओर से मंदिरों को

टिप्पणी

जागीर, दान तथा भेंट प्रदान की जाती थीं। मिस्र में प्रधान पुरोहित स्वयं फराओ अर्थात् राजा होता था।

पिरामिडयुग के मंदिरों में आगे एक खुला आंगन होता था जिसके पीछे स्तंभों वाले बड़े कक्ष तथा उनके पीछे छोटे कक्ष होते थे जिनका उपयोग भंडार के रूप में किया जाता था। छोटे कक्षों के बीच में गर्भगृह होता था जिसमें लकड़ी की प्रतिमा स्थापित होती थी जिसकी लम्बाई एक फुट से छः फुट तक होती थी। इस देव प्रतिमा को सोने–चांदी एवं कीमती पत्थरों द्वारा सजाया जाता था। देवता की प्रतिमा को उत्तम प्रकार का भोजन, पेय तथा वस्त्र आर्पित करना तथा गायन व वादन से प्रसन्न करना पूजा करने के तरीके थे। राजा मंदिरों के व्यय के लिए राजकोष से खाद्यान्न, सामग्री सुरा, मधु तथा तेल आदि देता था। मंदिरों की अपनी भूमि से भी आय होती थी तथा उपासकों द्वारा दिया गया दान भी मंदिरों की आय के मुख्य स्रोत थे।

मिस्र निवासी कट्टर परलोकवादी थे। मिस्र के इतिहास में प्रागैतिहासिक काल से ही पारलौकिक मान्यताएं विद्यमान थीं। "परलोकवाद को जितना महत्त्व मिस्री धर्म में मिला उतना शायद किसी अन्य धर्म में नहीं। मिस्र में जलवायु शुष्क होने के कारण मृतक शरीर लम्बे समय तक नष्ट नहीं होते थे इसलिए उनका मृत्यु के उपरांत जीवन के सिद्धांत में विश्वास उत्पन्न हुआ।" मिस्र के लोग मृत्यु को जीवन का अन्त न मानकर उसे एक घटना मात्र मानते थे। उन्होंने ऐहिक जीवन के अनुरूप ही पारलौकिक जीवन की कल्पना की थी।

मिस्र के लोगों को खगोलशास्त्र का ज्ञान था। उन्होंने आदिम यंत्रों की मदद से ग्रहों तथा उपग्रहों व आकाश के प्रमुख नक्षत्रों का अध्ययन करके 4236 ई.पू. में सौर पंचांग की रचना कर ली थी। यह पंचांग मानव जाति को मिस्र की महान देन है। इस पंचांग में मिस्रवासियों ने वर्ष को चार–चार माह की तीन ऋतुओं में बांटा था। उन्होंने प्रत्येक माह को 30 दिन तथा दिन को 24 घंटों में बांटा था। उन्होंने वर्ष में 365 दिन रखे थे।

1.7 मुख्य शब्दावली

- **हिक्सोस** : एक समय के लिए निचले मिस्र पर विजय प्राप्त करने वाले लोग। वे बेहतर हथियार और रथ लेकर आए।
- **निचला मिस्र** : प्राचीन मिस्र का उत्तरी आधा हिस्सा। इसे निचला मिस्र कहा जाता था क्योंकि यह नील नदी के अंत में था जहां यह भूमध्य सागर में प्रवेश करती थी।
- **ऊपरी मिस्र** : मिस्र राज्य का दक्षिणी आधा भाग। इसे ऊपरी मिस्र कहा जाता है क्योंकि नील नदी ऊपरी मिस्र से निचले मिस्र तक बहती है।
- **गीज़ा** : एक जगह जहां कई बड़े पिरामिड और महान स्फिंक्स का निर्माण किया गया था।
- **सारू** : फराओ अपने प्रशासन को सही ढंग से चलाने के लिए एक परामर्शदात्री सभा का गठन करते थे जिसे सारू कहा जाता था।

टिप्पणी

- **ममी** : मिस्रवासी अपने मृतकों के शवों को विविध प्रकार की दवाएं लगाकर स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास करते थे। इन शवों को ममी कहा जाता है।
- **हिक्सोस जाति** : मिश्रित सेमेटिक और एशियाई मूल के लोग जिन्होंने मिस्र पर आक्रमण किया और नील डेल्टा क्षेत्र में बस गए।
- **मुष्ठि युद्ध** : यह एक निःशस्त्र मार्शल आर्ट है। इसमें पंच, किक, घुटने तथा कोहनी की स्ट्राइक का प्रयोग होता है, हालांकि पंचों की प्रमुखता होती है।
- **शाडूफ (ढेकुली)** : यह सिंचाई की एक परंपरागत सिंचाई व्यवस्था होती थी। कुओं से पानी निकालने का सबसे सुलभ साधन ढेंकुल का होता था जो कि लीवर के सिद्धान्त पर काम करने वाली एक संरचना है।
- **हुण्डी** : आपस में लेन–देन के समय लिखकर दिया जाने वाला महाजनी चेक।
- **मस्तव** : मिस्रवासी पिरामिडों में फराओ के शवों को सुरक्षित रखते थे। इन समाधियों को मस्तव कहा जाता था।
- **पेपीरस** : मिस्र के लोग कागज बनाने के लिए पेपीरस नामक पेड़ का तना काटकर पट्टियां बनाते थे।
- **स्फिंक्स** : नीलवासी पशुओं के शरीर पर मनुष्यों के चित्र बनाते थे जिसे स्फिंक्स कहा जाता था।
- **हाइरोग्लाइफिक** : चित्रलिपि से संबंधित।

1.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. प्राचीन मिस्र जिन दो प्रमुख भागों में विभक्त था उनके नाम बताइए।
2. किस शासक ने कब इन दोनों भागों का एकीकरण किया?
3. मिस्र के राजा या फराओ के बारे में संक्षिप्त जानकारी दीजिए।
4. प्राचीन मिस्र में राजकुमार एवं प्रधानमंत्री की भूमिकाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
5. निम्नलिखित के बारे में संक्षिप्त नोट लिखिए–
   (क) दंड विधान
   (ख) वस्त्र और आभूषण
   (ग) आचरण और व्यवहार
   (घ) खगोल शास्त्र

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. प्राचीन मिस्र की राज्य संरचना एवं राजनीतिक इतिहास पर प्रकाश डालिए।
2. निम्नलिखित पर नोट लिखिए–
   (क) पिरामिड युग

(ख) पिरामिड युगीन मिस्र में महिलाओं की स्थिति

(ग) अखेनातेन और धार्मिक क्रांति

(घ) मिस्र की लिपि

टिप्पणी

3. पिरामिड युगीन मिस्र की सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
4. पिरामिड युग में संस्कृति एवं विज्ञान की प्रगति किस प्रकार हुई? व्याख्या कीजिए।

1.9 सहायक पाठ्य सामग्री

1. राजेश्वर प्रसाद, नारायण सिंह, 1982, "मध्य–पूर्व की प्राचीन जातियां और सभ्यताएं" भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ।
2. टी.जी.एच. जेम्स, 1979, "एन इन्ट्रोडक्शन टू एंशियेंट इजिप्ट", लंदन।
3. ब्रूस ट्रिगर व अन्य, 1983, "एंशियेंट इजिप्ट : ए सोशियल हिस्ट्री", कैम्ब्रिज।
4. डॉ. गोपाल प्रसाद, 2013, "प्राचीन एवं मध्यकालीन विश्व", लक्ष्मी पब्लिशिंग हाऊस, रोहतक।
5. डॉ. के.सी. श्रीवास्तव एवं डॉ. मोहम्मद जुनैद खां, 1990, "विश्व सभ्यता का इतिहास (आदिकाल से प्राचीन की समाप्ति तक)", उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
6. श्रीराम गोयल, 1973, "विश्व की सभ्यताएं (323 ई.पू. तक)", विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
7. जेम्स एडगर स्वेन, 1963, "ए हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड सिविलाइजेशन", सैकेंड एडीशन, यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस मैक्ग्राहिल बुक कंपनी।
8. बी. गॉर्डन चाइल्ड, 1942, "वॉट हैपन्ड इन हिस्ट्री", हरामण्डसवर्थ।
9. अमीर फारूकी, 2001, "अर्ली सोशियल फॉर्मेशन्स", द्वितीय संस्करण, मानक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
10. जे. बोट्टेरो, ई. कैसिन व जे. वरकोऊहर (संपादित), 1967, "द नीयर ईस्ट : द अली सिविलाइजेशन्स", न्यूयॉर्क।
11. ए. मोरेट, 1927, "द नाइल एंड इजिशियन सिविलाइजेशन", लंदन।
12. आई.ई.एस. एडवर्ड्स, 1961, "द पिरामिड्स ऑफ इजिप्ट", हारमण्डसवर्थ ।
13. ब्रायन फागान, 1989, "पीपल ऑफ द अर्थ एन इंट्रोडक्शन टू वर्ल्ड प्रिहिस्ट्री", छठा संस्करण, इलिनोइस।
14. डॉ. दीनानाथ वर्मा, 1986, "मानव सभ्यता का विकास", ज्ञानदा पब्लिकेशन्स, पटना।
15. डॉ. विपिन बिहारी सिन्हा, 2004, "प्राचीन एवं मध्यकालीन विश्व इतिहास", ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली।

इकाई 2 मेसोपोटामिया की सभ्यता

टिप्पणी

संरचना

2.0 परिचय
2.1 उद्देश्य
2.2 मेसोपोटामिया की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास
  2.2.1 राज्य संरचना
  2.2.2 राजनीतिक इतिहास
2.3 मेसोपोटामिया में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां
  2.3.1 सामाजिक स्थिति
  2.3.2 आर्थिक स्थिति
  2.3.3 धार्मिक स्थिति
2.4 विज्ञान एवं संस्कृति
  2.4.1 विज्ञान
  2.4.2 संस्कृति
2.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
2.6 सारांश
2.7 मुख्य शब्दावली
2.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
2.9 सहायक पाठ्य सामग्री

2.0 परिचय

जब विश्व की अधिकतर सभ्यताएं अंधेरे की चादर लपेटे पड़ी हुई थीं, उसी समय दजला और फरात नदियों की पाटी में एक श्रेष्ठ एवं नगरीय सभ्यता का उदय हुआ, जिसे मेसोपोटामिया की सभ्यता के नाम से जाना है। यह सभ्यता आज से लगभग 5000 से अधिक वर्ष पुरानी है। इराक को प्राचीन काल में 'मेसोपोटामिया' के नाम से जाना जाता था।

4000 ई.पू. में सुमेर एक प्रमुख शहर था। सुमेर के लोगों ने प्राचीन काल में मेसोपाटामिया में एक उच्चकोटि की सभ्यता की नींव रखी, जिसे सुमेरियन सभ्यता के नाम से जाना जाता है। इस सभ्यता के लोगों ने सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां प्राप्त कीं।

प्रस्तुत इकाई में हम मेसोपोटामिया सभ्यता की राज्य संरचना, राजनीतिक इतिहास, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्थितियों तथा विज्ञान एवं संस्कृति का अध्ययन करेंगे।

2.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- मेसोपोटामिया सभ्यता की राज्य संरचना का वर्णन कर पाएंगे;
- प्राचीन मेसोपोटामिया के राजनीतिक इतिहास को जान पाएंगे;

टिप्पणी

- प्राचीन मेसोपोटामिया की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को समझने में सक्षम हो पाएंगे;
- मेसोपोटामिया सभ्यता के धार्मिक जीवन की विशेषताओं के बारे में जान पाएंगे;
- मेसोपोटामिया की सभ्यता में विज्ञान के क्षेत्र में हुए विकास का अध्ययन कर पाएंगे;
- मेसोपोटामिया की सभ्यता के सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन कर पाएंगे।

2.2 मेसोपोटामिया की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास

मेसोपोटामिया यूनानी भाषा का शब्द है। यह दो शब्दों 'मैसो' (मध्य) तथा 'पोटामस' (जल) से मिलकर बना है। इस प्रकार मेसोपोटामिया का शाब्दिक अर्थ दो नदियों के बीच का भाग होता है। प्राचीन इराक क्षेत्र में बहने वाली दो नदियां 'दजला' व 'फरात' थीं। इस प्रकार 'दजला' व 'फरात' नदियों के मध्य स्थित प्रदेश को मेसोपोटामिया कहा जाता था। ये नदियां हर साल काफी मात्रा में उपजाऊ मिट्टी इस प्रदेश में जमा करती थीं जिसके कारण यह क्षेत्र काफी उपजाऊ था। इन नदियों से बहुत–सी नहरें भी बनाई गई थीं जिनसे इस क्षेत्र के दूर–दूर के भागों तक सिंचाई होती थी। इन नदियों को यातायात के लिए भी प्रयोग किया जाता था, जिनमें नावें चला करती थीं। इनके किनारे–किनारे कारवां भी चलते थे। इस प्रकार यह क्षेत्र एक सबल सभ्यता के विकास के लिए अत्यधिक उपयुक्त था। मेसोपोटामिया क्षेत्र केवल दजला व फरात नदियों के मध्य तक सीमित न होकर फारस की खाड़ी के दक्षिण तक विस्तृत था। इस क्षेत्र को तीन प्रदेशों में बांटा जा सकता है। प्रथम–दजला फरात के बीच का क्षेत्र (दोआब) जिसको असीरिया कहा जाता है, दूसरे–संगम से सटा क्षेत्र अक्कद तथा तीसरा–सुमेर। इन्हीं तीन क्षेत्रों में प्राचीन काल में चार सभ्यताएं विकसित हुईं, जिन्हें असीरियन एवं कैल्डीयन, बेबीलोनियन एवं 'सुमेरियन' के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार मेसोपोटामिया की सभ्यता के अंतर्गत उपरोक्त चार सभ्यताएं आती हैं। इन सभ्यताओं के बारे में कहा जाता है कि सुमेरिया ने सभ्यता को जन्म दिया, बेबीलोन ने उसे चरम सीमा पर पहुंचाया तथा असीरिया ने उसे ग्रहण किया। इन सभ्यताओं में सबसे पहले 'सुमेरिया' की सभ्यता का विकास हुआ।

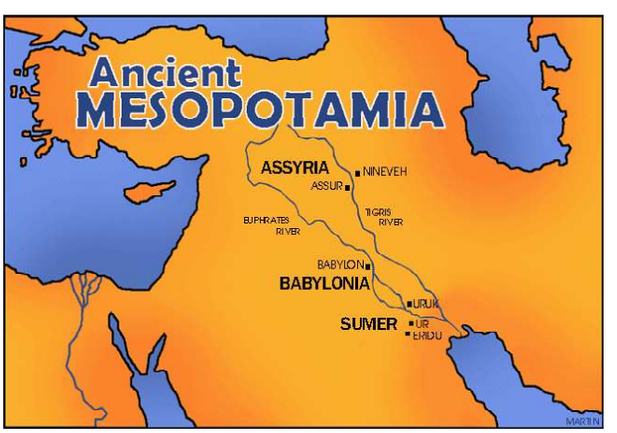

2.2.1 राज्य संरचना (State Structure)

टिप्पणी

तीसरी सहस्त्राब्दी के आरंभ में सुमेर का राजनीतिक संगठन कई भागों में विभाजित था जिन्हें नगर–राज्य कहा जाता था। प्रत्येक नगर के चारों तरफ कृषि योग्य भूमि होती थी। कभी–कभी ऐसे नगर के अधीन और उसके द्वारा शासित दो–तीन कस्बे या गांव भी होते थे। सुमेर में कई शक्तिशाली शासक भी थे जिन्होंने कई राज्यों को जीतकर एक संयुक्त राष्ट्र राज्य की स्थापना की। सुमेरिया के राजनीतिक चिन्तन का आधार लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा था। आदिकाल में सुमेर के नगर राज्यों में सत्ता नागरिकों के हाथ में होती थी। आमतौर पर हरेक नगर में नागरिकों की एक संसद थी जो द्विसदनीय थी। परंतु कालांतर में इस प्रजातांत्रिक व्यवस्था का अंत हो गया और राजतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना हुई। राजतांत्रिक व्यवस्था के कारण फूट पड़ी और कई नगर राज्य विकसित हो गए जहां का एक–एक करके स्वतंत्र शासक बनने लगा। बहुत से शासकों ने धार्मिक दृष्टिकोण से जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए स्वयं को देवता का प्रतिनिधि घोषित किया। फलस्वरूप मन्दिर के पुजारियों और राजाओं के मध्य संबंध बढ़ता गया और धीरे–धीरे मन्दिर का प्रधान पुरोहित भी ज्यादा शक्तिशाली होता गया। जिन राजाओं ने मन्दिर के प्रभाव को कम करने और देश में एकता स्थापित करने का प्रयास किया वे अपने उद्देश्य में सफल न हो सके।

नगर राज्यों का संघ (Confederation of City-States)

प्रारंभिक काल में सुमेर और अक्कद छोटे–छोटे नगर राज्यों में विभाजित थे। अक्कद में किश, सिप्पर, कूथा तथा ओपिस और सुमेर में एरेक, लारसा, इसिन, उर, लगश आदि नगर राज्य सम्मिलित थे। प्रत्येक नगर–राज्य में एक मुख्य नगर होता था तथा इस नगर के आसपास कृषि करने योग्य भूमि होती थी। कभी–कभी इन राज्यों में कुछ गांव या कस्बे भी होते थे। ये नगर राज्य आपस में लड़ते रहते थे। सुमेर में राजवंशों की स्थापना होने पर भी इन नगर राज्यों में कोई केन्द्रीय शासन की स्थापना नहीं हुई, अपितु इनका एक ढीला–सा संघ था। नगर राज्यों में शासन की बागडोर नागरिकों के हाथ में होती थी अर्थात् नगर राज्यों में प्रारंभ में प्रजातान्त्रिक व्यवस्था विद्यमान थी। प्रत्येक नगर में नागरिकों की एक संसद होती थी जिसमें दो सदन होते थे। एक सदन में नगर के सभी वयस्क पुरुष सम्मिलित होते थे तथा दूसरे सदन में केवल कुछ अनुभवी व्यक्ति ही शामिल थे। सुमेर के नगर राज्यों की इन प्राचीन सभाओं का विवरण अभिलेखों एवं गिलगमेश के आख्यानों से मिलता है। सुमेरिया के इन नगर राज्यों का शासक जनता की सलाह पर शासन करता था। श्रीराम गोयल के अनुसार, "सुमेरिया को 'प्रजातन्त्र का जनक' एवं उनकी संस्थाओं को 'विश्व की प्राचीनतम जन संभाएं' कहा जा सकता है।"

राजा या पटेशी (King or Pateshi)

जैसा कि बताया गया है कि प्राचीन काल में सुमेर छोटे–छोटे नगर राज्यों में बंटा हुआ था। उस समय सुमेर में एक दर्जन से ज्यादा नगर राज्य थे। सभी नगर–राज्यों में अपने–अपने कानून, विधान, शासक तथा देवता होते थे। प्रत्येक नगर राज्य में ऊंची वेदिकाओं पर मन्दिर बने हुए थे जिनका विकास आगे चलकर जिग्गुरात के रूप में हुआ। जनसंख्या में वृद्धि, नगरों के विकास तथा व्यापार में वृद्धि के साथ–साथ

टिप्पणी

राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का विकास हुआ जिससे राजाओं में परस्पर युद्ध शुरू हो गए। आदिकालीन सुमेर की प्रजातांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक नगर–राज्य में दो सदन होते थे जिन्हें आधुनिक भाषा में लोकसभा (एसेम्बली) और सीनेट कह सकते हैं। विश्व इतिहास में सुमेर के लोगों को प्रजातंत्र का जनक कहा गया है।

इस प्राचीन प्रजातांत्रिक व्यवस्था का 3000 ई.पू. में पतन हो गया और उसका स्थान राजतंत्र ने ले लिया क्योंकि संकट के समय सरकार को निर्णय लेने में बहुत दिक्कत आती थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि इनमें निर्णय बहुमत से लिये जाते थे, इसलिए सुमेर के लोग अतिशीघ्र निर्णय लेने के लिए लूगल या पटेशी की नियुक्ति करने लगे। आधुनिक अनुसंधानों से यह पता चलता है कि सुमेर में राजा को केवल पटेशी ही नहीं बल्कि एन्सी भी कहा जाता था। वैसे लूगल (महान व्यक्ति) शब्द सामान्यतः राजा के लिए और पटेशी देवता के लिए प्रयोग किए जाते थे। परंतु समय के साथ पटेशी राजा कहलाने लगा और उसका पद भी वंशानुगत बन गया। अब राजा को देवता के रूप में पूजा जाने लगा। कालांतर में वह निरंकुश बन गया और उसके अधिकारों में वृद्धि हुई। अन्य इतिहासकार मानते हैं कि जब कोई शासक नगर राज्यों को जीतकर अपने नगर में सम्मिलित कर लेता था तब वह पटेशी की बजाय लूगल की उपाधि धारण कर लेता था। इस प्रकार पटेशी नगर का शासक था और लूगल राज्य का। उम्मा के एक राजा ने लूगल की उपाधि धारण की थी। वह लूगल जग्गेसी कहलाता था। कुल मिलाकर पटेशी राजनीतिक विकेन्द्रीयकरण का परिचायक था तो लूगल राजनीतिक एकता का। परन्तु अन्य विद्वान इस मत से सहमत नहीं हैं। पटेशी एवं लूगल एक ही राजा को कहा जाता था। शासन कार्यों में पटेशी की सहायता के लिए अधीक्षक (अग्रिग), निरीक्षक (नुबन्द) तथा पुरोहित (सन्ठा) आदि अधिकारी होते थे। सभी राजा राजनीतिक एकीकरण की ओर ध्यान देते थे। उन्होंने सुमेर तथा अक्कद को मिलाकर दोनों का स्वामी होने का दावा भी किया। कभी–कभी राजा मन्दिरों की भूमि को अपने अनुयायियों में भी बांट देते थे। इतना होने पर भी अनेक उपद्रवी जातियां सुमेर साम्राज्य की जड़ों को खोखली करने के लिए हमेशा ताक में रहती थीं।

न्याय व्यवस्था (Judicial System)

प्राचीन विशाल साम्राज्य की स्थापना के पश्चात् सुमेरियन राजाओं ने कानूनों को संगृहीत करना आरम्भ किया। सुमेर के लोगों ने भी अन्य समाजों की तरह अपने समाज के सदस्यों और समूहों के आपसी संबंधों को नियन्त्रित एवं व्यवस्थित करने के लिए कुछ नियम बनाए जिन्हें सामान्य रूप से कानून कहा जाता है। 2290 ई.पू. में सुमेर के एक शासक ने शमस (सूर्य) नामक देवता के नाम पर अनेक कानूनों का संग्रह किया। उर के तृतीय राजवंश के शासक उरनम्यू तथा उसके उत्तराधिकारी दुंगी की विधि संहिता मेसोपोटामिया क्षेत्र की प्राचीनतम विधि संहिताएं हैं जिन्हें हम्मूराबी ने संशोधित रूप में प्रस्तुत किया था। यहां तक कि उसने विवाह, लेन–देन, व्यापार तथा ऋण सम्बन्धी कानून भी बनाए।

शुल्गी या दुंगी की विधि संहिता सुमेरियन न्याय संबंधी रीति–रिवाजों एवं परंपराओं का संकलन थी। सुमेरियन विधि संहिता की निम्नलिखित विशेषताएं थीं–

(i) यह विधि संहिता प्रतिशोधात्मक सिद्धांत पर आधारित थी अर्थात् यह बदले की भावना पर आधारित थी जिसमें जो व्यक्ति जिस प्रकार का अपराध करता था उसे

टिप्पणी

उसी प्रकार का दण्ड भोगना पड़ता था। इसके अनुसार यदि कोई व्यक्ति किसी की आंख फोड़ डालता था तो बदले में उसकी आंख फोड़ी जाती थी। न्याय की यह आदिम अवधारणा है। कानून का मुख्य उद्देश्य अपराधों को रोकने की बजाय बदला लेना था, अपराधी को सुधारना नहीं था।

(ii) इस विधि संहिता के अनुसार अपराधी को सजा देने का अधिकार न्यायालय की अपेक्षा उस व्यक्ति को था जिसके विरुद्ध अपराध किया गया हो अर्थात् इस संहिता में न्यायालय पीड़ित व्यक्ति एवं अपराधी के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाता था।

(iii) इस विधि संहिता में अचानक हुई हत्या या जान–बूझकर की गई हत्या का दण्ड एक ही माना गया था।

(iv) यह विधि संहिता दण्डविधान की दृष्टि से भी पक्षपातपूर्ण थी। इसमें समाज को तीन वर्गों में विभाजित किया गया था। अभिजात अथवा वैभवशाली वर्ग, जनसाधारण एवं दास वर्ग। इस विधान में एक ही अपराध के लिए अभिजात्य वर्ग को कठोर, जनसाधारण को उससे कम तथा निम्न वर्ग को उससे भी हल्का दण्ड देने का प्रावधान था। इसका कारण यह था कि अभिजात्य वर्ग में मुख्य सेना के अधिकारी होते थे जिनको राज्य का रक्षक माना गया था, अतः उनसे यह अपेक्षा नहीं की जाती थी कि वे राज्य के कानून का उल्लंघन करेंगे इसलिए उन्हें जनसाधारण की अपेक्षा कठोर दण्ड देना उचित माना गया था।

(v) सुमेरिया में न्याय का कार्य मन्दिरों में होता था। मन्दिरों के पुजारी ही न्यायाधीशों का कार्य करते थे। सभी प्रकार के मुकदमे मश्किम नामक अधिकारी सुनता था। यदि कोई व्यक्ति उसके न्याय से संतुष्ट नहीं होता था तो वह पटेशी या लूगल के पास जाकर न्याय की गुहार कर सकता था। पटेशी या लूगल न्याय का अंतिम अधिकारी अर्थात् सबसे प्रमुख था।

(vi) सुमेरिया की दण्ड व्यवस्था प्राचीन काल की दण्ड व्यवस्था से बहुत उदार थी। उदाहरण के रूप में स्वामी का अधिकार न मानने वाले दास को बेच दिया जाता था। चरित्रहीन स्त्री को पति तलाक नहीं दे सकता था, परन्तु दूसरा विवाह कर सकता था और पहली पत्नी को दूसरी पत्नी की दासी बनकर उसकी सेवा करनी पड़ती थी। परंतु बाद में विधि संहिताओं (हम्मूराबी की विधि संहिता) में ऐसे अपराधों के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान था। इस प्रकार कहा जा सकता है कि हम्मूराबी से बहुत पहले सुमेरिया की राजनीतिक व्यवस्था में कानून की अवधारणा का अत्यधिक महत्त्व था।

राजस्व प्रशासन (Revenue Administration)

प्रारंभ में पटेशी प्रजा से कर वसूल नहीं किया करते थे। उन्हें दान से ही पर्याप्त आमदनी हो जाया करती थी। परंतु राजतंत्र की स्थापना के पश्चात राजा अपनी प्रजा से कर वसूलने लगे। सामान्यतः कर की वसूली अनाज के रूप में की जाती थी जो कुल उपज का 1/6 भाग से 1/3 भाग तक होता था। करों से राजा को भारी मात्रा में आय होती थी। वसूल किए गए अनाज को सरकारी गोदामों में संचित किया जाता था।

टिप्पणी

सैन्य संगठन (Military Organization)

सुमेरिया के प्रत्येक नगर–राज्य के पास अपनी सेना थी। प्राचीन काल में पटेशी अर्थात् महान व्यक्ति (लूगल) युद्धों के समय अपनी सेनाओं का नेतृत्व स्वयं करते थे। अक्कदी राजाओं के पास एक शक्तिशाली सेना थी। सारगोन प्रथम की सेना में 5400 पैदल सैनिक थे। प्रत्येक पटेशी के पास व्यवस्थित पैदल सैनिक दल होता था। सैनिकों का कोई अलग वर्ग नहीं होता था तथा न ही उनकी राज्य की ओर से भर्ती की जाती थी। योग्य तथा ताकतवर नागरिकों की सूची मन्दिरों के पुजारियों के पास होती थी, जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर बुलाया जा सकता था। ये नागरिक राजा के साथ युद्ध क्षेत्र में जाते थे तथा शांतिकाल में मन्दिरों में लोगों की सेवा का काम करते थे। सैनिक भाला, बरछी, परशु तथा तलवार आदि से युद्ध करते थे। सुरक्षा के लिए तांबे व चमड़े के टोप तथा ढालें प्रयोग में लाई जाती थीं। युद्धों में चार पहिए वाले रथों का प्रयोग किया जाता था जिन्हें गधे खींचते थे। भाला, बरछे तथा परशु सैनिकों के शस्त्र थे। सुमेरिया के सैनिकों के पास ढालें तथा शिरस्त्राण भी थे। ढालें तथा शिरस्त्राण धातु के बनाए जाते थे। श्रीराम गोयल ने लिखा है कि "सुमेरियनों के शिरस्त्राण युद्ध में शरीर की रक्षा करने के लिए धातु के प्रयोग के सबसे पहले उदाहरण हैं।" युद्धों में सैनिक चार पहिए वाले रथों का प्रयोग करते थे जिन्हें गधे खींचते थे। घोड़ों से शायद सुमेर निवासी परिचित नहीं थे। सुमेर के लोगों को युद्ध में धनुष बाण का प्रयोग करना नहीं आता था, परन्तु सेमाइटों के प्रभाव के कारण उन्होंने धनुष–बाणों का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया। युद्धबंदियों को दास बनाकर बेचने के विवरण भी प्राप्त हुए हैं। इनका 1/10 भाग देवताओं को बलि चढ़ा दिया जाता था।

2.2.2 राजनीतिक इतिहास (Political History)

प्राचीन सुमेर और अक्कद का राजनीतिक इतिहास 3200 ई. पू. से आरम्भ होता है। प्राचीन काल में ये दोनों प्रदेश छोटे–छोटे नगर राज्यों में विभाजित थे। इन नगर राज्यों में निप्पुर सबसे प्रसिद्ध राज्य था, जिसका देवता एनलिल था, जो समस्त देश में पूजा जाता था।

सुमेर को नगर–राज्यों का देश कहा गया है। इस प्रकार सुमेरियन संगठित राज्य अनेक नगर–राज्यों में बंटा हुआ था जिनमें परस्पर युद्ध चलते रहते थे। कोई भी शक्तिशाली शासक पड़ोसी नगर–राज्य को युद्ध में पराजित करके उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लेता था। 'उर' नगर की खुदाई से प्राप्त प्रमाणों के आधार पर सुमेर के राजनीतिक इतिहास को दो युगों में बांटा जा सकता है। प्रथम–पौराणिक युग एवं द्वितीय ऐतिहासिक युग।

पौराणिक युग (Mythological Era)

सुमेर के पौराणिक राज्यों में एरिडू, लरक, वेदतिविरा, शुरुप्पक एवं सिप्पर नगर प्रमुख थे। इस क्षेत्र की खुदाइयों से राजाओं की सूचियां मिली हैं। पहली सूची में कहा गया है कि जब राजपद को स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा गया तो राजपद का अवतरण 'एरिडू' में हुआ था। सूची में बताया गया है कि एरिडू राजवंश के अलुतिम ने 24,800 वर्ष तथा 'अलगर' ने 36,000 वर्षों तक शासन किया। सूची में आगे बताया गया है कि 'वेदतिविरा' राजवंश में तीन शासकों–एनमेनतु अन्ना ने 43,200 वर्ष, एनमंगल अन्ना ने

टिप्पणी

28,800 वर्ष तथा दैवी दुमुजो ने 36,000 वर्ष तक शासन किया। लरक राजवंश के एनसिपाजी अन्ना ने 28,200 वर्ष तक शासन किया। सिप्पर राजवंश ने 21,000 वर्ष तक तथा शुरुप्पक राजवंश के उबर तूतू ने 18,600 वर्षों तक शासन किया। उपरोक्त विवरण को देखकर ऐसा लगता है कि सूची में दी गई वर्ष गणना आधुनिक वर्ष से अलग प्रकार की थी या इसमें अत्यधिक अतिशयोक्तियां हैं। मेसोपोटामिया की गाथाओं एवं किंवदन्तियों से ज्ञात होता है कि समुद्र देवता ने क्रुद्ध होकर मेसोपोटामिया को अपने जल में डुबो दिया अर्थात् प्रलय ने सभ्यता को नष्ट कर दिया। इसके पश्चात प्रलय समाप्त हो गई और जियूसूद्र नामक राजा ने सूर्य को भेंट चढ़ाई तथा 'एनलिल' नामक देवता के समक्ष सिर झुकाया तथा 'एनलिल' ने राजा को प्राणिमात्र और मानव जाति के बीच का संरक्षक घोषित किया तथा उसे अमरत्व प्रदान कर दिया। इस प्रकार पौराणिक युग का अंत प्रलय द्वारा हुआ तथा प्रलय के पश्चात सुमेर के इतिहास का ऐतिहासिक युग आरंभ होता है।

आधुनिक इतिहासकार इस पौराणिक इतिहास पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। प्रोफेसर वुली ने 1929 ई. में उर नगर की खुदाई से 40 फुट नीचे से 11 फुट मोटी मिट्टी की एक परत प्राप्त की, जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि यह मिट्टी की परत बाढ़ आने से जम गई होगी। इस परत के नीचे ही सुमेर सभ्यता के अवशेष मिले हैं। एक अन्य अभिलेख में हमें गिल्गामेश नामक एरेक के एक क्रूर शासक के बारे में जानकारी मिलती है। उसे मारने के लिए देवताओं ने इयाबानी नामक दैत्य की उत्पत्ति की परन्तु इयाबानी दैत्य एरेक के ईया (Ea) नामक देवता के मन्दिर की एक गायिका के प्रेम जाल में फंस गया और अन्त में वह गिल्गामेश का मित्र बन गया। इसके पश्चात दोनों ने मिलकर बहुत से साहसपूर्ण कार्य किए, जिनमें से एलम नगर के एक नरभक्षी दैत्य हुम्बाबा का वध महत्त्वपूर्ण था।

ऐतिहासिक युग (Historical Era)

ऐतिहासिक युग में सुमेरिया के प्रमुख नगर राज्यों में सर्वप्रथम 'उर' नामक नगर राज्य की स्थापना हुई। इस प्रकार उर का प्रथम राजवंश सुमेरिया का पहला ऐतिहासिक राजवंश माना जाता है। इस राजवंश की स्थापना 3200 ई. पू. में मानी जाती है। सुशील माधव पाठक ने उर के प्रथम राजवंश का समय 2500 ई.पू. माना है। उनके अनुसार इस राजवंश का पहला राजा मेस अन्नेपद था। खुदाइयों से मिली राजाओं की सूचियों में ऐतिहासिक युग के 'उर' के पहले चार राजाओं का शासनकाल 177 वर्ष बताया गया है। मेस अन्नेपद ने 80 वर्ष तक शासन किया तथा उसके बाद उसके पुत्र अ–अन्ना–पाद ने शासन किया।

तैल–एल–ओबेद से प्राप्त अभिलेख से जानकारी मिलती है कि मेस अन्नेपद के बेटे अ–अन्ना–पाद ने निनहुर साग देवता का मन्दिर बनवाया था। एक अन्य अभिलेख में अ–अन्ना–पाद ने स्वयं को भगवान बताया है। उर के इस प्रथम राजवंश की शानदार कब्रें प्राप्त होती हैं जिनको पुरातत्वविदों ने 2500 ई.पू. की माना है। कब्रों में मृतकों को करवट में लिटाया गया था तथा मृतकों के पास उनकी निजी वस्तुएं, शृंगार की वस्तुएं, भोजन सामग्री, मदिरा तथा प्याले आदि रखे गए थे। शुबअद नामक महिला की कब्र में महिला के हाथ में सोने का प्याला थमाया गया था। इस महिला की शृंगार की बहुत सी वस्तुएं भी प्राप्त हुई हैं जिनमें 9 गज लम्बा सोने का फीता, अर्द्ध चन्द्रनुमा

बालियां तथा सोने का कंघा सम्मिलित है। कब्रों से प्राप्त सामग्री से तत्कालीन सुमेरिया के जन–जीवन पर प्रकाश पड़ता है।

टिप्पणी

उर से लगभग 50 मील उत्तर की तरफ स्थित 'लगश' राज्य की स्थापना उर नानशे ने की थी। ऐसा माना जाता है कि उर नानशे ने लगश नगर राज्य में अनेक मन्दिर बनवाए थे तथा नहरें खुदवाई थीं। उर नानशे के पुत्र इयान्नातुम एक शक्तिशाली शासक था जिसने उरमा, उर, उरुक, किश तथा मारी नगरों पर विजय प्राप्त की थी। लगश राजवंश का अंतिम शासक उर काजिला था। उसने निनगिरसु देवता की प्रेरणा से अनेक सामाजिक सुधार किए थे। ऐसा माना जाता है कि उर काजिला ने 25 वर्ष (2425 ई.पू.–2400 ई.पू.) तक शासन किया। उसे 'उम्मा' के गवर्नर लुगलजागेसी ने पराजित कर दिया तथा लुगलजागेसी उर तथा 'उरुक' का राजा बन गया। लुगलजागेसी ने 'ऐरक' को अपनी राजधानी बनाया। सुमेर के राजाओं में लुगलजागेसी को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। निप्पुर नगर से मिले लेख से पता चलता है कि उसने वायु के देवता 'एनलिल' से अपना राज्य स्थायी होने की प्रार्थना की थी। एक अन्य लेख में उसे एक बहुत बड़े राज्य का शासक बतलाया गया है जिसमें दजला व फरात से लेकर भूमध्य सागर तक का भाग शामिल था। सुशील माधव पाठक ने लिखा है कि 2264 ई. में अगेट के शासक सारगोन ने, जो सेमेटिक वंश का था, लुगलजागेसी को पराजित कर उसे कैद कर लिया तथा इस प्रकार सुमेरिया में सेमेटिक जाति के लोगों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। सारगोन ने सुमेर के नगर राज्यों के बीच होने वाली राजनीतिक उठापटक को समाप्त करके अगादे नामक नगर की स्थापना की जिसे बेबीलोन के मैदानी भागों के लोग अक्कद कहते थे। इस प्रकार सुमेरिया में अक्कादी साम्राज्य की नींव पड़ी।

अक्कादी साम्राज्य (Akkadian Empire)

जैसा कि बताया गया है कि बेबीलोन का सारगोन एक शक्तिशाली शासक था जिसने लुगलजागेसी को पराजित करके सुमेरिया के बहुत बड़े भाग पर अधिकार कर लिया था। उसके प्रारंभिक जीवन के बारे में अनेक कहानियों से जानकारी मिलती है। यह ज्ञात होता है कि वह एक साधारण परिवार में पैदा हुआ था। उसकी मां छोटे घर की थी तथा पिता कौन था, इस बारे में जानकारी नहीं मिलती। पैदा होने के बाद उसकी मां ने उसे एक सरकंडे की टोकरी में डालकर नदी में बहा दिया था। एक माली ने उसे नदी से निकाल लिया तथा उसका पालन–पोषण किया। बाद में उसने 'कीश' के राजा के यहां नौकरी की। वह 2372 ई.पू. में अगादे नगर का शासक बना। उसने 2316 ई. पू. तक राज्य किया। अपने 56 वर्ष के शासन काल के दौरान सारगोन ने 'किश', एरेक, उर, लगश, उम्मा आदि नगर राज्यों पर अधिकार किया। यही नहीं उसने पड़ोसी क्षेत्रों एलय, बरहशे, भूमध्य सागरीय तट, लेबनान, पूर्वी एवं उत्तरी सीरिया तथा सीरिया तट तक सफल अभियान चलाया। इस प्रकार सारगोन ने अक्कद नगर राज्य को अक्कादी साम्राज्य में बदल दिया। सारगोन ने अपनी बेटी को उर के चन्द्र देवता 'नन्नार' की प्रधान पुजारिन बनाया था। सारगोन को अपने अंतिम दिनों में अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा तथा यह माना जाता है कि अंत में उसे उसी के सैनिकों ने मौत के घाट उतार दिया।

सारगोन के शासनकाल में सेमेटिक जाति ने अपनी व्यापारिक गतिविधियों को अत्यधिक विकसित किया। अक्कादी साम्राज्य के एक महत्त्वपूर्ण नगर गासुर जिसे आजकल योरगान टेपा कहा जाता है की खुदाई से प्राप्त मिट्टी की पट्टिकाओं से उस

टिप्पणी

समय की व्यापारिक गतिविधियों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इन पट्टिकाओं से अनेक व्यापारिक दस्तावेज प्राप्त हुए हैं। इन दस्तावेजों के साथ एक नक्शा भी प्राप्त हुआ है जिस पर किसी बड़े परिसर का मानचित्र बनाया गया है। इसकी गणना संसार के सबसे पुराने मानचित्रों में की जाती है। इन दस्तावेजों से यह प्रमाणित होता है कि सारगोन के शासनकाल में व्यापारी साम्राज्य के दूर–दराज के प्रदेशों के साथ व्यापार करते थे।

सारगोन की मृत्यु के पश्चात् उसके दो पुत्रों ने शासन किया परंतु वे दोनों अयोग्य शासक सिद्ध हुए। परंतु सारगोन का पोता, नारमसीन एक महान शासक सिद्ध हुआ। उसने 'दैवी नारम सीन', 'अगादे का स्वामी', 'बलशाली', 'चारों दिशाओं का राजा' आदि उपाधियां धारण कीं। उसने ऊंचे पर्वतों पर रहने वाली लुलुबी जाति के लोगों को पराजित किया। इस विजय के उपलक्ष्य में उसने नारम सीन–पाषाण नामक स्मारक बनवाया। उसका साम्राज्य मध्य फारस से भूमध्य सागर तक तथा उत्तर पूर्व अरब से टोरस पर्वत तक फैला हुआ था। उसकी मृत्यु के पश्चात अक्कादी साम्राज्य में अराजकता फैल गई। अक्कादी साम्राज्य के अंतिम शासक शस्कर्ति शरीं के शासनकाल में एलम के गवर्नर पुजुर इन्शुशिनक ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। उसका अनुसरण करके अन्य राज्यों के शासक भी स्वतन्त्र होने लगे। इस अराजकता के दौर में काकरोस प्रदेश में रहने वाली गूढ़ (गूती) जाति जो अत्यंत बर्बर थी, के लोगों ने अक्कद साम्राज्य का अंत कर दिया। इस जाति का उद्देश्य लूटमार करना था। इस जाति के प्रभुत्व ने सुमेरिया को आर्थिक दृष्टि से दुर्बल बना दिया। गूती जाति ने 2250 ई.पू. से 2120 ई.पू. तक सुमेरिया प्रदेश को अपने आधिपत्य में रखा। 2120 ई.पू. में गूती जाति की लूटमार से तंग आकर सुमेर के विभिन्न राज्यों ने मिलकर ऐरक राज्य के एसीउतुहेगल की सहायता की जिसने गूढ़ जाति को पराजित करके ऐरक राज्य की प्रतिष्ठा की स्थापना की।

उर का तृतीय राजवंश (Third Kingdom of Ur)

उर राज्य के गवर्नर उरनम्यू ने ऐरक के शासक उतुहेलाल की हत्या करके स्वयं को उर, सुमेर एवं अक्कद का शासक घोषित कर लिया। उरनम्यू द्वारा स्थापित किए गए राजवंश को उर के तृतीय राजवंश के नाम से जाना जाता है। उरनम्यू ने 2095 ई.पू. तक शासन किया। उरनम्यू ने उर में एक बड़े जिग्गुरात का निर्माण करवाया। उरनम्यू के पश्चात शुल्गी या दुंगी शासक बना। उसने 2048 ई.पू. तक शासन किया। वह एक शक्तिशाली शासक सिद्ध हुआ। उसने दिलमुन, अदम्दुन, गन्हर, सिमुरुम आदि प्रदेशों पर विजय प्राप्त करके अपने–अपने राज्य को कुर्दिस्तान तक विस्तृत किया। उसने 'उर नरेश' तथा 'चारों दिशाओं के स्वामी' आदि उपाधियां धारण कीं। श्रीराम गोयल ने लिखा है कि "शुल्गी ने जगरोस की पर्वतीय जातियों के साथ–साथ एलम पर पूर्णरूप से विजय प्राप्त की। उसने उर, ऐरक, लगश, सूसा (एलम) आदि नगरों में देवी–देवताओं के लिए अनेक मन्दिर बनवाए। उसका शासनकाल उसकी विधि संहिता (Code of Shulgi or Dungi) के लिए प्रसिद्ध था।" यद्यपि अब सुमेर में ही इससे पुरानी विधि संहिताएं मिल गई हैं, फिर भी दुंगी की विधि–संहिता को विश्व की प्राचीनतम विधि संहिता होने का गौरव प्राप्त है। वह एक लोकप्रिय शासक सिद्ध हुआ। उसके जीवनकाल में एवं उसकी मृत्यु के पश्चात उसकी देवता के रूप में पूजा की गई। उसके लिए मन्दिर बनवाए गए जिनमें उसके लिए बलि चढ़ाई जाती थी।

टिप्पणी

लगश का गुडिया (Gudia of Lagash)

उर नगर राज्य के उत्कर्ष की अवधि में लगश राज्य भी उन्नति कर रहा था। लगश राज्य ने गुडिया के नेतृत्व में उन्नति की। वह सुमेरियाई था। वह सच्चे अर्थों में अपनी प्रजा का सेवक एवं दास था। वह मन्दिर में प्रार्थना करता था कि मेरे माता–पिता सब कुछ तुम हो। उसने एनिन्नू, निन्दुब तथा निनगिरसु नामक देवताओं के मन्दिरों का निर्माण करवाया था। उसके लेखों से ज्ञात होता है कि उसके व्यापारिक संबंध मेलुह मगन, दिलमुन एवं गूफी के साथ थे। उसके शासनकाल में सामाजिक समरसता थी। उसके शासनकाल में नौकर तथा मालिक, निर्बल एवं सबल साथ–साथ रहते थे तथा साथ–साथ पनपते थे। उसका शासन काल लगश राज्य का चरमोत्कर्ष काल था। उर के जिस तृतीय राजवंश की हमने पहले चर्चा की उसकी स्थापना की आधारशिला गुडिया द्वारा ही डाली गई थी।

सुमेरिया का पतन (Collapse of Sumeria)

शुल्गी की मृत्यु के पश्चात गद्दी पर बैठने वाले उसके सभी उत्तराधिकारी अयोग्य निकले। उर साम्राज्य के तृतीय राजवंश का पतन आरंभ हो गया तथा इसके साथ ही सुमेरिया का अस्तित्व खतरे में पड़ गया। 2005 ई.पू. में पहाड़ों के उस पार रहने वाले एलामी लोगों ने शुल्गी के उत्तराधिकारी इपिसिन पर आक्रमण करके उसे बंदी बना लिया। उन्होंने उसकी राजधानी को जमकर लूटा। सुमेर के राज्य जो आपसी लड़ाई–झगड़ों में उलझे हुए थे एलामी आक्रमणकारियों से सुमेर की रक्षा नहीं कर पाए तथा सुमेरियन समुदाय नष्ट होने लगा। नगर राज्यों की होड़ मे बेबीलोन तथा लारसा दो नगर राज्य रह गए जो मेसोपोटामिया की सत्ता के दावेदार बने। बेबीलोन के शासक हम्मूराबी ने अपनी प्रतिभा के बल पर सम्पूर्ण मेसोपोटामिया क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार 18वीं सदी ई.पू. के मध्य तक बेबीलोनियन साम्राज्य का प्रभुत्व स्थापित होने से सुमेरियन साम्राज्य पूर्णतः नष्ट हो गया। बेबीलोन सभ्यता 1900 ई.पू. से 1600 ई.पू. के बीच अपने विकास की चरम सीमा पर थी। बेबीलोन के पतन के पश्चात् असीरिया की सभ्यता का उत्थान हुआ।

अपनी प्रगति जांचिए

1. विश्व इतिहास में 'प्रजातंत्र का जनक' किसे कहा जाता है?
   (क) असीरिया (ख) सुमेरिया
   (ग) बेबीलोन (घ) कैल्डीयन
2. प्राचीन सुमेर और अक्कद का राजनीतिक इतिहास कब से आरम्भ होता है?
   (क) 3200 ई.पू. (ख) 3400 ई.पू.
   (ग) 3600 ई.पू. (घ) 3800 ई.पू.
3. बेबीलोन का सबसे शक्तिशाली शासक कौन था?
   (क) लुगलजागेसी (ख) मेस अन्नेपद
   (ग) सारगोन (घ) नानशे

2.3 मेसोपोटामिया की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां

टिप्पणी

सुमेर की सभ्यता का जन्म ईसा से कोई 5000 वर्ष पूर्व में हुआ था। यह प्राचीन मिस्र की सभ्यता की समसामयिक है। इस सभ्यता के निर्माता सुमेरियन थे। मेसोपोटामिया (जो दजला और फरात नदियों के बीच फली फूली) के दक्षिण भाग को सुमेर के नाम से पुकारा जाता है। दोनों तरफ मरूभूमि के मध्य का यह प्रदेश हमेशा बाढ़ आने के कारण काफी उपजाऊ था। आस–पास के निवासी यहां आर्थिक सुविधा के कारण आकर बस गए। चूंकि सबसे पहले यहां सुमेरियन लोग आकर बसे, अतः इस प्रदेश का नाम सुमेर पड़ा।

2.3.1 सामाजिक स्थिति (Social Condition)

मेसोपोटामिया में सभ्यता के अंकुर सबसे पहले सुमेर क्षेत्र में फूटे थे तथा इस क्षेत्र की सामाजिक व्यवस्था विषमताओं पर आधारित थी। उच्च वर्ग के लोग (राजा अथवा पटेशी) जनसाधारण से अलग थे जिन पर समाज की कोई व्यवस्था लागू नहीं होती थी। सुमेरिया के सामाजिक संगठन की विशेषताओं का विवरण इस प्रकार है–

सामाजिक वर्गीकरण (Social Classification)

प्राचीन सुमेर का समाज तीन वर्गों में बंटा हुआ था। ये वर्ग थे– उच्च वर्ग (अभिजात्य वर्ग), मध्य वर्ग तथा निम्न वर्ग। उच्च वर्ग अथवा अभिजात्य वर्ग में राजा, पुरोहित, राज्य के बड़े अधिकारी, उच्च सैनिक अधिकारी, धनी व्यापारी तथा ऐसे जमींदार शामिल थे जिन्हें राज्य की तरफ से बड़ी–बड़ी जागीरें भेंट अथवा पुरस्कार के रूप में प्राप्त थीं। इस वर्ग के लोग वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। समस्त सामाजिक एवं राजनीतिक शक्तियां उनके पास थीं। समाज में राजा को देवता माना जाता था। सुमेरियन समाज में राजा के बाद सामाजिक दृष्टि से पुरोहित का बड़ा महत्व था। यद्यपि इस वर्ग के जीवन का मूल्य आम व्यक्ति तथा निम्न वर्ग (दासों) से अधिक माना जाता था, परंतु इस वर्ग के सदस्य के अपराध करने पर उसे सामान्य वर्ग एवं निम्न वर्ग की तुलना में अधिक दण्ड मिलता था। मध्य वर्ग अथवा साधारण वर्ग में छोटे व्यापारी, दस्तकार, राज्य के साधारण कर्मचारी, छोटे जमींदार तथा साहूकार शामिल थे। यह समाज का सबसे बड़ा वर्ग था। इस वर्ग का कोई भी व्यक्ति जब सेना या राज्य में कोई बड़ा पद प्राप्त कर लेता था तो वह उच्च वर्ग में स्थान प्राप्त कर लेता था। सुमेरियन समाज के सबसे निम्न वर्ग में खेतिहर मजदूर तथा दास आते थे। मजदूरों तथा दासों की स्थिति में विशेष अंतर नहीं था। दासों को विदेशी होने के कारण निम्न दृष्टि से देखा जाता था जबकि खेतिहर मजदूर सुमेरियन समाज का अभिन्न अंग माने जाते थे। इस वर्ग के लोग सेना में भर्ती होकर यदि ऊंचे पद प्राप्त कर लेते थे तो वे जनसाधारण अथवा उच्चवर्ग में अपना स्थान बना लेते थे। दास भी सेना में भर्ती होकर स्वयं को जनसाधारण वर्ग में शामिल कर सकते थे। इस प्रकार सुमेरियन समाज की यह एक महत्त्वपूर्ण व्यवस्था थी कि जिसमें जनसाधारण वर्ग एव निम्न वर्ग के लोग अपनी योग्यता के आधार पर अपना वर्ग बदल सकते थे। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि सामाजिक वर्गीकरण में लचीलापन था।

टिप्पणी

परिवार (Family)

सुमेर का समाज पितृसत्तात्मक था। परिवार में पिता का स्थान सर्वोपरि होता था। वह अपने पुत्रों को घर से बाहर निकाल सकता था और बेच सकता था। उसे अपनी पुत्रियों को मन्दिरों में देवदासियों के रूप में देने का अधिकार था। पिता का घरेलू सम्पत्ति पर पूरा अधिकार होता था। वह अपनी पत्नी को बेच भी सकता था। बच्चों के विवाह उसी के द्वारा किए जाते थे। विवाह की शर्तों को लिखा जाता था। उस समय दहेज प्रथा भी प्रचलित थी। पत्नी को जो दहेज मिलता था, उस पर पत्नी का अधिकार होता था, जिसे वह अपने पुत्रों में बांट देती थी।

स्त्रियों की दशा (Condition of Women)

प्राचीन सुमेरियन समाज में स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी थी। वे स्वतन्त्र रूप से कोई भी कार्य कर सकती थीं। पति की मृत्यु हो जाने पर स्त्री को दोबारा विवाह करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। स्त्री के चरित्रहीन होने पर भी उसे तलाक नहीं दिया जा सकता था। हालांकि पुरुष दूसरा विवाह कर लेता था। उस समय रखैल प्रथा भी प्रचलित थी। रखैल के पुत्र को भी वैध माना जाता था। यदि कोई स्त्री पुत्र उत्पन्न करने को मना करती तो उसे डुबो दिया जाता था। दहेज से प्राप्त संपत्ति पर स्त्रियों का अधिकार था। पति तथा पुत्र न होने की स्थिति में परिवार की संपत्ति पर भी स्त्री का ही अधिकार माना जाता था। वह अपनी मर्जी से किसी को भी अपनी सम्पत्ति बेच सकती थी या अपने बच्चों व रिश्तेदारों को दे सकती थी। शादी के पश्चात् लिए गए ऋण को केवल पुरुष ही चुकाते थे। मन्दिरों में सुन्दर स्त्रियों को देवदासियों के रूप में रखा जाता था। जब कोई स्त्री देवदासी बनाई जाती थी तो विवाह जैसे उत्सव किए जाते थे। इस अवसर पर स्त्री को शादी की तरह दहेज भी दिया जाता था। स्त्री से विवाह के पश्चात् अधिक से अधिक संतान उत्पत्ति की आशा की जाती थी। बांझपन की स्थिति में उन्हें तलाक भी दे दिया जाता था।

रहन–सहन एवं पहनावा (Living Standard and Dresses)

सुमेर के लोगों का जीवन–स्तर काफी ऊंचा था। सुमेरियन नगरों के उत्खननों से मिलने वाले भग्नावशेषों तथा प्रसाधन एवं अन्य सामग्री के आधार पर उनके ऊंचे जीवन स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है। उच्च वर्ग के लोग वैभवशाली जीवन व्यतीत करते थे। वे भव्य महलों में रहते थे। उनके भोजन तथा खाद्यान्न पदार्थों में भी विलासिता देखने को मिलती थी। राजाओं के महलों पर बने भित्तिचित्र तथा प्रस्तर लेख इस बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारियां प्रदान करते हैं। खुदाइयों से मिले फर्नीचर (राजसी पलंग, कुर्सियां, सिंहासन, आराम–कुर्सियां आदि) उपरोक्त कथन की पुष्टि करते हैं। राजा और बड़े–बड़े अधिकारियों के वस्त्र बहुत कीमती होते थे। उच्च वर्ग के स्त्री–पुरुष दोनों ही भड़कीले वस्त्र पहनते थे। पुरुष लुंगी अथवा तहमत का प्रयोग करते थे तथा घर से बाहर जाने पर गर्दन व शरीर को ढक लेते थे जबकि स्त्रियां घाघरे की तरह का वस्त्र धारण करती थीं। जनसाधारण का जीवन सादा था। वे केवल नीचे का वस्त्र पहनते थे तथा उनका ऊपर का शरीर नंगा रहता था। उस समय सूती तथा भेड़ की खाल के वस्त्र तैयार किए जाते थे। सुमेर समाज में लोगों द्वारा सिर पर टोपी तथा पैरों में चप्पल आदि भी प्रयोग की जाती थी। निम्न वर्ग के लोगों का जीवन स्तर

काफी साधारण था। घर में काम करने वाले सेवक तथा सेविकाएं कमर के ऊपर वस्त्र नहीं पहनते थे।

टिप्पणी

आभूषण और शृंगार (Ornaments and Make Up)

सुमेरियन नगरों की खुदाइयों से बड़ी मात्रा में मिलने वाली शृंगार की सामग्री एवं आभूषणों के आधार पर कहा जा सकता है कि सुमेरिया के लोग विलासिता का जीवन व्यतीत करते थे तथा उन्हें सजने–संवरने का शौक था। सुमेरियन समाज में आभूषण पहनने का शौक स्त्री–पुरुष दोनों को था। खुदाई में अनेक प्रकार के आभूषण जैसे अंगूठियां, कण्ठहार, कर्णफूल, पाजेब, कंगन आदि जो नाक, कान, पैर, हाथ, गले, कमर आदि में पहने जाते थे, प्राप्त हुए हैं। सुमेरियनों के आभूषण सोना, चांदी, तांबे तथा बहुमूल्य रनों के बने होते थे। प्रो. वूली द्वारा रानी शुब–अद की समाधि की खुदाई से लघु–पाषाण पेटिका (प्रसाधन पेटिका) जो सोने के तारों से जड़ी थी, सोने का पिन तथा नीलम आदि प्राप्त हुए थे। इस समाधि में गालों की लाली निकालने की चम्मच, त्वचा ठीक करने की छड़ियां तथा भौंहों के अनावश्यक बाल निकालने की चिमटी भी मिली है। अनेक स्थानों की खुदाई में कुछ शृंगारदानियां प्राप्त हुई हैं। अनुमान लगाया जाता है कि सुमेर की स्त्रियां शृंगार करने की बहुत शौकीन थीं। वे बालों को विभिन्न प्रकार से संवारती थीं। अपने आपको आकर्षित बनाने के लिए वे होंठों, गालों तथा भौंहों को भी रंगती थीं। कुछ पुरुष दाढ़ी को काटकर रखते थे तो कुछ दाढ़ी–मूंछें बढ़ा कर रखते थे। आमतौर पर सुमेर के लोग सिर के बाल मुंडा कर रखते थे।

आमोद–प्रमोद के साधन (Means of Amusement)

सुमेर के लोग विभिन्न प्रकार के साधनों से मनोरंजन करके अपना दिल बहलाते थे। खेल–कूद, संगीत, नृत्य तथा उत्सव व त्योहार उनके आमोद–प्रमोद के प्रमुख साधन थे। मन्दिरों में देवदासियां लोगों का मनोरंजन करती थीं। कुछ स्त्रियां वेश्यावृत्ति से लोगों का मनोरंजन करती थीं। बच्चे लकड़ी, मिट्टी तथा धातु के बने खिलौनों से खेलते थे। उनके खिलौनों में बैलगाड़ियां, मनुष्यों तथा जानवरों की आकृतियां आदि प्रमुख थीं।

दास प्रथा (Slavery)

सुमेर के समाज में दास प्रथा का प्रचलन था। युद्ध में पकड़े गए शत्रु के सैनिकों को दास बना लिया जाता था। कर्ज में डूबे हुए व्यक्ति एवं परिस्थितियों की विवशता के कारण भी कुछ लोग दासता का जीवन व्यतीत करते थे। समाज में दासों के साथ पशुओं जैसा अमानवीय व्यवहार किया जाता था। दास अपने स्वामी को छोड़कर कहीं नहीं जा सकते थे। भागने की कोशिश करने पर उन्हें क्रूर शारीरिक यातनाएं दी जाती थीं। अतः दासों की पहचान बनाने के लिए उनके शरीर को दाग दिया जाता था। सुमेरियन समाज में जहां एक तरफ दासों के साथ पशुओं के समान व्यवहार किया जाता था वहीं दूसरी तरफ 'दासता मुक्ति' का भी प्रावधान था। अपने स्वामी को प्रसन्न करने तथा धन देने पर वे दासता से मुक्त हो सकते थे। दास स्त्री से यदि स्वामी को पुत्र प्राप्त हो जाता था तो वह पुत्र पिता की संपत्ति में उत्तराधिकारी माना जाता था। व्यक्ति दासी को अपनी उप–पत्नी भी बना लेते थे तथा पति की मृत्यु पर दासी तथा उसके बच्चे स्वतन्त्र हो जाते थे। उन्हें व्यापार आदि करने की छूट थी। यदि किसी दास का विवाह स्वतन्त्र स्त्री से होता था तो उनकी संतान स्वतन्त्र मानी जाती थी। उस

समय सुमेर में दास पशुओं की भांति बेचे व खरीदे जाते थे। आमतौर पर एक दास की कीमत 20 शेकेल होती थी जो एक गधे के मूल्य से भी कम थी।

टिप्पणी

2.3.2 आर्थिक स्थिति (Economic Condition)

सुमेरिया की प्राचीन सभ्यता में एक विशेष प्रकार की पूंजीवादी अर्थव्यवथा का विकास हुआ जिसमें धर्म की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। यहां के लोगों को विश्वास था कि संपत्ति या पूंजी देवताओं की होती है तथा व्यावहारिक दृष्टि से देवताओं का नियन्त्रण पुरोहित वर्ग के हाथों में था। इस वर्ग ने अपनी सम्पन्नता के आधार पर सुमेरियन नगर राज्यों का आर्थिक नियन्त्रण अपने हाथों में लेकर अर्थव्यवस्था को संचालित किया। सुमेरिया के मन्दिर एक तरफ जहां राजनीतिक और धार्मिक गतिविधियों के केन्द्र थे वहीं दूसरी तरफ मन्दिर आर्थिक गतिविधियों के भी प्रमुख केन्द्र थे। प्रो. अमर फारुखी ने लिखा है कि "पुजारी वर्ग ने किवंदन्तियों एवं पौराणिक कथाओं और कर्मकांडों के माध्यम से लोगों के बीच एक मूल्य व्यवस्था स्थापित की जो देवी–देवताओं की खुशी और समुदाय की बेहतरी एवं कल्याण के लिए प्रचुर मात्रा में अनाज के उत्पादन पर जोर देती थी। उपज का एक हिस्सा देवी–देवताओं की भेंट के रूप में वसूल किया जाता था। इसका उद्देश्य देवी–देवताओं को खुश करना था। इस प्रकार मन्दिर अधिशेष उपज की वसूली, भंडारण तथा पुनर्वितरण का केन्द्र बिन्दु था। सुमेरिया के पुजारियों की अधिशेष उपज पर पकड़ ने उनकी स्थिति को सुदृढ़ करने में मदद की।" इस प्रकार कहा जा सकता है कि सुमेरिया की अर्थव्यवस्था में मन्दिरों अर्थात् धार्मिक तन्त्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। सुमेरियन अर्थव्यवस्था की विशेषताएं इस प्रकार हैं–

कृषि (Agriculture)

प्राचीन काल में सुमेर के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि वहां की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि पर ही आधारित थी। हेनरी लूकस ने इसे हल प्रधान संस्कृति कहा है। उन दिनों दजला व फरात नदियों में बहुत बाढ़ आती थी। अतः वहां के लोगों ने बाढ़ों को रोकने के लिए बड़े–बड़े बांधों, झीलों तथा नहरों का निर्माण कराया। बेबीलोन के साहित्य में भी हमें सुमेरियन लोगों द्वारा दलदली भूमि को सुखाने व नहरों का निर्माण करने के बहुत से प्रमाण मिले हैं। सुमेर के सम्राटों ने भी पुरानी नहरों की मरम्मत कराने तथा नई नहरों के निर्माण कराने में अत्यधिक रुचि दिखलाई। फसलों को बाढ़ के पानी से डूबने से बचाने के लिए सुमेरियन लोग अपने खेतों के चारों ओर ऊंची–ऊंची प्राचीरें या मिट्टी की दीवारें बना देते थे और उसका पानी बड़े–बड़े गड्ढे बनाकर एकत्रित कर लिया जाता था। इसी जल को सिंचाई में प्रयोग करने के लिए शडूफ (ढेकुली अथवा रहट) तथा नहरों द्वारा खेतों में पहुंचाया जाता था। निप्पुर से मिले एक पत्थर पर पिता द्वारा अपने पुत्र को दी जाने वाली कृषि सम्बन्धी शिक्षा लिपिबद्ध है।

सुमेर की भूमि अत्यंत उपजाऊ थी। आर्मेनिया के पर्वतों से निकलकर दजला तथा फरात की नदियां अपने साथ उपजाऊ मिट्टी बहाकर लाती थीं और सुमेर में इकट्ठा करती थीं। यूनानी इतिहासकार हेरोडोट्स बेबीलोनिया की उर्वरता से अत्यंत प्रभावित हुआ। उसने अपनी पुस्तक में वहां की उपजाऊ भूमि तथा कुशल कृषकों का वर्णन किया है। एलिस व जॉन ने लिखा है कि "सुमेर के लोग मुख्य रूप से गेहूं, जौ, दाल तथा खजूर की खेती करते थे।" इतिहासकार डेविड के अनुसार, गेहूं की खेती सर्वप्रथम

टिप्पणी

सुमेर में ही आरम्भ हुई थी। इनके अतिरिक्त सुमेर में विभिन्न प्रकार के फलों तथा सब्जियों की खेती भी काफी मात्रा में की जाती थी। खेती हल और बैलों की सहायता से की जाती थी। सुमेरवासी फसलों को काटने के लिए धातु की हंसियों व फावड़ों का प्रयोग करते थे। श्रीराम गोयल ने लिखा है कि "उनके हलों की यह विशेषता थी कि उनमें जोतने के साथ ही साथ एक नलिका द्वारा बोने के लिए बीज भी डाला जा सकता था।" अन्न उत्पादन का काम मुख्यतः गांवों में होता था। नगर निवासी इसे भिन्न–भिन्न विधियों से प्राप्त करते थे। वैसे भी गांवों से अनाज नगरों में भेजा जाता था। इसके बदले विभिन्न प्रकार की आवश्यक वस्तुएं गांवों में पहुंचती थीं। नगर शासक गांवों से कर के रूप में अनाज वसूल करते थे। लगान कुल उत्पादन का 1/6 से 1/3 भाग वसूल किया जाता था जो मन्दिर के कोष में सुरक्षित रखा जाता था। 1959–60 ई. में निप्पुर नामक स्थान से एक अभिलेख प्राप्त हुआ है। विद्वानों ने इस अभिलेख को 'विश्व का प्रथम कृषि पंचांग' कहा है। इसमें कृषि के विषय में बताया गया है कि किन–किन महीनों में फसलें बोई जानी चाहिए, कब काटी जानी चाहिए तथा भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए क्या–क्या कार्य किए जाने चाहिए। कुछ अन्य अभिलेख सुमेर के लोगों द्वारा बागों में फलों के छोटे–छोटे पौधों को धूप एवं वायु से बचाने के लिए उनके बीच में ऊंचे, घने छायादार पेड़ लगाने की विधि के बारे में भी जानकारी देते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सुमेरिया के लोग कृषि कार्यों में अत्यन्त पारंगत थे।

पशुपालन (Domestication of Animals)

पशुपालन सुमेरियन लोगों का दूसरा प्रमुख व्यवसाय था। पशुपालन को भी राष्ट्रीय आय के रूप में महत्त्व प्राप्त था। पशुओं में भेड़, बकरी, सुअर, बैल, गाय, गधे आदि पशु पाले जाते थे। पशुओं में गाय का बहुत महत्त्व था। सुमेरियन लोगों का विचार था कि गाय पशु जगत की देवी होती है तथा वह समस्त पशु जगत की रक्षा करती है। श्रीराम गोयल ने गाय को सुमेर के लोगों द्वारा देवी की तरह पूजा करने का विवरण दिया है। गाय के अतिरिक्त सुमेर के लोग बैल, भेड़, बकरी, सूअर आदि पशु भी पालते थे। मन्दिरों के पास भी पशु होते थे। इनके निवास के लिए पशुशालाएं तथा चरने के लिए चरागाह होते थे। पशुचारकों का अलग वर्ग होता था, विशेषकर सुअर चराने वालों का। सुमेरियन लोग भेड़–बकरी को मांस तथा चमड़ा प्राप्त करने के लिए पालते थे। गधों तथा खच्चरों से बोझा ढोया जाता था। गायों और भैसों से दूध, दही, मक्खन तथा कृषि के लिए बैल और भैंसे प्राप्त किए जाते थे। प्रो. गोयल ने लिखा है कि "संभवतः सुमेरियन सभ्यता के लोग घोड़े से परिचित नहीं थे।"

उद्योग (Industry)

कृषि एवं पशुपालन के अतिरिक्त सुमेर के लोग विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में लगे हुए थे। सुमेरियन समाज के निम्न वर्ग के लोग (खेतिहर मजदूर तथा दास) बढ़ईगिरी, लुहार, चर्मकार, सूत कातने का कार्य, सुनार, (धातु का कार्य), कुम्भकार (बर्तन बनाने का कार्य), मूर्ति बनाने का कार्य, कपड़ा बुनने आदि कार्य करते थे। जैसाकि हम जानते हैं कि सुमेरियन समाज व अर्थव्यवस्था में मन्दिरों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी, अतः मन्दिरों में काम आने वाली एवं मन्दिरों द्वारा सामूहिक रूप से बांटे जाने वाली वस्तुओं का उत्पादन मन्दिरों द्वारा दासों एवं शिल्पियों से करवाया जाता था। सुमेर के कारीगरों को धातु के कार्य में कुशलता प्राप्त थी। सुमेर के लोग विभिन्न प्रकार की धातु जैसे–सोना,

टिप्पणी

चांदी, तांबा, कांसे से भी परिचित थे। वे तांबे को पिघलाने, गलाने तथा उसे सांचों में ढालकर मूर्तियां तथा अस्त्र–शस्त्र बनाने में निपुण थे। तांबे में टिन मिलाकर कांसा बनाने का ज्ञान भी सुमेर के कारीगरों को था। इसके अतिरिक्त ये लोग सोना, चांदी, सीसा आदि धातुओं का प्रयोग भी आभूषण बनाने एवं अन्य सामान बनाने में करते थे। कपड़ा बुनना भी सुमेर के लोगों का प्रमुख व्यवसाय था। वे सूती तथा ऊनी वस्त्र (घाघरा, तहमद, स्कर्ट, कुर्ता) बनाना जानते थे। कपड़ों को रंगने की प्रथा भी सुमेर में चली हुई थी। रथ बनाना भी प्रमुख उद्योग था। उस समय चार–चार पहियों के रथ बनाए जाते थे। सुमेर के लोग रथ के पहियों में तांबा तथा चमड़ा चढ़ाना भी जानते थे। श्रीराम गोयल के अनुसार, "भार ढोने के यन्त्र के रूप में पहिये का सर्वप्रथम प्रयोग संभवतः सुमेर के लोगों ने ही किया।" सुमेर में नाव तथा प्रतिदिन प्रयोग की जाने वाली वस्तुएं भी बनाई जाती थीं। इनके अतिरिक्त सुमेर के लोग चाक की सहायता से मिट्टी के बर्तन बनाना, ईंटें बनाना, लकड़ी का फर्नीचर तथा अन्य वस्तुएं बनाना आदि व्यवसायों में भी लगे हुए थे।

व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce)

सुमेरियन सभ्यता में वाणिज्य तथा व्यापार का भी बहुत विकास हुआ था। कृषि के बाद सुमेरिया में राज्य की आय का दूसरा बड़ा स्रोत व्यापार था। उस समय आन्तरिक तथा विदेशी दोनों प्रकार का व्यापार प्रचलित था। व्यापार थल मार्ग में गधों, ऊंटों की सहायता से तथा जल मार्ग में नावों के माध्यम से किया जाता था। सुमेरियन लोग नदियों के मार्ग से सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाते थे। वे सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर, लकड़ी आदि का विदेशों से आयात करते थे। उस समय कपड़ा, विलासिता का सामान, अनाज, खजूर आदि विदेशों को भेजे जाते थे। सुमेर के मिस्र, फारस, टर्की, सीरिया तथा भारत (सिंधु सभ्यता) से अच्छे व्यापारिक सम्बन्ध थे। भारत से सुमेर में रंग तथा मसाले आदि का आयात किया जाता। सुमेरिया में सारगोनी शासनकाल एवं उर के तृतीय राजवंश के काल में व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुई। इन शासकों द्वारा सुमेरिया के व्यापार को बढ़ाने के लिए व्यापारिक पद्धति में कई सुधार भी किए गए। ये व्यापारियों की सुरक्षा के लिए सेनाएं भी भेजते थे।

आरम्भ में लेन–देन वस्तु–विनिमय के आधार पर किया जाता था किन्तु बाद में सोने, चांदी के सिक्कों अथवा छड़ों से किया जाने लगा, जिनका भार एक शेकेल होता था। शेकेल से ही कालान्तर में ईरानी मुद्रा सिगलास का प्रादुर्भाव हुआ होगा। प्राप्त स्रोतों से पता चलता है कि चांदी के सिक्कों का भार एक पौण्ड का सोलहवां भाग होता था। आरम्भ में चांदी का मूल्य सोने के मूल्य का एक चौथाई भाग था परन्तु बाद में चांदी का मूल्य गिरने लगा। उस समय व्यापारियों द्वारा व्यापारिक हिसाब–किताब लिखा जाता था। सुमेर में सूद पर ऋण देने की प्रथा भी प्रचलित थी। प्लेट व जीन ड्रमण्ड ने अपनी पुस्तक 'विश्व का इतिहास' में लिखा है कि "सुमेरिया ने ही विश्व में सर्वप्रथम ऋण देने की प्रथा प्रचलित की थी।" सामान लेते व देते समय बिल तथा रसीदों का भी प्रयोग किया जाता था। कुछ इतिहासकारों के अनुसार सूद या ब्याज की दर 20 प्रतिशत से 33 प्रतिशत तक थी। अतः बैंकिंग प्रणाली का भी सुमेर में विकास हो चुका था। इस प्रकार सुमेर के लोगों का आर्थिक जीवन बहुत विकसित स्थिति में था। सुमेर में बाजार भी होते थे जो मन्दिरों के पास लगाए जाते थे। इनमें खूब भीड़–भाड़ होती थी।

टिप्पणी

सुमेरिया में व्यापार वाणिज्य को नियन्त्रित करने के लिए बहुत–से कानून बनाए गए थे। सुमेरिया के विभिन्न नगरों की खुदाइयों से मिलने वाली मिट्टी की पट्टियों पर लिखे हुए लेखों से इस कथन की पुष्टि होती है। श्रीराम गोयल ने लिखा है कि "सुमेरियनों ने व्यापारिक समझौतों को लेखबद्ध करने की प्रथा प्रारंभ कर दी थी। वे बिल, रसीद तथा हुंडियों के प्रयोग से भी परिचित थे। व्यापारिक समझौतों को लेखबद्ध करने के साथ–साथ उन पर साक्षियों के हस्ताक्षर भी करवाए जाते थे। अपने माल को लोकप्रिय बनाने के लिए कमीशन देने तथा एजेण्ट भेजने की प्रथा की भी सुमेरियनों को जानकारी थी।" विभिन्न प्रकार के व्यापारिक समझौतों का सरकारी कार्यालयों में पंजीकरण भी करवाया जाता था।

2.3.3 धार्मिक स्थिति (Religious Condition)

सुमेरिया के जन–जीवन में धर्म का बहुत महत्व था। इनमें धार्मिक भावना के विकास का कारण भय, कल्पना और विश्वास था। प्रारंभ में सुमेरिया के लोग एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे परंतु बाद में उनका धर्म बहु–ईश्वरवादी हो गया। सुमेरिया में भी प्राचीन भारतवर्ष की तरह प्रकृति की विभिन्न शक्तियों का मानवीयकरण करके उन्हें देवी–देवताओं के रूप में पूजा गया तथा उनके चरित्र एवं गुणों का निरुपण किया गया। सुमेर के प्रत्येक नगर के अपने–अपने अलग–अलग देवी–देवता होते थे। कभी–कभी दो नगरों में एक ही नाम के देवता की पूजा होती थी। परंतु उनकी पूजन पद्धति, उनकी शक्तियां तथा गुण अलग–अलग होते थे। सुमेरियनों ने कुछ सांझी परंपराएं विकसित की थीं। उन परंपराओं का विकास एक सतत प्रक्रिया थी जो प्रक्रिया राजनीतिक एकीकरण तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान का परिणाम थी। प्रो. फारुखी ने लिखा है कि, "सुमेरिया के पुजारियों ने एक देवकुल सृजित करने के लिए मिथकों, कर्मकांडों तथा धार्मिक विचारों को इस प्रकार व्यवस्थित किया कि उसमें अनेक पंथ समाहित किए जा सकें। आत्मसात करने की प्रक्रिया से अनेक देवी–देवताओं को बड़े देवता के संबंधी, नौकर तथा कर्मियों में बदल दिया गया।" राजकीय उपासना के विपरीत आमजन के स्तर पर छोटे देवी–देवताओं की पूजा आराधना जारी रही। सुमेरिया के धार्मिक जीवन की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार थीं–

देवी–देवता (Gods and Goddesses)

सुमेर के लोग विभिन्न देवी–देवताओं की उपासना करते थे। प्रत्येक नगर का अपना–अपना देवता होता था। ऊरक नगर के देवता 'अनु', जिसे आकाश का देवता माना जाता था, का स्थान सुमेर में पूजे जाने वाले देवताओं में सबसे ऊपर था। 'अनु' देवता का 3000 ई. पू. में महत्त्व कम हो गया था तथा उसका स्थान वायु के देवता 'एनलिल' ने ले लिया था। यह क्रूर देवता कहलाता था। बहुत से अभिलेखों में एनलिल को 'पृथ्वी' तथा 'आकाश का स्वामी', 'सब देशों का स्वामी' कहा गया है। इस देवता का स्थान निप्पुर नगर में था। सुमेर के सभी शासकों का मानना था कि उन्हें राजा बनाने तथा सत्ता प्रदान करने का अवसर 'एनलिल' देवता की कृपा से ही मिला। एनलिल तूफान का देवता था तथा सुमेर के लोगों का विश्वास था कि किसी नगर को नष्ट करने का आदेश देवताओं की संसद द्वारा एनलिल को दिया जाता था। निप्पुर नगर में स्थित एनलिल देवता के मन्दिर को एकुर कहते थे। एनकी सुमेरियों का तीसरा प्रमुख देवता था। ऐसा माना जाता है कि प्रारंभिक काल में एनकी, पृथ्वी का ही एक

टिप्पणी

रूप था। एनकी को अनु देवता का पुत्र तथा जल का देवता माना जाता था। सुमेर के लोग जल को ज्ञान व वृद्धि का प्रतीक मानते थे तथा इसलिए उन्होंने 'एनकी' को एनलिल के मन्त्री का पद प्रदान किया था। सुमेर के देवताओं के समूह में चौथा स्थान 'पृथ्वी' को प्राप्त था। 'पृथ्वी' का प्राचीन नाम 'की' था, 'पृथ्वी माता की पूजा कई रूपों में की जाती थी। इसकी पूजा उपासना शक्ति तथा प्रजनन की देवी के रूप में की जाती थी। कई साक्ष्यों में उसे बच्चों को स्तनपान करते हुए चित्रित किया गया है।

इन प्रमुख देवताओं के अलावा सुमेर में अन्य छोटे देवताओं की भी पूजा की जाती थी। इन देवताओं में सबसे प्रसिद्ध इन्नेनी नाम की देवी थी, जो उर्वरता की देवी थी। प्राचीन काल में अरुक नगर में इस देवी की पूजा की जाती थी। बाद में सेमाइटों ने इस देवी को इश्तर देवी के रूप में पूजा। धीरे–धीरे इस देवी का महत्त्व इतना बढ़ गया कि इसने 'अनु' देवता की पत्नी अन्तु के प्रतिद्वंद्वी का महत्त्व प्राप्त कर लिया। सुमेर के लोग तम्मुज देवता की भी पूजा करते थे। इस देवता को कहीं इश्तर के लड़के, कहीं भाई तथा कहीं प्रेमी के रूप में पूजा जाता था। इसे अनाज, फूल तथा वनस्पतियों का देवता माना जाता था। सुमेर के लोगों की यह भी मान्यता थी कि तम्मुज पृथ्वी पर वनस्पतियों को लाने के अलावा अपने उपासकों को अमरत्व भी प्रदान करता है। सुमेरियों में प्लेग का काफी अधिक प्रकोप था, इसलिए नेरगल को प्लेग के देवता के रूप में पूजा जाता था। सुमेरियन लोग अपने देवताओं पर विभिन्न प्रकार का चढ़ावा जैसे–अनाज, वस्त्र, फल, आभूषण आदि भी चढ़ाते थे।

उपरोक्त देवताओं के अतिरिक्त सुमेरिया के लोग ग्रहों की भी देवता के रूप में पूजा करते थे। ग्रह देवताओं में सिन (चन्द्रमा) तथा शमस (सूर्य) प्रमुख थे। यद्यपि वहां ग्रहों की पूजा काफी महत्त्वपूर्ण नहीं रही।

देवताओं का स्वरूप (Nature of Gods)

सुमेरिया के धर्म की यह एक खास विशेषता थी कि उन्होंने देवताओं का मानवीयकरण किया हुआ था अर्थात् सुमेरिया के देवता मनुष्य के समान थे। उनके देवताओं के आचार, विचार एवं व्यवहार मनुष्यों के समान थे। वे साधारण मनुष्यों की तरह खाते–पीते थे, विवाह करते थे, सन्तान उत्पन्न करते थे, युद्ध करते थे तथा बीमार होते थे। सुमेर के लोगों की दृष्टि में देवता तथा मनुष्य में इतना अन्तर था कि देवता अमर थे तथा मनुष्य नश्वर। दूसरा, देवता मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली थे। तीसरा, देवता मनुष्यों को प्रत्यक्ष रूप में दिखाई नहीं देते थे परन्तु वे उनसे अप्रत्यक्ष रूप में सम्पर्क स्थापित कर सकते थे। सुमेर के लोगों की मान्यता थी कि उनके देवता सत्य, न्याय तथा अच्छाई के प्रेमी हैं तथा वे यह भी मानते थे कि देवता मनुष्य में बुराइयां, पाप तथा अनैतिकता भी उत्पन्न करते हैं। उन्होंने ही प्रत्येक व्यक्ति को पापमूलक प्रकृति प्रदान की है। क्रेमर ने लिखा है कि, "सुमेरियनों का मानना था कि आज तक किसी भी मां की कोख से किसी निष्पाप बालक का जन्म नहीं हुआ है।"

मन्दिर तथा पुजारी वर्ग (Temples and Priests)

सुमेर में राजाओं ने देवताओं की उपासना के लिए अनेक मन्दिरों का निर्माण कराया। बेबीलोन के विभिन्न नगरों में 53 से अधिक मन्दिर थे। सुमेरिया के धर्म में मन्दिरों को विशेष स्थान प्राप्त था। मन्दिरों को देवताओं का निवास स्थान माना जाता था। मन्दिरों में देवताओं की मूर्तियों तथा चित्र बने रहते थे। मन्दिर पहाड़ियों पर बनाए जाते थे

टिप्पणी

जिन्हें जिग्गुरात कहा जाता था। ये पिरामिडनुमा होते थे जिनका निर्माण वेदिकाओं पर किया जाता था। मन्दिर ऊंची मीनार की शक्ल में बनाए जाते थे जो दो या तीन मंजिल ऊंचे होते थे। मन्दिरों की मीनारें मीलों दूर से दिखाई देती थीं। निप्पुर नगर का एनलिल तथा लगश नगर में शमस देवता का मन्दिर प्रसिद्ध था। मन्दिर धार्मिक उत्सवों के साथ–साथ सामाजिक जीवन के भी प्रमुख केन्द्र थे। प्रत्येक मन्दिर में खाने–पीने की वस्तुएं, स्त्री, दास, भूमि आदि उपलब्ध होती थीं। क्योंकि सुमेर निवासियों का विचार था कि जिस प्रकार मनुष्य को भोजन, अन्य सामान तथा स्त्री की आवश्यकता होती है उसी प्रकार देवताओं को भी भोजन तथा स्त्रियों आदि की आवश्यकता होती है।

मन्दिरों में पुजारी वर्ग को बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। राजा के पश्चात इस वर्ग को दूसरे स्थान पर गिना जाता था। प्राचीन काल में पुजारी वर्ग बहुत वैभवशाली हो गया था क्योंकि इनके पास बड़ी मात्रा में भोजन, धन आदि चढ़ावे के तौर पर आता था। इस चढ़ावे से पुजारी वर्ग समाज का धनी एवं प्रतिष्ठित वर्ग बन गया। इसी कारण पुरूकागीना नामक शासक ने इन पर प्रतिबन्ध लगाकर इनकी आमदनी बन्द करवा दी। इन पर आरोप लगाया गया कि वे भोली–भाली जनता को गुमराह करके लूटते हैं। ऐसे लोगों को दरबार से निष्कासित कर दिया गया। कानून बनाकर उनकी आय पर अंकुश लगा दिया गया, परन्तु उसकी मृत्यु के बाद पुजारी पुनः समृद्धशाली बन गए।

मृतक संस्कार (Disposal of the Deads)

सुमेरवासी मृत्यु के पश्चात पुनर्जन्म में भी विश्वास रखते थे। सुमेरिया के धर्म में मृतक संस्कार को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वे अपने मृतकों को चटाइयों में लपेटकर घरों के प्रांगण में अथवा कमरे के अन्दर ही दफनाते थे। कभी–कभी मृतक शरीर को दो बड़े–बड़े मटकों में भरकर उनके मुंह मिलाकर जोड़ दिए जाते थे। मृतक को चतुर्भुजाकार समाधियों में लिटा दिया जाता था तथा उस पर कच्ची ईंटों की मेहराब सी बना दी जाती थी। विभिन्न स्थानों की खुदाई में प्राप्त कब्रों में सोने–चांदी के आभूषण, ताम–पात्र और अस्त्र–शस्त्र आदि मिले हैं। इसके अलावा वे अपने सम्बन्धियों की मृत्यु के पश्चात् उनके शवों के साथ वस्त्र, आभूषण, बर्तन आदि भी रख देते थे। वूली नामक विद्वान के अनुसार, राजा के मरने पर तो उसके साथ अस्त्र–शस्त्र, आभूषण, रानियों, सेवक, दासियों और यहां तक कि बैलों को भी दफना दिया जाता था। लोगों का विश्वास था कि मनुष्य को मृत्यु के बाद भी उपरोक्त वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी। उर से प्राप्त रानी शुब–अद की समाधि से उसके साथ दफनाए गए 74 लोगों के शव भी प्राप्त हुए हैं। प्रो. भगवतशरण उपाध्याय के अनुसार, "उस काल की रीति के अनुसार उन्हें अपनी स्वामिनी का साथ मौत में भी देना पड़ता था जैसे उसके जीवन में उन्होंने दिया था। शरीर मरे पड़े थे, अस्थिपिंजर मात्र रह गए थे पर रानी शुब–अद के श्रृंगार के लिए प्रसाधन की पिटारियां पड़ी थीं। कीमती पिटारियां जिनके भीतर अंजन से इत्र–फुलेल तक सभी सामान मौजूद थे, केश पिनों से लेकर कान खोदने की सुनहरी लकड़ी और दांत खोदने के सुनहरे तीर तक और शुब–अद के अस्थिपिंजर पर, उसकी काली काया के बावजूद, सिर का सुनहरा ताज, कानों के भारी कुंडल, विविध हार, सोने और कीमती पत्थरों के बने आभूषण रौनक बरसा रहे थे। चांदी–सोने की गंग, जमनी बकरियां, चांदी के जहाज, अनेकानेक अलंकरण जैसे के तैसे धरे पड़े थे। निर्जीव, बहुमूल्य वस्तुएं उन शरीरों को सजा रही थीं, जो कभी सजीव थे।"

टिप्पणी

वे अपने मृतकों को प्रायः अपने मकान के आंगन या कमरों में गाड़ देते थे। यहां के लोग मृतकों के साथ उनके दैनिक जीवन में काम आने वाली तथा खाने–पीने की सामग्री रख देते थे। खुदाइयों में कब्रों से इन वस्तुओं के अतिरिक्त सोने–चांदी आदि के आभूषण एवं अस्त्र–शस्त्र भी प्राप्त हुए हैं। 'इनन्ना का पाताल में अवतरण' कथा इस विषय में महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि सुमेरिया के धर्म में आध्यात्मिकता का अभाव था। धर्म में ईश्वर के साथ एकाकार होने, आत्मा एवं परमात्मा विषयक संबंधों की कल्पना नहीं थी। धर्म का उद्देश्य मनुष्य को इस जगत की भौतिक सुख सामग्री तथा युद्धों में विजय प्रदान करवाना था।

अन्धविश्वास एवं जादू–टोना (Supersitions and Witchcraft)

सुमेर के लोगों में विभिन्न प्रकार के अंधविश्वास व्याप्त थे। उनकी मान्यता थी कि देवता लोग अपनी इच्छाओं को कुछ शकुनों के द्वारा प्रकट करते हैं। अतः लोग शकुनों को जानने तथा उनकी व्याख्या करने का प्रयास करते थे तथा देवताओं की इच्छा जानने के लिए उन्होंने बहुत से तरीके अपनाए। उदाहरण के लिए यदि किसी शहर के पटेशी को किसी विषय पर देवताओं की इच्छा जाननी होती थी, तब वह मन्दिर में जाकर सो जाता था और वहां उसे स्वप्न दिखाई पड़ते थे, जिनकी व्याख्या करके वे देवताओं की इच्छा को जानते थे। इसलिए वहां के समाज में स्वप्न जानने वाले विशेषज्ञ भी थे। सुमेरिया में लोगों द्वारा अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पशुओं की बलि भी दी जाती थी। प्रत्येक व्यक्ति अनाज, खजूर, अंजीर, तेल, शहद एवं दूध आदि मन्दिर में ले जाकर एक नियत स्थान पर रख देते थे ताकि देवता उन्हें प्राप्त कर सकें। सुमेरिया के विभिन्न नगरों की खुदाइयों से मिलने वाले पूजा–पात्रों तथा रीलिफ चित्रों से उनकी धार्मिक क्रियाओं की जानकारी मिलती है। सुमेरियन लोगों का भूत–प्रेतों तथा जादू–टोनों में भी विश्वास था। उनका मानना था कि बीमारियां भूत–प्रेतों के कारण होती हैं। इसलिए जादू–टोने वाले प्रेतों के जादू–टोनों तथा मन्त्रों द्वारा दूर करते थे। खुदाइयों में मिलने वाली मिट्टी की पट्टियों पर बहुत से मन्त्र तथा जादू की बातें लिखी हुई मिली हैं।

अपनी प्रगति जांचिए

4. मेसोपोटामिया के दक्षिण भाग को किस नाम से पुकारा जाता है?

(क) अक्कद (ख) सुमेर

(ग) बेबीलोन (घ) इनमें से कोई नहीं

5. प्राचीन सुमेर का समाज कितने वर्गों में बंटा हुआ था?

(क) दो (ख) तीन

(ग) चार (घ) पांच

6. प्राचीन सुमेर में आमतौर पर एक दास की कीमत क्या होती थी?

(क) 20 शेकेल (ख) 30 शेकेल

(ग) 40 शेकेल (घ) 50 शेकेल

2.4 मेसोपोटामिया में विज्ञान एवं संस्कृति

टिप्पणी

प्राचीन काल में दजला (Tigris) और फरात (Euphrates) नदियों की घाटी, मेसोपोटामिया में, एक के बाद एक तीन सभ्यताओं अर्थात् सुमेर, बेबीलोन तथा असीरिया की सभ्यताओं का जन्म हुआ था। यहां सुमेरिया और बेबीलोनिया की सभ्यताओं के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक जीवन पर चर्चा करेंगे।

2.4.1 विज्ञान (Science)

सुमेरिया और बेबीलोनिया के लोगों ने विज्ञान के क्षेत्र में अच्छी प्रगति कर ली थी। विज्ञान के अंतर्गत अन्य विषयों में भी मेसोपोटामिया के लोगों ने काफी प्रगति की जिनका विवरण यहां प्रस्तुत है–

(i) गणित (Maths)– सुमेरिया ने गणित के क्षेत्र में काफी प्रगति की थी। सुमेर के लोगों को जोड़, घटा, गुणा, भाग, वर्गमूल तथा घनमूल का ज्ञान था। उनकी गणना पद्धति दशमलव व षटदाशमिक प्रणाली का मिश्रित रूप थी। उनकी अंक पद्धति में 100 के स्थान पर 60 का प्रयोग किया जाता था। जिस प्रकार हम 600 को 'छः' 'सौ' कहते हैं उसी प्रकार वे इसे 'दस' 'साठ' कहते थे। रेखागणित का उन्हें कम ज्ञान था परन्तु उन्होंने बीजगणित में कुछ आरंभिक आविष्कार किए थे। सुमेर के लोगों द्वारा अपनाए गए 60 की संख्या के आधार पर ही बाद में समय की गणना में 60 मिनट का घण्टा तथा 60 सेकंड की एक मिनट इकाई का आरंभ हुआ। सुमेर के लोग भार की इकाई के रूप में 'मीना' का प्रयोग करते थे जो 60 शेकेल के बराबर माना जाता था। एक शेकेल में 8.416 ग्राम तथा 1 मीना एक पौंड से कुछ अधिक था। 60 मीना एक टेलेन्ट के बराबर माना जाता था।

सुमेरियनों की तरह बेबीलोनियन लोगों का गणित दशमलव तथा षष्ठिक विधियों पर आधारित था। उनके अंकों में केवल तीन चिह्न प्रयुक्त होते थे। एक से नौ तक गिनती के लिए अलग चिह्न थे, नौ से पचास तक के लिए दूसरा चिह्न था तथा पचास से सौ के लिए पहाड़ों का प्रयोग किया जाता था। गणित में गुणा भाग के लिए पहाड़ों का प्रयोग किया जाता था। वृत्त को उन्होंने 360 अंशों में विभाजित किया था। ज्यामिति में भी उन्होंने कुछ प्रगति की थी। बहुत से विषम क्षेत्रों की माप करना वे जानते थे। रेखागणित की सहायता से वे भूमि की पैमाइश कर लेते थे। इसके अतिरिक्त इन लोगों को वृत्त, परिधि और व्यास का संबंध, त्रिभुज के क्षेत्रफल का आधार, ऊंचाई का गुणनफल आदि का भी ज्ञान था। गणित की मदद से उन्होंने एक वार्षिक कलेंडर की रचना की। इसमें 12 महीने का वर्ष तथा सात दिन का सप्ताह होता था। एक वर्ष में 354 दिन होते थे।

(ii) **ज्योतिष और भूगोल (Astrology and Geography)**– कृषि की आवश्यकताओं ने सुमेर में बहुत–सी विद्याओं को जन्म दिया। इन्हीं विद्याओं में एक ज्योतिष का भी ज्ञान सुमेरियनों ने सीखा। ऋतुओं के पूर्ण ज्ञान के बिना कृषि कार्य अच्छी प्रकार नहीं चल सकता था, अतः उन्होंने दिन व रात की कल्पना से आगे बढ़कर चन्द्रमा के आधार पर महीनों की रचना की और सौर वर्ष की खोज की। उन्होंने चन्द्र पंचांग व सौर पंचांग के अन्तर को दूर करने के लिए अतिरिक्त मास की गणना का नियम बनाया। सुमेर के लोग संवत का उपयोग नहीं जानते थे। अतः

टिप्पणी

वे प्रत्येक वर्ष का नामकरण उस वर्ष में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटना के आधार पर करते थे। सुमेरियन लोग ग्रहों से पूरी तरह परिचित थे। उन्होंने अपने देवताओं के नाम भी नक्षत्रों पर रखे हुए थे। यहां तक कि पुजारी लोग भी भविष्यवाणी के द्वारा भविष्य में घटने वाली घटनाओं की जानकारी देते थे। इतिहासकार डेविस ने लिखा है, "पुजारियों का तो यहां तक दावा था कि वे बलि में चढ़ाई गई मृत भेड़ के जिगर पर अंकित रहस्यपूर्ण चिह्नों को देखकर भविष्य में होनी वाली घटनाओं की भविष्यवाणी कर सकते हैं।" ज्योतिष विद्या के अध्ययन के लिए सुमेर के लोगों ने वेधशालाएं बना रखी थीं। वे शगुन और अपशगुन में भी विश्वास करते थे।

बेबीलोनिया में भी ज्योतिष के ज्ञान का खूब विकास हुआ था। ये लोग ज्योतिष में विश्वास रखते थे। इस काल के विद्वानों को नक्षत्र एवं ग्रह की गतिविधियों तथा उनके अंतर का ज्ञान था। वे ज्योतिषी नक्षत्र एवं ग्रह विधियों के आधार पर भविष्यवाणी करते थे जिससे स्पष्ट होता है कि उनका विश्वास था कि नक्षत्र एवं ग्रहों की गतिविधियां प्रकृति को प्रभावित करती हैं। संक्रांति तथा संघात का भी इन्हें पूरा ज्ञान था। वे लोग सूर्य ग्रहण तथा चंद्र ग्रहण का भी पता लगा लेते थे। जल घड़ी तथा सूर्य घड़ी के द्वारा ये समय का पता लगा लेते थे। वर्ष के बारह चंद्रमास का ज्ञान प्राप्त करके इन्होंने पक्ष, सप्ताह, दिन, घंटा और सेकेंड आदि का प्रारंभ कर दिया था। दिन की गणना सूर्योदय से की जाती थी। ज्योतिष के विस्तृत ज्ञान के बल पर ही बेबीलोनिया को 'खगोल विद्या की माता' की उपाधि प्राप्त हुई है।

बेबीलोनियावासियों ने विश्व इतिहास में पहली बार प्रांतों और नगरों के मानचित्र बनाए। बेबीलोन के पास मिले 1600 ई.पू. के एक अभिलेख में एक प्रांत का मानचित्र प्राप्त हुआ है। इसमें पर्वतों, समुद्रों और नदियों को विविध प्रकार की रेखाओं के माध्यम से दर्शाया है तथा कई नगरों के नाम दिए गए हैं। एक कोने में दिशा–संकेत भी बना दिया गया है। जेना विश्वविद्यालय में निप्पुर का मानचित्र सुरक्षित है।

(iii) चिकित्सा शास्त्र (Medical Science)–

सुमेर में चिकित्सा प्रणाली का अधिक विकास नहीं हुआ। उस समय लोग जादू–टोना में विश्वास रखते थे। वे किसी भी बीमारी, प्रलय तथा महामारी का कारण देवी–देवताओं की नाराजगी मानते थे। इसलिए वे दुःखों का निवारण करने के लिए जादू–टोना व विभिन्न प्रकार की बलियों का सहारा लेते थे। इसके बावजूद सुमेर में चिकित्सा शास्त्र का भी थोड़ा बहुत विकास हो रहा था। उनके एक वैद्य लुलु ने बहुत सिद्धियां प्राप्त कर रखी थीं। 3000 ई. पू. के एक शिलालेख में अनेक बीमारियों को भगाने के नुस्खे लिखे हुए हैं। 1854 में एक अन्य अभिलेख प्राप्त हुआ है जिस पर विभिन्न बीमारियों के नुस्खे लिखे हुए हैं। इतिहासकारों का ऐसा भी मत है कि सुमेर वासी पेट दर्द को दूर करने के लिए दूध तथा सिर के बालों को उड़ने से रोकने के लिए तेल और शराब का प्रयोग करते थे। इस प्रकार वहां की चिकित्सा पर धर्म का भी बहुत प्रभाव था।

बेबीलोनियावासियों ने चिकित्साशास्त्र के क्षेत्र में भी उन्नति की। रोगों को दूर करने के लिए विभिन्न प्रकार की जड़ी–बूटियां दी जाती थीं। जैसे दांत के दर्द में सूर्यमुखी के बीज का प्रयोग बताया जाता था, पेट दर्द में दुग्ध का सेवन ओर गंजापन

टिप्पणी

दूर करने के लिए तेल तथा मदिरा के प्रयोग की सलाह दी जाती थी। हम्मूरबी ने अपनी विधि–संहिता में चिकित्सकों की फीस और उनके इलाज करने पर लापरवाही बरतने पर दंड का विधान किया है जिससे यह पता चलता है कि हम्मूरबी के समय तक बेबीलोनिया में चिकित्सक एक विशिष्ट वर्ग के रूप में अस्तित्व में आ चुके थे। परंतु अंधविश्वासी प्रजा उनके स्थान पर ओझाओं को ज्यादा मान्यता देती थी। बेबीलोनवासियों का यह विश्वास था कि रोगों का कारण दैवी प्रकोप होते हैं, इसलिए दवाओं के स्थान पर जादू, मंत्र, ताबीज और ओझाओं द्वारा की जाने वाली झाड़–फूंक को ज्यादा प्रभावकारी मानते थे। दवाओं का प्रयोग भी वे रोग दूर करने के लिए नहीं बल्कि रोगी पर चढ़े भूत–प्रेत को डराने के लिए करते थे। इसलिए दवाओं को अजीब ढंग से तैयार किया जाता था, जैसे कच्चा मांस, सर्प का मांस, तेल, शराब, पिसी हुई हड्डी, सड़ा हुआ भोजन, चर्बी, धूल और मल–मूत्रादि का मिश्रण लाभकारी माना जाता था।

(iv) कृषि शास्त्र (Agriculture) : सुमेरिया के आर्थिक जीवन का आधार कृषि था। इसलिए यहां के निवासियों ने प्रारंभ से ही कृषि शास्त्र में काफी रुचि ली थी। यहां के लोगों ने कृषि पंचांग की रचना की थी। साहित्य में एक पिता अपने पुत्र को वर्षभर के कृषि कार्यक्रम को समझा रहा है। फलों के पौधों की रक्षा किस प्रकार की जाए, सुमेर के लोग इस बारे में जानकारी रखते थे।

2.4.2 संस्कृति (Culture)

प्राचीन मेसोपोटामिया की संस्कृति को इस प्रकार समझा जा सकता है–

भाषा, लिपि, शिक्षा तथा साहित्य (Language, Script, Education and Literature)– सुमेर और बेबीलोनिया में भाषा, लिपि, शिक्षा और साहित्य का भी बहुत विकास हुआ। सुमेर में मन्दिरों के पास भूमि, बड़ी संख्या में पशु, स्त्रियां तथा दास आदि होते थे। अतः मन्दिरों के पुजारियों द्वारा इन सबकी संख्या को लिखना अति आवश्यक हो गया था, क्योंकि इनकी संख्या को याद रखना बड़ा मुश्किल होता था। इसलिए आरम्भ में सुमेरियन मिट्टी की पट्टियों पर रेखाएं खींचकर इनकी गिनती रखते थे। परन्तु इसमें उन्हें अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता था इसलिए सुमेरियनों ने भाव चित्र लिपि (ideograph) का विकास किया। इस लिपि का प्रचार 3600 ई.पू. से पहले ही हो गया था। इसमें मनुष्य के विचारों को चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया जाता था। इस लिपि में चार सौ चित्र शामिल थे। उदाहरण के लिए मान लीजिए लिपि के द्वारा किसी स्त्री का चित्र बनाया, लेकिन इसमें यह बताना मुश्किल होने लगा कि वह स्त्री दासी है या स्वतन्त्र। इस भाव को प्रकट करने के लिए उन्होंने दासियों के चित्र के साथ पर्वत का चिह्न बनाना आरम्भ कर दिया। क्योंकि दासियां अधिकतर पर्वतों के क्षेत्र से लाई जाती थीं। इस भाव चित्र लिपि में यह समस्या उभरकर सामने आई कि सुमेरवासी अमूर्त विचारों के भाव चित्र नहीं बना सकते थे। इसलिए उन्होंने ध्वनि लिपि का आविष्कार किया। इसके पश्चात् शब्दांश लिपि तथा बाद में लिपि में संकेतों का प्रयोग किया जाने लगा। जैसे हल शब्द चित्र का सम्बन्ध कृषक तथा हल दोनों से था। अगर उसके साथ लू (मनुष्य) चिह्न जोड़ दिया जाता तो वह कृषक बन जाता था। इस प्रकार 3000 ई.पू. में सुमेर के लोगों ने जिन चित्र लेखों, चिह्नों तथा संकेतों का लिपि के रूप में प्रयोग किया वह कीलाक्षर या कीलाकार लिपि (Cuneiform script) कहलाती थी। उस लिपि की शक्ल कील की तरह होती थी।

टिप्पणी

सुमेरियन लोग मिट्टी की पट्टियों पर लिखने का कार्य करते थे। उन्होंने अपने भाव–चित्रों तथा शब्द–चित्रों को गीली मिट्टी की पट्टिकाओं (Tablets) पर नुकीले सरकंडों से बनाया। नुकीले सरकंडों से लिखने के कारण ही इस लिपि का नाम क्यूनीफार्म लिपि (कीलाका लिपि) पड़ा। यह शब्द लैटिन भाषा के क्युनियस से निकला है जो लैटिन में त्रिकोणाकार लगने वाली आकृतियों के लिए प्रयोग किया जाता है। पट्टियों को धूप में सुखाकर तथा आग में पकाकर उन्हें पक्का बना लिया जाता था जिन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में आसानी होती थी। सुमेरियन लिपि पश्चिमी एशिया की प्राचीनतम ज्ञान लिपि मानी जाती है। यह लिपि मिट्टी की इन पट्टिकाओं पर दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। सुमेरियन लिपि में 300 से अधिक अक्षर थे। प्रो. एच. जी. वेल्स ने अपनी पुस्तक 'द आउटलाइन ऑफ हिस्ट्री' में लिखा है कि, "सुमेरियन लोगों ने विश्व में सर्वप्रथम एक लिपि का आविष्कार किया, जिसे कीलाक्षर लिपि कहा जाता था।" स्वेन ने सुमेरियन लिपि को सुमेरियन सभ्यता की सबसे बड़ी देन माना है। वहीं इसके महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए श्रीराम गोयल ने भी लिखा है कि, "सुमेरियन लिपि पश्चिमी एशिया की प्राचीनतम ज्ञान लिपि है। इसका प्रयोग सुमेरियनों के अतिरिक्त अन्य बहुत–सी जातियों ने किया। सुमेरियनों, असीरियनों एवं कैल्डियनों ने भी इसी लिपि में अपने अभिलेख उत्कीर्ण करवाए। दूसरी सहस्त्राब्दी ई.पू. में यह पश्चिमी एशिया एवं मिस्र के राज्यों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय लिपि के रूप में प्रयोग की गई।"

3000 ई.पू. में सुमेर में पाठशालाएं अस्तित्व में आने लगीं। सुमेर की सभ्यता में पाठशालाओं को इदुब्ब कहा जाता था। शायद इसी शब्द से फारसी के अदब शब्द की उत्पत्ति हुई थी। धीरे–धीरे सुमेर में पाठशालाओं की संख्या बढ़ने लगी। ऐसे अनेक अभिलेख प्राप्त हुए हैं जो शायद पाठ्यक्रम के रूप में पाठशालाओं में प्रयोग किए जाते होंगे। सुमेर में विद्यार्थियों को शिक्षा देने का मुख्य उद्देश्य मन्दिरों, राज्यों तथा व्यापारियों के लिए क्लर्क प्रदान करना था। अनुमान लगाया जाता है कि सुमेर में धनी वर्ग के लोग ही शिक्षा ग्रहण कर पाते थे। ऐसा लगता है कि उस समय शिक्षा बहुत महंगी होती होगी। पाठशालाओं का प्रधान अध्यापक उम्मियां कहलाता था जो अन्य अध्यापकों की सहायता से विद्यार्थियों को पढ़ाने का कार्य करता था। आरम्भिक शिक्षा छोटी उम्र से आरम्भ होती थी जिसमें बच्चों को पहले अक्षर ज्ञान तथा बाद में जमा, घटा, गुणा तथा भाग सिखाया जाता था। सुमेर में मन्दिर भी विद्यालय के रूप में शिक्षा प्रदान करते थे। महिलाओं को कितनी शिक्षा दी जाती थी यह बताना कठिन कार्य है। इतिहासकार जैक्स पिरेन के विचार के अनुसार, "शिक्षा के कारण सुमेरियन सभ्यता विकसित हुई और स्थायी हो गई।"

सुमेरियन लोगों ने शिक्षा के साथ–साथ साहित्य में भी बहुत विकास किया। उस समय साहित्य, लेख, अभिलेख मिट्टी की पट्टियों पर लिखे जाते थे। 2700 ई.पू. में सुमेर में बड़े–बड़े पुस्तकालय स्थापित हो गए। डी सरजाक नामक विद्वान को टेलो नामक स्थान पर राजा मूडी (मूढ़ी) के समय की 30,000 पट्टियां मिली हैं। यह उस राजा का पुस्तकालय माना जाता है। सुमेरियन लोगों ने धार्मिक साहित्य, कहानियों, गीतों, कविताओं तथा अनेक लेखों का निर्माण किया। उनके द्वारा रचित धार्मिक और पौराणिक आख्यानों में एनकी की विश्व व्यवस्था, एनलिल, इनन्ना का पाताल–अवतरण तथा एनलिल तथा चन्द्रमा की उत्पत्ति, एनलिल और निननलिल, एनकी और निनहर्सग,

गिल्गमेश तथा दुमुजि की मृत्यु आदि प्रसिद्ध हैं। सुमेरियन लोगों ने इन लेखों, अभिलेखों, साहित्यों को सुरक्षित रखने के लिए पुस्तकालयों का निर्माण करवाया।

टिप्पणी

बेबीलोनिया के लोग सेमेटिक भाषा का प्रयोग करते थे। इनकी लिपि में वर्णमाला का प्रयोग नहीं होता था। शब्द खंड 300 थे। सुमेरियनों की भांति ये लोग भी मिट्टी की तख्तियों पर लिखते थे। लेखकों का समाज में सम्मान था क्योंकि लोगों का विश्वास था कि 'जो लिखने में प्रवीण होते हैं वे सूर्य के समान चमकते हैं।' बेबीलोन के लोग शिक्षा की ओर बहुत ध्यान देते थे। मन्दिरों, कार्यालयों में तथा व्यापारियों के दफ्तरों में कार्य करने के लिए लिपिकों की जरूरतों को पूरा करने हेतु विद्यालय की व्यवस्था की गई थी। ये विद्यालय मन्दिरों में स्थित होते थे या उनसे संबद्ध रहते थे। हम्मूरबी के युग की विद्यार्थियों की अभ्यास–पुस्तिकाएं प्राप्त हुई हैं जिससे ज्ञात होता है कि बेबीलोनिया के शिक्षक विद्यार्थियों को पहले मिट्टी की स्लेट पर नरकुल की कलम से कीलाक्षर लिपि के चिह्न बनाना सिखाते थे और उसके बाद शब्द, वाक्य रचना और मुहावरे आदि। विद्यार्थियों को मन्दिरों में पुजारियों द्वारा गणित, विज्ञान, ज्योतिषशास्त्र, खगोलशास्त्र, वाणिज्यशास्त्र, चिकित्सा, विधि, धर्मशास्त्र, संगीत, नृत्य, गायन के साथ–साथ कृषि शास्त्र, पशुपालन, सूत कातना, कपड़ा बुनना, रंगना आदि रचनात्मक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। बालक एवं बालिकाएं दोनों शिक्षा अर्जित करते थे क्योंकि तात्कालिक समाज में स्त्री का महत्व धीरे–धीरे कम होने लगा था इसलिए यह विश्वास किया जाता है कि बालिकाओं को केवल धर्मशास्त्र, सूत कातना, कपड़ा बुनना, रंगना, नृत्य, संगीत, गायन आदि की शिक्षा दी जाती थी। मध्यम वर्ग के लोग आर्थिक दृष्टिकोण से दुर्बल होते थे इसलिए वे अपने बच्चों को रचनात्मक विषयों की शिक्षा दिलवाते होंगे ताकि उनके बच्चे शीघ्रता से उनकी आर्थिक सहायता कर सकें। हम्मूरबी की विधि संहिता के एक अनुच्छेद के अनुसार, "अगर कोई कलाकार अपने दत्तक पुत्र को अपनी कला का ज्ञान देता है, तो दत्तक पुत्र को उसका वास्तविक पिता वापस नहीं ले सकता। यदि वह दत्तक पुत्र को अपनी कला से संबंधित प्रशिक्षण नहीं देता है, तो वह पुत्र अपने घर जा सकता है।" शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था इसलिए विभिन्न विषयों को विकसित होने का मौका मिला।

बेबीलोन सभ्यता में साहित्य पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था। लेखन कला में बेबीलोन के लोगों ने सुमेरियन टंकाकार लिपि को अपनाया। साहित्य ज्यादातर धर्म प्रधान था परंतु इसके साथ–साथ व्यक्तिगत रचनाएं भी लिखी गईं। इन रचनाओं में प्रेम मिलन–प्रेम विच्छेद, सांसारिक सुख–दुख को लेखक अपना विषय बनाते थे। सम्राटों के व्यक्तिगत दरबारी कवि होते थे जो उनकी प्रशंसा में कविताओं की रचना करते थे। इनकी साहित्यिक कृतियों में 'गिल्गामेश महाकाव्य' अद्वितीय है। इसकी कथावस्तु बहुत रोचक है। इसमें 11 अध्याय हैं। इसमें बाढ़ की कहानी है, जिसमें बताया गया है कि इस बाढ़ में सभी बह गए थे, केवल दैवी शक्ति रखनेवाला गिल्गामेश ही बचा था। इस काव्य में उसका असुरों से युद्ध करने का भी उल्लेख है। इसके साहित्य में काव्य के अतिरिक्त मंत्र, गीत और प्रार्थनाएं भी हैं। इस महाकाव्य में नैतिक शिक्षाएं भी दी गई हैं, जैसे अपने माता–पिता का भरण–पोषण और आदर करो, बड़ों के हित की रक्षा करो, अशिष्टता और घृणा से दूर रहो, लोगों से बोलने में जल्दीबाजी न करो इत्यादि। इस महाकाव्य में एक कथा राक्षस इनकडिर से संबंधित है जो देव समान मानव गिल्गामेश से लड़ा था जिसमें राक्षस की मृत्यु हुई और वह पाताल लोक चला गया। एक अन्य

टिप्पणी

कहानी के अनुसार, एक बार गिल्गामेश ने स्वर्गीय सांड की हत्या कर दी जिसके कारण प्रजनन देवी ईश्तर उस पर क्रोधित हुई। ईश्तर देवी को प्रसन्न करने के लिए गिल्गामेश ने मृत्युलोक से एक जड़ी–बूटी लाकर सांड को जीवित किया। इस प्रकार संपूर्ण महाकाव्य में मानव संघर्ष का वर्णन किया गया है। धार्मिक साहित्य ईश्वर स्तुति से पूर्ण था। 'विसडम लिटरेचर' इस प्रकार के साहित्य का उदाहरण है।

बेबीलोन के अन्य प्रसिद्ध आख्यानों में 'भाग्यलेख' और 'एटन गडरिए' तथा 'अदप मछुए' की कथाएं उल्लेखनीय हैं। बेबीलोन के धार्मिक साहित्य में इन आख्यानों के अतिरिक्त देव स्रोतों, पूजागीतों और भूत–प्रेतों को भगाने के मंत्रों इत्यादि का उल्लेख किया जा सकता है। मर्दुक, ईश्तर और शमश के लिए कहे गए कुछ स्तोत्र तो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कुछ बेबीलोनियन गीतों में उपासक अपने पापों को स्वीकार करते हुए बहुत हृदयस्पर्शी भाषा में देवताओं से क्षमा–प्रार्थना करते हैं। बेबीलोन के लोगों का लौकिक साहित्य ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है। सम्राटों ने मिट्टी की पाटियों और पाषाण–स्तंभों पर अभिलेख जरूर उत्कीर्ण करवाए जिनमें उनकी सफलताओं का उल्लेख है, परंतु साहित्यिक दृष्टि से ये परवर्ती युगों के अभिलेखों से महत्वपूर्ण नहीं हैं।

कला (Art)

सुमेर निवासियों ने भवन निर्माण कला का बहुत विकास किया। लोग अपने भवनों के निर्माण में सरकंडे, मिट्टी एवं ताड़ के वृक्ष का प्रयोग करते थे। उनकी अधिकांश इमारतें पक्की ईंटों की बनी हुई थीं। सुमेर में पत्थरों का अभाव था। सुमेर की सभ्यता में मकान कभी–कभी 40 फुट ऊंचे मिट्टी के टीले पर बनाए जाते थे। उनमें अन्दर जाने का एक ही रास्ता होता था, जो किले के रूप में जान पड़ता था। मकानों की दीवारों पर पलस्तर किया जाता या। पानी के लिए कुएं बनाए जाते थे। सुमेरियनों के घरों में फर्नीचर बहुत कम तथा सादा होता था। वे भवनों में मेहराबों तथा स्तम्भों का निर्माण भी करते थे। कुछ इतिहासकारों का मत है कि सुमेर के लोगों ने ही विश्व को गुम्बद, मेहराब तथा स्तम्भ बनाना सिखाया था।

सुमेरियन नगर सभ्यता के प्रमुख केन्द्र मन्दिर थे। मन्दिरों का निर्माण इस प्रकार किया जाता था कि भंडार गृह एवं कार्यालय आदि भी सम्मिलित होते थे ताकि प्रशासनिक कार्य भी किए जा सके। सुमेर में मन्दिर बहुत बड़ी संख्या में बनाए जाते थे, जिन्हें जिग्गुरात कहा जाता था। जिग्गुरात का अर्थ पर्वत निवास होता है। इसलिए सुमेरवासी जिग्गुरात को मीनार के रूप में बनाते थे। इसी प्रकार उरूनम्मु का जिग्गुरात का निचला भाग 169 फुट लम्बा तथा 130 फुट चौड़ा था। इसकी ऊंचाई 1 मीटर थी। मन्दिरों के निर्माण के लिए वे बहुमूल्य पत्थर तथा लकड़ी दूसरे देशों से मंगवाते थे। बेबीलोन का जिग्गुरात 300 फुट लम्बा, 300 फुट चौड़ा तथा 300 फुट ऊंचा था। मन्दिरों में नीले रंग की एनामेल की पट्टियों का प्रयोग किया जाता था। विनोद चन्द्र पांडे तथा के. सिंह ने लिखा है : "ऐसा विश्वास है कि जिग्गुरात की सात मंजिलें सात ग्रहों की होती थीं। सबसे नीचे की मंजिल 'शनि' की होती थी, जिसका रंग काला होता था। दूसरी नारंगी रंग की मंजिल बृहस्पति की, तीसरी लाल रंग की मंजिल मंगल की और चौथी मंजिल सूर्य की होती थी। सूर्य की मंजिल पर सोने की चादर चढ़ी रहती थी। पीली ईंटों से बनी पांचवीं मंजिल शुक्र की और नीले रंग से पुती छठी मंजिल बुध की

होती थी। चारों ओर चांदी से मढ़ी हुई सातवीं मंजिल चन्द्रमा की मानी जाती थी। इस प्रकार जिग्गुरात रंग–बिरंगा होता था। यह सोने, चांदी, हीरे–जवाहरातों से भरा होता था। ऊपर की मंजिल में सबसे अधिक बहुमूल्य रत्न थे। ऊपर की मंजिल के बाहर भी बलि के लिए वेदियां बनी होती थीं। कुछ जिग्गुरातों में समतल छज्जे होते वे जहां हरियाली रहती थी। देवताओं का निवास सबसे ऊपर की मंजिल, खुले प्रांगण में और उसके पीछे माना जाता था।"

टिप्पणी

भवन निर्माण कला के अतिरिक्त मूर्तिकला तथा चित्रकला का भी विकास सुमेर में हुआ। विभिन्न स्थानों की खुदाई में स्त्री–पुरुष, राजा तथा पशुओं की मूर्तियां काफी संख्या में मिली हैं। ये मूर्तियां बहुमूल्य पत्थर से बनाई जाती थीं। उर के प्रथम राजवंश के समय के एक मन्दिर के सामने चबूतरे पर बनी ऋषभ की मूर्ति मिली है। उसी के समीप सिंहमुखी चील की मूर्ति है जिसे हिरण के एक जोड़े पर पंख फैलाए हुए बैठे दिखाया गया है। एक अन्य मूर्ति में दो पहलवानों को लड़ते हुए दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त सम्राट नरामसिन को हाथ में धनुष बाण लिए पर्वतों पर चढ़ते दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त लगश के सम्राट गुडिया की मूर्ति, उर के सम्राट गूढ़ी की मूर्ति के अलावा अन्य स्थानों से भी मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। उस समय मूर्तियों पर बहुत अच्छी तरह की नक्कासी की जाती थी। इसके अलावा धातुओं, मुद्राओं, बर्तनों, मिट्टी के बर्तनों पर भी बढ़िया प्रकार की चित्रकारी तथा नक्कासी की जाती थी। प्राचीन सुमेर में शीशे का सामान भी बहुत मात्रा में बनाया जाता था। इतिहासकारों का अनुमान है कि शायद शीशे के बर्तन बनाने का कार्य सबसे प्रथम सुमेरियन लोगों ने आरम्भ किया था। विभिन्न नगरों में मोहरें, सील तथा पच्चीकारी का काम भी किया जाता था।

भवन निर्माण कला के क्षेत्र में बेबीलोनियन मिस्रवासियों से बहुत पीछे थे। इसके लिए एक कारण बेबीलोनिया में पाषाण का अभाव रहा होगा। उनकी स्थापत्य कला का कोई नमूना आज उपलब्ध नहीं है। मकान ईंटों और मिट्टी के बनते थे, जो सभी नष्ट हो गए। हम्मूरबी द्वारा निर्मित बेबीलोन अब तक पूर्णतः नष्ट हो चुका है। बेबीलोनियन वास्तुकला की इस मूलभूत दुर्बलता के कारण हम्मूरबी ने अपनी विधि–संहिता में ऐसे नियम बनाए जिनसे मजबूर होकर नागरिकों को अपने मकान अधिक से अधिक मजबूत बनाने होते थे और नियमित रूप से उनकी मरम्मत करनी पड़ती थी। बेबीलोनियनों में सुमेरियनों की तरह मौलिक प्रतिभा का अभाव था। वे मेहराब और लकड़ी तथा ईंटों के स्तंभों से अवगत नहीं थे। वे मकानों के बाह्य और आंतरिक भागों को नक्काशीदार ईंटों से सजाने की कला जानते थे। परंतु इस ज्ञान के बावजूद वे कभी दर्शनीय भवनों का निर्माण नहीं कर सके। सुमेरवासियों की भांति बेबीलोनियन युग की वास्तुकला के विशिष्ट नमूने भी जिग्गुरात भवन थे। ये कई मंजिल के होते थे तथा वेधशाला का काम भी करते थे। बोरसिप्पा के जिग्गुरात में सात तल्ले थे। इनकी कल्पना देवस्थान के रूप में की गई थी। इनको विभिन्न रंगों से रंगकर सुंदर एवं आकर्षक बनाने का प्रयास किया जाता था।

बेबीलोनियन स्थापत्य कला के नमूने भी दुर्लभ हैं। उनके द्वारा बनाई गई मूर्तियां और रिलीफ चित्र थोड़ी संख्या में उत्खनन से प्राप्त हुए हैं। इनमें हम्मूरबी के पाषाण स्तंभ के ऊपर उत्कीर्ण दृश्य उल्लेखनीय है, जिसका वर्णन हम इसी अध्याय में पहले कर चुके हैं। इस दृश्य में हम्मूरबी के गौरव की कुछ झलक मिलती है लेकिन नरामसिन पाषाण से इसकी तुलना नहीं की जा सकती। बेबीलोन में व्यक्ति के शरीर को ऊनी

टिप्पणी

वस्त्रों में लिपटा हुआ दिखाया जाता था जिससे कलाकार के लिए शारीरिक सुंदरता का चित्रण करना असंभव हो जाता था। बेबीलोनियन चित्रकला का भी स्वतंत्र विकास नहीं हो पाया। केवल मन्दिरों की दीवारों पर सजावट के लिए चित्र अंकित किए जाते थे। परंतु उन्हें मिस्र और क्रीट से प्राप्त हुए चित्रों के समकक्ष नहीं रखा जा सकता। बेबीलोन के लोग मूर्तियां भी बनाते थे परंतु मूर्तियों में सौंदर्य और अभिव्यक्ति का अभाव था। उनकी मूर्तियां ज्यादातर पशु और मनुष्य की मिश्रित आकृति की ही होती थीं। चित्रकला के क्षेत्र में भी ये ज्यादा विकास नहीं कर सके थे। थोड़ा बहुत रंग का व्यवहार जानते थे। संगीतकला में भी बेबीलोनियावासी काफी रुचि रखते थे। सामूहिक रूप से या व्यक्तिगत रूप से मन्दिरों तथा धनी परिवारों में गाना बजाना होता था। बाजों के कई प्रकार के यंत्र यहां पाए गए हैं।

अपनी प्रगति जांचिए

7. 'खगोल विद्या की माता' किसे कहा जाता है?

   (क) सुमेरिया (ख) असीरिया

   (ग) बेबीलोनिया (घ) कोई नहीं

8. सुमेरियन सभ्यता की लिपि को क्या कहा जाता था?

   (क) ब्राह्मी (ख) कीलाक्षर

   (ग) संस्कृत (घ) इनमें से कोई नहीं

2.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (ख)
2. (क)
3. (ग)
4. (ख)
5. (ख)
6. (क)
7. (ग)
8. (ख)

2.6 सारांश

प्राचीन इराक क्षेत्र में बहने वाली दो नदियां 'दजला' व 'फरात' थीं। इस प्रकार 'दजला' व 'फरात' नदियों के मध्य स्थित प्रदेश को मेसोपोटामिया कहा जाता था। ये नदियां हर साल काफी मात्रा में उपजाऊ मिट्टी इस प्रदेश में जमा करती थीं जिसके कारण यह क्षेत्र काफी उपजाऊ था। इन नदियों से बहुत–सी नहरें भी बनाई गई थीं जिनसे इस क्षेत्र के दूर–दूर के भागों तक सिंचाई होती थी। इन नदियों को यातायात के लिए

भी प्रयोग किया जाता था, जिनमें नावें चला करती थीं। इनके किनारे–किनारे कारवां भी चलते थे। इस प्रकार यह क्षेत्र एक सबल सभ्यता के विकास के लिए अत्यधिक उपयुक्त था। मेसोपोटामिया क्षेत्र केवल दजला व फरात नदियों के मध्य तक सीमित न होकर फारस की खाड़ी के दक्षिण तक विस्तृत था।

टिप्पणी

प्राचीन काल में सुमेर छोटे–छोटे नगर राज्यों में बंटा हुआ था। उस समय सुमेर में एक दर्जन से ज्यादा नगर राज्य थे। सभी नगर–राज्यों में अपने–अपने कानून, विधान, शासक तथा देवता होते थे। प्रत्येक नगर राज्य में ऊंची वेदिकाओं पर मन्दिर बने हुए थे जिनका विकास आगे चलकर जिग्गुरात के रूप में हुआ। जनसंख्या में वृद्धि, नगरों के विकास तथा व्यापार में वृद्धि के साथ–साथ राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का विकास हुआ जिससे राजाओं में परस्पर युद्ध शुरू हो गए। आदिकालीन सुमेर की प्रजातांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक नगर–राज्य में दो सदन होते थे जिन्हें आधुनिक भाषा में लोकसभा (एसेम्बली) और सीनेट कह सकते हैं। विश्व इतिहास में सुमेर के लोगों को प्रजातंत्र का जनक कहा गया है।

सुमेर को नगर–राज्यों का देश कहा गया है। इस प्रकार सुमेरियन संगठित राज्य अनेक नगर–राज्यों में बंटा हुआ था जिनमें परस्पर युद्ध चलते रहते थे। कोई भी शक्तिशाली शासक पड़ोसी नगर–राज्य को युद्ध में पराजित करके उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लेता था। 'उर' नगर की खुदाई से प्राप्त प्रमाणों के आधार पर सुमेर के राजनीतिक इतिहास को दो युगों में बांटा जा सकता है। प्रथम–पौराणिक युग एवं द्वितीय ऐतिहासिक युग।

ऐतिहासिक युग में सुमेरिया के प्रमुख नगर राज्यों में सर्वप्रथम 'उर' नामक नगर राज्य की स्थापना हुई। इस प्रकार उर का प्रथम राजवंश सुमेरिया का पहला ऐतिहासिक राजवंश माना जाता है। इस राजवंश की स्थापना 3200 ई. पू. में मानी जाती है। सुशील माधव पाठक ने उर के प्रथम राजवंश का समय 2500 ई.पू. माना है। उनके अनुसार इस राजवंश का पहला राजा मेस अन्नेपद था। खुदाइयों से मिली राजाओं की सूचियों में ऐतिहासिक युग के 'उर' के पहले चार राजाओं का शासनकाल 177 वर्ष बताया गया है। मेस अन्नेपद ने 80 वर्ष तक शासन किया तथा उसके बाद उसके पुत्र अ–अन्ना–पाद ने शासन किया।

सारगोन के शासनकाल में सेमेटिक जाति ने अपनी व्यापारिक गतिविधियों को अत्यधिक विकसित किया। अक्कादी साम्राज्य के एक महत्त्वपूर्ण नगर गासुर जिसे आजकल योरगान टेपा कहा जाता है कि खुदाई से प्राप्त मिट्टी की पट्टिकाओं से उस समय की व्यापारिक गतिविधियों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इन पट्टिकाओं पर अनेक व्यापारिक दस्तावेज प्राप्त हुए हैं। इन दस्तावेजों के साथ एक नक्शा भी प्राप्त हुआ है जिस पर किसी बड़े परिसर का मानचित्र बनाया गया है। इसकी गणना संसार के सबसे पुराने मानचित्रों में की जाती है। इन दस्तावेजों से यह प्रमाणित होता है कि सारगोन के शासनकाल में व्यापारी साम्राज्य के दूर–दराज के प्रदेशों के साथ व्यापार करते थे।

सुमेरिया की प्राचीन सभ्यता में एक विशेष प्रकार की पूंजीवादी अर्थव्यवथा का विकास हुआ जिसमें धर्म की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। यहां के लोगों को विश्वास

टिप्पणी

था कि संपत्ति या पूंजी देवताओं की होती है तथा व्यावहारिक दृष्टि से देवताओं का नियन्त्रण पुरोहित वर्ग के हाथों में था। इस वर्ग ने अपनी सम्पन्नता के आधार पर सुमेरियन नगर राज्यों का आर्थिक नियन्त्रण अपने हाथों में लेकर अर्थव्यवस्था को संचालित किया। सुमेरिया के मन्दिर एक तरफ जहां राजनीतिक और धार्मिक गतिविधियों के केन्द्र थे वहीं दूसरी तरफ मन्दिर आर्थिक गतिविधियों के भी प्रमुख केन्द्र थे।

सुमेरिया के जन–जीवन में धर्म का बहुत महत्व था। इनमें धार्मिक भावना के विकास का कारण भय, कल्पना और विश्वास था। प्रारंभ में सुमेरिया के लोग एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे परंतु बाद में उनका धर्म बहु–ईश्वरवादी हो गया। सुमेरिया में भी प्राचीन भारतवर्ष की तरह प्रकृति की विभिन्न शक्तियों का मानवीयकरण करके उन्हें देवी–देवताओं के रूप में पूजा गया तथा उनके चरित्र एवं गुणों का निरुपण किया गया। सुमेर के प्रत्येक नगर के अपने–अपने अलग–अलग देवी–देवता होते थे।

बेबीलोनियावासियों ने विश्व इतिहास में पहली बार प्रांतों और नगरों के मानचित्र बनाए। बेबीलोन के पास मिले 1600 ई.पू. के एक अभिलेख में एक प्रांत का मानचित्र प्राप्त हुआ है। इसमें पर्वतों, समुद्रों और नदियों को विविध प्रकार की रेखाओं के माध्यम से दर्शाया है तथा कई नगरों के नाम दिए गए हैं। एक कोने में दिशा–संकेत भी बना दिया गया है। जेना विश्वविद्यालय में निप्पुर का मानचित्र सुरक्षित है।

सुमेरियन लोगों ने शिक्षा के साथ–साथ साहित्य में भी बहुत विकास किया। उस समय साहित्य, लेख, अभिलेख मिट्टी की पट्टियों पर लिखे जाते थे। 2700 ई.पू. में सुमेर में बड़े–बड़े पुस्तकालय स्थापित हो गए। डी सरजाक नामक विद्वान को टेलो नामक स्थान पर राजा मूडी (मूढ़ी) के समय की 30,000 पट्टियां मिली हैं। यह उस राजा का पुस्तकालय माना जाता है। सुमेरियन लोगों ने धार्मिक साहित्य, कहानियों, गीतों, कविताओं तथा अनेक लेखों का निर्माण किया।

सुमेर निवासियों ने भवन निर्माण कला का बहुत विकास किया। लोग अपने भवनों के निर्माण में सरकंडे, मिट्टी एवं ताड़ के वृक्ष का प्रयोग करते थे। उनकी अधिकांश इमारतें पक्की ईंटों की बनी हुई थीं। सुमेर में पत्थरों का अभाव था। सुमेर की सभ्यता में मकान कभी–कभी 40 फुट ऊंचे मिट्टी के टीले पर बनाए जाते थे। उनमें अन्दर जाने का एक ही रास्ता होता था, जो किले के रूप में जान पड़ता था। मकानों की दीवारों पर पलस्तर किया जाता या। पानी के लिए कुएं बनाए जाते थे। सुमेरियनों के घरों में फर्नीचर बहुत कम तथा सादा होता था। वे भवनों में मेहराबों तथा स्तम्भों का निर्माण भी करते थे। कुछ इतिहासकारों का मत है कि सुमेर के लोगों ने ही विश्व को गुम्बद, मेहराब तथा स्तम्भ बनाना सिखाया था।

2.7 मुख्य शब्दावली

- **अक्कादी** : सेमेटिक भाषाओं की प्राचीन शाखा।
- **नगर–राज्य** : एक नगर–राज्य एक स्वतंत्र रूप से शासित क्षेत्र होता था जो एक शक्तिशाली शहर के आसपास केंद्रित था। सुमेर की सभ्यता कई स्वतंत्र नगर–राज्यों द्वारा शासित थी।

टिप्पणी

- **राजवंश** : राजा आदि का कुल या वंश। जब एक परिवार एक राज्य या साम्राज्य पर एक अवधि के लिए शासन करता है और अपने शासन को अगली पीढ़ी को पारित करता है।
- **सभ्यता** : यह मानव समाज की उन्नत अवस्था है। आमतौर पर सभ्यता को उन्नत सरकार, कृषि, विज्ञान और संस्कृति द्वारा चिह्नित किया जाता है।
- **जिग्गुरात** : बड़े मन्दिर जो आमतौर पर मेसोपोटामिया नगर–राज्य के केंद्र में स्थित हैं। ये पिरामिड की तरह दिखते थे।
- **भित्ति चित्र** : यह सबसे पुरानी चित्रकला है। प्रागैतिहासिक युग के ऐतिहासिक रिकॉर्ड में पहले मिट्टी के बर्तन बनाए जाते थे, लेकिन कुछ समय बाद लोगों ने मिट्टी का प्रयोग दीवारों पर चित्र बनाने के लिए करने लगे।
- **किंवदंती** : असंबद्ध इतिहास की घटनाओं के आधार पर लोकजीवन में प्रचलित कथाओं को किंवदंती कहते हैं।
- **मेसोपोटामिया** : एक शब्द जिसका उपयोग दजला और फरात नदियों के बीच की भूमि का वर्णन करता था। यह ज्यादातर वर्तमान इराक और सीरिया में स्थित है।
- **काफिला** : यात्रा, व्यापार आदि के उद्देश्य से पैदल चलने वाले यात्रियों का समूह।
- **शेकेल** : वजन की एक मानक इकाई जो सर्वप्रथम मेसोपोटामिया में इस्तेमाल की गई थी।
- **दशमलव पद्धति** : दशमलव पद्धति या दाशमिक संख्या पद्धति या दशाधार संख्या पद्धति (decimal system, "base ten" or "denary") वह संख्या पद्धति है जिसमें गिनती/गणना के लिए कुल दस अंकों या 'दस संकेतों' (0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9) का सहारा लिया जाता है।
- **सौर वर्ष** : यह वह समय है जब सूर्य ऋतुओं के चक्र में पुरानी स्थिति में वापस लौटता है, उदाहरण के लिए, मौखिक विषुव से लेकर उत्तरी संक्रांति तक का समय।
- **गिल्गामेश** : उरूक के नगर–राज्य का सुमेरियन राजा।
- **निप्पुर** : मध्य मेसोपोटामिया का एक नगर।

2.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. मेसोपोटामिया का शाब्दिक अर्थ क्या है? परिभाषित कीजिए।
2. राजा या पटेशी किसे कहते हैं? वर्णित कीजिए।
3. लगश का गुडिया से क्या तात्पर्य है? समझाइए।
4. मेसोपोटामिया सभ्यता में देवी–देवताओं की क्या भूमिका थी? स्पष्ट कीजिए।
5. बेबीलोनियन एवं सुमेरियन लिपि को समझाइए।

टिप्पणी

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. सुमेर की राज्य संरचना का उल्लेख कीजिए।
2. मेसोपोटामिया सभ्यता के विभिन्न युगों का क्रमिक इतिहास लिखिए।
3. सुमेर के लोगों की सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक विशेषताओं का विवरण दीजिए।
4. प्राचीन सुमेर के लोगों के धार्मिक जीवन के विभिन्न पहलुओं की चर्चा कीजिए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए–

(i) सुमेर सभ्यता में सामाजिक वर्गीकरण

(ii) प्राचीन सुमेर में देवताओं का स्वरूप

2.9 सहायक पाठ्य सामग्री

1. डॉ. के.सी. श्रीवास्तव एवं डॉ. मोहम्मद जुनैद खां, 1990, "विश्व सभ्यता का इतिहास (आदिकाल से प्राचीन की समाप्ति तक)", उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
2. श्रीराम गोयल, 1973, "विश्व की सभ्यताएं (323 ई.पू. तक)", विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
3. जे.एन. पोस्टगेट, 1992, अर्ली मेसोपोटामिया : सोसाइटी एंड इकोनॉमी एट दि डाउन ऑफ हिस्ट्री," लंदन, रूटलेज।
4. सी.एल. वूली, 1965, दि सुमेरियन्स, न्यूयॉर्क, डब्ल्यू. डब्ल्यू. नोर्टन।
5. स्टिफेनी डेली, 1998, "दि लिगेसी ऑफ मेसोपोटामिया," ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. डॉ. गोपाल प्रसाद, 2013, "प्राचीन एवं मध्यकालीन विश्व", लक्ष्मी पब्लिशिंग हाऊस, रोहतक।
7. फ्रांसिस जोएन्स, 2004, "दि ऐन ऑफ एम्पयार्स : मेसोपोटामिया इन दि फर्स्ट मिलिनियम", बी सी, एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. रोजर मैथ्यूज, 2003, "दि आरक्योलॉजी ऑफ मेसोपोटामिया : थियोरीज एंड एप्रोचिस", एप्रोचिंग दि पॉस्ट, रूटलेज।
9. बेंजामिन आर., केरन पोलिंगर फोस्टर, 2009, "सिविलाइजेशन्स ऑफ एनशिएंट ईराक", प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. रोजर मैथ्यूज, 2003, "दि आरक्योलॉजी ऑफ मेसोपोटामिया : थियोरीज एंड एप्रोचिस", एप्रोचिंग दि पॉस्ट, रूटलेज।
11. मोरिस जेस्ट्रो, 1915, "दि सिविलाइजेशन ऑफ बेबिलोनिया एंड असीरिया", जे. पी. लिप्पिनकोट कंपनी, लंदन।
12. लूविस रिचर्ड फारनैल, 2013, "ग्रीस एंड बेबीलोन", बुक ऑन डिमाण्ड लिमिटिड।

इकाई 3 प्राचीन ग्रीस (यूनान) की सभ्यता

टिप्पणी

संरचना

3.0 परिचय
3.1 उद्देश्य
3.2 प्राचीन ग्रीस (यूनान) की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास
  3.2.1 राज्य संरचना
  3.2.2 राजनीतिक इतिहास
3.3 प्राचीन ग्रीस (यूनान) में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां
  3.3.1 सामाजिक स्थिति
  3.3.2 आर्थिक स्थिति
  3.3.3 धार्मिक स्थिति
3.4 प्राचीन ग्रीस (यूनान) में विज्ञान एवं संस्कृति
  3.4.1 विज्ञान
  3.4.2 संस्कृति
3.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
3.6 सारांश
3.7 मुख्य शब्दावली
3.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
3.9 सहायक पाठ्य सामग्री

3.0 परिचय

यूनान की सभ्यता विश्व की लौहकालीन सभ्यताओं में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह सभ्यता यूरोपीय सभ्यता की जननी मानी जाती है। विश्व की अनेक सभ्यताओं पर इसकी छाप दिखलाई देती है। यहां तक कि रोमन सभ्यता भी इसकी अर्थात् यूनानी सभ्यता की ऋणी है। चूंकि इस सभ्यता के लोग लोहे का प्रयोग उपकरण तथा अन्य वस्तुएं बनाने में करते थे, इसलिए इस सभ्यता को लौहयुगीन सभ्यता (Iron Age Civilization) के नाम से भी जाना जाता है।

प्राचीन काल में यूनान में एक अत्यंत उच्च कोटि की सभ्यता का जन्म और विकास हुआ। लौहकालीन यूनानी सभ्यता विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में अपना एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसने विश्व की अनेक सभ्यताओं को अपना ज्ञान प्रदान किया है।

प्राचीन यूनान या ग्रीस को पश्चिमी सभ्यता का गुरू कहा जाता है। प्राचीन यूनानी विज्ञान की उपलब्धियां प्राचीन काल में बेहतरीन थीं। मिस्र और बेबीलोन के ज्ञान पर आधारित, थेल्स ऑफ मिलेट्स, पाइथागोरस और अरस्तू जैसे लोगों ने गणित, खगोल विज्ञान और तर्क में विचारों को विकसित किया जिसने आने वाली सदियों में पश्चिमी विचार, विज्ञान और दर्शन को प्रभावित किया। अरस्तू पहला दार्शनिक था जिसने तर्क का एक व्यवस्थित अध्ययन विकसित किया था।

इस इकाई में हम प्राचीन ग्रीस की राज्य संरचना, इसके राजनीतिक इतिहास, इसकी सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थितियों तथा विज्ञान और संस्कृति से संबंधित सभी पक्षों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

टिप्पणी

3.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- लौहकालीन यूनान की राजनीतिक संरचना का वर्णन कर पाएंगे;
- लौहयुगीन यूनान के राजनीतिक इतिहास को समझ पाएंगे;
- लौहकालीन यूनान की सामाजिक स्थिति को समझने में सक्षम हो पाएंगे;
- प्राचीन यूनान के आर्थिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण कर पाएंगे;
- प्राचीन यूनान के लोगों की धार्मिक स्थिति के बारे में जान पाएंगे;
- लौहकालीन यूनान में विज्ञान के क्षेत्र में हुए विकास का अध्ययन कर पाएंगे;
- यूनान के सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन कर पाएंगे।

3.2 प्राचीन ग्रीस (यूनान) की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास

यूनान के राजनीतिक सिद्धान्त एवं आदर्श यूरोप की बहुमूल्य देन माने जाते हैं। प्राचीन यूनान में जिस सभ्यता का विकास हुआ उसके अनेक तत्व रोम के लोगों ने भी अपनाए। शैली नामक कवि ने लिखा है : "हम सभी यूनानी हैं। हमारे कानून, हमारा साहित्य, धर्म, कलाएं इन सबका मूल यूनान में है।"

कटे–फटे किनारों ने जहां यूनान को महत्त्वपूर्ण बंदरगाहें उपलब्ध करवाईं वहीं पहाड़ों व घाटियों ने यूनान वालों को आपस में ही विभाजित कर दिया। इस कारण यहां बड़े–बड़े राज्यों की स्थापना नहीं हो सकी तथा छोटे–छोटे नगर राज्यों या गणराज्यों का विकास हुआ जिनमें आपस में ईर्ष्या व प्रतिद्वंद्विता रहती थी। इन छोटे–छोटे नगर राज्यों में स्वस्थ एवं जागरूक राजनीतिक जीवन का विकास हुआ।

3.2.1 राज्य संरचना (Political Structure)

डॉ. विपिन बिहारी सिन्हा के अनुसार, "राजनीति के क्षेत्र में प्राचीन यूनान की सर्वश्रेष्ठ देन उसकी संवैधानिक और लोकतंत्रात्मक पद्धति है। अनेक यूरोपीय राजनीतिक सिद्धान्तों का जन्म यूनान में ही हुआ था।" अन्य इतिहासकार भी यह मानते हैं कि राजनीतिक विज्ञान का जन्म भी यूनान में ही हुआ था। राजनीति के शब्दों जैसे पोलीटिक्स तथा डेमोक्रेसी की उत्पत्ति यूनानी शब्द पोलिस तथा डेमोस से हुई थी।

राजनीतिक संगठन में विभिन्नता (Variation in Political Organization)

यूनान में राजनीतिक संगठन का विकास धीरे–धीरे हुआ। यूनान में अनेक स्वतंत्र नगर–राज्य स्थापित थे। राजनीतिक संगठन की दृष्टि से इनमें समरूपता नहीं थी। इनमें शासन की विभिन्न प्रणालियों का प्रचलन था। परन्तु इनमें से दो प्रणालियां विशेष रूप से महत्वपूर्ण थीं– लोकतांत्रिक प्रणाली तथा निरंकुश तंत्र। प्रारम्भ में यूनान के सभी नगर–राज्यों में निरंकुश तंत्र का बोलबाला था– इनमें से दो नगर–राज्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं– स्पार्टा तथा ऐथेन्स। स्पार्टा ने किसी न किसी रूप में निरंकुश तंत्र को स्थापित रखा था परन्तु ऐथेन्स में, जो सही अर्थ में यूनानी सभ्यता का आदर्श केंद्र

टिप्पणी

था, अनेक प्रशासनिक परिवर्तन हुए। पहले यहां राजतंत्र था। बाद में कुलीन तंत्र तथा आततायी युग का आगमन हुआ। ऐथेन्स में लोकतांत्रिक और वैयक्तिक स्वतंत्रता की भावना का व्यापक प्रचार हुआ। अतः वहां निरंकुश तंत्र की जड़ें मजबूत नहीं हो सकीं और अन्त में वहां लोकतंत्र का सही मायनों में विकास हुआ।

ऐथेन्स का लोकतंत्र (Athenian Democracy)

लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का जन्मस्थान ऐथेन्स ही रहा है। विश्व सभ्यता में जनतंत्र का विकास प्राचीन यूनानी सभ्यता की महत्त्वपूर्ण देन मानी जाती है। ऐथेन्स में जनतंत्र का क्रमिक विकास हुआ। इस संदर्भ में डभेको, सोलन, क्लैस्थनीज आदि सांविधानिक सुधारकों का योगदान रहा। पेरीक्लीज के शासन काल में जनतंत्र का व्यावहारिक रूप देखने को मिलता है।

असेंबली (Assembly)

ऐथेन्स में इस काल में शुद्ध प्रत्यक्ष जनतंत्र प्रचलित था। प्रत्येक नागरिक को प्रशासन में भाग लेने का अधिकार था। उनकी एक समिति थी जिसको इक्लीजसिया या अगोरा कहा जाता था। ऐथेन्स के समस्त नागरिक इसके सदस्य होते थे। समिति की कार्यवाहियों में भाग लेने के लिए 18 वर्ष की आयु के साथ–साथ जन्मजात नागरिक होना अति आवश्यक था। विदेशी तथा दास को इसकी सदस्यता प्राप्त करने का

टिप्पणी

अधिकार नहीं था। यह समिति कानून निर्माण, संशोधन तथा कानूनों को रद्द करने सम्बन्धी कार्य करती थी। इसकी बैठक में सभी नागरिक भाग ले सकते थे। प्रशासन सम्बन्धी सभी महत्त्वपूर्ण बातों पर नागरिकों को अपना विचार प्रकट करने की पूरी स्वतंत्रता थी।

काउंसिल (Council)

दूसरी समिति को कार्यपालिका या बाऊल कहा जाता था। इसके सदस्यों की संख्या 500 थी। यह समिति आगे 10 समितियों में विभाजित थी। प्रत्येक समिति में 50 सदस्य होते थे। प्रत्येक दिन सभी समितियों के अध्यक्ष बदल दिए जाते थे। प्रशासन चलाने का कार्य प्रत्येक महीने एक नई समिति करती थी। इस बाऊल के सदस्यों का चुनाव जनसाधारण जनता द्वारा किया जाता था। यह कार्यपालिका, सेना, न्याय तथा आय–व्यय सम्बन्धी कार्यों की देखभाल करती थी।

न्यायपालिका (Judiciary)

तीसरी समिति स्वतंत्र न्यायपालिका थी। ऐथेन्स की न्यायपालिका में 600 निर्वाचित सदस्य थे। ये सदस्य बहुमत के आधार पर न्याय सम्बन्धी कार्य करते थे। डॉ. सिन्हा के अनुसार, "ऐथेन्स में न्याय–पद्धति का आधार भी प्रजातांत्रिक था। एक हजार या 500 पंचों की अदालत मुकद्दमों का फैसला करती थी। फैसले वोट के आधार पर किए जाते थे।" वहां पर छोटे मुकद्दमों को सुनने के लिए ज्यूरी प्रथा भी प्रचलित थी। इसके अलावा दोनों ही राज्यों, ऐथेन्स तथा स्पार्टा में सैन्य संगठन पर बल दिया जाता था। जहां स्पार्टा में 7 वर्ष की आयु से ही सैनिक शिक्षा दी जाती थी। वहीं दूसरी ओर ऐथेन्स नगर–राज्य में युवा होने पर नागरिकों को सैनिक शिक्षा दी जाती थी। सभी को अपने देश तथा मातृभूमि से प्यार करना होता था तथा आवश्यकता पड़ने पर सभी नागरिकों को सैनिक सेवाएं अर्पित करनी होती थीं। इस प्रकार हम देखते हैं कि जहां स्पार्टा में निरंकुश सैनिक तंत्र प्रचलित था वहीं ऐथेन्स में प्रजातंत्र का बोलबाला था।

सैन्य व्यवस्था (Military Organization)

यूनान में सेना का संगठन भी जनतांत्रिक सिद्धान्तों पर किया जाता था। युवावस्था में ही प्रत्येक नागरिक को सैनिक शिक्षा दी जाती थी। स्पार्टा में तो बचपन से ही लोगों के शारीरिक गठन पर ध्यान दिया जाता था तथा सभी नागरिकों को सेना में भर्ती होना पड़ता था। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य था कि वह अपना बलिदान देकर भी देश की रक्षा करें।

ऐथेन्स में जनतंत्र का महत्व (Importance Athenian Democracy)

प्राचीन यूनान में ऐथेन्स के जनतंत्र का व्यापक महत्त्व था। ऐथेन्सवासियों के कुछ राजनीतिक आदर्श थे। प्रशासन में सभी नागरिकों को भाग लेने का अधिकार प्राप्त था। कालान्तर में यूनान के अधिकांश नगर–राज्यों ने ऐथेन्स की शासन–प्रणाली तथा उसके राजनीतिक आदर्श को अपनाया। वास्तव में जनतंत्र का प्रयोग विश्व सभ्यता को यूनान की सबसे बड़ी देन है। अंग्रेजी का 'डेमोक्रेसी' शब्द यूनानी भाषा के डेमोस शब्द से ही निकला है। एथेन्स के लोगों को पर्याप्त मात्रा में लेखन, भाषण एवं प्रकाशन की

स्वतंत्रता प्राप्त थी। नागरिक अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति सचेष्ट रहते थे। प्रसिद्ध शासक पेरीक्लीज ने कहा था, "हमारा संविधान प्रजातांत्रिक है, इसमें सभी नागरिकों को स्वतंत्रता है और हमारा लोकतंत्र कुशल और गुणों का सम्मान करता है। हमारा धन केवल प्रदर्शन के लिए नहीं है, अपितु गुण–प्राप्ति का साधन है। हमारे लिए दरिद्रता कोई लज्जाजनक बात नहीं है। लज्जा की बात है उसको दूर करने का प्रयत्न न करना। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि हमारी नगर सभ्यता यूनान की पाठशाला है।"

जनतांत्रिक ढांचे में दोष (Fault in Democratic Structure)

अनेक अच्छाइयों के बावजूद ऐथेन्स का जनतंत्र समीक्षा के परे नहीं माना जा सकता है। ऐथेन्स की सरकार को पूरी तरह से लोकतांत्रिक नहीं कहा जा सकता। यह व्यापक दृष्टिकोण से त्रुटिपूर्ण था। जनमत का सच्चा प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता था। यूनान की जनसंख्या का एक बड़ा भाग नागरिक अधिकारों से वंचित था। राज्य में गैर–नागरिकों का शोषण होता था, दासों पर जुल्म किए जाते थे। फिर भी, ऐथेन्स का प्रजातंत्र भविष्य में यूरोपीय देशों के लिए आदर्श, अनुकरणीय एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। उस समय की निर्वाचन प्रणाली की विशेषताएं, जैसे गुप्त एवं अप्रत्यक्ष मतदान चुनाव प्रणाली, आज भी विश्व के अनेक देशों में देखने को मिलती हैं। वास्तव में, जनतंत्र का प्रयोग विश्व–सभ्यता को यूनान की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण देन है।

यूनानी राजनीतिक संगठन के अन्य दोष (Others Faults in the Political Structure of Greece)

राजनीतिक संगठन की दृष्टि से यूनान की कुछ अन्य कमजोरियों का उल्लेख किया जा सकता है। देश में राष्ट्रीयता की भावना का अभाव था। प्रत्येक नगर–राज्य स्वयं को अलग राष्ट्र मानते थे। हां, आक्रमणों के समय इनके बीच एकता देखने को मिलती थी किन्तु जैसे ही खतरा टलता ये सभी राज्य एक दूसरे के साथ संघर्षरत हो जाते थे। इसके बावजूद भी 'जनतांत्रिक प्रयोगों' के लिए यूनान विश्वविख्यात है।

स्पार्टा का राजनीतिक संगठन (Political Organization of Sparta)

स्पार्टा नगर–राज्य का राजनीतिक संगठन केवल थोड़े ही लोगों के हाथों में था। स्पार्टा निवासियों के भोजन का प्रबन्ध कृषक दास (हेलोट्स) करते थे। ये लोग बहुत मेहनत करते थे। लेकिन इनकी स्थिति बहुत दयनीय थी। स्पार्टा का राजनीतिक संगठन इस प्रकार था–

राजा (King)

स्पार्टा में शासन की रूपरेखा द्वि–राजतंत्रात्मक थी। राजा राज्य का मुखिया कहलाता था। स्पार्टा राज्य में एक साथ दो राजा नियुक्त किए जाते थे। वे दोनों एक–दूसरे के कार्यों पर निगरानी रखकर एक–दूसरे को निरंकुश होने से बचाते थे। एक राजा का सम्बन्ध अगदी तथा दूसरे का दक्षिणी लकोनिया के यूरीपोण्टीडी जाति से था। इन्हीं जातियों ने स्पार्टा का विकास किया। राजा के पद वंशानुगत होते थे। ये राज्य के प्रधान पुजारी तथा सेना के प्रधान सेनापति भी होते थे। ये दोनों जेरुसिया अर्थात् सीनेट की सहायता से कार्य करते थे।

टिप्पणी

सीनेट (Senate)

राजा की सहायता के लिए एक सीनेट होती थी, जिसे जेरुसिया कहा जाता था। जेरुसिया में 28 सदस्य होते थे। जेरुसिया के सदस्य अपीला (असेम्बली) द्वारा चुने जाते थे। 60 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्ति इसके आजीवन सदस्य होते थे। इसकी चुनाव प्रक्रिया विचित्र थी। पद खाली होने पर प्रत्याशियों को अपीला के समक्ष एक–एक करके बुलाया जाता था। जिस प्रत्याशी का ऊंची आवाज में स्वागत होता था उसे निर्वाचित घोषित कर दिया जाता था। आयु सीमा के साथ–साथ सदस्यों की योग्यता भी निश्चित होती थी। इसके लिए लकोनिया में भू–स्वामित्व तथा सैनिक अनुभव होना आवश्यक था। राजा भी जेरुसिया के सदस्य माने जाते थे। यह स्पार्टा की सर्वोच्च व्यवस्थापिका तथा सर्वोच्च न्यायालय थी।

अपीला (Appela)

असेम्बली या समिति को अपीला कहा जाता था। 30 वर्ष की आयु वाला प्रत्येक नागरिक इसका सदस्य होता था। अपीला के सदस्यों की संख्या 8000 के लगभग थी। अपीला जेरुसिया के सदस्यों के चुनाव करती थी। अपीला ही जेरुसिया द्वारा पारित प्रस्तावों को पारित करती थी। आरम्भ में राजा इसका अध्यक्ष होता था परन्तु बाद में एफर्स का सदस्य इसका अध्यक्ष होने लगा।

एफर्स (Ephors)

पांच चुने हुए डायरेक्टर (मजिस्ट्रेट) होते थे। इन्हें एफर्स कहा जाता था। एफर्स के अधिकार बहुत व्यापक थे। 556 ई. पू. में इनकी शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई और ये निरंकुश बन गए। इनका चुनाव एक वर्ष के लिए होता था। ये लोग राजाओं को भी बन्दी बनाकर उन पर मुकदमा तक चला सकते थे। सिसरो ने इसकी तुलना रोम के ट्रिब्यून से की थी। यह राज्य की विदेश नीति तथा शिक्षा की देखभाल करती थी।

3.2.2 राजनीतिक इतिहास (Political History)

प्राचीन काल में यूनान के क्रीट नामक द्वीप का समस्त यूनान पर अधिकार रहा। ईसा से 1400 वर्ष पूर्व आर्यों की एकियन शाखा ने क्रीट के राजा को परास्त कर यूनान पर अधिकार कर लिया और इसी जाति ने ऐथेन्स नगर बसाया। इसके पश्चात् यूनान की सभ्यता का निरंतर विकास होता रहा। यूनान के राजनीतिक इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिए निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :–

होमर काल या यूनान का महाकाव्य काल (Homer Age or Epic Age of Greece)

ईसा से 1000 वर्ष पूर्व यूनानियों की सभ्यता का वर्णन प्रसिद्ध यूनानी राष्ट्रीय कवि होमर के दो महाकाव्यों इलियड और ओडिसी में मिलता है, इसलिए इस युग को होमर युग भी कहा जाता है। होमर ने अपने महाकाव्यों में जनसाधारण की अपेक्षा उस समय के राजाओं के युद्धों पर अधिक प्रकाश डाला है। उसने इलियड में ट्रॉय के घेरे का वर्णन किया है। ओड़िसी में यूनानी सेनापति ओडेसियस की ट्रॉय विजय यात्रा से लौटने का वर्णन किया है।

टिप्पणी

होमर के महाकाव्यों में एक बड़ी संख्या में पौराणिक तथा लोक कथाएं लिपिबद्ध हैं। परन्तु इतिहासकार उनमें वर्णित सभी घटनाओं को सत्य नहीं मानते हैं। बहुत से इतिहासकारों ने तो ट्राय नगर को भी काल्पनिक माना है। परन्तु जब एशियाई कोचक में समुद्र तट के निकट हिसारलिक नामक एक टीले की खुदाई करवाई गई तो वहां पर विभिन्न कालों से सम्बन्धित बस्तियां तथा उपकरण आदि प्राप्त हुए। प्रत्येक बस्ती में मकानों के खण्डहर तथा अनेक प्रकार की वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। इसके अलावा ट्राय नगर के जले अवशेष हैं। इन अवशेषों से पता चलता है कि ट्राय नगर वास्तव में था और उसे जलाया गया था। कुछ इतिहासकारों के अनुसार 1200 ई.पू. में यूनानियों ने ट्राय नगर पर आक्रमण किया था। सिकन्दरिया के प्राचीन मनीषी इरेटोस्थनीज ने इस युद्ध की तिथि 1194 ई.पू. से 1184 ई.पू. तक मानी है। इन महाकाव्यों से हमें यूनानियों के विभिन्न प्रकार के व्यवसायों, रीति–रिवाजों, सामाजिक स्थिति, धर्म, औजारों, हथियारों आदि के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। अतः 11वीं शताब्दी ई. पू. से 9 वीं शताब्दी ई.पू. तक के काल को होमर काल कहा जाता है। फ्योदोर कोरोटिकन ने लिखा है : "होमर के महाकाव्य विश्व साहित्य की महानतम कृतियों में गिने जाते हैं। यह उत्कृष्ट काव्य शैली में लिखा गया है। उनकी भाषा अत्यन्त समृद्ध और अभिव्यक्तिपूर्ण है।"

यूनान के प्रमुख नगर राज्य (Main City States of Greece)

यूनान में छठी शताब्दी के आस–पास अनेक स्वतंत्र नगर राज्यों की स्थापना हुई थी। उनमें से स्पार्टा और ऐथेन्स के नगर राज्य प्रमुख थे। सेवाईन ने लिखा है कि "नगर–राज्य प्राचीन यूनान की उत्कृष्ट राजनीतिक प्राप्ति है।" यूनान के इतिहास में स्पार्टा नगर राज्य का बहुत महत्व था। प्राचीन काल में स्पार्टा दक्षिण यूनान के लेडोनिया प्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर था। पौराणिक काल में इस नगर पर एकीयन शाखा के यूनानियों ने शासन किया। ट्राय के राजकुमार परीस ने हेलेन नामक रानी का अपहरण कर लिया, जो स्पार्टा के राजा मैनिलेस की पत्नी थी। इसके पश्चात् स्पार्टा ने ट्रोजन युद्ध में भाग लिया जिसमें यूनानी विजयी हुए। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण स्पार्टा हमेशा ही अन्य नगर–राज्यों से भिन्न बना रहा। यह नगर–राज्य हमेशा ही शत्रुओं से घिरा रहा, इसलिए यहां के लोगों ने अपनी रक्षा के लिए सैनिक तंत्र की स्थापना की। जहां यूनान के अन्य राज्यों में प्रजातंत्रात्मक शासन व्यवस्था स्थापित हुई, वहीं स्पार्टा में सैनिक तंत्र का विकास हुआ। कुछ इतिहासकारों ने सैनिक तंत्र के विकास के तीन कारण बताए। एक तो, यह प्रदेश उत्तर–पूर्व तथा पश्चिम में पर्वतमालाओं से घिरा हुआ था। यहां अच्छे बन्दरगाह नहीं थे। दूसरे, स्पार्टा में व्यापार तथा वाणिज्य का विकास भी नहीं हुआ, इसलिए यहां ऐसा व्यापारिक वर्ग उत्पन्न नहीं हो सका जो जनतंत्र की मांग कर सकता। तीसरे, स्पार्टा के होरियन शासकों ने सेकोनिया के निवासी एकियों को अपना कृषक–दास बना लिया। ये कृषक दास हेलोट्स कहलाते थे। इनके द्वारा बगावत करने का खतरा हमेशा बना रहता था, इसलिए यह राज्य यूनान के अन्य राज्यों से भिन्न बन गया। स्पार्टा के निवासी आर्यों की डोरियन शाखा से संबंधित थे।

यूनानी नगर राज्यों में ऐथेन्स नगर राज्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस नगर राज्य का विकास आयोनियन शाखा के यूनानियों ने कोरिंथ खाड़ी के उत्तर में एटिका

टिप्पणी

प्रदेश में किया था। एटिका प्रदेश को एक सूत्र में बांधने का श्रेय ऐथेन्स के निवासियों को ही जाता है। ऐथेन्स नगर– राज्य का विकास शान्तिपूर्ण तरीके से धीरे–धीरे हुआ। यह प्रदेश धातुओं की खानों तथा प्राकृतिक बन्दरगाहों के कारण एक समृद्ध व्यापारिक प्रदेश था। ऐथेन्स नगर एक्रोपोलिस दुर्ग के चारों ओर बसा हुआ था। एक्रोपोलिस में ऐथेना–देवी का मंदिर तथा ऐथेन्स का बाजार था। इस नगर की सुरक्षा के लिए चारों तरफ लकड़ी की दीवार बनाई गई थी। स्पार्टा से एकदम भिन्न प्रकार की व्यवस्था ऐथेन्स में थी। यहां के लोग विद्वान एवं उच्च आदर्श वाले थे। अतः यहां कला, साहित्य, विज्ञान एवं दर्शन का अभूतपूर्व विकास हुआ। इस प्रकार यूनानी सभ्यता के विकास में ऐथेन्स नगर राज्य ने अग्रणी भूमिका अदा की।

यूनान के इतिहास में सोलन का नाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। वह कोड्र्स का वंशज था तथा कुशल व्यापारी होने के साथ–साथ विद्वान, कवि एवं बुद्धिमान राजनेता भी था। 1994 ई.पू. में वह आर्कन नियुक्त किया गया। आर्कन बनने के बाद उसने तत्कालीन स्थिति में सुधार लाने के लिए कुछ सुधार किए जिनका संबंध आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों से था। परन्तु इन विचारों को लागू करते समय उसने सामाजिक ढांचे को भी ध्यान में रखा।

क्लैस्थनिज नामक शासक ने गद्दी पर बैठने के बाद ऐथेन्स के लोगों की भावना के अनुसार शासन किया। यद्यपि वह कुलीन वर्ग से संबंध रखता था परन्तु उसने शासन के ऊंचे पदों पर इस वर्ग के लोगों को नियुक्त नहीं किया। उसे ऐथेन्स गणतंत्र का दूसरा संस्थापक माना जाता है। गणतंत्र को सुदृढ़ करने के लिए उसने शासन व्यवस्था में सुधार किए।

सोलन एवं क्लैस्थनीज के सुधारों के परिणामस्वरूप ऐथेन्स एक शक्तिशाली राज्य बन गया। ऐथेन्स के शासक विस्तारवाद की नीति पर चलने लगे। इसी समय एशिया महाद्वीप के मध्यपूर्व में स्थित ईरान, जिसे प्राचीन काल में पर्शिया (फारस) कहा जाता था, में स्थापित हखमनीशियन साम्राज्य अपनी शक्ति का विस्तार कर रहा था। अतः फारस व यूनान में प्रतिद्वन्द्विता आरंभ हो गई। युद्ध की पहल फारस की तरफ से की गई जिसका जवाब यूनान ने दिया। फारस व यूनान के बीच लड़े गए पहले युद्ध को मैराथन का युद्ध (492 ई.पू.) कहते हैं। इतिहासकार एच.जी. वेल्स ने लिखा है कि "यूनान की मुख्य भूमि पर पहला आक्रमण 492 ई.पू. में हुआ। यह एक समुद्री आक्रमण था, जो नगर पर किया गया था।" यूनान व फारस के बीच होने वाला यह युद्ध 12 वर्ष तक चला। इस युद्ध में यूनान की शानदार विजय हुई। इसके पश्चात थर्मोपॉली का युद्ध (480 ई.पू.) तथा प्लेटिया का युद्ध (479 ई.पू.) हुआ।

यूनान के इतिहास में पेरीक्लीज (461–429 ई.पू.) का नाम अत्यन्त उल्लेखनीय है। उसके शासनकाल में यूनान की अभूतपूर्व प्रगति हुई। इसी कारण उसके शासनकाल को पेरीक्लीज युग के नाम से जाना जाने लगा। उसके समय में यूनान में साहित्य, दर्शन एवं कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। उसके समय में गणतंत्र का सर्वांगीण विकास हुआ तथा वह समस्त यूनान का बौद्धिक केन्द्र बन गया। पेरीक्लीज एक महान् राजनीतिज्ञ सेनापति तथा उच्चकोटि का वक्ता था। उसके हृदय में स्वदेश प्रेम तथा जन कल्याण की भावनाएं हिलोरे मारती थीं। उसके शासनकाल में ऐथेन्स ने प्रत्येक क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति की, अतः उसके शासनकाल को यूनान का स्वर्ण युग कहा जाता है।

टिप्पणी

ऐथेन्स और स्पार्टा के बीच संघर्ष

स्पार्टा तथा ऐथेन्स के बीच 431 ई.पू. से 404 ई.पू. के मध्य एक लम्बा संघर्ष चला जिसे विश्व के इतिहास में पेलोपोनिशियन युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध के परिणामस्वरूप ही ऐथेन्स का पतन हुआ था।

पेरीक्लीज ऐथेन्स में प्रजातंत्र की स्थापना करने के लिए कार्य कर रहा था और वह स्पार्टा की सैनिक तंत्र की नीति का विरोधी था। स्पार्टा ऐथेन्स के इस व्यवहार से नाराज था और वह एक मौके की तलाश में था कि कब वह ऐथेन्स को नीचा दिखलाए। ऐथेन्स डेलियन संघ का नेता था। पेरीक्लीज इस अवसर का लाभ उठा रहा था। वह संघ के कोष से ऐथेन्स में विकास कार्य कर रहा था। दूसरे नगर–राज्यों को वह जबरदस्ती संघ का सदस्य बने रहने के लिए मजबूर कर रहा था। जबकि ये राज्य ऐथेन्स से स्वतंत्र हो जाना चाहते थे। पेरीक्लीज ने 435 ई.पू. में ऐथेन्स के एक उपनिवेश कोर्सिका को संघ का सदस्य बना लिया। कोरिन्थ ने इसका विरोध किया तथा इस विरोध में स्पार्टा को भी साथ देने के लिए कहा। परिणामस्वरूप पेलोपोनिशियन युद्ध आरम्भ हुआ जिसमें कुछ राज्य स्पार्टा की ओर तथा कुछ ऐथेन्स की ओर से लड़े। पेलोपोनिशियन युद्ध स्पार्टा तथा ऐथेन्स की दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं के बीच लड़ा गया था।

पेलोपोनिशियन युद्ध के परिणामस्वरूप ऐथेन्स का पतन हो गया। ऐथेन्स के दुर्ग को नष्ट कर दिया गया। उसके जलपोतों पर स्पार्टा का अधिकार हो गया। ऐथेन्स स्पार्टा का अधीनस्थ राज्य बन गया। यह ठीक है कि कुछ समय पश्चात् ऐथेन्स स्वतंत्र हो गया परन्तु वह इतना कमजोर हो गया कि 358 ई.पू. में मकदूनिया (मेसीडोनिया) के शासक फिलिप ने उस पर अधिकार कर लिया। ऐथेन्स के राजनीतिक पतन के साथ–साथ उसका सांस्कृतिक पतन भी हो गया। ऐथेन्स के साथ–साथ सभी यूनानी राज्य आपसी संघर्ष में उलझ जाने से शक्तिहीन हो गए।

हेलेनिस्टिक सभ्यता (Hellenistic Civilization)

मकदूनिया के शासक फिलिप ने मकदूनिया पर विजय प्राप्त करने के पश्चात सम्पूर्ण यूनान पर अधिकार कर लिया। फिलिप ने यूनान में हेलेनिस्टिक वंश के शासन की नींव रखी। इस वंश के शासक 320 ई.पू. से 146 ई.पू. तक यूनान में शासन करते रहे। फिलिप ने फारस पर अधिकार कर लिया लेकिन 336 ई.पू. में उसके पुत्र सिकंदर ने उसका वध कर दिया और मकदूनिया का शासक बन गया। वह विश्व विजय करना चाहता था इसलिए शासक बनने के पश्चात उसने एक शक्तिशाली सेना का गठन किया और उसकी सहायता से मिस्र, सीरिया, फारस और भारत के प्रदेशों पर विजय प्राप्त की। उसने यूनान में राजनीतिक एकता स्थापित की तथा मिस्र में अलेक्जेन्ड्रिया नामक नगर की स्थापना की। उसने यूनानी सभ्यता तथा संस्कृति को बढ़ावा दिया तथा यूनानी संस्कृति को भारत, चीन जापान तक पहुंचाया। वह अपने साथ वैज्ञानिकों और इतिहासकारों की एक टोली रखता था। उसके गुरु अरस्तु ने विभिन्न प्रकार की खोज की थीं। उसने विश्व को भाईचारे का पाठ पढ़ाया। इसी उद्देश्य के लिए उसने ईरानी–राजकुमारी रुकसाना से विवाह किया। उसने विदेशों के साथ व्यापार तथा वाणिज्य को बढ़ावा देने के लिए सम्बन्ध बनाए। उसने यूनान की युद्ध प्रणाली को भारत जैसे देशों में अपनाया। सिकन्दर महान के काल में राजनीतिक एकता के साथ–साथ

टिप्पणी

समाज, शिक्षा, साहित्य तथा कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई। अतः सिकन्दर को विश्व के इतिहास में एक महान सम्राट कहकर पुकारा गया है। सिकंदर जब भारत से यूनान की ओर लौट रहा था, तब 323 ई.पू. में बेबीलोन में उसकी मृत्यु हो गई। उसने 13 वर्ष के शासन काल में संसार में विशाल साम्राज्य स्थापित किया था। सिकन्दर की मृत्यु के साथ ही यूनान का विशाल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया।

अपनी प्रगति जांचिए

1. लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का जन्मस्थान ..... ही रहा है–
   (क) स्पार्टा (ख) कोटिन्थ
   (ग) थीवा (घ) ऐथेन्स
2. असेम्बली या समिति को ..... कहा जाता था–
   (क) अपीला (ख) सीनेट
   (ग) एफर्स (घ) इनमें से कोई नहीं

3.3 प्राचीन ग्रीस (यूनान) की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां

यूरोपीय सभ्यता विशेष तौर पर इस सभ्यता की ऋणी मानी जाती है। शैली के अनुसार, "हम सब यूनानी हैं, हम लोगों के विवाद, धर्म, कलाएं, साहित्य, सब के मूल तो यूनान में ही हैं।" विलडुरो ने लिखा है, "मशीनों को छोड़कर हमारी संस्कृति का कदाचित कोई ऐसा तत्व नहीं है जिसका उद्‌भव यूनान में न हुआ हो।" प्राचीन काल में यूनान ने सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की।

3.3.1 सामाजिक स्थिति (Social Conditions)

लौहकालीन यूनान के लोगों का सामाजिक जीवन बहुत समृद्ध था। इसकी प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

सामाजिक वर्गीकरण (Social Classification)

लौहकालीन यूनानी समाज मुख्यतः दो वर्गों अर्थात्– नागरिक तथा गैर–नागरिक में बंटा हुआ था। डॉ. के.सी. श्रीवास्तव ने लिखा है : "प्राचीन सभ्यताओं के सामाजिक ढांचे के विपरीत यूनानी सभ्यता में समाज का वर्गीकरण धन के आधार पर न होकर सभा एवं समिति के आधार पर किया जाता था। वर्ग में केवल शासक एवं उसके परिवार के सदस्य आते थे जो राजमहल में रहा करते थे। समाज में उच्च स्थान प्राप्त होते हुए भी इस वर्ग के मानव सबके साथ समानता का व्यवहार करते थे, क्योंकि जिस प्रकार शासक को शासन सम्बन्धी अधिकार प्राप्त थे उसी प्रकार प्रजा को भी प्रशासन में भाग लेने सम्बन्धी अधिकार प्राप्त थे। दूसरा वर्ग अन्य प्राचीन सभ्यताओं के समान मध्य वर्ग था। इस वर्ग में सैनिक, व्यापारी आदि आते थे। मध्यम वर्ग के लोगों का जीवन उच्च तथा शासक वर्ग से निम्न स्तर का था।"

(i) नागरिक (Citizen)– लौहकालीन यूनान में नागरिक वर्ग में उच्च वर्ग के लोग आते थे। इस वर्ग के लोग यूनान के मूल नागरिक होते थे। वे अपने देश की भूमि तथा राज्य के स्वामी थे। वे प्रशासनिक कार्यों में भी भाग लेते थे। यहां तक कि राजनीति तथा धर्म पर इनका अधिकार था। प्रशासन की समस्त शक्तियां इनके पास थीं। देश की रक्षा का भार भी इनके ऊपर ही था। आर्थिक आधार पर इस वर्ग में दो तरह के नागरिक थे– एक तो वे नागरिक जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी तथा दूसरे साधारण किसान थे, जिनकी शासन कार्यों में नाममात्र की भागीदारी होती थी।

(ii) गैर–नागरिक (Non-Citizen)– यूनानी समाज में दूसरा वर्ग गैर–नागरिकों का था। देश में गैर–नागरिकों की संख्या नागरिकों की अपेक्षा काफी अधिक थी। इनमें अधिकतर लोग विदेशी थे। समाज में इन्हें किसी भी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त नहीं थीं। ये लोग सरकार को विभिन्न प्रकार के नाजायज कर देते थे। स्पार्टा के हेलोताई तया ऐथेन्स के गुलाम लोग इस वर्ग में आते थे। इन्हें ऐथेन्स में मेटिक तथा स्पार्टा में पेरियोकाई (Perioccai) कहा जाता था। गैर–नागरिकों की दशा बहुत ही दयनीय थी। यूनान के समाज में दास भी गैर–नागरिकों में गिने जाते थे। उन्हें किसी भी प्रकार के राजनीतिक तथा सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। इन्हें उच्च वर्ग के लोगों के खेतों, घरों तथा कारखानों में कार्य करना पड़ता था, जिसके बदले इन्हें नाममात्र की मजदूरी दी जाती थी। अधिकतर दास रोटी–पानी तथा कपड़ों पर ही कार्य करते थे। उस समय यूनान में बेगार लेने की प्रथा भी प्रचलित थी। दास लोग अपने मालिक की इच्छा के विरुद्ध कहीं भी आ–जा नहीं सकते थे। देश के कानून भी उनके लिए कठोर थे। कोई भी दास अपने मालिक को धन देकर स्वतंत्र हो सकता था। अधिकतर दास युद्ध में बन्दी बनाए गए सैनिक होते थे। गैर–नागरिक दासों से सैनिक कार्य भी लिए जाते थे। दासों के विवाह दास स्त्रियों के साथ ही होते थे तथा उससे उत्पन्न होने वाली संतानें भी दास ही मानी जाती थीं।

(iii) विदेशी (Foreigners)– यूनानी समाज में विदेशियों का भी अलग वर्ग था। परन्तु इनकी संख्या बहुत ज्यादा नहीं थी। इस वर्ग के लोग ज्यादातर शहरों में रहते थे और शिल्पी एवं व्यापारी होते थे। इन्हें नागरिक अधिकारों से वंचित रखा जाता था। अतः देश के शासन में इनका कोई हाथ नहीं रहता था। विदेशियों की सुरक्षा के लिए कुछ कानून बने हुए थे। समाज में इनकी स्थिति संतोषजनक थी।

स्त्रियों की दशा (Condition of Women)

लौहकालीन यूनानी समाज पुरुष प्रधान था। प्राचीन यूनान में स्त्रियों की दशा संतोषजनक नहीं थी। यूनान में बहु–विवाह तथा रखैल की प्रथा बहुत प्रचलित थी। स्त्रियों को दासों की तरह खरीदा और बेचा जाता था। ट्रोजन युद्ध में नगरवासियों ने अपने शासक को तीन स्त्रियां प्रदान की थीं। यूनान की स्त्रियां घर का सारा कार्य सम्पन्न करती थीं। वहां पर स्त्री–शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था। स्त्रियों के विषय में यूनान का महान दार्शनिक अरस्तु भी कहा करता था : "यदि तरक्की करनी

टिप्पणी

है तो स्त्री से दूर रहो।" स्त्रियों के विवाह के लिए 14 वर्ष की आयु सबसे उत्तम मानी जाती थी। पेरिक्लीज जैसे उदार शासक के भी स्त्रियों के विषय में ये विचार थे : "सबसे अच्छी स्त्री वही है जिसके विषय में भला बुरा सबसे कम कहा जाए।" लड़कियों की शिक्षा पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता था। उनकी इस स्थिति को देखते हुए कहा गया है कि यूनानी स्त्री के जीवन में दो ही सुख के क्षण थे–विवाह और मृत्यु। विवाह के उपरान्त स्त्री से हष्ट–पुष्ट सन्तान उत्पति की कामना की जाती थी। स्पार्टा नगर–राज्य में तो महिलाओं को पर–पुरुष से भी सम्बन्ध स्थापित करने की आज्ञा प्राप्त थी। दार्शनिक प्लेटो का मत था : "गृहस्थ जीवन से न तो कोई लाभ होता है और न उसकी आवश्यकता है। यदि पुरुष और स्त्री का सम्बन्ध केवल गर्भाधान तक ही सीमित कर दिया जाए और विवाह की प्रथा उठा दी जाए तो सर्वथा उचित और लाभदायक होगा।" उस समय स्त्रियां तथा वेश्याएं लोगों का मनोरंजन भी करती थीं। इस प्रकार यूनानी सभ्यता में स्त्रियों की दशा संतोषजनक नहीं थी। स्त्री को केवल मनोरंजन का साधन मात्र ही समझा जाता था। स्त्री तथा पुरुष का सम्बन्ध साधारणतया शारीरिक प्रेम तक ही सीमित था। यद्यपि एरिस्टोफेनीज जैसे सुधारकों ने स्त्रियों की स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया किन्तु इसमें उसे विशेष सफलता नहीं मिली।

आवास (Houses)

लौहकालीन यूनान में उच्च वर्ग के लोग भव्य महलों में निवास करते थे। उनके भवन पक्की ईंटों तथा लकड़ी से बनाए जाते थे जिनमें संगमरमर भी लगा होता था। उनके भवनों में अनेक कमरे होते थे तथा उनमें जीवन की समस्त वैभवपूर्ण सुविधाएं उपलब्ध रहती थीं। दूसरी ओर यूनान के जनसाधारण लोग, जैसे किसान तथा दास छोटे–छोटे एवं कच्चे घास–फूस के मकानों में निवास करते थे। उनके घरों में प्रतिदिन प्रयोग करने वाला सामान भी बहुत कम मात्रा में होता था।

पहनावा (Dress)

धनी और निर्धनों के पहनावे में अंतर होता था। यूनान के लोग ऊनी तथा सूती दोनों प्रकार के वस्त्र पहनते थे। उनके वस्त्रों में ज्यादा तड़क–भड़क नहीं पाई जाती थी। यूनानियों के वस्त्र विभिन्न रंगों के होते थे। उस समय दो प्रकार के वस्त्र पहने जाते थे– शरीर के निचले भाग पर पहने जाने वाले वस्त्र (अधो–वस्त्र) तथा ऊपरी वस्त्र। यूनानियों के वस्त्र इस प्रकार के बने होते थे कि एक ही वस्त्र सारे शरीर को ढक लेता था। यूनान में स्त्री तथा पुरुष दोनों ही अपने पैरों में चप्पल तथा खड़ाऊ धारण करते थे। किसान लोग केवल नीचे के वस्त्र पहनते थे। यूनान की स्त्रियां पारदर्शी वस्त्र भी पहनती थीं।

खान–पान (Food and Drinks)

यूनानी सभ्यता के लोग गेहूं, जौ, चावल, मक्का, बाजरा, प्याज, लहसुन, विभिन्न प्रकार की दालें तथा सब्जियों का प्रयोग भोजन में करते थे। भोजन लकड़ी तथा धातु के बर्तन में डालकर पकाया तथा परोसा जाता था। अमीर वर्ग के लोग भोजन परोसने के लिए सोने, चांदी के बर्तनों का प्रयोग करते थे। यूनानवासी विशेष उत्सवों पर सामूहिक भोज देते थे। वे मांस, शराब तथा फलों का प्रयोग भी खूब करते थे। यूनान में विभिन्न प्रकार के पकवान तथा मिठाइयां भी बनाई जाती थीं।

टिप्पणी

शृंगार और आभूषण (Make up and Ornaments)

प्राचीन यूनान के लोग शृंगार और आभूषण के शौकीन थे। शृंगार करने तथा आभूषण पहनने का शौक स्त्री और पुरुष दोनों को था। स्त्रियां पुरुषों से अधिक सुन्दर दिखने का प्रयास करती थीं। वे लिपिस्टिक, पाउडर, लाली, काजल आदि का प्रयोग करती थीं। बालों को संवारने के लिए कंघी तथा दर्पण का प्रयोग किया जाता था। यूनानियों के आभूषण सोने तथा चांदी के बने होते थे जिनमें अंगूठी, कान की बाली, पायजेब, हार, बाजूबंद तथा मालाएं आदि सम्मिलित थे। आभूषणों एवं शृंगार प्रसाधनों से स्त्रियों का विशेष लगाव था।

आमोद–प्रमोद (Merrymaking)

यूनानी समाज में आमोद–प्रमोद के अनेक साधन प्रचलित थे। यूनानी लोग विवाह, त्योहार तथा धार्मिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाते थे। महिलाएं नृत्य तथा संगीत से लोगों का मनोरंजन करती थीं। कुछ लोग शिकार खेलकर भी अपना मनोरंजन करते थे। शिकार तीर कमान, तलवार तथा बरछे की सहायता से किए जाते थे। उस समय शेर, हिरण तथा सूअर का शिकार भी किया जाता था। स्त्रियां पारदर्शी तथा अर्धनग्न अवस्था में नृत्य करके लोगों का दिल बहलाती थीं। यूनान में ढोल, बांसुरी आदि वाद्य यन्त्र भी बजाए जाते थे।

मनोरंजन के साधनों के माध्यम से लोग अपना शारीरिक विकास भी करते थे। यूनानियों का विश्वास था कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। यूनान में हर 4 वर्षों के उपरान्त ओलिम्पिस नामक स्थान पर ओलम्पिक खेलों का आयोजन किया जाता था। इन खेलों में प्रत्येक नगर–राज्य से खिलाड़ी व दर्शक भाग लेते थे। ये खेल 5 दिनों तक चलते थे। 776 ई.पू. में प्रथम ओलम्पिक खेलों का आयोजन यूनान में किया गया था। किन्तु बाद में इसका महत्व जाता रहा। 1896 ई. में एथेंस में आधुनिक काल में फिर से ओलम्पिक खेलों का आयोजन किया गया। अब यही खेल आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इस प्रकार यूनान के लोगों का सामाजिक जीवन बहुत उन्नत था।

3.3.2 आर्थिक स्थिति (Economic Conditions)

यूनान के लोगों का आर्थिक जीवन संगठित था। कृषि, पशुपालन, उद्योग तथा वाणिज्य उनकी आजीविका के मुख्य साधन थे।

कृषि (Agriculture)

यूनान के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि करना था। यूनानी गेहूं, चावल, मक्का, बाजरा, विभिन्न प्रकार की दालें, मटर, लहसुन, प्याज, अंगूर, अंजीर, सेब आदि विभिन्न प्रकार की सब्जियां तथा फलों की खेती करते थे। यूनान में भूमि के मालिक सामन्त होते थे। उस समय जैतून की बागवानी भी की जाती थी। किसानों तथा दासों से खेतों में सभी प्रकार का काम कराया जाता था। खेती हल तथा बैलों से की जाती थी। हल लकड़ी के बने होते थे, जिनमें लोहे की फाली लगी होती थी। खेतों में फसलों को अदल–बदल कर बोया जाता था ताकि उसकी उर्वरा शक्ति बनी रहे। फसलों को काटने के लिए

टिप्पणी

फावड़ों तथा हांसियों का प्रयोग किया जाता था। यूनान के लोग अन्न को सुरक्षित रखने के लिए कोठरियां बनाते थे जिन पर ऋतुओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। शासक भूमिपतियों से कुल फसल का 1/4 भाग भूमि कर के रूप में लेते थे। कृषि को उन्नत बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण कदम उठाए जाते थे। सरकार भी कृषकों की सहायता करती थी।

पशुपालन (Domestication of Animals)

कृषि के अतिरिक्त पशुपालन भी यूनानियों का दूसरा मुख्य पेशा था। लौहकाल में यूनानियों की आर्थिक स्थिति भूमि और पशुओं की संख्या से आंकी जाती थी। उस समय भेड़, बकरी, सूअर, कुत्ता, गाय, बैल, गधे तथा घोड़े आदि पशु बड़ी संख्या में पाले जाते थे। उस समय पशुओं का व्यापार भी किया जाता था। भेड़ तथा बकरी से ऊन तथा मांस प्राप्त किया जाता था। बैल खेती करने के काम आते थे और कुत्ते की सहायता से शिकार किया जाता था। घोड़े तथा गधे बोझा ढोने के काम आते थे। यूनानियों में गाय का बहुत महत्त्व था। पशुओं के लिए चरागाहों की कोई कमी नहीं थी।

उद्योग (Industry)

यूनान में विभिन्न प्रकार के कुटीर उद्योग तथा दस्तकारियां स्थापित थीं। यूनान में विभिन्न धातुएं तथा खनिज पदार्थ सरलता से प्राप्त हो जाते थे। उस समय यूनान में सूत कातना, कपड़ा बुनना, कपड़ा रंगना आदि उद्योग–धंधे प्रचलित थे। इनके अलावा आभूषण, हल, बर्तन जिन पर रंगीन चित्र तथा दृश्य होते थे, जलपोत, जैतून का तेल, शराब, खिलौने आदि सामान भी उद्योगों में भारी मात्रा में बनाए जाते थे। स्त्री–पुरुष दोनों ही कुटीर उद्योगों अर्थात् घरेलू उद्योगों में कार्य करते थे। मिट्टी, पत्थर, काठ आदि से सम्बन्धित उद्योग भी उन्नत अवस्था में थे। बुनाई सम्बन्धी उद्योग भी विकसित था।

व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce)

लौहकालीन यूनान में व्यापार तथा वाणिज्य भी बहुत प्रचलित था। यूनान से जैतून का तेल तथा मिट्टी के सुन्दर बर्तन विदेशों में निर्यात किए जाते थे। विदेशी व्यापार जहाजों द्वारा भूमध्य सागर के तटों पर किया जाता था। इटली, सिसली तथा मित्र आदि उपनिवेशों में यूनानी माल भारी मात्रा में बेचा जाता था। यूनान के पश्चिमी एशिया, अफ्रीका तथा यूरोप आदि देशों के साथ अच्छे व्यापारिक सम्बन्ध थे। जैतून का तेल तथा मिट्टी के सुन्दर बर्तन जिन पर बढ़िया प्रकार की नक्काशी होती थी, भारी मात्रा में विदेशों को निर्यात किए जाते थे। यूनान में गर्म मसाले, रंग, हाथी दांत तथा सोने–चांदी के आभूषण तथा विलासिता की वस्तुओं का विदेशों से आयात किया जाता था। इसके अतिरिक्त यूनान में आन्तरिक व्यापार भी काफी प्रचलित था। व्यापारियों द्वारा प्रतिदिन प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं को बैलगाड़ियों, गधों और घोड़ों की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर बेचा जाता था। व्यापार जल तथा थल दोनों मार्गों से होता या। समुद्र में जहाजों से सामान लाया तथा ले जाया जाता था। उस समय जहाजों में 10 व्यक्ति सामान के साथ बैठ सकते थे। वस्तुओं के लेन–देन का व्यापारी लोग हिसाब–किताब लिखित रूप में रखते थे। वस्तुओं का विनिमय मुद्रा के आधार पर

किया जाता था। यूनान में बढ़िया प्रकार की मुद्रा प्रचलित थी। सरकार व्यापारियों से व्यापारिक कर भी लेती थी।

3.3.3 धार्मिक स्थिति (Religious Conditions)

टिप्पणी

लौहकालीन यूनानियों के जीवन में धर्म का बहुत महत्व था। उन्हें अपने देवी–देवताओं में बहुत विश्वास था। वे बहुदेववादी और मूर्तिपूजक थे। उनका यह मानना था कि देवताओं के नाराज होने पर ही मनुष्य को कष्ट झेलने पड़ते हैं अर्थात् उन पर विपत्तियां आती हैं। उनका विश्वास था कि यदि मनुष्य देवताओं की स्तुति करेंगे तो वे उनके सारे दुःखों को दूर कर देंगे। यूनानी बचपन से ही अपने बच्चों को देवताओं की उपासना करने की शिक्षा प्रदान करते थे। उनका विश्वास था : "देवता का शरीर भी मनुष्य की तरह होता है परन्तु वह मनुष्य से अधिक शक्तिशाली, सुन्दर तथा अमर होता है।"

देवी–देवता (Goddesses and Gods)

लौहकालीन यूनान के लोग विभिन्न देवी–देवताओं की उपासना करते थे। यूनानी देवताओं का राजा जीउस (Zeus) अर्थात् आकाश का देवता था। वो इन्द्र की तरह वज्र लिए रहता था। इसी के कारण बिजली चमकती थी। वह अपने 12 पुत्रों और अपनी पत्नी हेरा (स्वर्ग की देवी) के साथ ओलिम्पस पर्वत पर निवास करता था। जीउस का भाई पोसीदन (वरूण) कहलाता था, जिसे समुद्र का राजा कहा जाता था। जीउस की पुत्री अरतिमिस समुद्र की देवी कहलाती थी। अपोलो की सूर्य देवता के रूप में पूजा की जाती थी। उसका यूनान में बहुत मान तथा सम्मान था। देवियों में अस्त्र–शस्त्र धारिणी, ज्ञानेश्वरी देवी ऐथेना प्रमुख थी। हिंदुओं की देवी सरस्वती की भांति ऐथेना की पूजा विद्या एवं कला की देवी के रूप में की जाती थी, दूसरी देवी अफ्रोदिते थी जो लोगों में प्रेम तथा काम का संचार करती थी। वह दाम्पत्य व प्रसव नियंत्रण भी करती थी। रोम के लोग उसे वीनस कहकर पुकारते थे। देमेतर (धरती की माता) जीउस की श्रेष्ठ पत्नी थी। उसकी पुत्री का नाम कोरी था। एरिस को युद्ध का देवता समझा जाता था।

प्राकृतिक शक्तियों की उपासना (Worship of Natural Gods)

यूनान के लोग देवी देवताओं के अतिरिक्त प्राकृतिक शक्तियों की भी पूजा करते थे। वे पृथ्वी, आकाश, वायु, नदी, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र, ऋतुओं आदि की पूजा करते थे। वे पूजा में अन्न, फल–फूल, पशु, सुरा, सोना–चांदी, वस्त्र आदि चढ़ावे में चढ़ाते थे। मन्दिरों में नाच–गानों के साथ पूजा की जाती थी। यूनानी भूत–प्रेत में भी विश्वास रखते थे।

मंदिर (Temple)

यूनान निवासी अपने देवी–देवताओं के मंदिरों का निर्माण कराते थे। ऐथेन्स के प्राचीन पार्थीनन मन्दिर में एलीना देवी की पूजा की जाती थी। डेल्फी तथा डेलोस में अपोलो देवता के सुन्दर मन्दिर बनवाए गए थे। थर्मोपाइले नगर में देमेतर देवी का मन्दिर था। यूनान निवासी इन मन्दिरों में सामूहिक पूजा करते थे। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए भारी मात्रा में चढ़ावा जैसे– अन्न, फल, शराब, सोना–चांदी आदि चढ़ाया जाता था, यज्ञ किए जाते थे तथा बलियां भी चढ़ाई जाती थीं। धार्मिक कार्य पुजारियों की देख–रेख में सम्पन्न किए जाते थे। जीउस देवता को प्रसन्न करने के लिए हर चार वर्ष पश्चात् ओलम्पिक प्रतियोगिताएं कराई जाती थीं। इस अवसर पर सामूहिक रूप से

उसकी उपासना की जाती थी। डेल्फी के मन्दिर में भी दूर–दूर से लोग अपोलो देवता (सूर्य देवता) की भविष्यवाणी सुनने आते थे। ऐसा माना जाता था कि इस मन्दिर में जो भविष्यवाणी की जाती थी वह सत्य हो जाती थी।

टिप्पणी

पर्व–त्योहार (Festivals)

यूनान के लोग अपने देवताओं के सम्मान में अनेक पर्व–त्योहारों का आयोजन करते थे। कुछ उत्सव नगरों तक ही सीमित थे और कुछ राष्ट्रीय पैमाने पर मनाए जाते थे। जीउस के सम्मान में ओलिंपिक और नेमियन, अपोलो के सम्मान में पिथिमियन तथा पोसीदन के सम्मान में इथमियन नामक उत्सवों का वृहद आयोजन किया जाता था। ऐसे अवसरों पर प्रत्येक नगर–राज्य में लोग इकट्ठे होते थे। ऐथेना देवी की पूजा के लिए पैन एथीनिया नामक त्योहार मनाया जाता था। इस अवसर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता था। ऐसे सभी उत्सवों पर मद्यपान, सामूहिक भोज, नृत्य, संगीत, खेल–कूद आदि की व्यवस्था की जाती थी।

अन्धविश्वास (Superstitions)

यूनानियों के अनेक अन्धविश्वास भी प्रचलित थे। रामप्रसाद त्रिपाठी के अनुसार, यूनानी लोग भूत–प्रेतादि अनिष्टकारी सत्ताओं में विश्वास करते थे। डॉ. विपिन बिहारी सिन्हा के अनुसार : "यूनानी लोगों का विश्वास था कि मृत्यु के पश्चात भी मनुष्य को घोर अंधविश्वास से होकर गुजरना पड़ता है।" यूनानी नाटककारों ने भी परलोक की कल्पना भयावह ढंग से की है। मृत्यु से उन्हें डर लगता था इसलिए वे स्वर्ग की प्राप्ति के लिए अनेक देवी–देवताओं की पूजा करते थे। लोग अपनी आकांक्षाओं और आवश्यकता की पूर्ति के लिए देवी–देवताओं की प्रार्थनाएं आदि भी करते थे। इन्हीं अंधविश्वासों के आधार पर ही डेल्फी के मन्दिर में दूर–दूर से लोग अपोलो नामक देवता की भविष्यवाणी सुनने आते थे। जैसा कि वर्णन किया जा चुका है कि उस समय यूनानी लोगों में ऐसी धारणा प्रचलित थी कि जो भविष्यवाणी इस मन्दिर में की जाती है वह सत्य हो जाती है। यूनान में भविष्यवाणी को ओरेकल कहा जाता था। डॉ. के.सी. श्रीवास्तव के अनुसार : "यूनानवासी अप्रसन्न देवताओं को प्रसन्न करने लिए पशुओं तथा मनुष्यों की बलि देते थे।" धार्मिक कार्य करते समय पुजारियों की सहायता ली जाती थी। यूनान के धार्मिक जीवन पर आरम्भ से ही एशिया, मिस्र तथा क्रीट का प्रभाव दिखलाई पड़ता है। परन्तु भविष्य में बौद्धिक, भौतिक तथा नास्तिकवाद की वृद्धि साथ–साथ देवी–देवताओं में उनका विश्वास कम होता चला गया। यूनानी भूत–प्रेत, तंत्र–मंत्र आदि पर भी विश्वास करते थे। तंत्र–मंत्र की शिक्षा लोग गुप्त रूप से प्राप्त करते थे। मृत्यु के बाद उन्हें पापों से मुक्ति मिले, इसके लिए यूनान में कुछ रहस्यपूर्ण धार्मिक प्रथाओं का भी प्रचलन हुआ। उन्होंने कुछ ऐसे देवताओं की कल्पना की जिनके चलते कुछ अनैतिक कार्यों का प्रचार हुआ। उदाहरण के लिए, डायोनिसस शराब का देवता और हर्मीश बदमाशों का देवता समझा जाता था। पुजारी ऐसे अंधविश्वासों को प्रश्रय देते थे।

अपनी प्रगति जांचिए

3. लौहकालीन यूनानी समाज मुख्यतः किन वर्गों में बंटा हुआ था?
   (क) नागरिक (ख) गैर नागरिक
   (ग) उपरोक्त दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
4. ओलम्पिक खेल कितने दिन चलते थे–
   (क) 6 (ख) 5
   (ग) 7 (घ) 8

3.4 प्राचीन ग्रीस (यूनान) में विज्ञान एवं संस्कृति

यूनान को व्यापक रूप से पश्चिमी संस्कृति का पालना माना जाता है। यूनानियों ने शिक्षा, साहित्य, वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला और संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यूनानियों को उनकी परिष्कृत मूर्तिकला और वास्तुकला के लिए जाना जाता था। यूनानी संस्कृति ने रोमन साम्राज्य और कई अन्य सभ्यताओं को प्रभावित किया, और यह आज भी आधुनिक संस्कृतियों को प्रभावित करता है।

3.4.1 विज्ञान (Science)

विज्ञान के क्षेत्र में यूनानियों ने काफी प्रगति कर ली थी। इस युग में यूनानियों ने गणित, ज्योतिष एवं चिकित्सा शास्त्र आदि का विकास किया था।

(i) **गणित (Maths)**– यूनान में रेखागणित का बहुत विकास हुआ। आर्कमिडीज नामक यूनानी विद्वान ने सापेक्षिक घनत्व तथा गोलाकार परिधि का माप तथा उसका महत्व बताया। यूनान के दूसरे प्रसिद्ध गणितशास्त्री येत्तस ने बिंदु तथा रेखा का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। उसने बताया कि रेखाओं पर बनाए गए कोणों का योग एक बिंदु पर बने कोणों के योग के बराबर होता है। एक अन्य सुप्रसिद्ध गणितज्ञ पाइथागोरस ने थ्योरम का आविष्कार किया। इसी प्रकार हैरॉन ने वायुदाब आधारित पानी निकालने के पम्प तथा भाप द्वारा चालित यंत्र का आविष्कार किया। यूक्लिड तथा हिप्पारकस भी उस समय के प्रसिद्ध गणितज्ञ थे।

यूनानी बीजगणित का प्रारंभ वेलिज ने थ्योरम का आविष्कार करके किया। चिकित्सक से अलग गणितज्ञ हिप्पोक्रिटज ने एक पुस्तक लिखकर रेखागणित को आगे बढ़ाया तथा इसके बाद हिप्पियास तथा डेमोक्रेटस ने इस ज्ञान को आगे बढ़ाया।

(ii) **ज्योतिष और भूगोल (Astrology and Geography)**– यूनान में विज्ञान के क्षेत्र में ज्योतिष तथा भूगोल का भी बहुत विकास हुआ। थेल्स ने सूर्य ग्रहण के कारणों पर प्रकाश डाला। उसने बताया कि जल से ही पृथ्वी की उत्पत्ति हुई है। हम्पिहाक्लीज ने चौथी सदी ई.पू. में ये सिद्ध किया था कि पृथ्वी जगत की रचना

टिप्पणी

चार तत्वों– मिट्टी, पानी, अग्नि तथा वायु से हुई है। अरिस्टाकर्स ने बतलाया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर काटती है। हैक्टिअस ने मिस्र तथा बेबीलोन का भ्रमण करके भूगोल की रचना की। एरेटोस्थनीज ने पृथ्वी के आकार का पता लगाकर एक मानचित्र भी बनाया। इस प्रकार हम देखते हैं कि यूनान में ज्योतिष तथा भूगोल का भी खूब विकास हुआ था।

पांचवीं शताब्दी ई.पू. में ज्योतिष के क्षेत्र में यूनानियों ने काफी प्रगति की। पार्मेडिनिज ने बताया कि पृथ्वी गोलाकार है तथा चन्द्रमा सूर्य द्वारा चमकता है। डेमोक्रिटस ने आकाश गंगा को अनन्त विश्वों का समूह बताया। एनेक्सागोरस इस काल का प्रसिद्ध ज्योतिषी था। उसने सूर्यग्रहण, चन्द्रगहण एवं नक्षत्रों का अध्ययन किया। उसने विश्व को अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी एवं आकाश आदि पांच तत्त्वों से बना बताया तथा घोषित किया कि मनुष्य का विकास पशुओं से हुआ। यद्यपि उसकी घोषणाओं से नाराज एथेंस के लोगों ने उसे मृत्युदंड दिया परन्तु उसने भागकर अपनी जान बचा ली।

(iii) चिकित्सा शास्त्र (Medical Science)– यूनानियों ने सबसे अधिक प्रगति चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में की थी। इस विज्ञान का आरंभ एम्पिडोक्लीज द्वारा किया गया। उसने बताया कि रक्त हृदय की ओर प्रवाहित होता है तथा त्वचा के सूक्ष्म छिद्र श्वास प्रक्रिया में सहायक होते हैं। एल्कमथॉन को यूनानी चिकित्सा शास्त्र का पिता कहा जाता है। यूनान के शासकों ने यूनान में अनेक चिकित्सालय तथा चिकित्सा विद्यालय खुलवाए। सिनोटस, कोटन तथा कौत नगरों में ऐसे अनेक विद्यालय स्थापित थे जिनमें चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा प्रदान की जाती थी। हिपोक्रेटस यूनान का सबसे प्रसिद्ध चिकित्सक था। उसने चिकित्सा शास्त्र को धर्म एवं दर्शन से अलग करके रोगों का मूल दैवीय शक्तियों की अपेक्षा प्राकृतिक कारणों को बताया। उसने बताया कि देवताओं के अप्रसन्न होने से लोग रोगग्रस्त नहीं होते और न ही ईश्वर को प्रसन्न करने से रोगी ठीक होते हैं। उसने बताया रोग का कोई न कोई शारीरिक कारण होता है और उपचार से रोगी को ठीक किया जा सकता है। उसने यह भी बताया कि स्वच्छ भोजन खाने से तथा सफाई रखने से भी रोग पास नहीं जाते। उसने शल्य चिकित्सा का विकास किया तथा संक्रामक रोगों का पता लगाया।

एक अन्य चिकित्सक हेरोक्लिज ने तीसरी सदी ई.पू. में पेशियों के कार्यों और नाड़ी की गति का पता लगाने के लिए अनेक उपकरणों का आविष्कार किया। आयुर्वेद के क्षेत्र में डायोजेनीज ने मानव शरीर की रचना का विश्लेषण किया। गैलन भी उस समय का प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्री था। यूनान में पुरुषों के साथ–साथ महिलाएं भी चिकित्सा का कार्य करती थीं।

3.4.2 संस्कृति (Culture)

यूनानियों ने सांस्कृतिक क्षेत्र में भी अभूतपूर्व उन्नति की। यूनान के लोगों के सांस्कृतिक जीवन को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने में शिक्षा, साहित्य, दर्शन तथा कला का बड़ा योगदान रहा था। यूनान के लोगों के सांस्कृतिक जीवन की विशेषताएं इस प्रकार थीं–

टिप्पणी

शिक्षा (Education)

प्राचीन काल में आरम्भ में यूनान के लोग शिक्षा पर अधिक ध्यान नहीं देते थे। परन्तु धीरे–धीरे उन्होंने शिक्षा के प्रति रुचि लेनी आरम्भ की। सर्वप्रथम फिनिशिया में यूनानी लिपि का प्रयोग शुरू हुआ। यूनानी लिपि का प्रयोग केवल सरकारी कार्यों के लिए करते थे। परन्तु बाद में इसका प्रयोग व्यापक होता चला गया। यूनान में स्कूलों के लिए अलग से इमारतें नहीं थीं। शिक्षा शिक्षकों के घरों तथा मन्दिरों में दी जाती थी। छोटे बच्चे शिक्षकों के घर शिक्षा ग्रहण करने के लिए जाते थे। दास लोग धनाढ्य बच्चों की पुस्तकों को लेकर उनके साथ जाते थे। उस समय लिखना–पढ़ना और पुराने काव्यों को कंठस्थ करना बच्चों की शिक्षा के लिए पर्याप्त समझा जाता था। यूनान में लड़कियों के लिए शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं था। स्पार्टा तथा ऐथेन्स दोनों नगर–राज्यों में शिक्षा का स्वरूप अलग–अलग था। स्पार्टा में सैनिक शिक्षा को अनिवार्य माना जाता था। स्पार्टा में लोग बौद्धिक ज्ञान प्राप्त करने के बजाय शारीरिक गठन की ओर अधिक ध्यान देते थे। इसके विपरीत ऐथेन्स में बौद्धिक विकास पर अधिक बल दिया जाता था। सोलन तथा पेरीक्लीज जैसे शासकों ने शिक्षा के विकास पर बहुत ध्यान दिया। यूनानी शासक पेरीक्लीज देशी और विदेशी विद्वानों को अपने दरबार में संरक्षण देता था। यूनान में दर्शनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, जीव–विज्ञान, इतिहास, चिकित्सा, नृत्य, संगीत के अतिरिक्त सूत कातना, कपड़ा बुनना, कृषि, व्यापार तथा खेल–कूद आदि की शिक्षा प्रदान की जाती थी। ऐथेन्स में 6 वर्ष से 14 वर्ष की आयु तक के छात्रों को पढ़ना–लिखना, गिनती, कंठस्थ करना सिखाया जाता था। इसके साथ–साथ संगीत की शिक्षा भी दी जाती थी। सिकन्दर महान के काल में भी शिक्षा का बहुत विकास हुआ। इस काल में यूनान में शिक्षा संस्थाएं भी खुलने लगीं। सिकन्दरिया तथा परगेमम आदि शहरों में पुस्तकालय स्थापित थे। शिक्षा के क्षेत्र में प्लेटो, अरस्तु तथा सुकरात आदि दार्शनिकों ने सराहनीय योगदान दिया। आज भी विश्व इन दार्शनिकों को ज्ञाताओं का ज्ञाता कहता है।

साहित्य (Literature)

प्राचीन यूनान में साहित्य के क्षेत्र में बहुत विकास हुआ, जिसका वर्णन इस प्रकार है–

(i) कविता (Poem)– जैसा कि इस इकाई में पहले बताया गया है कि आरम्भ में यूनानियों को लिपि का ज्ञान नहीं था, परन्तु बाद में उन्होंने फिनिशिया की लिपि को अपना लिया था। यूनानी लिपि में 22 व्यंजन थे। यूनान के लोग शिक्षा तथा साहित्य की रचना के लिए मिस्र से कागज, कलम तथा स्याही मंगवाते थे। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में यूनानियों ने लिखने–पढ़ने का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। प्राचीन काल में यूनानी वीर–गाथा तथा काव्यों की रचना करते थे। होमर ने इलियड तथा ओडेसी आदि महाकाव्यों की रचना की। इलियड महाकाव्य में यूनानियों का ट्राय (इलियड) नामक राज्य के साथ संघर्ष का वर्णन है। इस कथा के अनुसार, इलियड के राजा का पुत्र परीस स्पार्टा की सुन्दर रानी हेलन को उठाकर ले गया। इस अपमान का बदला लेने के लिए यूनानवासियों ने उस पर मिलकर आक्रमण किया। इलियड तथा ओडेसी महाकाव्य को विश्व में भारतीय महाकाव्यों रामायण तथा महाभारत की तरह महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

टिप्पणी

होमर के बाद यूनान का दूसरा प्रसिद्ध कवि हिडीयस था। वह एक गरीब किसान था। उसने अपनी कविताओं में गरीबों तथा किसानों के पक्ष में आवाज उठाई। उसने काज और काल नामक काव्य की रचना की। कुछ समय पश्चात यूनान में काव्यों के स्थान पर भावुक कविताओं तथा गीतों का लेखन किया जाने लगा।

यूनान में छठी शताब्दी ईसा पूर्व में सैफो नामक सुप्रसिद्ध कवयित्री ने प्रेम तथा करुणा भरे गीतों की रचना की। उसकी रचनाओं को लायर नामक वाद्य–यन्त्र की सहायता से संगीत के साथ गाया जाता था। यूनान वाले सैफो को कविता की देवी का दसवां अवतार मानते थे। इस युग में सुप्रसिद्ध कवि पिण्डार ने भी अनेक गीतों और काव्यों की रचना की। पिण्डार थीब्स का रहने वाला था। वह कुशल गायक तथा वीणा वादक भी या। उसके गीतों में जहां धनी वर्ग के सुखमय एवं विलासमय जीवन का आर्थिक चित्रण है वहीं उसने ओलम्पिया के खेलों के विजेताओं के गुणों का सुन्दर विवरण भी दिया है। इनके अतिरिक्त आरचीलोकस तथा अलेक्स भी उस समय के प्रसिद्ध गीतकार तथा कवि थे। आरचीलोकस ने अपने गीतों के माध्यम से सामाजिक बुराइयों पर प्रकाश डाला। इन कवियों ने ओलम्पिया के खेलों में विजेताओं की प्रशंसा में अनेक गीतों की रचना की। उस समय कविताओं के द्वारा अपने व्यक्तिगत दुःखों तथा सामाजिक कुरीतियों को भी व्यक्त किया जाता था।

(ii) नाटक (Drama)– यूनान में कविता तथा गीतों के साथ–साथ नाटकों की रचना भी की गई। यूनानी नाटक की उत्पत्ति के विषय में प्रो. श्रीराम गोयल ने लिखा है कि "वे बसन्त व मदिरा के देवता डायनोइसस के सम्मान में जो उत्सव मनाते थे उनमें कुछ व्यक्ति बकरे का रूप धारण करके एक वेदी के चारों ओर नाचते गाते और गीत में वर्णित घटनाओं को अपने हावभाव से अभिव्यक्त करते और एक व्यक्ति कथा का पाठ करता था। बाद में इस प्रदर्शन में नृत्य गान गौण हो गया तथा दो व्यक्ति संवाद रूप में कथा का पाठ करने लगे। इन्हीं संवादों से धीरे–धीरे नाटक अस्तित्व में आए।" एस्फाइलस, सोफोक्लीज, यूरीपाइडीज और एरिस्टोफनीज उस समय के प्रसिद्ध नाटककार थे। सोफोक्लीज ने दुःखान्त नाटकों का लेखन किया। उसके नाटकों में तीन पात्र पाए जाते थे। उसने इंडियस, रेनस, इण्डिगोन, इलीद्रा आदि सुप्रसिद्ध नाटकों की रचना की। एस्फाइलस (524–456 ई.पू.) उस समय का दुःखान्त नाटकों का जन्मदाता माना जाता है। उसने 90 नाटकों की रचना की। एरिस्टोफेनीज ने अपने नाटकों के द्वारा समाज में प्रचलित बुराइयों को उजागर करने का प्रयास किया। उसने वीर बांकुरे नामक नाटक की रचना की। उस समय नाटककारों का विषय धर्म, देवता तथा समाज से सम्बन्धित होता था। यूरीपाइडीज की रचनाओं में दी ट्रेजन विमेन सुप्रसिद्ध है। सिकन्दर के काल तक मनुष्य के दैनिक जीवन की कठिनाइयों को भी नाटकों के जरिए दिखाया जाने लगा। नाट्यशालाओं में दर्शकों के बैठने की उचित व्यवस्था की जाती थी। यूनान के लोगों को नाटक देखने तथा पढ़ने का बहुत शौक था। वे नाटकों को देखने के लिए 30 हजार तक की संख्या में इकट्ठे हो जाते थे। उस समय नाटकों में कहानी के साथ–साथ गीतों, नाच–भाव प्रदर्शन, चुटकले तथा संवाद आदि का मिश्रण होता था। नाटक दुःखान्त तथा सुखान्त दोनों प्रकार के होते थे। आरिस्टोफनीज तथा पिण्डार प्रसिद्ध सुखान्त नाटककार थे। यूनानी नाटककारों ने अपने नाटकों द्वारा उस समय की

राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक दशा को दर्शाया। इन नाटकों के द्वारा लोगों का मनोरंजन करने के साथ–साथ शिक्षा भी दी जाती थी।

टिप्पणी

(iii) इतिहास (History)– यूनान निवासियों को इतिहास लिखने का भी बड़ा शौक था। यूनानी स्कूलों में विद्यार्थियों को इतिहास की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। हेरोडोट्स यूनान का प्रसिद्ध इतिहासकार था। उसने ईरान–यूनानी युद्ध का क्रमबद्ध इतिहास लिखा। उसने राजनीतिक इतिहास के साथ–साथ उस समय के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन का इतिहास भी लिखा। हेरोडोट्स को यूरोपीय इतिहास का पिता कहा जाता है। उसे विश्व का प्रथम इतिहासकार माना जाता है उसे पेरिक्लीज के दरबार में संरक्षण प्राप्त था। उसका ग्रन्थ हिस्टरीज अर्थात् हिस्टोरिका आज भी विश्व इतिहास में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस पुस्तक में उसने यूनान व फारस के बीच हुए युद्धों का विवरण दिया है। इस पुस्तक से राजनीतिक घटनाओं के साथ–साथ साहित्य, कला, विज्ञान, वेशभूषा, धर्म तथा प्रसाधन आदि का विवरण मिलता है।

यूनान का दूसरा प्रसिद्ध इतिहासकार थ्यूसीडाइडीज (450–400 ई.पू.) था। वह लेखक होने के साथ–साथ कुशल योद्धा एवं सेनापति भी था। उसने यूनान का क्रमवार वैज्ञानिक इतिहास लिखा। उसने पेलोपोसियन वार नामक ग्रन्थ की रचना की। उसने इस ग्रन्थ में स्पार्टा तथा ऐथेन्स के बीच हुए युद्धों का वर्णन किया है। यदि हेरोडोट्स को यूनानी इतिहास का पिता कहा जाता है तो थ्यूसीडाइडीज को यूनानी वैज्ञानिक इतिहास का पिता कहा जाता है। उसके विषय में लार्ड मैकाले ने लिखा है : "वह विश्व का सबसे महान इतिहासकार था।" इसके अतिरिक्त जेनोफन ने हिस्ट्री ऑफ दी टेन थाउजेन्ड और प्लूटार्क ने लाइव्ज ऑफ इलस्ट्रियन मेन आदि ग्रन्थों की रचना की। पोलीवियस, डियोक्नेटस, पेसिडोनियस, थियोक्रेटस, प्लीनी, हाथरिनीयस आदि इतिहासकारों ने भी अपनी पुस्तकों में यूनान के साम्राज्य की विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया है।

दर्शन (Philosophy)

यूनान में छठी शताब्दी ई.पू. में दर्शन के क्षेत्र में एक युग का आरंभ हुआ। इससे पहले यूनान में विश्व को ईश्वर की रचना माना जाता था परन्तु अब परिवर्तनशील विश्व की व्याख्या करने वाले नित्यवादी तथा अनित्यवादी सम्प्रदायों का उदय हुआ। इस काल में यूनान देश में अनेक विश्वप्रसिद्ध दार्शनिकों का जन्म हुआ था। यूनान के दर्शनशास्त्र को दो भागों में विभाजित किया जाता है– प्रथम सुकरात से पहले का दर्शनशास्त्र तथा दूसरा सुकरात के बाद का दर्शन शास्त्र। यूनान के महाकवि होमर तथा कवि ह्योहद इसी वर्ग के दर्शनशास्त्री थे। होमर ने यह बताया कि ईश्वर ने पृथ्वी की रचना की तथा पृथ्वी में परिवर्तन भी उसी की आज्ञानुसार होते हैं। डेमोक्रिटस ने यह तर्क दिया कि विश्व का निर्माण अणुओं से हुआ है, जो असंख्य और अविभाज्य हैं। इनके संगठन से वस्तुओं का उद्‌भव तथा विघटन से विनाश होता है। उन्होंने बताया कि मनुष्य तथा पत्थर में भेद अणुओं की संख्या तथा व्यवस्था के भेद के कारण होता है। एनेक्जेगोसस ने इन अणुओं को एक जैसा न मानकर विभिन्न प्रकार का माना है।

(i) सोफिस्टो वर्ग (Sofisto Class)– सोफिस्टो का अर्थ मेधावी या तर्क होता है। 5वीं शताब्दी में यूनान में दार्शनिक विचारों में परिवर्तन आया। एस्काइसस या

टिप्पणी

सोफोक्लीज आदि लेखकों ने एक ईश्वरवाद पर बल दिया। इन विचारकों ने अपने दर्शन में तर्क एवं स्वतंत्र चिन्तन पर अधिक जोर दिया। वे तब तक किसी वस्तु में विश्वास नहीं करते थे जब तक उसके विषय में तर्क न प्रस्तुत किए जाएं। ये सोफिस्टो दार्शनिक एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे और वाद–विवाद की शिक्षा देते थे। सोफिस्टो ईश्वर में विश्वास नहीं रखते थे। उनके अनुसार, "सब वस्तुओं का मापदण्ड मनुष्य है।" एनेक्सागोरस, जीनो, डेमोक्रिटस, प्राटोगोरस, गर्गीयस आदि विद्वान सोफिस्टो दार्शनिक थे। गर्गीयस (480 ई.पू. –395 ई.पू.) ने कहा : "इस संसार में कुछ भी व्याप्त नहीं है और अगर कुछ व्याप्त है तो इसका ज्ञान नहीं हो सकता। यदि उनका ज्ञान हो जाए तो भी हम उसको न तो व्यक्त कर सकते हैं और न ही दूसरों को बता सकते हैं।" सोफिस्टो ने यूनानी दर्शन को भौतिक एवं आध्यात्मिक जगत से खींचकर नैतिकता के द्वार तक लाकर खड़ा कर दिया, परन्तु उनके संशयवाद एवं सत्यवाद ने तत्कालीन धर्म एवं नैतिकता पर कड़ा प्रहार किया, जिससे नई समस्याएं पैदा हुईं।

(ii) सुकरात (Socrates)– सुकरात (470 ई.पू.–399 ई.पू.) पेरिक्लीज के काल का यूनान का बहुत बड़ा विचारक एवं दार्शनिक था। उसकी गणना विश्व के महान दार्शनिकों में की जाती है। उसका जन्म एक साधारण से परिवार में हुआ था। उसके पिता एक मूर्तिकार थे और मां एक दाई का कार्य करती थी। सुकरात ने ऐथेन्स की ओर से अनेक युद्धों में भाग लिया। उसके शिष्यों में प्लेटो तथा एललिबियाडिज प्रमुख थे। उसने बताया कि मनुष्य को अपनी आत्मा की आज्ञा के अनुसार ही कार्य करने चाहिए। उसका विचार था यदि मनुष्य अपना आचरण ठीक रखता है तो उसे अपने आप सुख का मार्ग प्राप्त हो जाता है। सुकरात ने मानव को नैतिक, सत्य, आदर, सुन्दरता आदि के विषय में बताया। राजनीति के विषय में वह मौन रहता था। वह वस्तुओं के मूल्य का पता लगाने के लिए तर्क का सहारा लेता था। उसने कहा कि ईश्वर के बारे में वाद–विवाद करने की बजाय मनुष्य को अपनी अज्ञानता जानने का प्रयास करना चाहिए। वह सत्य को जानने के लिए तर्क पर अधिक बल देता था। उसने प्रजातंत्र को भूखों की सरकार माना। उसने बताया कि लाटरी के माध्यम से चुने अधिकारी उचित प्रशासन नहीं दे सकते बल्कि प्रशिक्षित अधिकारी यह कार्य अच्छे ढंग से कर सकते हैं। सुकरात ने इस प्रकार दर्शन में एक नयी परंपरा की शुरुआत की। वे बाजारों में घूम–घूमकर लोगों को शिक्षा देते थे। उसकी शिक्षाओं में 'अपने को पहचानो' प्रसिद्ध है। विरोधी उसकी प्रसिद्धि को नहीं देख सके इसलिए उस पर पथभ्रष्ट होने तथा देशद्रोही होने का आरोप लगाया गया। अन्त में उस पर मुकदमा चलाया गया। मुकदमे के फैसले के अनुसार उसे मृत्यु–दण्ड दिया गया। उस समय सुकरात ने कहा था, "अपने ही ढंग से किसी बात को कहकर मृत्यु का आलिंगन अधिक श्रेष्ठ है, बजाय इसके कि मैं तुम्हारी बात को कहकर जीवित रहूं।" सुकरात को आधुनिक तर्कशास्त्र का पिता माना जाता है। उसके विषय में इतिहासकार एच.जी. वेल्स ने ठीक ही लिखा है : "ऐथेन्स में प्रजातंत्र ने सबसे पृणित जो कार्य किया वह सुकरात को प्राण–दण्ड देना था। यह दण्ड अपने उद्देश्य की प्राप्ति में पूर्णतः असफल रहा।"

टिप्पणी

(iii) प्लेटो (Plato)– चौथी सदी ई.पू. में प्लेटो यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक था। वह सुकरात का शिष्य था। 20 वर्ष की आयु में वह सुकरात के सम्पर्क में आया था। उसका असली नाम एरिस्टोक्लिज था। उसका जन्म ऐथेन्स में हुआ था। उसने डायलॉग्स (संवाद), रिपब्लिक तथा लॉज आदि पुस्तकों की रचना की। उसका विचार था जो व्यक्ति किसी के दबाव से शिक्षा प्राप्त करता है उसे शिक्षित तो कहा जा सकता है परन्तु ज्ञानी नहीं कहा जा सकता। प्लेटो ने अपनी पुस्तक रिपब्लिक में एक आदर्श राज्य की कामना की और तत्कालीन नगर–राज्य प्रणाली की आलोचना की। उसने बताया कि सभी मनुष्य उसी तरह एक–दूसरे से अलग हैं जिस प्रकार हाथ की उंगलियां समान नहीं होती। उसने प्रजातंत्र का जोरदार विरोध किया। इस विषय में उसने कहा, "इसमें समस्त वस्तुएं विस्फोट के समान होती हैं। जनता सत्ता को घृणा की दृष्टि से देखती है और वे विधि की लेशमात्र चिन्ता नहीं करते हैं। इस प्रकार की स्थिति अत्याचारी सरकार को जन्म देती है।" उसने एक ऐसे आदर्श समाज की कल्पना की जो व्यक्तिगत स्वार्थ तथा वर्ग–संघर्ष से मुक्त हो। प्लेटो को राजनीति शास्त्र का पिता कहकर पुकारा जाता है।

(iv) अरस्तू (Aristotle)– अरस्तू भी यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक था। वह 17 वर्ष की आयु में प्लेटो की अकादमी में शिक्षा ग्रहण करने के लिए आया था। वहां पर वह 20 वर्षों तक विद्यार्थी तथा शिक्षक के रूप में रहा। 336 ई.पू. में उसने ऐथेन्स लाइसिपल नामक पाठशाला खोली। उसने दर्शन, तर्कशास्त्र, विज्ञान पर अनेक पुस्तकें लिखीं। उसकी रचनाओं में पोलिटिक्स सबसे महत्त्वपूर्ण है। वह कुलीन तंत्र तथा राजतंत्र के स्थान पर वैधानिक जनतंत्र का समर्थक था। उसके अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज से बाहर वह जीवित नहीं रह सकता। उसने बताया कि वही शासन अच्छा है जिसमें कानून तथा स्वतंत्रता का संतुलन बना रहता है। वह मानता था कि मनुष्य का सही जीवन पोलिस राज्य में सम्भव है। उसने पोलिटी को सबसे उत्तम राज्य बताया। उसकी कल्पना में कुलीन तंत्र और राजतंत्र के बीच का वैधानिक जनतंत्र सबसे उत्तम राज्य था। 212 ई.पू. में उस पर मुकदमा चलाया गया और उसे मृत्यु–दण्ड दिया गया। परन्तु वह कारागार से भाग गया। वह अधिक समय तक जीवित नहीं रह सका। 212 ई.पू. में उदर का दर्द हो जाने से उसकी मृत्यु हो गई।

इन दार्शनिकों के अलावा इपीक्योरस (342 ई.पू. से 270 ई. पू.) तथा जीनो (350 ई.पू–260 ई.पू) भी यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक हुए। इनके विचारों से जनसाधारण भले ही प्रभावित नहीं हुए परन्तु वे शासक वर्ग को प्रभावित करने में अवश्य सफल हुए। उन्होंने अपनी शिक्षाएं या विचारों में मित्रता तथा सामाजिक भाईचारे की भावना पर बल दिया।

कला (Art)

यूनानी कला का उत्थान क्रीट तथा मिस्र की सभ्यताओं के प्रभाव से हुआ। यूनानी कलाकार पत्थरों को तराशकर उन्हें बहुत ही सुन्दर बनाने का प्रयास करते थे। आरम्भ में वे लकड़ी पर कलाकारी करते थे। परन्तु यूनान में सफेद संगमरमर आसानी से उपलब्ध हो जाने पर वे सफेद पत्थर पर चित्रकारी के कार्य करने लगे। जिस प्रकार

टिप्पणी

राजनीतिक क्षेत्र में यूनान को तीन चरणों से गुजरना पड़ा, उसी प्रकार यूनान की कला का विकास भी तीन चरणों में हुआ। तीन चरण इस प्रकार हैं– आर्केइक युग, हेलेनिक युग तथा हेलेनिस्टिक युग। आर्केइक युग में उनकी कला प्रारम्भिक युग में थी। हेलेनिक युग में यूनानी कला अपनी चरम सीमा पर थी तथा हेलेनिस्टिक युग में इनकी कला पर विश्व के अन्य देशों का प्रभाव स्थापित हो गया था।

स्थापत्य कला (Architecture)

यूनान में वास्तुकला का विकास मन्दिरों के निर्माण से हुआ था। आरम्भ में यूनानियों की कला बहुत भद्दी थी। इमारतों में लकड़ी का प्रयोग अत्यधिक होता था। परन्तु राजा परीक्लीज के काल में भवनों में सफेद संगमरमर का प्रयोग अत्यधिक मात्रा में किया जाने लगा। उसके काल में यूनान में अनेक मन्दिरों का निर्माण हुआ, जिनमें विभिन्न देवी–देवताओं की मूर्तियां स्थापित की गईं। मन्दिर स्तम्भों के ऊपर बनाए जाते थे। अधिकतर मन्दिर देवी–देवताओं की स्मृति में बनाए गए थे। यूनान में भवन निर्माण की तीन कला शैलियां– डोरिक, आयोनियन तथा कोरिन्थ प्रचलित थीं।

(i) डोरिक शैली (Doric Style)– डोरिक कला शैली का सबसे उत्तम नमूना हमें पार्थेनन मन्दिर में देखने को मिलता है। यह मंदिर एक्रोपोलिस पर्वत पर स्थित था। यह एथेंस की देवी एथेना का मंदिर था। इसका निर्माण 581 ई.पू. में कोरिन्थ नगर में किया गया था। यह मन्दिर ठोस स्तम्भों पर बनाया गया था। इसके स्तम्भ 34 फुट ऊंचे हैं जो नीचे से मोटे तथा ऊपर की ओर पतले बने हुए हैं। इसमें कुल 46 स्तम्भ हैं। इस आयताकार मन्दिर की लम्बाई 229 फीट, चौड़ाई 100 फीट है। इसमें अन्दर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं। सीढ़ियों के बीच की दूरी 20 इंच है। इस मन्दिर की छत स्तम्भों पर टिकी हुई है। इन स्तम्भों की नीचे की मोटाई 6 फुट 4 इंच तथा ऊपर की 4 फुट 10 इंच है। फिडीयस नामक कलाकार ने इस मन्दिर की दीवारों को सुन्दर चित्रों से अलंकृत किया। इसमें एक स्थान पर ऐथना देवी के जन्मदिन का समारोह दिखाया गया है और दूसरे स्थान पर युद्ध का चित्र चित्रित किया गया है। इस मन्दिर में 42 फुट ऊंची ऐथना देवी की मूर्ति स्थापित की गई थी। यह मन्दिर परीक्लीज के काल में निर्मित किया गया था। ऐथना देवी की मूर्ति को फिडीयस नामक मूर्तिकार ने बनाया था। आज यह मन्दिर खण्डहरों में देखने को मिलता है। परन्तु इन खण्डहरों को देखकर उस समय की सुन्दर कला का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। एलिस व जॉन ने लिखा है कि "पार्थेनान का मंदिर उस समय की स्थापत्य कला का शानदार नमूना है और विश्व की सबसे प्रसिद्ध इमारत है।"

(ii) आयोनियन शैली (Ionian Style)– दूसरी शैली आयोनिक या आयोनियन वास्तु कला शैली थी। इस शैली के आधार पर बने मन्दिर अधिक कलात्मक होते थे। ये मन्दिर पतली मीनारों से सजाए जाते थे। ईरकथियम का मन्दिर आयोनिक भवन निर्माण कला शैली का उत्तम नमूना माना जाता है। यह मन्दिर पार्थेनन मन्दिर के समीप बना हुआ है। इसके उच्च भाग में ऐथेना देवी का मन्दिर है। परन्तु अलेक्जेण्डर के समय धार्मिक इमारतों का बनना कम हो गया

था और इनके स्थान पर संग्रहालय, नाचघर, मकान, स्नानागार, नाट्य मन्दिर, क्रीड़ा भवन आदि बनाने पर जोर दिया जाने लगा।

(iii) कोरिन्थ शैली (Corinth Style)– तीसरी शैली कोरिन्थ शैली थी। इसका जन्म कोरिन्थ में हुआ था। कोरिन्थ शैली का उत्तम नमूना ऐथेन्स का चौरागण पर्वत है, जिसे लिसिक्रटस का स्मारक भी कहा जाता है। इसका निर्माण 330 ई. पू. में कराया गया था। इनके अतिरिक्त यूनान में विजय मन्दिर, डायना मन्दिर तथा थीसियस मन्दिर स्थापत्य कला की दृष्टि से उत्तम माने जाते हैं।

हेलेनिस्टिक युग में यूनान के लोगों के जीवन में काफी भव्यता आई। इस युग में भवनों के स्थान पर संग्रहालय, व्यायामशालाएं, मकान, क्रीड़ा भवन आदि बनाए गए, जिनकी दीवारों पर बढ़िया पलस्तर चढ़ाए जाते थे तथा चित्र बनाए जाते थे। इस युग में अनेक नगर भी बसाए गए, जिनमें प्राइन, परगामम, सिकंदरिया आदि प्रसिद्ध नगर थे। इस युग में बड़े–बड़े भवन भी बनाए जाते थे। इन भवनों में फर्शों पर सुन्दर कलाकारी की जाती थी। उनमें सफेद तथा काले पत्थरों का प्रयोग किया जाता था। भवनों पर स्तम्भों को बढ़िया तरह से अलंकृत किया जाता था।

मूर्तिकला (Sculpture)

लौह युग में यूनान में मूर्तिकला का भी बहुत विकास हुआ। यूनान के कलाकार कांसे, लकड़ी, सफेद पत्थर, हाथी दांत की सुन्दर मूतियां बनाते थे। वे मानव को एक मूर्ति मानते थे, जिसका निर्माण प्रकृति ने किया है। इसलिए वे अपनी मूर्तियों को सुन्दर तथा सुडौल बनाते थे। वे मानते थे कि मनुष्य तथा देवताओं के शरीर में केवल सुन्दरता का ही अन्तर है। उस समय देवी–देवताओं, मनुष्यों, नेताओं तथा पशु–पक्षियों की मूर्तियां भारी संख्या में बनाई जाती थीं। भवन निर्माण कला की तरह मूर्तिकला को भी हम तीन कालों– आर्केइक, हेलेनिक तथा हेलेनिस्टिक काल में बांटते हैं।

(i) आर्केइक युग (Archaic Age): इस युग में मूर्तियां कठोर तथा भोंडी बनाई जाती थीं। इनमें वास्तविकता की जगह कृत्रिम मुस्कान होती थी। इस काल की मूर्तियों में देवताओं की पूजा करती स्त्रियों की मूर्तियां काफी मात्रा में मिलती हैं। इस काल की मूर्तियों में डेफली नगर में एक रथवान की मूर्ति प्रसिद्ध है, जो मूर्तिकला की दृष्टि से उत्तम है। इसमें सारथी को लगाम पकड़े हुए दिखाया गया है। यह मूर्ति कांसे की बनी हुई है। इसके अतिरिक्त मूर्तियां पत्थर की भी बनाई जाती थीं। उनपर सुन्दरता लाने के लिए रंगों का प्रयोग किया जाता था।

(ii) हेलेनिक युग (Hellenic Age): इस युग में मूर्तिकला अपने विकास की चरम सीमा पर पहुंच गई थी। फिडीयस उस समय का प्रसिद्ध मूर्तिकार था। फिडीयस ने ऐथना देवी की मूर्ति का निर्माण किया। यह मूर्ति 42 फीट ऊंची है। इसके अतिरिक्त उसने थेसीयस की मूर्ति बनाई, जो नग्न अवस्था में आधी खड़ी हुई तथा आधी लेटी हुई है। माइनर ने भी ऐथना तथा मरगियस देवी की मूर्तियों का निर्माण किया जो कला की दृष्टि से श्रेष्ठ मानी जाती हैं। इसके अतिरिक्त उस काल में पुरुष, जंगली पशुओं तथा पक्षियों की भी मूर्तियां बनाई गईं। पोलीकिलटस नामक मूर्तिकार ने खिलाड़ियों की कांसे की मूर्तियां बनाईं। इसी प्रकार मायरिन नामक मूर्तिकार ने डिस्कस फेंकते खिलाड़ी की बहुत ही सुन्दर मूर्ति का निर्माण किया। इन मूर्तियों में सजीवता तथा सौन्दर्यता देखने को मिलती थी।

टिप्पणी

(iii) हेलेनिस्टिक युग (Hellenistic Age): इस युग में मूर्तिकला के क्षेत्र में बहुत परिवर्तन हुए। इस युग में व्यक्तिवाद की जगह प्रकृतिवाद को मूर्तिकला की विषय–वस्तु बनाया गया। इस काल में दैनिक जीवन को दर्शाने वाली मूर्तियां जैसे बच्चे, शराबी, मरते हुए सैनिक तथा लिएकोएन की मृत्यु की मूर्ति आदि बनाई गई। डाई–गगाल नामक मूर्ति में दुःख तथा विलाप प्रदर्शित किया गया है। इसी प्रकार जोकून नामक मूर्ति में अपोलो देवता के भक्त तथा दो पुत्रों पर सर्प द्वारा आक्रमण करते दिखाया गया है। सिकन्दर के काल में इस तरह की अनेक मूर्तियां देखने को मिलती हैं जो कला की दृष्टि से उत्तम कही जा सकती हैं।

चित्रकला (Painting)

यूनान में चित्रकला का विकास ज्यादा नहीं हो सका था। आरम्भ में यूनानी फूलदानों पर चित्रकारी करते थे। इसके अलावा यूनान में कलशों, सुराहियों, शराबदानों, हांडियों पर भी चित्र बनाए जाते थे। प्रसिद्ध चित्रकार डूयरिस ने होमर की कथा तथा आइजक एवं ऑडियस युद्धों का चित्रण किया है। चित्रकला के क्षेत्र में भी पेरिक्लीज के काल में काफी प्रगति हुई। इस काल में यूनानी चित्रकला की तीन शैलियां विकसित हुईं। ये थीं– फ्रेस्को– इस शैली में चित्रकार भित्ती के ताजे प्लास्टर पर चित्र बनाते थे। दूसरी– टेम्परा शैली– इसमें रंगों में अंडे की सफेदी मिलाकर गीले कपड़े अथवा बोर्ड पर चित्र बनाए जाते थे। तीसरी– एनाकास्टिक शैली– इसमें रंगों को मोम में मिलाकर प्रयोग किया जाता था। पेरिक्लीज के समय के चित्रकारों ने चित्र बनाने में टेम्परा शैली का सबसे अधिक प्रयोग किया। इस कला का पर्याप्त विकास 490 ई.पू. तक हो गया था तथा इसे पीथियन व इस्थमियन प्रतियोगिताओं में स्थान दिया जाने लगा था। इस काल के प्रसिद्ध चित्रकारों में पोलिग्नोटस, ज्यूक्सिज तथा परसियस के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। पोलिग्नोटस ने ट्राय का ध्वंस तथा ओडेसियस के सुन्दर चित्र बनाए। उसने डेल्फी के मंदिर में भी सुन्दर चित्रों का निर्माण किया। ज्यूक्सिज का बनाया गया धावक का चित्र बड़ा ही सजीव है। इस चित्र में उसने धावक के शरीर पर पसीने की बूंदें इस प्रकार दिखाई हैं जैसे अभी गिरने वाली हों। उसके द्वारा बनाए गए पांच रमणियों के नग्न चित्र तथा हेलन का चित्र भी उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार चित्रकार परसियस द्वारा बनाया गया दुःखी मनुष्य का यथार्थ चित्र भी अत्यधिक महत्त्व का है। पेरिक्लीज युग के चित्रों के बारे में राबिन्सन ने लिखा है कि "विश्व में इतनी कलात्मक चित्रकारी न देखी गई तथा न देखी जाएगी।"

सिकन्दर के समय ऐपिलस नामक चित्रकार ने एक चित्र शिक्षा विद्यालय का बनाया था। उसके द्वारा बनाए गए चित्रों में सरलता, रेखाओं की कोमलता तथा शेड (छायाकरण) आदि पाया जाता था। सिकन्दर के काल में चित्रकार लकड़ी, पत्थर तथा हाथी दांत तथा दीवारों पर चित्रकारी करने लगे थे।

संगीत कला (Art of Music)

संगीत का भी यूनान में बहुत विकास हुआ। यूनानी लोग संगीत के बिना मनुष्य को अशिक्षित मानते थे। लौह काल में यूनान में सामूहिक गानों का भी प्रचलन हो चुका था। ओलम्पिक खेलों, उत्सवों, मन्दिरों आदि में गीत, संगीत तथा नृत्य को प्रमुख स्थान दिया जाता था। यूनान में वाद्य तथा तालों का भी आविष्कार हो चुका था। यूनानी लोग सितार तथा बांसुरी बखूबी बजाते थे। यूनान निवासी संगीत में पहले तीन तारों की

यन्त्री तथा बाद में सात तारों की यन्त्री का प्रयोग करने लगे। आरॅफियस, एलिम तथा पाइथागोरस उस समय के प्रसिद्ध संगीतकार थे।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

5. यूनानी लिपि में कितने व्यंजन थे?

   (क) 25 (ख) 24

   (ग) 23 (घ) 22

6. किसको यूरोपीय इतिहास का पिता कहा जाता है?

   (क) हिरोडोट्स (ख) पोलीवियस

   (ग) पेसिडोनियस (घ) प्लीनी

3.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (घ)
2. (क)
3. (ग)
4. (ख)
5. (घ)
6. (क)

3.6 सारांश

यूनान के राजनीतिक सिद्धान्त एवं आदर्श यूरोप की बहुमूल्य देन माने जाते हैं। प्राचीन यूनान में जिस सभ्यता का विकास हुआ उसके अनेक तत्व रोम के लोगों ने भी अपनाए। कटे–फटे किनारों ने जहां यूनान को महत्त्वपूर्ण बंदरगाहें उपलब्ध करवाईं वहीं पहाड़ों व घाटियों ने यूनान वालों को आपस में ही विभाजित कर दिया। इस कारण यहां बड़े–बड़े राज्यों की स्थापना नहीं हो सकी तथा छोटे–छोटे नगर राज्यों या गणराज्यों का विकास हुआ जिनमें आपस में ईर्ष्या व प्रतिद्वंद्विता रहती थी। इन छोटे–छोटे नगर राज्यों में स्वस्थ एवं जागरूक राजनीतिक जीवन का विकास हुआ।

राजनीति के क्षेत्र में प्राचीन यूनान की सर्वश्रेष्ठ देन उसकी संवैधानिक और लोकतंत्रात्मक पद्धति है। अनेक यूरोपीय राजनीतिक सिद्धान्तों का जन्म यूनान में ही हुआ था। अन्य इतिहासकार भी यह मानते हैं कि राजनीतिक विज्ञान का जन्म भी यूनान में ही हुआ था। राजनीति के शब्दों जैसे पोलीटिक्स तथा डेमोक्रेसी की उत्पत्ति यूनानी शब्द पोलिस तथा डेमोस से हुई थी।

लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का जन्मस्थान ऐथेन्स ही रहा है। विश्व सभ्यता में जनतंत्र का विकास प्राचीन यूनानी सभ्यता की महत्त्वपूर्ण देन मानी जाती है। ऐथेन्स में जनतंत्र का क्रमिक विकास हुआ। इस संदर्भ में डभेको, सोलन, क्लैस्थनीज आदि

टिप्पणी

सांविधानिक सुधारकों का योगदान रहा। पेरीक्लीज के शासन काल में जनतंत्र का व्यावहारिक रूप देखने को मिलता है।

ऐथेन्स में इस काल में शुद्ध प्रत्यक्ष जनतंत्र प्रचलित था। प्रत्येक नागरिक को प्रशासन में भाग लेने का अधिकार था। उनकी एक समिति थी जिसको इक्लीजसिया या अगोरा कहा जाता था। ऐथेन्स के समस्त नागरिक इसके सदस्य होते थे। समिति की कार्यवाहियों में भाग लेने के लिए 18 वर्ष की आयु के साथ–साथ जन्मजात नागरिक होना अति आवश्यक था। विदेशी तथा दास को इसकी सदस्यता प्राप्त करने का अधिकार नहीं या। यह समिति कानून निर्माण, संशोधन तथा कानूनों को रद्द करने सम्बन्धी कार्य करती थी। इसकी बैठक में सभी नागरिक भाग ले सकते थे। प्रशासन सम्बन्धी सभी महत्त्वपूर्ण बातों पर नागरिकों को अपना विचार प्रकट करने की पूरी स्वतंत्रता थी।

दूसरी समिति को कार्यपालिका या बाऊल कहा जाता था। इसके सदस्यों की संख्या 500 थी। यह समिति आगे 10 समितियों में विभाजित थी। प्रत्येक समिति में 50 सदस्य होते थे। प्रत्येक दिन सभी समितियों के अध्यक्ष बदल दिए जाते थे। प्रशासन चलाने का कार्य प्रत्येक महीने एक नई समिति करती थी। इस बाऊल के सदस्यों का चुनाव जनसाधारण जनता द्वारा किया जाता था। यह कार्यपालिका, सेना, न्याय तथा आय–व्यय सम्बन्धी कार्यों की देखभाल करती थी।

तीसरी समिति स्वतंत्र न्यायपालिका थी। ऐथेन्स की न्यायपालिका में 600 निर्वाचित सदस्य थे। ये सदस्य बहुमत के आधार पर न्याय सम्बन्धी कार्य करते थे। डॉ. सिन्हा के अनुसार, "ऐथेन्स में न्याय–पद्धति का आधार भी प्रजातांत्रिक था। एक हजार या 500 पंचों की अदालत मुकद्दमों का फैसला करती थी। फैसले वोट के आधार पर किए जाते थे।" वहां पर छोटे मुकद्दमों को सुनने के लिए ज्यूरी प्रथा भी प्रचलित थी।

अनेक अच्छाइयों के बावजूद ऐथेन्स का जनतंत्र समीक्षा के परे नहीं माना जा सकता है। ऐथेन्स की सरकार को पूरी तरह से लोकतांत्रिक नहीं कहा जा सकता। यह व्यापक दृष्टिकोण से त्रुटिपूर्ण था। जनमत का सच्चा प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता था। यूनान की जनसंख्या का एक बड़ा भाग नागरिक अधिकारों से वंचित था। राज्य में गैर–नागरिकों का शोषण होता था। दासों पर जुल्म किए जाते थे। फिर भी, ऐथेन्स का प्रजातंत्र भविष्य में यूरोपीय देशों के लिए आदर्श, अनुकरणीय एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। उस समय की निर्वाचक प्रणाली की विशेषताएं, जैसे गुप्त एवं अप्रत्यक्ष मतदान चुनाव प्रणाली, आज भी विश्व के अनेक देशों में देखने को मिलती है। वास्तव में, जनतंत्र का प्रयोग विश्व–सभ्यता को यूनान की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण देन है।

राजनीतिक संगठन की दृष्टि से यूनान की कुछ अन्य कमजोरियों का उल्लेख किया जा सकता है। देश में राष्ट्रीयता की भावना का अभाव था। प्रत्येक नगर–राज्य स्वयं को अलग राष्ट्र मानते थे। हां, आक्रमणों के समय इनके बीच एकता देखने को मिलती थी किन्तु जैसे ही खतरा टलता ये सभी राज्य एक दूसरे के साथ संघर्षरत हो जाते थे। इसके बावजूद भी 'जनतांत्रिक प्रयोगों' के लिए यूनान विश्वविख्यात है।

स्पार्टा नगर–राज्य का राजनीतिक संगठन केवल थोड़े ही लोगों के हाथों में था। स्पार्टा निवासियों के भोजन का प्रबन्ध कृषक दास (हेलोट्स) करते थे। ये लोग बहुत मेहनत करते थे। लेकिन इनकी स्थिति बहुत दयनीय थी।

टिप्पणी

स्पार्टा में शासन की रूपरेखा द्वि–राजतंत्रात्मक थी। राजा राज्य का मुखिया कहलाता था। स्पार्टा राज्य में एक साथ दो राजा नियुक्त किए जाते थे। वे दोनों एक–दूसरे के कार्यों पर निगरानी रखकर एक–दूसरे को निरंकुश होने से बचाते थे। एक राजा का सम्बन्ध अगदी तथा दूसरे का दक्षिणी लकोनिया के यूरीपोण्टीडी जाति से था। इन्हीं जातियों ने स्पार्टा का विकास किया। राजा के पद वंशानुगत होते थे। ये राज्य के प्रधान पुजारी तथा सेना के प्रधान सेनापति भी होते थे। ये दोनों जेरूसिया अर्थात् सीनेट की सहायता से कार्य करते थे।

राजा की सहायता के लिए एक सीनेट होती थी, जिसे जेरुसिया कहा जाता था। जेरुसिया में 28 सदस्य होते थे। जेरुसिया के सदस्य अपीला (असेम्बली) द्वारा चुने जाते थे। 60 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्ति इसके आजीवन सदस्य होते थे। इसकी चुनाव प्रक्रिया विचित्र थी। पद खाली होने पर प्रत्याशियों को अपीला के समक्ष एक–एक करके बुलाया जाता था। जिस प्रत्याशी का ऊंची आवाज में स्वागत होता था उसे निर्वाचित घोषित कर दिया जाता था।

असेम्बली या समिति को अपीला कहा जाता था। 30 वर्ष की आयु वाला प्रत्येक नागरिक इसका सदस्य होता था। अपीला के सदस्यों की संख्या 8000 के लगभग थी। अपीला जेरुसिया के सदस्यों का चुनाव करती थी। अपीला ही जेरुसिया द्वारा पारित प्रस्तावों को पारित करती थी। आरम्भ में राजा इसका अध्यक्ष होता था परन्तु बाद में एफर्स का सदस्य इसका अध्यक्ष होने लगा।

पांच चुने हुए डायरेक्टर (मजिस्ट्रेट) होते थे। इन्हें एफर्स कहा जाता था। एफर्स के अधिकार बहुत व्यापक थे। 556 ई. पू. में इनकी शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई और ये निरंकुश बन गए। इनका चुनाव एक वर्ष के लिए होता था। ये लोग राजाओं को भी बन्दी बनाकर उन पर मुकदमा तक चला सकते थे।

यूनान में छठी शताब्दी के आस–पास अनेक स्वतंत्र नगर राज्यों की स्थापना हुई थी। उनमें से स्पार्टा और ऐथेन्स के नगर राज्य प्रमुख थे।

स्पार्टा तथा ऐथेन्स के बीच 431 ई.पू. से 404 ई.पू. के मध्य एक लम्बा संघर्ष चला जिसे विश्व के इतिहास में पेलोपोनिशियन युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध के परिणामस्वरूप ही ऐथेन्स का पतन हुआ था।

लौहकालीन यूनानी समाज मुख्यतः दो वर्गों अर्थात्– नागरिक तथा गैर–नागरिक में बंटा हुआ था। डॉ. के.सी. श्रीवास्तव ने लिखा है : "प्राचीन सभ्यताओं के सामाजिक ढांचे के विपरीत यूनानी सभ्यता में समाज का वर्गीकरण धन के आधार पर न होकर सभा एवं समिति के आधार पर किया जाता था। वर्ग में केवल शासक एवं उसके परिवार के सदस्य आते थे जो राजमहल में रहा करते थे। समाज में उच्च स्थान प्राप्त होते हुए भी इस वर्ग के मानव सबके साथ समानता का व्यवहार करते थे, क्योंकि जिस प्रकार शासक को शासन सम्बन्धी अधिकार प्राप्त थे उसी प्रकार प्रजा को भी प्रशासन में भाग लेने सम्बन्धी अधिकार प्राप्त थे। दूसरा वर्ग अन्य प्राचीन सभ्यताओं के समान मध्य वर्ग था। इस वर्ग में सैनिक, व्यापारी आदि आते थे। मध्यम वर्ग के लोगों का जीवन उच्च तथा शासक वर्ग से निम्न स्तर का था।"

लौहकालीन यूनानी समाज पुरुष प्रधान था। प्राचीन यूनान में स्त्रियों की दशा संतोषजनक नहीं थी। यूनान में बहु–विवाह तथा रखैल की प्रथा जोरों पर प्रचलित थी।

स्त्रियों को दासों की तरह खरीदा और बेचा जाता था। ट्रोजन युद्ध में नगरवासियों ने अपने शासक को तीन स्त्रियां प्रदान की थीं। यूनान की स्त्रियां घर का सारा कार्य सम्पन्न करती थीं। वहां पर स्त्री–शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था।

टिप्पणी

लौहकालीन यूनानियों के जीवन में धर्म का बहुत महत्व था। उन्हें अपने देवी–देवताओं में बहुत विश्वास था। वे बहुदेववादी और मूर्तिपूजक थे। उनका यह मानना था कि देवताओं के नाराज होने पर ही मनुष्य को कष्ट झेलने पड़ते हैं अर्थात् उन पर विपत्तियां आती हैं। उनका विश्वास था कि यदि मनुष्य देवताओं की स्तुति करेंगे तो वे उनके सारे दुःखों को दूर कर देंगे। यूनानी बचपन से ही अपने बच्चों को देवताओं की उपासना करने की शिक्षा प्रदान करते थे। उनका विश्वास था : "देवता का शरीर भी मनुष्य की तरह होता है परन्तु वह मनुष्य से अधिक शक्तिशाली, सुन्दर तथा अमर होता है।"

यूनान को व्यापक रूप से पश्चिमी संस्कृति का पालना माना जाता है। यूनानियों ने शिक्षा, साहित्य, वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला और संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यूनानियों को उनकी परिष्कृत मूर्तिकला और वास्तुकला के लिए जाना जाता था। यूनानी संस्कृति ने रोमन साम्राज्य और कई अन्य सभ्यताओं को प्रभावित किया, और यह आज भी आधुनिक संस्कृतियों को प्रभावित करता है।

यूनान में छठी शताब्दी ई.पू. में दर्शन के क्षेत्र में एक युग का आरंभ हुआ। इससे पहले यूनान में विश्व को ईश्वर की रचना माना जाता था परन्तु अब परिवर्तनशील विश्व की व्याख्या करने वाले नित्यवादी तथा अनित्यवादी सम्प्रदायों का उदय हुआ। इस काल में यूनान देश में अनेक विश्व प्रसिद्ध दार्शनिकों का जन्म हुआ था। यूनान के दर्शनशास्त्र को दो भागों में विभाजित किया जाता है– प्रथम सुकरात से पहले का दर्शनशास्त्र तथा दूसरा सुकरात के बाद का दर्शन शास्त्र। यूनान के महाकवि होमर तथा कवि ह्योहद इसी वर्ग के दर्शनशास्त्री थे। होमर ने यह बताया कि ईश्वर ने पृथ्वी की रचना की तथा पृथ्वी में परिवर्तन भी उसी की आज्ञानुसार होते हैं। डेमोक्रिटस ने यह तर्क दिया कि विश्व का निर्माण अणुओं से हुआ है, जो असंख्य और अविभाज्य हैं।

लौह युग में यूनान में मूर्तिकला का भी बहुत विकास हुआ। यूनान के कलाकार कांसे, लकड़ी, सफेद पत्थर, हाथी दांत की सुन्दर मूर्तियां बनाते थे। वे मानव को एक मूर्ति मानते थे, जिसका निर्माण प्रकृति ने किया है। इसलिए वे अपनी मूर्तियों को सुन्दर तथा सुडौल बनाते थे। वे मानते थे कि मनुष्य तथा देवताओं के शरीर में केवल सुन्दरता का ही अन्तर है। उस समय देवी–देवताओं, मनुष्यों, नेताओं तथा पशु–पक्षियों की मूर्तियां भारी संख्या में बनाई जाती थीं।

3.7 मुख्य शब्दावली

- **एक्रोपोलिस** : एक्रोपोलिस एक बड़े शहर के भीतर दुर्ग है। यह आमतौर पर एक पहाड़ी की चोटी पर और शहर के केंद्र में स्थित है। सबसे प्रसिद्ध एक्रोपोलिस ऐथेन्स का एक्रोपोलिस है।

टिप्पणी

- **लोकतंत्र** : एक ऐसी शासन प्रणाली है, जिसके अंतर्गत जनता अपनी मर्जी से चुनाव में आए हुए किसी भी दल को वोट देकर अपना प्रतिनिधि चुन सकती है तथा उसकी सत्ता बना सकती है।
- **पोलिस** : एक नगर–राज्य के लिए यूनानी नाम।
- **डेलियन लीग** : यूनानी नगर–राज्यों का एक समूह जो फारसी साम्राज्य के खिलाफ लड़ने के लिए एक साथ मिला।
- **आर्कन** : प्राचीन यूनान में विभिन्न नगर–राज्यों में मुख्य मजिस्ट्रेट को आर्कन कहा जाता था।
- **एथेंस** : सबसे शक्तिशाली यूनानी नगर–राज्यों में से एक, एथेंस लोकतंत्र का जन्मस्थान था।
- **स्पार्टा** : एक शक्तिशाली यूनानी नगर–राज्य और एथेंस का प्रतिद्वंद्वी, स्पार्टा की संस्कृति युद्ध के इर्द–गिर्द और युद्ध की तैयारी पर आधारित थी।
- **नागरिक** : 18 वर्ष से अधिक आयु का "स्वतंत्र" पुरुष, जो उस नगर–राज्य में पैदा हुआ था।
- **पेरियोकाई** : स्पार्टा में एक वर्ग के लोग जो स्वतंत्र थे, लेकिन उनके पास कोई वोट नहीं था। इसमें किसान और कारीगर शामिल थे।
- **ट्रोजन युद्ध** : यह युद्ध यूनानियों और ट्रॉय के लोगों के बीच लड़ा गया था।
- **क्रीट** : यूनान के दक्षिण–पूर्व में पूर्वी भूमध्य सागर में एक यूनानी द्वीप।
- **बीजगणित** : बीजगणित से साधारणतः तात्पर्य उस विज्ञान से होता है, जिसमें संख्याओं को अक्षरों द्वारा निरूपित किया जाता है।
- **रेखागणित** : रेखागणित या ज्यामिति गणित विषय की तीन विशाल शाखाओं में से एक है। इसके अंतर्गत बिन्दुओं, रेखाओं, तलों और ठोस चीजों के गुण तथा इसके स्वभाव, मापन और अन्तरिक्ष में उनकी सापेक्षिक स्थिति के बारे में अध्ययन किया जाता है।
- **व्यंजन** : व्यंजन वे वर्ण हैं जिनका उच्चारण बिना स्वर की सहायता के सम्भव नही है अर्थात जिनको स्वर की सहायता से बोला जाता है, व्यंजन कहलाते हैं।
- **महाकाव्य** : वृहद् आकार की तथा किसी महान कार्य का वर्णन करने वाली काव्य रचना को महाकाव्य कहते हैं।
- **दार्शनिक** : जो दर्शन पर मनन करे उसे दार्शनिक कहते हैं।

3.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. ऐथेन्स के लोकतंत्र के प्रमुख अंगों का परिचय दीजिए।
2. लौहकालीन यूनानी समाज के वर्गों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

टिप्पणी

3. यूनान में ज्योतिष और भूगोल के विकास पर प्रकाश डालिए।
4. यूनान के दार्शनिकों की विचारधारा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
5. निम्न पर संक्षिप्त नोट लिखिए–
   (क) महिलाओं की स्थिति
   (ख) धार्मिक स्थिति
   (ग) स्थापत्य कला

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. लौहकालीन यूनान के राजनीतिक संगठन पर प्रकाश डालिए।
2. लौहकालीन यूनान की सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. लौह कालीन यूनान में शिक्षा, साहित्य, कला तथा विज्ञान के विकास का वर्णन कीजिए।
4. लौह कालीन यूनान की विश्व को देन बताइए।
5. संस्कृति के क्षेत्र में लौह कालीन यूनान के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

3.9 सहायक पाठ्य सामग्री

1. डॉ. शान्तिलाल नागौरी, 1982, "विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास", बाफना बुक डिपो, जयपुर
2. राजेश्वर प्रसाद, नारायण सिंह, 1982, "मध्य–पूर्व की प्राचीन जातियां और सभ्यताएं" भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ।
3. अमार फारूकी, 2001, "अर्ली सोशियल फॉर्मेशन्स", द्वितीय संस्करण, मानक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4. श्रीराम गोयल, 1955, "विश्व की प्राचीन सभ्यताएं", विश्वविद्यालय प्रकाशन
5. उपेंद्र नारायण मुखर्जी, "विश्व सभ्यता का इतिहास", प्रकाशन केंद्र
6. मार्टिन आर. फिलिप्स, 2015, "एनशिएंट सिविलाइजेशन्स" क्रिएट स्पेस इंडिपेनडेंट पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म।
7. बी. गॉर्डन चाइल्ड, 1942, "वॉट हैपन्ड इन हिस्ट्री", हरामण्डसवर्थ।
8. लूविस रिचर्ड फारनैल, 2013, "ग्रीस एंड बेबीलोन", बुक ऑन डिमाण्ड लिमिटिड।
9. एडकिंस,लेस्ली एंड रॉय, 1998, "प्राचीन रोम में जीवन के लिए हैंडबुक" ऑक्सफोर्ड ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
10. मार्टिन आर. फिलिप्स, 2015, "एनशिएंट सिविलाइजेशन्स" क्रिएट स्पेस इंडिपेनडेंट पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म।

इकाई 4 प्राचीन रोम की सभ्यता

टिप्पणी

संरचना

4.0 परिचय
4.1 उद्देश्य
4.2 प्राचीन रोम की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास
  4.2.1 राज्य संरचना
  4.2.2 रोम का राजनीतिक इतिहास
4.3 प्राचीन रोम की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां
  4.3.1 सामाजिक स्थिति
  4.3.2 आर्थिक स्थिति
  4.3.3 धार्मिक स्थिति
4.4 प्राचीन रोम में विज्ञान एवं संस्कृति
  4.4.1 विज्ञान
  4.4.2 संस्कृति
4.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
4.6 सारांश
4.7 मुख्य शब्दावली
4.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
4.9 सहायक पाठ्य सामग्री

4.0 परिचय

रोमन साम्राज्य की राजनीतिक संरचना में सम्राट, सीनेट (जिसमें अभिजात्य वर्ग का प्रभाव रहता था) तथा सेना प्रमुख तत्व थे। साम्राज्य के राजनीतिक इतिहास में ये तीन मुख्य खिलाड़ी थे। अलग–अलग सम्राटों की सफलता इस बात पर निर्भर करती थी कि वे सेना पर कितना नियंत्रण रख पाते हैं और जब सेनाएं विभाजित हो जाती थीं तो इसका परिणाम सामान्यतः गृहयुद्ध होता था।

प्राचीन रोम की अर्थव्यवस्था आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में कभी भी बहुत जटिल रूप में विकसित नहीं हुई थी। प्राचीन रोम एक कृषि और दास आधारित अर्थव्यवस्था थी। इसका मुख्य उद्देश्य भूमध्यसागरीय क्षेत्र को आबाद करने वाले नागरिकों और सेनापतियों की बड़ी संख्या का पेट भरना था। कृषि और व्यापार रोमन आर्थिक भाग्य पर हावी थे, केवल छोटे पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन द्वारा पूर्ति की जाती थी।

लौहकालीन रोमन साम्राज्य ने विज्ञान के क्षेत्र में विशेष प्रगति नहीं की। अपने उद्देश्यों के लिए पहले उन्होंने यूनानी विज्ञान को आत्मसात किया, मूल्यांकन किया और फिर स्वीकार किया या अस्वीकार किया जो कि सबसे उपयोगी था, जितना कि उन्होंने अन्य क्षेत्रों जैसे युद्ध, कला और थिएटर में किया था।

प्रस्तुत इकाई में हम प्राचीन रोम की राज्य संरचना, राजनीतिक इतिहास, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्थितियों तथा विज्ञान एवं संस्कृति का अध्ययन करेंगे।

टिप्पणी

4.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- रोमन साम्राज्य की राजनीतिक संरचना का वर्णन कर पाएंगे;
- रोमन साम्राज्य के राजनीतिक इतिहास का अध्ययन कर पाएंगे;
- प्राचीन रोम की सामाजिक स्थिति को समझने में सक्षम हो पाएंगे;
- प्राचीन रोम की आर्थिक स्थिति को समझ पाएंगे;
- प्राचीन रोम में धर्म के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण कर पाएंगे;
- लौहकालीन रोमन साम्राज्य में विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति का अध्ययन कर पाएंगे;
- रोमन साम्राज्य के सांस्कृतिक जीवन से अवगत हो पाएंगे।

4.2 प्राचीन रोम की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास

753 ई.पू. में रोम नगर की स्थापना हुई। शीघ्र ही रोम नगर ने एक विशाल साम्राज्य का रूप धारण कर लिया। आरम्भ में रोम में राजतंत्र प्रचलित था। उसके बाद क्रमशः गणतंत्र तथा साम्राज्य काल की स्थापना हुई। रोम की राज्य संरचना इस प्रकार थी–

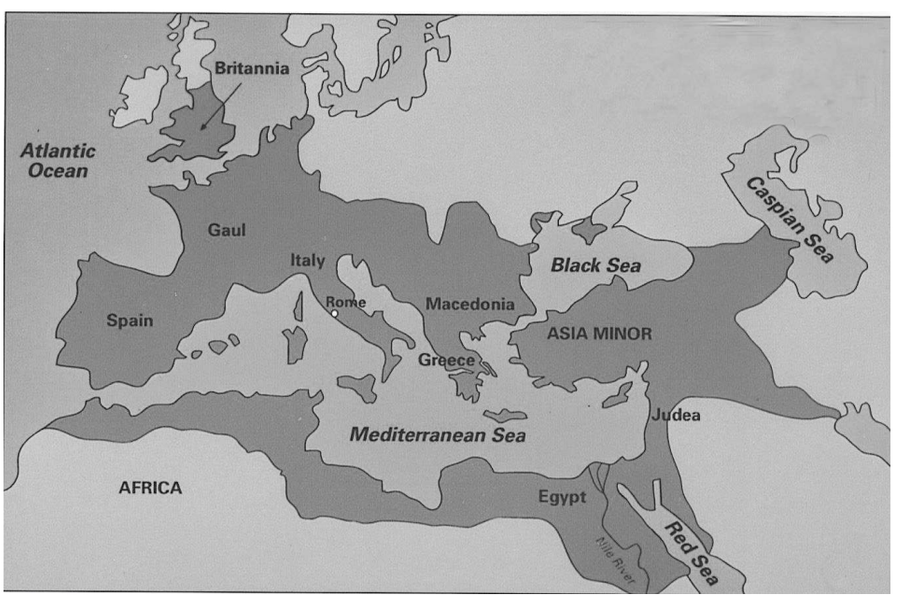

4.2.1 राज्य संरचना (State Structure)

रोम की राज्य संरचना को इस प्रकार समझा जा सकता है–

(i) कॉन्सुल (Consul)– रोम में कार्यपालिका को कॉन्सुल कहा जाता था। इसके सदस्यों की संख्या दो थी, जिन्हें आमतौर पर कॉन्सुल ही कहा जाता था। कॉन्सुल का चुनाव एक नागरिक सभा द्वारा किया जाता था तथा इन्हें एक वर्ष

टिप्पणी

के लिए चुना जाता था। दोनों कॉन्सुल को रोमन प्रशासन में समान अधिकार प्राप्त थे। इस प्रकार की व्यवस्था इसलिए की गई थी ताकि कोई कॉन्सुल निरंकुश न बन सके। दोनों कॉन्सुल एक दूसरे के कार्यों पर पूरी तरह निगरानी रखते थे। संकटकालीन परिस्थितियों में इन्हें हटाकर या इनमें से एक की डिक्टेटर के रूप में 6 महीने के लिए नियुक्ति की जाती थी। कभी–कभी रोमन लोग किसी व्यक्ति को जीवन भर के लिए भी डिक्टेटर नियुक्त कर देते थे। जूलियस सीजर को आजीवन डिक्टेटर नियुक्त किया गया था। कॉन्सुल सेनापति तथा मुख्य न्यायाधीश के रूप में भी कार्य करते थे।

(ii) सभा (Assembly)– रोम के प्रशासन में एक सभा होती थी, जिसे कॉमीसिया सेंचुरियाटा कहा जाता था। यह जनसाधारण नागरिकों की सभा होती थी। अपने अधिकारों को लेकर सभा तथा सीनेट के सदस्यों के बीच में एक लम्बे समय तक संघर्ष चला। क्योंकि सीनेट में पैट्रिशियन (अमीर वर्ग) तथा सभा में प्लीबियन (जनसाधारण) लोग भाग लेते थे। इस संघर्ष में प्लीबियनों को विजय प्राप्त हुई, जिससे प्रशासनिक कार्यों में सभा के सदस्यों की भूमिका बढ़ने लगी। लेकिन रोम में सभा का महत्त्व धीरे–धीरे कम होता चला गया।

(iii) सीनेट (Senate)– रोमन साम्राज्य के प्रशासन में सीनेट एक शक्तिशाली संस्था थी। इसमें कुलीन वर्ग के लोगों का बहुमत था। परन्तु पैट्रिशियनों और प्लीबियनों के संघर्ष के पश्चात् जनसाधारण नागरिकों को भी सीनेट में भाग लेने का अधिकार मिल गया। सीनेट के सदस्य जीवन भर के लिए चुने जाते थे। इस संस्था के अधिकार बहुत विस्तृत थे। सीनेट की सहायता से कौंसिल शासन चलाते थे। सीनेट के प्रमुख कार्य– मजिस्ट्रेट की नियुक्ति करना, कानून बनाना, सन्धि–विग्रह करना, प्राण दण्ड देना, न्यायाधीशों की नियुक्ति करना आदि थे। आरम्भ में इसके सदस्यों की संख्या 380 से 500 तक थी, परन्तु जैसे–जैसे रोमन साम्राज्य का विस्तार होता गया वैसे–वैसे ही सीनेट के सदस्यों की संख्या भी बढ़ती चली गई। साम्राज्य काल में राजतंत्र की पुनःस्थापना से राजा का महत्त्व पुनः बढ़ गया जिससे सीनेट के अधिकारों में भी कुछ कमी आ गई।

(iv) राजा (King)– राजतंत्र काल में रोमन साम्राज्य का मुखिया राजा कहलाता था। रोम में राजा या सम्राट को बहुत अधिक शक्तियां प्राप्त थीं। वह सभा तथा सीनेट की सहायता से शासन चलाता था। वह देश का मुख्य प्रशासक, मुख्य सेनापति तथा मुख्य न्यायाधीश होता था। 503 ई.पू. में रोम में गणतंत्र स्थापित हुआ तथा राजा का पद समाप्त हो गया। राजा का स्थान अब सभा तथा सीनेट ने ले लिया। उस समय कौंसिल, सभा तथा सीनेट समस्त देश के प्रशासन चलाते थे। परन्तु रोम में 27 ई.पू. में दोबारा राजतंत्र की स्थापना हुई, जिससे राजा का पद पुनः प्रकाश में आ गया। इस काल में सम्राट अपनी मर्जी से शासन चलाता था। वह दैवीय शक्तियों में विश्वास रखता था। उसका प्रमुख कार्य कानून बनाना, कानूनों को लागू करना, न्याय करना, भू–राजस्व निर्धारित करना, युद्ध एवं सन्धि करना इत्यादि था। देखने में उसकी शक्तियां निरंकुश थीं, लेकिन वह प्रजा की भलाई के लिए भी कार्य करता था।

टिप्पणी

(v) अन्य अधिकारीगण (Other Officers)– साम्राज्य काल में रोम में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना हुई। जिसमें यूरोप के अनेक देश सम्मिलित थे। इतने विशाल साम्राज्य के प्रशासन को अकेला राजा या कौंसिल, सीनेट तथा सभा नहीं चला सकती थी। इसलिए रोम में समय–समय पर विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी, जिनमें प्रेटर, क्वेइस्टर, मजिस्ट्रेट, ट्रैव्यून तथा डिक्टेटर आदि सम्मिलित थे। इनकी नियुक्ति सभा और सीनेट के द्वारा की जाती थी। आपातकालीन परिस्थितियों में 6 महीने के लिए डिक्टेटर चुने जाते थे। इनके अतिरिक्त प्रान्तों तथा नगरों में भी अनेक अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी।

(vi) सैनिक संगठन (Military Organisation)– रोमन साम्राज्य में सैनिक संगठन का बहुत महत्त्व था। वास्तव में रोमन साम्राज्य सैनिक शक्ति के बल पर ही टिका हुआ था, इसलिए सभी रोमन सम्राट सैनिक शक्ति के महत्त्व को समझते थे। वे विशाल सेना की भर्ती करते थे। जूलियस सीजर के पास 1,00,000 से भी अधिक सेना थी। आगस्टस के समय सैनिकों की संख्या 3,00,000 से भी अधिक थी। उस समय सेना को विभिन्न टुकड़ियों में बांटा जाता था, जिन्हें तीजन कहा जाता था। जैसे–जैसे रोमन साम्राज्य विशाल होता चला गया वैसे–वैसे ही रोमन नागरिकों के अतिरिक्त विदेशियों की भी सेना में भर्ती की जाने लगी। परन्तु इन भाड़े के सैनिकों में राष्ट्रीयता की भावना नहीं पाई जाती थी जिसका दुष्परिणाम आगे चलकर रोमन सम्राटों को भुगतना पड़ा था।

(vii) रोमन कानून (Roman Law)– पौराणिक काल से लेकर 5वीं शताब्दी ई.पू. तक रोमन के कानून अलिखित थे। रोमन कानूनों को बताने तथा उनकी व्याख्या करने का अधिकार केवल कुलीन वर्ग के लोगों के पास था। प्राचीन काल में उच्च वर्ग के लोगों के हितों को ध्यान में रखकर कानून बनाए जाते थे। ये कानून गरीबों (प्लीबियों) पर जबरदस्ती थोपे जाते थे। अतः प्लीबियनों ने अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष आरंभ कर दिया। इसके पश्चात् तो रोम की सरकार ने 10 लोगों की एक समिति को कानूनों को लिपिबद्ध करने के काम पर लगाया। 454 ई.पू. में कानूनों को 12 लकड़ी की पट्टियों पर लिखकर नगर के चौराहे पर लटका दिया गया। ये कानून 12 तख्तियों के कानून कहलाते थे। इन नए कानूनों के अनुसार प्लीबियन तथा पैट्रिशियन के विवाह को अवैध माना गया, परन्तु जन साधारण के विरोध के कारण बाद में यह कानून भी रद्द कर दिया गया और सभी नागरिकों को समानता का अधिकार प्रदान कर दिया गया। इस प्रकार धीरे–धीरे प्लीबियनों के अधिकार बढ़ते गए। जूलियस सीजर ने भी रोमन कानूनों को एक ग्रन्थ में संगृहीत कराया। आगस्टस के काल तक कानून पर सैद्धान्तिक एवं तार्किक टीकाएं और निबन्ध लिखे जाने लगे थे। सम्राट जस्टीनियन ने अपने शासनकाल में सभी कानूनों को इकट्ठा कराकर एक संहिता तैयार कराई। इन्हें जस्टीनियन कानूनों के नाम से जाना जाता था। इस संहिता में चार विषयों– फौजदारी, दीवानी, व्यापार तथा धर्म से सम्बन्धित कानून संकलित थे।

टिप्पणी

प्राचीन काल में रोम में दो प्रकार के कानून प्रचलित थे– पहले वे कानून थे जो रोमनों पर लागू होते थे। इन्हें जुस सिविलिस कहा जाता था। दूसरे वे कानून थे जो विदेशियों तथा रोमनों पर समान रूप से लागू होते थे, उन्हें जुस जेण्टिअम् कहकर पुकारा जाता था। इन कानूनों के अनुसार न्याय का कार्य न्यायाधीश या पेंटर तथा सम्राट आदि करते थे। 300 ई. में रोम में कानूनों का सबसे व्यवस्थित संग्रह किया गया। तत्पश्चात् जस्टिनियन ने कानूनों को सुव्यवस्थित किया। आगस्टस ने प्रसिद्ध विधिवेत्ताओं के सहयोग से रोम साम्राज्य को एक निश्चित कानूनी व्यवस्था प्रदान की। उस समय रोम के सार्वजनिक कानूनों में जाति, धर्म, भाषा तथा परम्पराओं को कोई स्थान नहीं दिया जाता था। नागरिक कानूनों में रोम की सामाजिक, राष्ट्रीय परम्पराओं तथा राजनीतिक मान्यताओं को महत्त्व दिया जाता था। प्राकृतिक कानून मनुष्यों की आवश्यकताओं के अनुसार बनाए गए थे। 438 ई. में सम्राट थियोडिसियस ने सभी ईसाई सम्राटों के कानूनों को संगृहीत कराया। इन कानूनों के महत्त्व के विषय में ठीक ही लिखा गया है : "लोक–प्रचलित व्यवहार, सीनेट अथवा जनसभा द्वारा रचित कानून, सम्राटों की आज्ञाएं, प्रेटरों की विज्ञप्तियां, कानून शास्त्रियों की टीकाएं तथा निबन्ध, दार्शनिक की सैद्धान्तिक मीमांसा आदि रोमन कानून के आधार थे।"

(viii) प्रान्तीय प्रबन्ध (Provinical Administration)– रोमन सम्राटों ने अपने प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए समस्त साम्राज्य को विभिन्न प्रान्तों में बांटा हुआ था। रोम के प्रान्त दो प्रकार के थे– (क) सीमा प्रान्त तथा (ख) अन्य प्रान्त। प्रान्तों के मुखिया को गवर्नर कहा जाता था, जिसकी नियुक्ति सम्राट के द्वारा की जाती थी। गवर्नरों के प्रमुख कार्य, प्रान्त में शान्ति व्यवस्था बनाए रखना, उपद्रवों को दबाना, कानूनों का उल्लंघन करने वालों को दण्ड देना तथा युद्ध के समय एक सेनापति के रूप में कार्य करना, कृषि सुधार करना आदि था। इन अधिकारों के साथ–साथ वह प्रजा हितकारी कार्य भी करता था। वह अपने प्रत्येक कार्य के लिए केन्द्रीय सरकार के प्रति उत्तरदायी होता था। इस प्रकार प्राचीन काल में रोम में ऐसी शासन प्रणाली प्रचलित थी, जिसकी विशेषताएं किसी न किसी रूप में मध्यकाल तक विश्व के विभिन्न देशों में चलती रहीं।

4.2.2 प्राचीन रोम का राजनीतिक इतिहास

अध्ययन की सुविधा के लिए प्राचीन रोम के राजनीतिक इतिहास को तीन भागों में बांटा जाता है– राजतंत्र काल (753 ई. पू.–509 ई.पू.), गणतंत्र काल (509 ई.पू.–27 ई.पू.) तथा साम्राज्य काल (27 ई.पू.–476 ई.पू.)।

राजतंत्र काल (753 ई.पू.–509 ई.पू.) (Monarchy Age 753–509 B.C.)

रोम नगर की स्थापना टाइबर नदी के दक्षिण में एक छोटे से कस्बे के रूप में लैटिन जाति ने की। धीरे–धीरे लैटिन लोग पास की सात पहाड़ियों पर बस गए थे। इस प्रकार यह प्रदेश सात पहाड़ियों का प्रदेश कहा जाने लगा। जनश्रुतियों के अनुसार रोम नगर की स्थापना 753 ई.पू. में रोमुलस ने की तथा वही रोम का पहला शासक था। उसने सेबाइनों, अन्य नगरों के अपराधियों तथा भगौड़े दासों को रोम में शरण देकर रोम की जनसंख्या बढ़ाई। उसने सेबाइनों को रोम की जनता में शामिल किया। उसने रोम के

टिप्पणी

लोगों को दो भागों में बांट दिया– पैट्रीशियन वर्ग एवं प्लेबियन वर्ग। 'पैट्रीशियन' वर्ग में संभवतः रोम की स्थापना करने वाले लैटिन परिवार शामिल थे तथा 'प्लीबियन' वर्ग में बाहर से आकर बसे हुए गरीब लोग तथा स्वतंत्र दासों के वंशज जिन्हें 'क्लायन्ट' (आश्रित) कहा जाता था। रोमुलस ने 37 वर्ष (753 ई.पू.–716 ई.पू.) तक शासन किया। रोमुलस का उत्तराधिकारी नूमा पोलम्मीलियस था जिसने 715 ई. पू.–576 ई.पू. तक राज्य किया। वह सेबाइन जाति का था। उसने रोमनों को धर्म की शिक्षा दी, पंचांग में सुधार किए तथा धर्म संस्थाओं की स्थापना की। उसके बाद ज्यूतस होस्टितियस रोम का शासक बना। उसने 673 ई.पू.–642 ई.पू. तक शासन किया। उसने अल्वा लोगों पर विजय प्राप्त की। तत्पश्चात् रोम का राजा बना एन्कस मासियस, जिसने 642 ई.पू.–617 ई.पू. तक राज्य किया। उसने भी कई सैटिन नगरों पर विजय प्राप्त की। इसके बाद रोम पर एट्रस्कन जाति का अधिकार हो गया। इस जाति का पहला राजा टारक्विन प्रथम था। उसके शासन काल (616–576 ई.पू.) में रोम का अत्यधिक विकास हुआ। उसने लैटियम को जीता, खेल का मैदान बनवाया तथा सिंचाई की व्यवस्था की। उसके उत्तराधिकारी सर्वियस तुलियस (576–535 ई.पू.) के शासनकाल में रोम का स्वरूप ही बदल गया। उसने रोम नगर की चारदीवारी बनवाई तथा कई मंदिरों का निर्माण किया। रोम का नए ढंग से सैन्य संगठन किया। उन्होंने अपने सैन्य संगठन के द्वारा रोम को एक सैनिक राज्य में बदल दिया। परन्तु उसका उत्तराधिकारी एवं दामाद टारक्विन द्वितीय (तारकीनियस) जिसने 535–509 ई.पू. तक राज्य किया, वह बड़ा घमण्डी (सुपर्वस) था। उसने जनता पर बड़े अत्याचार किए। उनके शासन से तंग आकर जनता ने उसे मार भगाया तथा रोम में गणतंत्र की स्थापना की। इस प्रकार रोम में राजतंत्र के स्थान पर गणतंत्र स्थापित हो गया। इतिहासकार बीच ने लिखा है कि "परंपरा इस बात का प्रमाण है कि असन्तुष्ट जनता क्रान्ति कर अपने राजा को निकाल देती है।"

गणतंत्र काल (509 ई.पू.–27 ई.पू.) (Republic Age 509–27 B.C.)

रोम में 509 ई.पू. में गणतंत्र की स्थापना हुई। इसकी स्थापना में लटिन संघ के लोगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संघ ने पहले पूर्व में एकीनियम और दक्षिण में बोल्शियन जातियों को पराजित किया। इसके बाद उनका संघर्ष एट्रस्कनों से हुआ। उन्होंने 10 वर्षों तक रोम के एक नगर बेई का घेरा डाले रखा। परिणामस्वरूप फयूरियस केमिलस के नेतृत्व में उन्हें (रोमनों को) भारी सफलता प्राप्त हुई। परन्तु रोमन लोग इस विजय का पूरा लाभ नहीं उठा सके। परिणामस्वरूप उन पर गांलो ने आक्रमण कर दिया। वैसे तो गणतंत्र की स्थापना 509 ई.पू. में हो गई थी परन्तु 390 ई.पू. तक ही रोम में राजतंत्र पूरी तरह से समाप्त हुआ और उसके खण्डहरों पर गणतंत्र का महल स्थापित हुआ। कालान्तर में रोम एक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में स्थापित हुआ तथा सम्पूर्ण इटली पर रोमनों का अधिकार हो गया।

साम्राज्य काल (27 ई.पू.–476 ई.) (Imperial Age 27 B.C.–476 A.D.)

सीजर की मृत्यु (44 ई.पू.) से लेकर 27 ई.पू. तक रोम में एक बार पुनः राजनीतिक उथल–पुथल होती रही। सीजर के बाद रोम में एक बार पुनः त्रिगुट का गठन हुआ। मार्क एण्टोनी इसमें प्रथम व्यक्ति था। वह योद्धा एवं कूटनीतिज्ञ सीजर का घनिष्ठ मित्र

टिप्पणी

व आक्टेबियन का बहनोई था। दूसरा–आक्टेबियन था जो सीजर की बहन का पौत्र था, सीजर का दत्तक पुत्र था। सीजर ने उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था तथा तीसरा लेपिडस था जो सीजर का विश्वसनीय सेनापति था। तीनों अपनी–अपनी योग्यता से कौंसल बन गए एवं तीनों ने राज्य की सारी शक्तियां अपने हाथों में ले लीं। एण्टोनी ने सबसे पहले गणतंत्र के कट्टर समर्थक सिसरो की हत्या करवा दी। बाद में तीनों की संयुक्त सेनाओं ने सीजर के हत्यारे ब्रूटस व कैसियस पर आक्रमण कर दिया। रोम की सेनाओं की इसमें विजय हुई तथा ब्रूटस व कैसियस ने भागकर आत्महत्या कर ली। तत्पश्चात् तीनों ने रोमन साम्राज्य को आपस में बांट लिया। एण्टोनी ने मिन की रानी क्लियोपेट्रा से विवाह कर लिया तथा मिस्र, एशिया माईनर व पूर्वी प्रदेशों का शासक बन गया। लोपिडस स्पेन व पश्चिम भाग का शासक बना। आक्टेबियन रोम सहित पश्चिमी देशों का शासक बना। परन्तु कुछ दिनों बाद एण्टोनी व आक्टेबियन के संबंधों में कटुता उत्पन्न हो गई। एण्टोनी ने फ्रांस विजय के लिए आक्टेबियन से सहायता की प्रार्थना की परन्तु आक्टेबियन ने मदद देने से इंकार कर दिया अतः क्रोधित होकर एण्टोनी ने रोम पर आक्रमण कर दिया। एण्टोनी इसमें पराजित हुआ तथा वह क्लियोपेट्रा के साथ सिकन्दरिया भाग गया। आक्टेबियन ने सिकन्दरिया पर भी आक्रमण कर दिया। एण्टोनी व क्लियोपेट्रा ने आत्महत्या कर ली। इसके बाद मिस्र को आक्टेबियन ने रोमन साम्राज्य में मिला लिया। इस प्रकार 27 ई.पू. में आक्टेबियन रोमन साम्राज्य का शासक बन गया। इसके साथ ही रोम के प्राचीन इतिहास के गणतंत्र युग की समाप्ति हो गई तथा साम्राज्यवादी युग का प्रारंभ हो गया।

जूलियस सीजर (Julius Caesar)

जूलियस सीजर का जन्म 100 ई.पू. में एक कुलीन परिवार में हुआ था। उसके हृदय में जनसाधारण के प्रति अगाध प्रेम था तथा उनके हितों की रक्षा के लिए वह हमेशा तैयार रहता था। वह एक प्रसिद्ध रोमन सेनापति मारियस का भतीजा था। मारियस की पत्नी उसकी मौसी थी। वह योद्धा व महत्त्वाकांक्षी युवक था। 15 वर्ष की आयु में ही वह पादरी के लिए मनोनीत किया गया था। उसने एण्टोनियम जैसे प्रसिद्ध विद्वान (गुरु) से शिक्षा ग्रहण की थी। उसका उत्कर्ष एक साधारण सेनापति के रूप में हुआ था। उसने इसमें काफी प्रसिद्धि प्राप्त की थी तथा उसे वीरता का पदक मिला था। 68 ई.पू. में वह मजिस्ट्रेट बना तथा उसके बाद वह कई महत्त्वपूर्ण पदों पर रहा। अपनी प्रतिभा के बल पर वह स्पेन का गवर्नर बन गया था। सीजर का उत्कर्ष पोम्पी के प्रभुत्व काल में हुआ। स्पेन से रोम आते ही उसे पोम्पी ने कौंसल बनवा दिया था। एक वर्ष बाद वह रोमन सेना का अध्यक्ष बनकर गाल (फ्रांस) गया। वह गाल प्रदेश में लगभग 9 वर्ष रहा तथा इस दौरान उसने अपनी वीरता का प्रदर्शन किया। गाल को जीतने के बाद उसने इंग्लैंड, राईन क्षेत्र तथा पेरानीज को भी जीत लिया। सीजर की इन सफलताओं से पोम्पी उसके विरुद्ध हो गया तथा उसने सीनेट के सहयोग से सीजर को रोम का शत्रु घोषित करवा दिया। सीजर यह समाचार पाकर अपनी सेना लेकर ऐल्पस पर्वत पार करके इटली में घुस गया। इटली के नगरों ने उसका स्वागत किया तथा उसे कर देने लगे। यह देखकर सीनेट ने उसके साथ शांति वार्ता का प्रस्ताव रखा परन्तु सीजर ने इंकार करके यह प्रस्ताव रखा कि यदि पोम्पी अपनी सेना भंग कर दे

टिप्पणी

तो वह भी अपनी सेना भंग कर देगा। पोम्पी सीजर का सामना नहीं कर पाया तथा वह इटली से भागकर पूर्व की ओर चला गया। सीजर पीछा करने की बजाय रोम लौट आया। पोम्पी व सीजर का तीन वर्ष संघर्ष चला (49–46 ई.पू.)। अन्त में पोम्पी पराजित होकर मिस्र भाग गया जहां राजा ने उसकी हत्या कर दी। सीजर भी मिस्र गया तथा यहां उसकी मित्रता क्लियोपेट्रा से हुई परन्तु कुछ दिन रंगरलिया मनाने के बाद सीजर रोम लौट आया तथा रोम में विद्रोह को कुचल कर 46 ई.पू. में रोम का अधिनायक बन गया।

सीजर ने गणतंत्र को समाप्त कर साम्राज्य की सारी सत्ता अपने हाथों में ले ली। उसने सीनेट की शक्तियां कम करके उसे परामर्शदात्री संस्था बना दिया। उसके इन कार्यों से उसके सहयोगी कैसियस तथा ब्रूटस भी नाराज हो गए तथा उसकी हत्या का षड्यन्त्र करने लगे। 15 मार्च, 44 ई.पू. को सीनेट की बैठक में भाग लेते समय उसके साथी ब्रुटस व अन्य सीनेटरों ने उसकी हत्या करवा दी। डेविस ने लिखा है कि "सीजर के हत्यारे न तो अपने देश की और न ही गणतंत्र की सेवा कर सके। सीजर की हत्या के साथ ही रोमन गणतंत्र की हत्या कर दी गई और रोम में जल्द ही साम्राज्यवादी युग का प्रारंभ हुआ।"

सीजर के सुधार या उपलब्धियां (Reforms or Achievements of Caesar) : सीजर एक योद्धा एवं सुधारक था। वह रोमन साम्राज्य को सुरक्षित करके उसे आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनाना चाहता था। उसके प्रमुख कार्यों का विवरण इस प्रकार है–

(i) सीनेट के स्वरूप में परिवर्तन (Change in the Nature of Senate) : सीजर गणतंत्र का समर्थक नहीं था वह निरंकुश शासन स्थापित करके साम्राज्य को सुरक्षित करना चाहता था। अतः उसने अपनी विचारधारा के अनुसार सीनेट के स्वरूप को बदलने का प्रयास किया। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने अपने विरोधियों को सीनेट से निकाल दिया। उसने जिन प्रान्तों पर विजय प्राप्त की थी। उनके प्रतिनिधियों को सीनेट का सदस्य बनाकर इसकी सदस्य संख्या 900 कर दी। इस प्रकार उसने सीनेट में अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाकर सीनेट को अपनी विचारधारा का समर्थक बनाया।

(ii) डिक्टेटर (तानाशाह) के पद को शक्तिशाली बनाना (Increase in Power of the Post of Dictator) : सीजर ने प्रशासनिक व्यवस्था में भी परिवर्तन करते हुए प्रशासन के ऊंचे पदों पर नियुक्ति का अधिकार अपने हाथ में ले लिया। राज्यपालों, सैनिक अधिकारियों तथा केन्द्रीय उच्चाधिकारियों की नियुक्ति उसके हाथ में आ जाने से ये सब उसके समर्थक बन गए। उसने प्रान्तीय राज्यपालों, सैनिक अधिकारियों तथा कर्मचारियों पर कठोर नियन्त्रण स्थापित किया।

(iii) न्यायिक सुधार (Judicial Reforms) : अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाने के उद्देश्य से उसने न्यायिक सुधार भी किए। उसने गाल एवं स्पेन के लोगों को नागरिकता प्रदान की। इन दोनों जातियों के प्रति उसमें श्रद्धा थी क्योंकि, उसके गुरु गाल जाति के थे तथा स्पेन ने उसके सैनिक संगठन को मजबूती प्रदान की थी। उसने कानूनों को लिपिबद्ध भी करवाया।

टिप्पणी

(iv) व्यापार को बढ़ावा (Increase in Trade) : सीजर रोम के व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के लिए कृतसंकल्प था। उसने भूमध्य सागरीय देशों में अपने उपनिवेश स्थापित किए तथा वाणिज्यिक केन्द्रों का विकास किया। उसने रोमनों को बाहरी प्रान्तों में बसने के लिए प्रोत्साहित किया तथा रोम नगर के सौंदर्यीकरण की योजना बनाई।

(v) राजकीय पंचांग में सुधार (Reforms in National Calender) : जूलियस सीजर की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि राजकीय पंचांग में सुधार करवाना था। उसने यह कार्य यूनानी ज्योतिषाचार्यों की सहायता से करवाया। वर्ष में 365¼ दिन माने गए। प्रत्येक चौथे वर्ष में 1 दिन की वृद्धि कर के दिन की कमी को पूरा किया। यूरोप में यह पंचांग 1572 ई.पू. तक चला। 1582 ई.पू. में पोप ग्रेगरी 15वें द्वारा इसमें सुधार किए गए। इस प्रकार सीजर न केवल एक सुधारक अपितु कुशल शासन प्रबंधक भी था। यद्यपि गणतंत्रवादियों ने उसे अवसरवादी, स्वार्थी एवं अहंकारी बताया है परन्तु आधुनिक इतिहासकार उसे असाधारण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति मानते हैं। वह अदम्य उत्साही, आत्मविश्वासी, एक सफल सेनानायक, राजनीतिज्ञ, विद्वान तथा वक्ता भी था। एलिस एवं जोन ने लिखा है कि "उसके सुधारों से प्रकट होता है कि वह केवल तीक्ष्ण बुद्धिवाला राजनीतिज्ञ ही नहीं अपितु एक दूरदर्शी राष्ट्रनिर्माता भी था।" सीजर का मूल्यांकन करते हुए ट्रोर ने लिखा है कि "विश्व के इतिहास में कतिपय महान पुरुष ही सीजर के राजनीतिक एवं सैनिक गुणों की समता कर सकते हैं।" भारतीय इतिहासकार डॉ. आर.पी. त्रिपाठी ने भी सीजर का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि "सीजर केवल योद्धा और चतुर, साहसी, धैर्यवान व निर्भीक सेनापति ही नहीं था, वरन् विचारशील वक्ता और लेखक भी था। उसमें उत्साह, शौर्य, तेज और प्रतिभा का अच्छा विकास पाया जाता है। उसके विचार एवं योजनाएं बहुमुखी तथा स्वअर्जित थीं। यदि वह अधिक काल तक जीवित रहता, तो बहुत कुछ कर जाता और यश प्राप्त करता।"

आगस्टस का शासनकाल : स्वर्ण युग (Reign of Augustus : Golden Age)

आगस्टस ने रोम पर 27 ई. पू. से लेकर 14 ई. पू. तक शासन किया। उसके शासनकाल में रोम ने प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक उन्नति की। उसने रोम के प्रशासन में विभिन्न सुधार किए। उसके शासन काल में चारों तरफ शान्ति तथा सुरक्षा स्थापित रही। ऐसे वातावरण में रोम को प्रगति करने का सुअवसर प्राप्त हो गया। रोम ने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में बहुत उन्नति की। उसके शासन काल में रोम ने इतना विकास किया कि विश्व के इतिहास में आगस्टस का काल 'स्वर्ण युग' के नाम से जाना जाता है।

(i) राजनीतिक क्षेत्र में उन्नति (Growth in Political Sphere)– आगस्टस जूलियस सीजर की तरह एक सफल सैनिक तथा एक कुशल प्रशासक था। उसने गद्दी पर बैठते ही अपने विरोधियों तथा सामन्तों का अन्त कर दिया। ये लोग रोम में षड्यन्त्र रचते रहते थे। आगस्टस ने सम्राट की शक्तियां अपने हाथों में केन्द्रित कर लीं। इसके पश्चात् वह एक निरंकुश राजा की तरह शासन चलाने लगा। उसने रोम में स्थाई शान्ति स्थापित करने के लिए एक लाख सैनिकों की

टिप्पणी

भर्ती की। उसने सीनेट के सदस्यों की संख्या कम कर दी। सीनेट के सदस्यों को चुनने में भी उसका ही हाथ रहता था। वह जब मर्जी चाहे उन्हें पद से हटा सकता था। उसने असेम्बली की शक्तियों को भी कम कर दिया। आर.पी. त्रिपाठी के अनुसार : "यद्यपि विधान की परम्परा के अनुसार असेम्बली का ही अन्तिम आधिपत्य माना जाता था तथापि व्यवहार में आगस्टस की इच्छानुवर्तिनी थी।" वह प्रजा की भलाई के लिए अधिक से अधिक कार्य करता था। उसने विदेशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए और विभिन्न नगरों तथा प्रान्तों में निवास करने वाले नागरिकों को समान अधिकार दिए। आगस्टस ने रोम के लोगों की शिक्षा, चिकित्सा तथा कृषि का भी उचित प्रबन्ध किया। उसने किसानों को भूमि कर में भी राहत प्रदान की। उसने लगान अधिकारियों को निष्पक्ष रूप से लगान इकट्ठा करने के आदेश दिए। इस प्रकार उसके शासनकाल में प्रजा पूरी तरह से प्रसन्न थी।

(ii) सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में उन्नति (Growth in Social and Religious Field)– आगस्टस में अपने चाचा जूलियस सीजर के सभी गुण विद्यमान थे। वह भी जूलियस सीजर की तरह रोम की जनता से अथाह प्रेम करता था। उसने आम जनता की भलाई के लिए प्रशंसनीय कार्य किए। उसने लोगों की सामाजिक दशा को सुधारने के लिए जूलियस कानून बनाए। इन कानूनों में सदाचार, विवाह, सहनशीलता, व्यवहार, समाज के अनेक सुधारों तथा शिक्षा प्रचार से सम्बन्धित नियम संकलित थे। आगस्टस हमेशा पुरानी धार्मिक संस्थाओं, वेशभूषा तथा रहन–सहन को पुनः स्थापित करने तथा प्राचीन संस्कृति के गौरव को पुनः स्थापित करने के लिए कार्य करता रहा। डॉ. आर. पी. त्रिपाठी के अनुसारः "व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में, घर और बाहर, उत्सवों और बाजारों में शिष्टाचार के पालन का वह जनता से सक्रिय आग्रह करता और कानूनों द्वारा उनका प्रवर्तन करता था।"

सामाजिक क्षेत्र के साथ–साथ उसने धार्मिक क्षेत्र में भी अनेक सुधार किए। इन सुधारों से प्रसन्न होकर जनता ने आगस्टस को बिना मांगे ही आगस्टस प्रिंसेप (विजयी सेनापति), इम्पेरेटर (राज्य का प्रथम नागरिक) आदि की उपाधियों से विभूषित कर दिया।

(iii) आर्थिक क्षेत्र में सुधार (Reforms in Economic Sphere)– आगस्टस के शासनकाल में आर्थिक क्षेत्र में भी व्यापक उन्नति हुई। कृषकों की भलाई के लिए उसने अनेक कार्य किए। उस समय रोम में गेहूं, चना, मक्का, ज्वार, अंगूर, सेब, नाशपाती तथा विभिन्न प्रकार के फल व सब्जियां बहुत मात्रा में उगाए जाते थे। सरकार की ओर से कृषकों से बहुत कम मात्रा में भूमिकर लिए जाते थे। रोम में उद्योगों तथा व्यापार की सुरक्षा के लिए आगस्टस ने जल दस्युओं का सर्वनाश किया। रोम निवासियों के एशिया से भी घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध थे। उस समय मिस्र, फारस, बेबीलोन, अफ्रीका, स्पेन तथा भारत से भी व्यापार किया जाता था। आगस्टस के शासन काल में जनसाधारण लोग भी खुशहाल जीवन व्यतीत करते थे।

टिप्पणी

(iv) सांस्कृतिक क्षेत्र में विकास (Growth in the Cultural Field)– आगस्टस ने अपने शासनकाल में शिक्षा, साहित्य तथा कला के क्षेत्र में भी व्यापक सुधार किए। उसने शिक्षा तथा साहित्य के विकास के लिए अनेक कार्य किए। उसने रोम में अनेक स्कूलों तथा पुस्तकालयों का निर्माण कराया। उसके काल में रोम में होरस तथा बर्जिल जैसे महान् कवि हुए, जिन्होंने अपनी रचनाओं को लैटिन भाषा में लिपिबद्ध किया। उसके शासन काल में लिवि नामक इतिहासकार ने 'रोम का इतिहास' लिखा। उसने (लिवि) इस इतिहास में लैटिन तथा यूनानी भाषा का प्रयोग किया। रोम में भवन निर्माण के क्षेत्र में भी व्यापक उन्नति हुई। उस समय भवन निर्माण में संगमरमर का प्रयोग बहुत मात्रा में किया गया था। आगस्टस ने अनेक महलों, मन्दिरों, थियेटरों, पुलों, नहरों, स्कूलों, पुस्तकालयों, बाजारों तथा मूर्तियों का निर्माण कराया। उसके शासनकाल में मूर्तिकला तथा चित्रकला भी अपने विकास की चरम सीमा तक पहुंच गई थी। इस प्रकार आगस्टस ने रोमन साम्राज्य को एकता के सूत्र में बांधकर शान्ति की स्थापना की। उसके शासनकाल में रोम ने प्रत्येक क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति की। उसके शासन काल को रोम के इतिहास में स्वर्ण काल के नाम से पुकारा जाता है।

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता कि आगस्टस ने अपने शासनकाल में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में अनेक सुधार किए, जिनके कारण ही उसके कार्यकाल को रोम के इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है। उसकी मृत्यु के पश्चात् रोमन साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया।

अपनी प्रगति जांचिए

1. रोम में संकटकालीन परिस्थितियों में कितने महीनों के लिए एक डिक्टेटर की नियुक्ति का प्रावधान था?

   (क) 12 (ख) 10

   (ग) 8 (घ) 6

2. रोम में नगर के चौराहों पर लिपिबद्ध कानूनों को लकड़ी की कितनी तख्तियों पर लिख कर लटका दिया जाता था?

   (क) 8 (ख) 10

   (ग) 12 (घ) 14

4.3 प्राचीन रोम की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां

रोमन समाज स्पष्ट रूप से पदानुक्रमित था। इसमें कानूनी रूप से परिभाषित विशेषाधिकारों को विभिन्न वर्गों में आवंटित किया गया था और रोजमर्रा की जिंदगी में वर्गों के प्रति दृष्टिकोण में अनगिनत अनौपचारिक अंतर थे।

विश्व के प्राचीन धर्मों की ही तरह रोम के प्राचीन धर्म में भी प्रकृति तथा उसकी विभिन्न शक्तियों की पूजा की जाती थी। रोमनों ने प्रकृति की विभिन्न शक्तियों का

टिप्पणी

मानवीयकरण करके उनकी पूजा करना सिखाया। उनका विश्वास था कि देवता की विधिपूर्वक पूजा करने पर तथा भेंट चढ़ाने पर देवता प्रसन्न होता है तथा पूजा करने वाले को वांछित फल देता है। धर्म (रिलीजन) शब्द लैटिन भाषा के रिलिजियो से बना है जिसका अर्थ होता है विधि–विधान के अनुसार सम्पन्न किया गया कर्मकांड अथवा रिचुअल। रोम के धर्म में आध्यात्मिकता का अभाव था।

4.3.1 सामाजिक स्थिति (Social Conditions)

रोम के लोगों के सामाजिक जीवन की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार थीं–

सामाजिक वर्गीकरण (Social Stratification)

लौहकालीन रोमन समाज मुख्य रूप से तीन वर्गों में बंटा हुआ था– उच्च वर्ग (Royal Class), मध्यम वर्ग (Middle Class) तथा दास वर्ग (Slave Class)।

(i) उच्च वर्ग (Royal Calss)– रोम के उच्च वर्ग में राजा, राजपरिवार के लोग, कुलीन, बड़े–बड़े व्यापारी तथा साहूकार लोग आते थे। इन लोगों को पेट्रिशियन कहा जाता था। रोम की समस्त शासन प्रणाली पर इनका अधिकार था। प्रशासन के उच्च पदों पर इसी वर्ग के लोगों को ही नियुक्त किया जाता था। ये लोग भव्य महलों में निवास करते थे। जीवन की समस्त सुविधाएं इनके पास उपलब्ध रहती थीं। ये लोग अपने अधिकारों का प्रयोग जनसाधारण जनता पर करते थे। यही कारण था कि जनसाधारण लोगों ने अपने अधिकारों की मांग के लिए इनके विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

(ii) मध्यम वर्ग (Middle Class)– इस वर्ग में स्वतंत्र किसान, मजदूर, शिल्पकार, शिक्षक, पुजारी आदि आते थे। इस वर्ग के लोग प्लीबियन के नाम से जाने जाते थे। आरम्भ में इन्हें रोमन समाज में किसी भी प्रकार के अधिकार प्राप्त नहीं थे, परन्तु 12 तख्तियों के कानून के अनुसार इन्हें भी कुछ सामाजिक एवं प्रशासनिक अधिकार प्रदान कर दिए गए। कालान्तर में ये लोग भी अपने पास अधिक से अधिक संख्या में दासों की भर्ती करने लगे, जिससे इन लोगों के जीवन में भी विलासिता आने लगी।

(iii) दास वर्ग (Slave Class)– लौहकालीन रोमन समाज में तीसरा वर्ग दासों का था। इनकी संख्या बहुत अधिक थी। इनमें से अधिकतर दास युद्धों में बन्दी बनाकर लाए जाते थे। प्रत्येक नागरिक अपने पास ज्यादा से ज्यादा संख्या में दास रखता था। उस समय एक आम नागरिक के पास भी सात–आठ दास होते थे। रोम में दासों की स्थिति बहुत खराब थी। उन्हें किसी प्रकार के सामाजिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। दासों को वस्तुओं तथा पशुओं की तरह खरीदा तथा बेचा जाता था। परन्तु ऐसे दास अवश्य भाग्यशाली होते थे जो विभिन्न विधाओं जैसे संगीतकला, नृत्य आदि में निपुण होते थे। ऐसे दासों के स्वामी भी उनसे संगीत आदि की शिक्षा ग्रहण करते थे। ऐसे दासों के साथ उनके स्वामी बहुत अच्छा व्यवहार करते थे। दास अपने स्वामी को छोड़कर कहीं नहीं जा सकते थे। कुछ दास शिक्षित भी होते थे। दासों को कृषि, भवन–निर्माण तथा सड़क निर्माण में मजदूरों के रूप में कार्य करना पड़ता था। दास प्रथा ने

टिप्पणी

रोमन लोगों को विलासी बना दिया जो कालान्तर में उनके लिए बहुत हानिकारक सिद्ध हुआ। रोम में दासों का जीवन अत्यन्त कठोर था। रोम के लोग दासों को शारीरिक यातनाएं भी देते थे। दासों को एक–दूसरे के साथ जंजीरों में बांधकर खेतों में काम करवाया जाता था। अनेक दासों को तो सोते समय भी जंजीरों में बांध कर रखा जाता था। अगर कोई दास अपने मालिक को छोड़कर भागने के प्रयास में पकड़ लिया जाता तो उसे मृत्युदंड मिलता था। दासों को बाजार में खरीदा बेचा जाता था। डेलोस द्वीप दास क्रय–विक्रय का प्रमुख केन्द्र था। कुछ सौभाग्यशाली दासों को शिक्षा भी दी जाती थी। पढ़े–लिखे दासों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता था। उन्हें धीरे–धीरे संपत्ति का अधिकार भी मिल गया। दासों को धन देकर मुक्त भी किया जाता था। फिर भी इस वर्ग की दशा दयनीय थी।

पारिवारिक संगठन (Family Organization)

रोमन समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार थी। यह एक सुदृढ़ सामाजिक व आर्थिक संस्था थी। रोमन परिवार पितृसत्तात्मक था। पिता की आज्ञा का पालन परिवार के सभी सदस्यों को करना पड़ता था। पिता (मुखिया) घर के किसी भी सदस्य को दण्ड भी दे सकता था, यहां तक कि उसे बेचकर गुलाम बना सकता था। परन्तु माता–पिता अपने बच्चों से प्यार करते थे। साम्राज्य काल में रोम की पारिवारिक व्यवस्था में कुछ दोष उत्पन्न हो गए थे। इसलिए प्रसिद्ध सम्राट आगस्टस ने इन दोषों को दूर करने के लिए कानून बनाए थे। उच्च नैतिकता, सदाचार एवं सच्चरित्रता रोमनों के आदर्श गुण थे।

महिलाओं की स्थिति (Position of Women)

लौह कालीन रोमन समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी। यद्यपि रोमन समाज पितृ प्रधान था और स्त्रियों के अधिकार कानून के द्वारा रक्षित नहीं थे, फिर भी परिवार में स्त्रियों का बहुत सम्मान किया जाता था। रोम की स्त्रियों में तीन गुणों की अपेक्षा की जाती थी– सतीत्व की रक्षा करना, पिता अथवा संरक्षक की आज्ञा का पालन करना तथा घर के काम काज को सुन्दर ढंग से निपटाना। रोमन समाज में विवाह का उद्देश्य पुत्र उत्पन्न करना माना जाता था। बच्चे के पैदा होने के आठवें दिन महिला को परिवार में शामिल किया जाता था। रोमन माताएं स्वयं अपने बच्चे का पालन–पोषण करती थीं। सम्पत्ति पर भी स्त्रियों का पूर्ण अधिकार होता था। उस समय समाज में पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं थी। स्त्रियां सभी धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़कर भाग लेती थीं। उन्हें शिक्षा का अधिकार था। विवाह के लिए पुरुष की आयु 14 से 20 तथा स्त्री की आयु 12–19 वर्ष अच्छी मानी जाती थी। रोमन समाज में स्त्री की पवित्रता पर बल दिया जाता था। उस समय दहेज प्रथा भी प्रचलित थी। रोम में विवाह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न किए जाते थे। परन्तु तलाक लेने का अधिकार केवल पुरुषों को ही प्राप्त था। समाज में यह नियम था कि प्रत्येक स्त्री का कोई न कोई पुरुष संरक्षक होना चाहिए, भले ही वह पति हो, पिता हो, पति या निकट अथवा दूर का संबंधी। प्रो. नेमिशरण मित्तल ने लिखा है कि "पिता को अपनी बेटी के बारे में यह निश्चित करने का अधिकार था कि वह विवाह के बाद उसकी सत्ता के अधीन रहेगी या अपने पति की सत्ता के अधीन। यदि पिता उसे उसके पति की सत्ता में सौंप देता तो वह अपने पति के परिवार के मुखिया की सत्ता के अधीन हो जाती, उसके पारिवारिक देवताओं की पूजा करती तथा उसकी संपत्ति में

उसी प्रकार भागीदार होती जिस प्रकार उसकी अपनी बेटी।" रोमन समाज में वेश्यावृत्ति भी प्रचलित थी। कुल मिलाकर स्त्रियों को बच्चे उत्पन्न करने तथा मनोरंजन का साधन ही माना जाता था।

टिप्पणी

साम्राज्यकाल में स्त्रियों की दशा शोचनीय हो गई। सार्वजनिक जीवन में उनका महत्त्व समाप्त हो गया था। कभी–कभी उन्हें महत्त्व का स्थान मिल जाता था। रोम में विदुषी महिलाओं के संरक्षण में साहित्यकारों की गोष्ठियां होती थीं। धनी महिलाएं लेखकों, कवियों एवं दार्शनिकों को संरक्षण प्रदान करती थीं।

खान–पान (Food and Drinks)

रोमन लोग गेहूं, चावल, चना, मक्का, दालें, सब्जियां तथा फलों का प्रयोग भोजन के रूप में करते थे। उच्च वर्ग के लोग स्वादिष्ट एवं विलासप्रिय भोजन खाते थे। वे अपने भोजन में शराब, मांस तथा पनीर का प्रयोग भी करते थे। परन्तु जनसाधारण वर्ग के लोग सादा भोजन खाते थे। सभी परिवारों में भोजन बनाने तथा परोसने का कार्य स्त्रियों ही करती थीं।

वस्त्र और आभूषण (Dresses and Ornaments)

रोमन लोग भड़कीले वस्त्र पहना करते थे। उनके वस्त्र ऊनी तथा सूती दोनों प्रकार के होते थे। उनके वस्त्र कुछ–कुछ यूनान के लोगों के वस्त्रों से मेल खाते थे। स्त्री तथा पुरुष दोनों एक चादर–सी ओढ़ते थे, जिसके किनारे रंगीन होते थे। पुरुष सादी कमीज व चूड़ीदार पायजामा तथा स्त्रियां लबादे अर्थात् मैक्सी पहनती थीं। उनके वस्त्र ढीले–ढाले होते थे। लौहकालीन रोमन समाज में आभूषण पहनने तथा शृंगार करने का शौक स्त्री–पुरुषों दोनों को ही था। उस समय आभूषण सोने, चांदी, हाथीदांत तथा बहुमूल्य पत्थर के बनाए जाते थे। आरम्भ में रोमन लोगों द्वारा शृंगार इत्यादि पर बल नहीं दिया जाता था, परन्तु जैसे–जैसे रोमन समाज में विलासिता आती चली गई, वैसे–वैसे ही स्त्रियों तथा पुरुषों ने शृंगार करना आरम्भ कर दिया। स्त्रियां अपने को पुरुषों से अधिक सुन्दर दिखाने का प्रयास करती थीं। वे सजने–संवरने के लिए काजल, लिपिस्टिक, पाउडर और सुगन्धित तेलों का प्रयोग करती थीं। वे दर्पण तथा कंघी की सहायता से अपने बालों को विभिन्न प्रकार से संवारती थीं। रोमन साम्राज्य में पुरुषों में कुछ सिर तथा दाढ़ी के बाल बढ़ाकर रखते थे तो कुछ कटवा कर रखते थे।

मनोरंजन के साधन (Means of Amusement)

रोम के लोग विभिन्न प्रकार के साधनों से अपना मनोरंजन करते थे। रथदौड़, पशु युद्ध तथा दासों की अमानवीय लड़ाई उनके मनोरंजन के प्रमुख साधन थे। कालीजीयम (Colosseum) (अखाड़े) (स्टेडियम) में एक साथ कई गुलाम छोड़ दिए जाते थे, जो जिन्दा रहने के लिए भूखे शेरों से युद्ध करते थे। इन कालीजीयमों में हजारों व्यक्तियों के बैठने का प्रबंध होता था। ऐसे मनोरंजनों पर धनी वर्ग के लोग पानी की तरह पैसा बहाते थे। आगस्टस के समय में वर्ष में लगभग 66 दिन तक इन कालीजीयमों में जनता का मनोरंजन होता था। रोमन सम्राट नीरो के समय में रोम में भयंकर अकाल पड़ा जिसकी भेंट लाखों लोग चढ़ गए परन्तु सम्राट ने विदेशों से जहाजों द्वारा अनाज के स्थान पर अखाड़ों के लिए बालू की रेत मंगवाई। वह अपने गुलदस्तों के लिए मिस्र से

टिप्पणी

लाखों रुपये के गुलाब मंगवाता था। उसकी पत्नी पोपिया अपने स्नान के लिए प्रतिदिन 500 गधियों का दूध मंगवाती थी। रोमनों का एक अत्यन्त लोकप्रिय खेल तलवार–बाजी (ग्लेडिएटर) था। इस खेल का आयोजन धनी वर्ग करता था। यह खेल बहुत खतरनाक होता था। इस खेल में पराजित खिलाड़ी को विजयी खिलाड़ी द्वारा मार दिया जाता था। स्त्रियां पारदर्शी वस्त्रों में नृत्य करके लोगों का मनोरंजन करती थीं। रोमन समाज में विलासिता के साथ–साथ वेश्यावृत्ति भी प्रचलित थी। यद्यपि वेश्याओं के वेश्यालय शहर से बाहर होते थे फिर भी रोम की कुछ स्त्रियां बनी–ठनी घूमती रहती थीं तथा विलास के लिए आमन्त्रित करती थीं। इसके अतिरिक्त कुछ लोग नाटक खेलकर तथा देखकर भी अपना मनोरंजन करते थे। बच्चे मिट्टी, लकड़ी तथा घातुओं के बने खिलौनों से खेलकर अपना दिल बहलाते थे। कुछ लोग गीत, संगीत तथा नृत्य से भी अपना मनोरंजन करते थे।

आचरण और व्यवहार (Conduct and Behaviour)

रोम के लोगों में नैतिकता की भावना विद्यमान थी। प्रत्येक व्यक्ति अपने से बड़ों का आदर करता था तथा उनसे सलाह लेना व उसके अनुसार आचरण करना अपना धर्म मानते थे। प्लीबियन व दासों को अपनी मर्यादाओं की चेतना थी तथा वे अभिजात वर्ग का आदर करते थे। नागरिकों को बचपन से ही अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाता था। बच्चे अपने पिता के मार्गदर्शन में ही सदाचार, अनुशासन, खेलकूद, शस्त्राभ्यास, खेती व इतिहास एवं संस्कृति की शिक्षा लेते थे। इस प्रकार समाज में नैतिकता विद्यमान थी।

4.3.2 आर्थिक स्थिति (Economic Conditions)

लौहकालीन रोमन समाज में लोगों के आर्थिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का विवरण इस प्रकार है–

कृषि (Agriculture)

रोमन लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। रोम में खेती का कार्य पुरुष, स्त्रियां, लड़के तथा लड़कियां मिलकर करते थे। रोमन लोगों के खेत चौकोर होते थे। प्रत्येक किसान के पास लगभग तीन–चार एकड़ भूमि होती थी। प्राचीन काल में युद्धों के द्वारा जीती गई भूमि पर भी कृषकों का अधिकार माना जाता था। परन्तु साम्राज्य काल में भूमि पर बड़े–बड़े जमींदारों का अधिकार हो गया। उन्होंने किसानों से भूमि खरीद ली। जमींदार किसानों तथा दासों से कृषि कार्य कराते थे।

उस समय खेतों में गेहूं, चावल, जौ, चना, मक्का, विभिन्न प्रकार की दालें, सब्जियां, जैतून, नारंगी, नाशपाती, सेब, अंजीर आदि अन्न एवं फलों की खेती की जाती थी। बड़े–बड़े जमींदार अपने खेतों में विशाल बाग लगवाते थे तथा फलों की खेती करवाते थे। विशेषतः अंगूर से शराब बनाई जाती थी। कृषि हल तथा बैलों की सहायता से की जाती थी। परन्तु जमींदारों की विलासिता तथा लापरवाही से कृषि की दशा निरन्तर गिरती चली गई। वस्तुतः अधिकतर जमींदार शहरों में निवास करते थे और गुलाम अर्थात् दास कृषि की ओर विशेष ध्यान नहीं देते थे।

टिप्पणी

पशुपालन (Animal Husbandary)

लौहकाल में रोमन साम्राज्य में पशुओं का बहुत आर्थिक महत्व था। रोमन समाज में पशुओं की संख्या तथा कृषि से ही लोगों की आर्थिक स्थिति आंकी जाती थी, इसलिए कृषि के साथ–साथ रोमन लोगों का दूसरा मुख्य व्यवसाय पशुपालन बन गया। रोम में गाय, गधा, बैल, भैंस, घोड़ा, भेड़, बकरी, मुर्गी, सुअर तथा कुत्ता आदि पशु बहुत संख्या में पाले जाते थे। पशुओं से वे दूध–दही, मक्खन, मांस आदि प्राप्त करते थे। पशुओं की सहायता से वे कृषि करते तथा बोझा ढोने का कार्य करते थे।

उद्योग (Industry)

प्राचीन काल में लोहे के प्रयोग से रोमन साम्राज्य में भारी संख्या में उद्योग तथा दस्तकारियां स्थापित हो गईं। इटली में लोहा, तांबा, टिन, जस्ता बहुत मात्रा में पाया जाता था। हालांकि सोना और चांदी जैसी धातुएं यहां बहुत कम मात्रा में मिलती थीं। खानों से खनिज पदार्थ प्राप्त करने के लिए दासों को काम पर लगाया जाता था। रोम में धातुओं से विभिन्न प्रकार के उपकरण तथा आभूषण बनाए जाते थे। नगरों में सूत कातना, ऊन बुनना, कपड़े बनाना तथा कपड़ों को रंगने का कार्य किया जाता था। मिस्र, सीरिया, स्पेन आदि प्रदेशों में लोहा तथा कांच बहुत मात्रा में पाया जाता था। इसलिए रोमन साम्राज्य में भारी मात्रा में सीसे तथा लोहे के उद्योग स्थापित हो गए। रोमन साम्राज्य में मिट्टी के बर्तन, खिलौने भी बहुत मात्रा में निर्मित किए जाते थे। उस समय उद्योगों में स्त्री तथा पुरुष दोनों कार्य करते थे। सभी उद्योग कुटीर उद्योग थे जिन पर सरकार का कठोर नियन्त्रण था। इन कुटीर उद्योगों में निर्मित आभूषणों, बर्तनों तथा कपड़ों की बढ़िया किस्में तैयार की जाती थीं जिनकी विदेशों में बहुत मांग होती थी। रोम में ईंटों तथा लकड़ी का भी कार्य बहुत मात्रा में किया जाता था। अतः वहां के उद्योग बहत विकसित स्थिति में थे। साम्राज्य विस्तार होने से साम्राज्यवादी युग में व्यापार का अत्यधिक विकास हुआ। खानों की खुदाई एक महत्त्वपूर्ण उद्योग था। आभूषण उद्योग भी लोकप्रिय था। काठ, पत्थर तथा ईंट उद्योग का भी प्रचलन था। बड़ी संख्या में लकड़ी (काठ) के जहाज बनाए जाते थे।

व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce)

रोमन साम्राज्य में आन्तरिक तथा बाह्य व्यापार बहुत अधिक प्रचलित था। रोमन साम्राज्य में बहुत बड़े–बड़े नगर थे जिनमें बहुत मात्रा में तैयार किया हुआ माल बेचा जाता था। रोमन सम्राटों ने आन्तरिक व्यापार की उन्नति के लिए प्रमुख नगरों में अनेक सड़कों का निर्माण कराया जो एक नगर से दूसरे नगर को जाती थीं। रोम के व्यापारी दूर–दूर के देशों में जाते थे। रोम के लोग विदेशों से विलासिता का काफी सामान मंगवाते थे। वे मिस्र से ग्लास, भारत से मलमल के कपड़े, एशिया माइनर से लोहा, यूनान से संगमरमर तथा जैतून का तेल, ब्रिटेन से पशुओं की खाल के वस्त्र आदि खरीदकर एक नगर से दूसरे नगर में बेचते थे। इसके अलावा रोम का विदेशी व्यापार भारत, उत्तरी अफ्रीका, चीन, अरब आदि देशों से किया जाता था। भारत में दक्षिण भारत के ऐरिकामेडू स्थान पर मिलने वाले शराब के मटके (emphora) व रोमन सिक्के पूर्वी देशों व पश्चिमी देशों के बीच व्यापार का प्रमाण देते हैं। भारत व रोम के साथ होने वाले व्यापार का सन्तुलन भारत के पक्ष में था। मिनर्वा को रोम में

उद्योग एवं व्यापार की देवी माना जाता था। मिनर्वा को रोम के लोग बुद्धि की देवी (सरस्वती) मानते थे।

टिप्पणी

विदेशी व्यापार की सुरक्षा के लिए रोमन सम्राटों ने अपने साम्राज्य के विभिन्न स्थानों पर पुलिस चौकियां स्थापित कीं। चौकियों में व्यापारियों के ठहरने की भी व्यवस्था होती थी, इसलिए ये चौकियां आगे चलकर माल खरीदने तथा बेचने के केन्द्र बन गए। सरकार व्यापारियों से व्यापारिक कर लेती थी। कर इकट्ठा करने वाले अधिकारियों को क्वेस्टर (Quaestors) कहा जाता था। आरम्भ में रोम में मुद्रा का प्रचलन नहीं था, परन्तु 327 ई. पू. के पश्चात् वहां पर सोने, चांदी तथा तांबे के सिक्कों का प्रचलन आरम्भ हो गया। जैसे–जैसे व्यापार में उन्नति होती गई, वैसे–वैसे रोम में बैंकिंग प्रणाली भी विकसित होती चली गई। उस समय ऋण पर सूद की दर 12 प्रतिशत थी। इसके अतिरिक्त रोमन सभ्यता में व्यापारियों से आयात कर के रूप में 27 प्रतिशत चुंगी ली जाती थी।

साम्राज्य की स्थापना के बाद रोम के व्यापार एवं वाणिज्य का अत्यधिक विकास हुआ था। साम्राज्य में सैकड़ों शहर इन गतिविधियों के केन्द्र थे। माना जाता है कि रोमन शासक हैड्रियन के समय में शहरों की संख्या 20,000 हो गई थी। रोम के शासकों ने व्यापार के विकास के लिए बहुत–सी सड़कों का निर्माण करवाया था। उत्तरी अफ्रीका व यूरोप के अनेक देशों में वर्तमान काल में मिलने वाली सड़कों का पूर्व काल में निर्माण रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत ही हुआ था।

मुद्रा और बैंकिंग (Currency and Banking)

तीसरी शताब्दी ई.पू. तक रोम में मुद्रा का प्रचलन नहीं था तथा व्यापार का माध्यम वस्तु विनिमय था। भेड़ का इस्तेमाल विनिमय (मुद्रा) के रूप में किया जाता था। लैटिन भाषा में पशुओं के झुंड को पेपस कहते हैं, उससे पेसूनिया शब्द बना जिसका प्रयोग रोम में मुद्रा के लिए किया जाता है। (पैसा शब्द भी लैटिन के पेपस से ही बना है)। पांचवीं शताब्दी के अन्त में कांसे के टुकड़ों का सिक्कों के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। एक सांड अथवा 10 भेड़ों का मूल्य 100 पौंड कांसा के बराबर माना गया। कांसे के सिक्कों के बाद चांदी के सिक्के जारी किए गए। आगे चलकर दीनार का चलन हुआ। दीनार के अलावा औरियस नाम का सोने का सिक्का भी जारी किया गया। 268 ई. में सम्राट डायोक्लेशियन ने सोने के सिक्के का वजन 6.22 ग्राम निश्चित किया था। सम्राट कान्स्टण्टैन प्रथम द्वारा चलाए गए सोने के सिक्के का नाम सोलिडस रखा तथा उसका वजन घटाकर 5.2 ग्राम कर दिया। उसके चांदी के सिक्के का नाम सिलिम्बा था जिसका मूल्य सोलिडस का चौबीसवां भाग था।

श्रेणियां (Banking)

रोम की आर्थिक गतिविधियां स्वतंत्र हाथों की अपेक्षा दस्तकारों तथा व्यापारियों के संघों (गिल्ड) (श्रेणियां) द्वारा चलाई जाती थीं। इन संघों को राज्य की तरफ से प्रश्रय मिलता था। प्राचीन रोम के प्रमुख संघों में जहाज मालिकों का संघ, नानबाइयों का संघ, मांस बेचने वालों का संघ, मदिरा बेचने वालों के संघ, ठठेरों, स्वर्णकारों, बांसुरी वादकों,

लोहारों, कुम्हारों, रंगरेजों, मोचियों, बुनकरों, लकड़हारों आदि के संघ हैं। इन संघों ने साम्राज्य के व्यापार को विकसित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी।

टिप्पणी

4.3.3 धार्मिक स्थिति (Religious Conditions)

रोम के लोग बहुदेववादी थे। प्रत्येक कुल या घर का अपना अलग देवता होता था। समाज में मूर्ति–पूजा, पशु–बलि, बाह्याडम्बरों तथा जादू–टोनों इत्यादि का बोलबाला था। प्राचीन रोम के लोगों के धार्मिक जीवन की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा (Worship of Various Gods and Goddesses)

रोमन लोगों को धर्म में बहुत विश्वास था। आरम्भ में रोम के निवासी बहुदेववादी होते हुए भी एक ईश्वर की उपासना करते थे। परन्तु जैसे ही वे यूनानियों के सम्पर्क में आए उनमें एक देवता के स्थान पर विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा का प्रचलन हो गया। उनके प्रमुख देवता थे– जुपिटर (शांति का देवता), मार्स (युद्ध का देवता), वीनस (प्रेम व सुन्दरता की देवी), मर्करी (संदेशवाहक), अपोलो (संगीत व कला का देवता), जूनो (स्त्रियों की रक्षा करने वाला देवता), मिनर्वा (ज्ञान तथा बुद्धि की देवी), वैस्टा (अग्नि देवी), लारेस (खेतों का देवता)। क्लीरिनस को उच्च नागरिक श्रेणी का देवता माना जाता था। इनके अतिरिक्त डायना को प्रेम की देवी कहा जाता था। विदेशियों के सम्पर्क में आने से रोमनों ने इसिस तथा ओसिरिस नामक देवताओं, जिनकी पूजा मिस्र में की जाती थी तथा मित्र देवता जिसकी पूजा ईरान में होती थी, आदि को भी पूजना आरम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त रोम के लोग देवता के रूप में राजा की पूजा करना भी अपना धर्म समझते थे। साम्राज्य के विभिन्न भागों में आगस्टस के मंदिर बनाए गए थे। रोम में रहस्यवादी पूजाएं भी होती थीं।

मंदिर और पुजारी (Temple and Priests)

रोमन देवता भी मानव थे। अतः यूनानियों की तरह रोमनों ने भी अपने देवताओं को प्रसन्न करने तथा उनकी पूजा के लिए बड़े–बड़े मंदिरों का निर्माण करवाया था जिनमें बड़े हर्षोल्लास से पूजा की जाती थी। उनका विश्वास था कि देवता की विधिवत पूजा करने से और भेंट चढ़ाने से देवता प्रसन्न होते हैं तथा भेंट चढ़ाने वाले की इच्छा पूरी करते हैं। इसलिए देवताओं की पूजा बड़े धूम–धाम से की जाती थी। रोम में सार्वजनिक पूजा भी बहुत प्रचलित थी। मंदिरों में देवताओं की उपासना के लिए मूर्तियां बनाई जाती थीं। प्रो. नेमिशरण मित्तल ने लिखा है कि "मंदिरों व मूर्तियों की प्राचीन परंपरा रोम को इत्रस्की शासकों से मिली थी।" 509 ई.पू. में बना बृहस्पति का मंदिर इत्रस्की (Etruscan) शैली में ही बना था। 291 ई.पू. में यूनान के एपिडोरस नगर के रोगमुक्ति के देवता धन्वंतरी (आखले–पियोस) का रोम में मंदिर स्थापित किया गया था। रोम में नरबलि का भी प्रचलन था। मंदिरों व धार्मिक उत्सवों का प्रबंध करने की जिम्मेवारी पुरोहित की थी। पुरोहितों की समिति होती थी। यह समिति मंदिरों की देखभाल तथा धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न करवाने के अलावा धार्मिक जुलूस के समय रास्ते में पड़ने वाले पुलों की भी मरम्मत करवाती थी। पुरोहित प्रायः पुरुष ही होते थे। परन्तु कुमारियों अर्थात कन्याओं की समिति को अग्नि रक्षिका कहा जाता था। उसमें 6 से 10 वर्ष तक

की बालिकाएं होती थीं। उन्हें 30 वर्षों तक सफेद वस्त्र धारण करने होते थे तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना होता था।

टिप्पणी

रोमनों की धार्मिक उदारता (Religious Liberalism of the Romans)

रोमन सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता धार्मिक उदारता एवं सहिष्णुता थी। रोम में सभी धर्मों के देवी–देवताओं का सम्मान किया जाता था। रोमनों ने यूनानियों से जुपिटर, मार्स तथा वीनस आदि देवताओं की पूजा करना सीखा वहीं उन्होंने मिस्रवासियों की देवी आइसिस तथा ओसिरिस तथा ईरानियों के देवता मित्र को भी अपना लिया था। उन्होंने यहूदियों से एकेश्वरवाद के विचार को ग्रहण किया। पूर्वी सम्पर्क के कारण ही अनेक रहस्यवादी पूजाएं तथा सम्राट की पूजा प्रारंभ हुई। प्लेट व जीन ने लिखा है कि "समय आने पर करोड़ों रोमन ईसाई धर्म में दीक्षित हो गए।" कुल मिलाकर रोमन लोग सहिष्णु थे। परन्तु रोमन सम्राट आगस्टस के समय से धार्मिक सहिष्णुता की नीति समाप्त हो गई। अब यहूदियों पर अनेक प्रतिबंध लगा दिए गए तथा बाद में रोमन सम्राटों ने ईसाइयों व यहूदियों पर अनेक अत्याचार किए।

अंधविश्वास (Superstitions)

रोम के लोग बहुत अन्धविश्वासी थे। उनके धर्म में बहुत आडम्बर व्याप्त थे। तंत्र–मन्त्र व जादू–टोने के अलावा पशुबलि व नरबलि का प्रचलन था। धर्म में अनैतिकता एवं अमानवीयता का समावेश था। रोम के लोग शुभ–अशुभ का भी विश्वास करते थे। रोम में तरह–तरह की भविष्यवाणियां की जाती थीं। शुभ–अशुभ की भविष्यवाणियां पशुओं के हिलने–डुलने के आधार पर की जाती थीं। रोम के लोग शुभ लग्न में ही महत्त्वपूर्ण कार्य करते थे। पुजारी लोग लोगों को गुमराह करके धन लूटते थे और आनन्द का अनुभव करते थे। देवी–देवताओं की पूजा में विभिन्न प्रकार के फल, आभूषण तथा धन आदि भी चढ़ाए जाते थे। इस प्रकार रोमन धर्म में अंधविश्वासों एवं आडम्बरों का समावेश था।

सम्राटों की पूजा (Worship of Emperors)

साम्राज्य काल में रोम में सम्राटों की पूजा करने का भी प्रचलन हो गया था। रोम में जूलियस सीजर तथा आगस्टस जैसे राजाओं को देवता के रूप में पूजा जाता था। लोग राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानकर उसकी पूजा करते थे। रोम के प्रसिद्ध कवि होरस ने 27 ई.पू. में आगस्टस को मर्करी देवता का अवतार घोषित किया तथा इसके बाद रोम तथा इटली के अन्य नगरों में भी आगस्टस के मंदिर बनाए गए। सम्राट डोमिटियन अपने आपको सूर्य देवता का प्रतिनिधि मानता था। उसने अपनी बहन तथा पत्नी को भी देवी घोषित कर दिया और उनकी प्रतिदिन पूजा करने के लिए पुजारी लोगों की नियुक्ति भी की। अतः ईसा मसीह के जन्म से पहले रोम निवासी बहुदेववादी थे।

ईसाई धर्म का प्रसार (Spread of Christianity)

ईसाई धर्म की उत्पत्ति तथा इसके प्रसार का श्रेय रोमनों को जाता है। ईसा का जन्म स्थान बेथेलहम (फिलिस्तीन), रोमन साम्राज्य का ही एक भाग था। प्रारंभ में रोम में

टिप्पणी

यहूदी धर्म (जुडाइज्म) का प्रभाव था परन्तु बाद में कानून बनाकर इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसी प्रकार रोम सम्राटों ने ईसाई धर्म पर भी अनेक प्रतिबंध लगाए तथा उन पर अत्याचार किए। परन्तु शीघ्र ही रोमन सम्राट कान्स्टण्टैन ने ईसाई धर्म को राजकीय धर्म घोषित करके इसका व्यापक प्रचार किया। रोमनों के प्रयास से ही यह धर्म विश्व धर्म बन गया।

अपनी प्रगति जांचिए

3. लौहकालीन रोमन समाज मुख्य रूप से कितने वर्गों में बंटा हुआ था?

(क) 2 (ख) 3

(ग) 4 (घ) 5

4. प्राचीन रोम साम्राज्य में विवाह के लिए स्त्री की कितनी आयु सीमा सही मानी जाती थी?

(क) 12–19 (ख) 14–20

(ग) 13–18 (घ) 15–21

4.4 विज्ञान एवं संस्कृति

रोमनों ने एक नई, अलग संस्कृति विकसित नहीं की, बल्कि अन्य सभ्यताओं से केवल विषयों को आत्मसात किया। रोमन राज्य बनने के बाद से रोमन लोग यूनानियों से सांस्कृतिक रूप से हीन महसूस करते थे। भवन निर्माण कला, कला की एक शाखा थी, जिस पर रोम के लोगों ने सबसे उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था, जो शक्तिशाली हेलेनिक और एट्रसकेन प्रभावों के अंतर्गत विकसित हुई थी।

4.4.1 विज्ञान (Science)

लौहकालीन रोमन साम्राज्य ने विज्ञान के क्षेत्र में विशेष प्रगति नहीं की। वे इस क्षेत्र में भी यूनानियों के ऋणी हैं। रोम में विज्ञान के बारे में यह उक्ति प्रचलित थी, "रोमनों ने विज्ञान का उपयोग किया, अध्ययन नहीं।" रोम के वैज्ञानिकों में लुक्रीटियस तथा प्लिनी महत्त्वपूर्ण हैं। लुक्रीटियस ने विज्ञान पर लंबी कविता लिखी। प्लिनी नामक वैज्ञानिक की पुस्तक प्राकृतिक इतिहास (Natural History) विज्ञान की अमूल्य रचना मानी जाती है। इस पुस्तक में सृष्टि का निर्माण, भूगोल, मानव विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं चिकित्सा व धातु विज्ञानों का वर्णन किया गया है। लैटिन भाषा में विज्ञान पर लिखा यह सबसे बड़ा ग्रन्थ है।

रोमनों ने चिकित्सा शास्त्र में उल्लेखनीय प्रगति की। उन्होंने प्रसिद्ध यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेटीज की रचनाओं से व्यापक लाभ उठाया। आधुनिक अस्पतालों के संगठन की कल्पना रोमनों की देन है। रोम के प्रत्येक नगर में चिकित्सालय थे। एक बात तो माननी ही पड़ेगी कि रोम के लोग लोक सेवा को पुनीत कार्य मानते थे और रोम पहला सभ्य देश था, जहां निर्धन रोगियों को मुफ्त दवाइयां देने की व्यवस्था की गई। वे स्वास्थ्य एवं सफाई पर विशेष ध्यान देते थे। नगरों की सफाई, शुद्ध जल का

टिप्पणी

प्रबंध, रोगियों के लिए अस्पताल की व्यवस्था आदि पर सरकार बहुत ध्यान देती थी। नगरों में शुद्ध जल प्राप्त हो, इस उद्देश्य से बड़े–बड़े ढके हुए हौज बने होते थे, जिनमें साफ किया हुआ पानी संचित किया जाता था। जूलियस सीजर चिकित्सकों पर विशेष कृपा रखता था और उन्हें विशेष अधिकार प्रदान करता था। सैनिकों की देखभाल के लिए भी अस्पताल और योग्य चिकित्सकों की व्यवस्था रहती थी। चिकित्सा विज्ञान संबंधी रोमनों के सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। प्रायः सभी नगरों तथा कस्बों में सरकारी अस्पताल और डाक्टर होते थे। चार्ल्स लिंगर के अनुसार यह रोम की एक बहुत बड़ी देन है।

रोमन चिकित्सक गैलन ने चिकित्सा शास्त्र पर एक विश्वकोष बनाया और रक्त प्रवाह का पता लगाया। उसने चिकित्सा विज्ञान पर 150 पुस्तकें लिखीं। इसमें शरीर के विभिन्न अंगों का विस्तृत विवरण है। सेल्सस ने चीर–फाड़ (शल्य चिकित्सा) के बारे में लिखा। सोरेनस रोम का स्त्री रोग विशेषज्ञ था।

रोमन साम्राज्य में भूगोल तथा ज्योतिष का भी बहुत विकास हुआ। स्ट्रेबो ने भूगोल (ज्योग्रॉफी) नामक पुस्तक की रचना की जिसमें प्राचीन विश्व की भौगोलिक स्थिति का विवरण है। अलेक्जेंड्रिया का रहने वाला टॉलेमी भूगोल के विद्वान के रूप में विश्व प्रसिद्ध है। उसने महान पुस्तक लिखी जिसका नाम जुगराफिका था जिसमें उसने उस समय के भूगोल का वर्णन किया है। उसने भूगोल से सम्बन्धित 1000 मानचित्र बनाए। उसकी पुस्तक भूगोल में मानचित्र बनाने की कला की खोज की तथा मानचित्र में अक्षांश एवं देशान्तर के माध्यम से स्थिति को दर्शाया। जूलियस सीजर द्वारा चलाया गया जूलियन कैलेंडर रोमन ज्योतिष का महत्त्वपूर्ण कार्य है। इस कैलेंडर में वर्ष में 365 दिन तथा हर चार साल में एक दिन जोड़ा जाता था। यह कैलेंडर 1 जनवरी 45 ई.पू. में लागू हुआ था। आधुनिक पश्चिमी पंचांग के कुछ महीनों के नाम रोम के शासकों के नाम पर रखे गए हैं। जैसे जूलियस सीजर के नाम पर जुलाई, आगस्टस के नाम पर अगस्त आदि। इसी प्रकार सितंबर, अक्टूबर, नवंबर और दिसंबर के नाम लैटिन भाषा के उन शब्दों पर रखे गए हैं, जिनका अर्थ सातवां, आठवां, नवां और दसवां होता है। ये नाम तभी सार्थक थे जब रोम का नया वर्ष मार्च में प्रारंभ होता था। पहले यूनान के लोग दस दिनों का सप्ताह मनाते थे। रोमनों ने सात दिनों का सप्ताह मनाना शुरू किया। आज भी हमारा सप्ताह सात दिनों का होता है। रोमन ज्योतिष में राशिचक्र के आधार पर बीमारी दूर करने का उपाय भी बताया जाता था तथा भविष्यवाणियां भी की जाती थीं।

4.4.2 संस्कृति (Culture)

रोमन सांस्कृतिक जीवन पर यूनानी संस्कृति का महत्त्वपूर्ण प्रभाव दिखाई देता है। रोमन लोगों के सांस्कृतिक जीवन की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार थीं–

भाषा (Language)

रोमनों ने छठी शताब्दी ई.पू. में एस्टूरिया से लिखने की कला व लिपि प्राप्त कर ली थी परन्तु वहां साहित्यिक गतिविधियां देर से प्रारंभ हुईं। रोमनों ने यूनानियों से वर्णमाला का ज्ञान प्राप्त किया था। इस वर्णमाला के आधार पर लैटिन वर्णमाला का विकास

टिप्पणी

हुआ। लैटिन प्राचीन रोम की प्रसिद्ध भाषा थी। लैटिन का ज्ञान किए बिना कोई व्यक्ति प्रशासन में ऊंचा पद प्राप्त नहीं कर सकता था। रोमनों की यह भाषा यूरोप की आधुनिक भाषाओं की जननी कही जाती है। रोम में पेपाइरस (पेपीरस) तथा चमड़े का प्रयोग लिखने में करते थे।

शिक्षा (Education)

रोमन सभ्यता में प्रारंभ में शिक्षा का समुचित विकास नहीं हुआ था। आरम्भ में पाठशालाओं में शिक्षा प्राप्त करने का प्रचलन नहीं था तथा माता–पिता अपने बच्चों को घर पर ही शिक्षा देते थे। वे अपने बच्चों को सामाजिक तथा नैतिक शिक्षा प्रदान करते थे। परन्तु यूनानी प्रभाव के बाद रोमनों को शिक्षा के महत्त्व का ज्ञान हुआ। रोम के लोगों को साम्राज्य विस्तार के कारण सबसे पहले संवाद व सम्पर्क स्थापित करने के लिए साहित्य एवं दार्शनिक विचारों की शिक्षा की आवश्यकता थी। इसलिए यूनानी तथा रोमन साहित्य एवं दर्शन की शिक्षा की व्यवस्था की गई। अभी तक शिक्षा धनी लोगों तक सीमित थी जो घर पर ही अपने बच्चों को शिक्षा दिलवाते थे। बाद में यूनानी सम्पर्क के कारण कानून, इतिहास, विज्ञान, ज्योतिष एवं संगीत आदि की शिक्षा का प्रावधान हुआ। वास्तुकला चिकित्सा आदि विषयों की भी शिक्षा दी जाने लगी। साम्राज्य में बड़ी संख्या में स्कूल थे। रोम के सम्राट शिक्षा के विकास के लिए राज्य की तरफ से खूब अनुदान देते थे। निर्धन छात्रों को मुफ्त में शिक्षा दी जाती थी। लड़कियों को गृह कार्यों की शिक्षा दी जाती थी। 17 वर्ष का लड़का शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् रोम का नागरिक बन जाता था। रोम तथा एथेन्स उस समय के शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र थे। रोमन सम्राटों आगस्टस और लियस तथा हेड्रियन ने शिक्षा को काफी प्रोत्साहित किया था।

साहित्य (Literature)

रोमन सभ्यता में साहित्य का समुचित विकास हुआ। यद्यपि प्रारंभ में रोमन साहित्यकारों ने यूनानी साहित्य को आधार मानकर अपने ग्रन्थों की रचना की परन्तु बाद में मौलिक ग्रन्थों की रचना कर लैटिन भाषा के साहित्य को समृद्ध बनाया। रोमन साहित्य की सबसे बड़ी देन लैटिन भाषा है जिससे आगे चलकर यूरोप की अनेक भाषाओं का जन्म हुआ। लैटिन साहित्य की प्रमुख रचनाओं का विवरण इस प्रकार है–

(i) महाकाव्य (Epics) : महाकाव्यों की रचना करने वाले दो महान कवि हुए जिन्होंने अपने महाकाव्यों द्वारा लैटिन साहित्य को समृद्ध किया। ये थे– वर्जिल तथा होरेस। वर्जिल की गणना संसार के श्रेष्ठ कवियों में की जाती है। वह आगस्टस का दरबारी कवि था। उसकी तुलना होमर से की जाती है। उसने ईनिड नामक महाकाव्य लिखा। इस महाकाव्य में ट्राय के योद्धा ईनियस का चरित्र चित्रण है। इस महाकाव्य की तुलना होमर के काव्यों इलियड व ओडिसी से की जाती है। कीट्स ने इसका अंग्रेजी अनुवाद किया है। वर्जिल ने जौर्जिक्स तथा एक्लोज नामक काव्यों की रचना की। वर्जिल ने जौर्जिक्स में कृषि में लीन गांव वालों का सरल एवं मार्मिक चित्रण किया है। एक्लोज में ग्रामीण जीवन की सादगी एवं रस का वर्णन है। अपने काव्यों के द्वारा उसने प्राचीन काल के सद्गुणों पर जोर दिया।

टिप्पणी

होरेस की गणना रोम के ही नहीं अपितु विश्व के प्रसिद्ध कवियों में की जाती है। उसकी रचनाओं में तत्कालीन ग्राम्य जीवन की सुन्दर झांकी का विवरण मिलता है। ओडस तथा सटायर्स उसकी प्रमुख रचनाएं हैं। इसकी रचनाओं का सबसे अधिक अनुवाद हुआ है। "पायरा को" उसकी सबसे प्रसिद्ध कविता है।

(ii) गीतिकाव्य (Lyrical Poetry) : अपनी हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक कविताओं द्वारा लैटिन साहित्य को कुछ अन्य कवियों ने भी समृद्ध किया। इनमें प्रमुख हैं– ल्यूकेशियस, कैटुलस, ओविड तथा प्रोपर्टियस। इनकी रचनाओं को विश्व साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। ल्यूकैशियस ने यूनानी दर्शन के आनन्दवाद पर आधारित रचनाओं एवं कैटुलस को उनकी प्रेम आधारित कविताओं के लिए जाना जाता है। ओविड लैटिन भाषा का एक और महान कवि था। दांते ने उसे विश्व का महान कवि बताया। इसके ग्रन्थ 'प्रेम की कला' में तत्कालीन प्यार एवं व्यापार का सजीव चित्रण किया है। इस ग्रन्थ के कारण ओविड को 10 वर्ष का देश निकाला मिला था। उसने काव्य के माध्यम से कहानियां भी लिखीं। इनमें मेटामोफोसेस उसकी प्रसिद्ध रचना है। रोमन कवि प्रोपर्टियस अपनी प्रेमपूर्ण कविताओं के लिए प्रसिद्ध है।

(iii) नाटक (Dramas) : रोम के सार्वजनिक उत्सव के अवसर पर नाटक खेलने की परंपरा विकसित हुई। सेनेका उस समय रोम का प्रमुख नाटककार था। सम्राट जूलियस सीजर स्वयं भी एक उच्चकोटि का विद्वान था। उसने डिबेलो गैलिको तथा डिबेलो सिवेली नामक ग्रन्थों की रचना की, जिनमें गॉल तथा पाम्पे के साथ हुए सीजर के युद्धों का वर्णन है। मेलियस प्लोटस ने अनेक हास्य–काव्य नाटिकाओं की रचना की जिनका खूब मंचन किया गया। उसके 21 नाटक लैटिन साहित्य की प्रमुख रचनाएं माने जाते हैं। कैलिसियस स्टाटियस भी एक मौलिक नाटककार था। नाटककारों में टेरेंस का अपना ही अलग स्थान है। उसकी हास्य नाटिकाओं में सूक्ष्म एवं गंभीर व्यंग्य है। उसके 6 नाटक मिलते हैं।

(iv) इतिहास (History) : इतिहास लेखन में रोम के विद्वानों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रोम के इतिहासकारों में हेलियस, लिवी, टेसिटस तथा प्लूटार्क उल्लेखनीय हैं। रोमन के प्रथम इतिहासकार पोलिवियस ने रोम के प्यूनिक युद्धों का इतिहास लिखा। लिवि उच्च कोटि का इतिहासकार था। वह आगस्टस का समकालीन था (69–17 ई.पू.)। उसने "हिस्ट्री ऑफ दी रोमन अम्पायर" नामक ग्रन्थ की रचना की। उसके ग्रन्थ में 753 ई.पू. से आगस्टस के काल (30 ई.) तक के इतिहास का विवरण मिलता है। टैसिटस रोम का एक अन्य प्रसिद्ध इतिहासकार था। उसने एनल्स, हिस्ट्रीज तथा जर्मेनिया जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की। उसके दो ग्रंथों में समकालीन अराजकता एवं भ्रष्टाचार का वर्णन किया गया है। तीसरे ग्रंथ में बर्बर जर्मन कबीलों का विवरण है। जूलियस सीजर भी सेनानायक व राजनीतिज्ञ के साथ–साथ निबन्धकार व इतिहास लेखक भी था। उसने दो प्रमुख ग्रन्थों गाल के युद्ध तथा गृहयुद्ध की रचना की। 'गाल के युद्ध' नामक पुस्तक में फ्रांस में लड़ी गई लड़ाइयों का वर्णन किया है जबकि 'गृहयुद्ध' में

टिप्पणी

तत्कालीन रोम के गृहयुद्ध का सजीव चित्रण किया है। प्लूटार्क अन्तिम काल का प्रसिद्ध इतिहासकार था। उसने पेरलल लाइव्ज नामक ग्रंथ की रचना की। इस कृति में रोमन तथा यूनानी राजनीतिज्ञों एवं योद्धाओं का तुलनात्मक वर्णन किया गया है। उसने 46 प्रसिद्ध व्यक्तियों की जीवनियां भी लिखीं। इसके अतिरिक्त, हेलिटस, सिसरो आदि इतिहासकारों ने भी अनेक ग्रन्थों की रचना की।

(v) गद्य–साहित्य (Prose Literature) : रोम में गद्य साहित्य की भी काफी उन्नति हुई। गद्य में नाटक, उपन्यास, कहानियां आदि शामिल हैं। सेनेका रोम का महान नाटककार था। उसने दुःखान्त नाटकों की रचना की। गद्य लेखकों में सिसरो की गणना उल्लेखनीय है। उसे लैटिन साहित्य का निर्माता भी कहा जाता है। वह उच्च कोटि का वकील, वक्ता, राजनीतिज्ञ, निबंधकार एवं दार्शनिक था। उसे यूरोपियन गद्य का जन्मदाता कहा जाता है। ओरेशन्स उसका प्रसिद्ध ग्रंथ है। उसके ओल्डऐज तथा फ्रेंडशिप नामक निबंध महत्त्वपूर्ण हैं।

(vi) दर्शन (Philosophy) : रोमनों ने दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में भी व्यापक उन्नति की। इस क्षेत्र में भी रोमनों ने यूनानियों का अनुकरण किया। रोम में एपीक्यूरियन दर्शन तथा स्टोइक दर्शन का प्रसार हुआ। लूक्रीटियस ने आन द नेचर ऑफ थिंगस नामक पुस्तक के द्वारा एपीक्यूरिपन दर्शन की नींव रखी। वह दैवीय शक्तियों में विश्वास नहीं रखता था जबकि शांति व पवित्र ह्रदय का समर्थन किया। जीनो नामक विद्वान ने स्टोइक मत का प्रसार किया। उसके अनुसार सारा संसार एक शरीर है और बुद्धि तथा ईश्वर उसका ही एक रूप है। उसके मत में बुद्धि, प्रकृति, ईश्वर एक ही व्यक्ति के नाम हैं और ये ही संसार के सार हैं। सेनेका एक बहुत बड़ा दार्शनिक था। उसके अनुसार मनुष्य को प्राकृतिक नियमों के अनुसार जीवन बिताना चाहिए तथा सुख व दुख का सामना समान दृष्टि से करना चाहिए। पेनेक्टियस, एपिक्रिटस ने भी स्टोइक दर्शन का प्रचार किया। पेनीटूटस नामक दर्शनशास्त्री ने उस समय प्रचलित अन्धविश्वासों की आलोचना की और अद्वैतवाद का प्रचार किया। उसने कहा कि सभी को अपना बौद्धिक विकास करना चाहिए। उसने यूरोप के लोगों को राज्य के लिए कार्य करने को कहा। उसने रोम में निरंकुशतंत्र की स्थापना करने में भी सहायता की। उसकी शिक्षाओं से प्रेरित होकर रोम के अनेक शासक निरंकुश शक्ति का स्रोत बन गए।

दूसरा दर्शन स्फैप्टिकस मत था, जिसका प्रतिपादन ऐक्सटस एम्पिरिकस नामक दर्शनशास्त्री ने किया। उसने लोगों को बताया कि उन्हें समाज तथा समय के अनुसार ही चलना चाहिए, क्योंकि ज्ञान का निरादर एवं अज्ञान के अन्धकार में टटोलते फिरना भयंकर भूल है। उसकी विचारधारा को सीरिया के निवासी लूसियन ने 76 लघु पुस्तिकाओं में अपने संवादों द्वारा प्रकट किया। उसने अपनी पुस्तिकाओं के नाम मृतकों के संवाद, वीरांगनाएं आदि रखे।

टिप्पणी

ईसा की तीसरी सदी में प्लेटिनस नामक रहस्यवादी दार्शनिक ने प्लेटोनिक मत का प्रतिपादन किया। उसके मत को प्लेटोनिज्म भी कहा जाता है। उसके मत का प्रभाव ईसाई धर्म के साथ–साथ पश्चिम, मध्य तथा दक्षिण एशिया पर भी पड़ा। उसका विश्वास था : "परमात्मा के मानस में आत्मशक्ति से प्रेरित होकर प्रकृति तत्त्व और जीत तत्त्व का प्रादुर्भाव हुआ है।" उसके अनुसार : "जो बुद्धि को खो देते हैं वे जीवन–मरण के चक्कर में पड़े रहते हैं।" इस प्रकार रोम ने दर्शन के क्षेत्र में बहुत उन्नति की।

कला (Arts)

रोम में कला का उदय तीसरी शताब्दी ई.पू. में हुआ। रोमन कला में मौलिक तत्त्वों का अभाव था। रोम में कला का विकास, एटूस्कन एवं यूनानी प्रभाव में हुआ। रोम के कारीगर उपयोगितावादी थे। रोमन कला के विभिन्न रूपों का विवरण इस प्रकार है–

भवन निर्माण कला (Architecture)

रोमन कला की उत्कृष्टतम अभिव्यक्ति भवन निर्माण कला (स्थापत्य कला) में हुई। यद्यपि रोमनों ने मिस्र के 'पिरामिड' तथा 'चीन की दीवार' जैसे आश्चर्यजनक भवनों का निर्माण नहीं किया परन्तु उन्होंने स्थापत्य कला में कई आधुनिक प्रयोग किए। उन्होंने सबसे पहले कंक्रीट का प्रयोग किया। चूने, सीमेंट, बजरी तथा बालू को मिलाकर उन्होंने ऐसा मसाला तैयार किया जिससे ईंटों व पत्थरों को मजबूती से जोड़ा जा सके। विभिन्न स्थानों की खुदाई में प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि लौह कालीन रोम के लोग अपने भवनों में पत्थर, लकड़ी आदि का प्रयोग करते थे। उस समय के भवनों की विशेषता मेहराब, विशाल गुम्बद तथा गोलाकार छत थी। उन्होंने मेहराबों की सहायता से नगर द्वार, पुल, बड़े भवन, विजय स्मारक, अखाड़े आदि बनाए। रोमनों ने रोम तथा पोम्पी जैसे बड़े नगरों के बाजारों, सभागृहों, नाट्य गृहों, मंदिरों, महलों, स्नान गृहों को विजय महराबों से सजाया। सम्राट पोम्पी द्वारा बनवाया गया थियेटर तथा जूलियस सीजर द्वारा बनवाया गया सभागृह आश्चर्यजनक हैं। रोमन शासकों ने बड़ी संख्या में सड़कों, पुलों, कुओं, नहरों का निर्माण करवाया। रोम का नगर सबसे सुन्दर व दर्शनीय नगर बन गया था। भवनों में सुन्दरता के साथ–साथ मजबूती पर बहुत ध्यान दिया जाता था।

सम्राट आगस्टस का काल स्थापत्य कला का स्वर्ण काल कहा जाता है। इस समय में बनाए गए राजमहल शैली तथा सौन्दर्य के अदभुत नमूने हैं। उसने 28 ई.पू. में अपोलो के प्रसिद्ध मंदिर का निर्माण करवाया। यह संगमरमर का है। बेतलस का नाट्यगृह तथा मार्सेलस का प्रेक्षागृह जिनमें क्रमशः 7700 एवं 20,500 लोगों के बैठने की व्यवस्था थी, का निर्माण भी आगस्टस के काल में हुआ। रोम के भवनों में सीजर का शाही मंच, आगस्टस का पलेआइन पहाड़ी पर बनाया गया राजमहल, बेस्पासिन का विशालकाय महल, टिटस का विजय द्वार आदि प्रसिद्ध हैं। इन भवनों में यूनानी भवन निर्माण कला पद्धति को अपनाया गया था। इन भवनों या महलों में संगमरमर का प्रयोग भी किया गया था। इनकी सुन्दरता व सादगी देखते ही बनती है। 124 ई. का पेयन भवन रोमन वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है। इसके अतिरिक्त

टिप्पणी

रोम सम्राटों ने महामन्दिरों, सड़कों तथा पुलों आदि का निर्माण भी कराया था। डॉ. विपिन बिहारी सिन्हा के अनुसार : "रोम तथा अन्य नगरों के निवासियों को पानी देने के लिए पानी के पाइप लगाए गए थे, जिनके द्वारा पहाड़ी तथा झरनों की ढालों पर से होकर शहरों में पानी लाया जाता था। इन पाइपों में कुछ तो 60 किलोमीटर लम्बे थे।"

कोलोसियम (स्टेडियम) रोमन स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूने हैं। कोलोसियम एक गोलाकार थियेटर होता है जहां हजारों की संख्या में लोग बैठकर दासों व पशुओं के खेल देख सकते थे। रोम के कोलोसियम में यूनान की तीनों शैलियों डोरिक, आयनिक तथा कोरिन्थियन का प्रयोग हुआ है। इसमें 50,000 व्यक्ति एक साथ बैठकर खेल देख सकते थे। आगस्टस के शासनकाल में रोम की सबसे बड़ी इमारत मैकिसमस (स्टेडियम) का निर्माण हुआ जिसमें दो लाख पच्चीस हजार दर्शक बैठ सकते थे। पेयीयन (मंदिर) भी रोमन स्थापत्य कला के उल्लेखनीय नमूने हैं। इनमें देवताओं की मूर्तियों की स्थापना की जाती थी। आगस्टस, हेडियन, ट्राजन आदि सम्राटों ने पत्थर की मूर्तियों, चित्रकारी तथा नक्काशी के द्वारा भवनों को अत्यन्त आकर्षक बनाया था।

मूर्तिकला

रोम में मूर्तिकला का विकास साम्राज्यवादी युग में हुआ। उससे पहले की मूर्तियां बहुत कम प्राप्त होती हैं। रोमन मूर्तिकला भी यूनानी मूर्तिकला से प्रभावित थी। रोमन मूर्तिकार मनुष्य को यथावत् मूर्त करने के लिए मूर्तिकला का प्रयोग करते थे। रोमन मूर्तियों में शारीरिक बनावट के साथ–साथ चारित्रिक अभिव्यक्ति भी होती थी। इस क्षेत्र में रोमनों ने मौलिकता का परिचय दिया। इस समय की एक मूर्ति अन्जाम रोम की मूर्ति है। इस मूर्ति के बाल बिखरे हुए हैं, दाढ़ी बढ़ी हुई है तथा आंखें बाहर की तरफ निकली हुई हैं। यह मूर्ति उस समय की मूर्तिकला का सबसे अच्छा नमूना है। यह मूर्ति गणतंत्रकाल की है। रोम में देवी–देवताओं, सम्राटों तथा सरदारों की मूर्तियां बनाई जाती थीं। सम्राटों की मूर्तियां नगरों के चौराहों पर स्थापित की जाती थीं। सम्राट आगस्टस, मार्कस आरलोयिस तथा एण्टोनी की मूर्तियां कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। रोमन मूर्तिकारों ने मूर्तिकला की एक अन्य शैली विकसित की। इसमें सम्पूर्ण मूर्ति की अपेक्षा केवल मनुष्य के ऊपरी हिस्से (Bust) का निर्माण किया जाता था। मूर्तियां बनाने में संगमरमर, कांसा, सीमेंट तथा पत्थर का प्रयोग किया जाता था।

चित्रकला

लौहकालीन रोम में चित्रकला का असाधारण विकास हुआ। रोम की चित्रकला पर यूनानी चित्रकला का पूरा प्रभाव था। रोमन चित्रकारों ने प्रकृति चित्रण में यूनानियों से अधिक प्रगति कर ली थी। वे मकान के अन्दर दीवारों पर पेड़ों की कतारें इस प्रकार बनाते थे, मानो पेड़ों के बीच बैठे हों। ऐतिहासिक घटनाओं तथा युद्ध के चित्र भी बनाए जाते थे। हेड्रियन तथा ट्रोजन के शासनकाल के चित्र कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। कोलोसियम की मेहराब पर बना जुलूस का चित्र उस समय की चित्रकला का शानदार

नमूना है। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे चित्र भी देखने को मिलते हैं जिनमें युद्धों के दृश्य हैं।

रोमन साम्राज्य में बर्तनों तथा आभूषणों पर भी बहुत ही सुन्दर–सुन्दर चित्र बनाए जाते थे। इन चित्रों में अनेक रंगों तथा रेखाओं का बहुत ही कुशलतापूर्वक प्रयोग किया जाता था। रोमन चित्रकारी के नमूने सबसे पहले टर्की के राजमहलों से प्राप्त हुए थे। पोम्पी, रोम तथा हरक्यूलोनियस के खंडहरों में रोमन चित्रकारी के सुन्दर अवशेष मिलते हैं। वे महलों तथा गिरजाघरों की दीवारों पर चित्र बनाते थे। इस प्रकार के चित्र हेड्रियन तथा सम्राटों के काल में देखने को मिलते हैं।

टिप्पणी

संगीत कला (Music)– संगीत कला में भी रोमनों ने यूनानियों का अनुकरण किया। बांसुरी तथा लयर आदि इस समय के प्रसिद्ध वाद्य यन्त्र थे। नाटकों व खेल–तमाशों में भी संगीत का आयोजन होता था।

सड़कों का निर्माण (Construction of Roads)– रोम के सम्राटों ने साम्राज्य के दूरस्थ भागों को एक–दूसरे से मिलाने के लिए सड़कों का जाल सा बिछा दिया था। सड़कों के किनारे सरकारी कार्यालय तथा सार्वजनिक विद्यालय बने होते थे। कालान्तर में ऐसे केन्द्र नगरों के रूप में विकसित हुए। सड़कों को पक्का एवं मजबूत बनाने के लिए सबसे नीचे पत्थर बिछाए जाते थे, उनके ऊपर चूना तथा बालू से बने मसाले की तहें जमा दी जाती थीं। सड़कों से सेना, व्यापारिक सामान एवं युद्ध सामग्री एक स्थान से दूसरे स्थान तक बड़ी आसानी से पहुंचाई जा सकती थी। माना जाता है कि सीधी, समकोण पर मिलने वाली सड़कों का निर्माण सबसे पहले रोम में हुआ। सड़कों की सुन्दर व्यवस्था से ही वाक्य निकला था, "सभी सड़कें रोम को जाती हैं।"

अपनी प्रगति जांचिए

5. रोमन चिकित्सक गैलन ने चिकित्सा विज्ञान पर कितनी पुस्तकें लिखीं?

   (क) 100 (ख) 125

   (ग) 200 (घ) 150

6. शिक्षा प्राप्ति के बाद कितनी आयु में रोमन नवयुवक रोम का नागरिक बन जाता था?

   (क) 19 (ख) 18

   (ग) 17 (घ) 16

4.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (घ)
2. (ग)
3. (ख)
4. (क)

5. (घ)

6. (ग)

टिप्पणी

4.6 सारांश

753 ई.पू. में रोम नगर की स्थापना हुई। शीघ्र ही रोम नगर ने एक विशाल साम्राज्य का रूप धारण कर लिया। आरम्भ में रोम में राजतंत्र प्रचलित था। उसके बाद क्रमशः गणतंत्र तथा साम्राज्य काल की स्थापना हुई।

रोम में कार्यपालिका को कॉन्सुल कहा जाता था। इसके सदस्यों की संख्या दो थी, जिन्हें आमतौर पर कॉन्सुल ही कहा जाता था। कॉन्सुल का चुनाव एक नागरिक सभा द्वारा किया जाता था तथा इन्हें एक वर्ष के लिए चुना जाता था। दोनों कॉन्सुल को रोमन प्रशासन में समान अधिकार प्राप्त थे। इस प्रकार की व्यवस्था इसलिए की गई थी ताकि कोई कॉन्सुल निरंकुश न बन सके। दोनों कॉन्सुल एक दूसरे के कार्यों पर पूरी तरह निगरानी रखते थे। संकटकालीन परिस्थितियों में इन्हें हटाकर या इनमें से एक की डिक्टेटर के रूप में 6 महीने के लिए नियुक्ति की जाती थी। कभी–कभी रोमन लोग किसी व्यक्ति को जीवन भर के लिए भी डिक्टेटर नियुक्त कर देते थे। जूलियस सीजर को आजीवन डिक्टेटर नियुक्त किया गया था। कॉन्सुल सेनापति तथा मुख्य न्यायाधीश के रूप में भी कार्य करते थे।

रोम के प्रशासन में एक सभा होती थी, जिसे कॉमीसिया सेंचुरियाटा कहा जाता था। यह जनसाधारण नागरिकों की सभा होती थी। अपने अधिकारों को लेकर सभा तथा सीनेट के सदस्यों के बीच में एक लम्बे समय तक संघर्ष चला। क्योंकि सीनेट में पैट्रिशियन (अमीर वर्ग) तथा सभा में प्लीबियन (जनसाधारण) लोग भाग लेते थे। इस संघर्ष में प्लीबियनों को विजय प्राप्त हुई, जिससे प्रशासनिक कार्यों में सभा के सदस्यों की भूमिका बढ़ने लगी। लेकिन रोम में सभा का महत्त्व धीरे–धीरे कम होता चला गया।

रोमन साम्राज्य के प्रशासन में सीनेट एक शक्तिशाली संस्था थी। इसमें कुलीन वर्ग के लोगों का बहुमत था। परन्तु पैट्रिशियनों और प्लीबियनों के संघर्ष के पश्चात् जनसाधारण नागरिकों को भी सीनेट में भाग लेने का अधिकार मिल गया। सीनेट के सदस्य जीवन भर के लिए चुने जाते थे। इस संस्था के अधिकार बहुत विस्तृत थे। सीनेट की सहायता से कौंसिल शासन चलाते थे। सीनेट के प्रमुख कार्य– मजिस्ट्रेट की नियुक्ति करना, कानून बनाना, सन्धि–विग्रह करना, प्राण दण्ड देना, न्यायाधीशों की नियुक्ति करना आदि थे। आरम्भ में इसके सदस्यों की संख्या 380 से 500 तक थी, परन्तु जैसे–जैसे रोमन साम्राज्य का विस्तार होता गया वैसे–वैसे ही सीनेट के सदस्यों की संख्या भी बढ़ती चली गई। साम्राज्य काल में राजतंत्र की पुनः स्थापना से राजा का महत्त्व पुनः बढ़ गया जिससे सीनेट के अधिकारों में भी कुछ कमी आ गई।

राजतंत्र काल में रोमन साम्राज्य का मुखिया राजा कहलाता था। रोम में राजा या सम्राट को बहुत अधिक शक्तियां प्राप्त थीं। वह सभा तथा सीनेट की सहायता से

शासन चलाता था। वह देश का मुख्य प्रशासक, मुख्य सेनापति तथा मुख्य न्यायाधीश होता था।

टिप्पणी

साम्राज्य काल में रोम में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना हुई। जिसमें यूरोप के अनेक देश सम्मिलित थे। इतने विशाल साम्राज्य के प्रशासन को अकेला राजा या कौंसिल, सीनेट तथा सभा नहीं चला सकती थी। इसलिए रोम में समय–समय पर विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी, जिनमें प्रेटर, क्वेइस्टर, मजिस्ट्रेट, ट्रैव्यून तथा डिक्टेटर आदि सम्मिलित थे। इनकी नियुक्ति सभा और सीनेट के द्वारा की जाती थी।

रोमन साम्राज्य में सैनिक संगठन का बहुत महत्त्व था। वास्तव में रोमन साम्राज्य सैनिक शक्ति के बल पर ही टिका हुआ था, इसलिए सभी रोमन सम्राट सैनिक शक्ति के महत्त्व को समझते थे। वे विशाल सेना की भर्ती करते थे। जूलियस सीजर के पास 1,00,000 से भी अधिक सेना थी। आगस्टस के समय सैनिकों की संख्या 3,00,000 से भी अधिक थी।

पौराणिक काल से लेकर 5वीं शताब्दी ई.पू. तक रोमन के कानून अलिखित थे। रोमन कानूनों को बताने तथा उनकी व्याख्या करने का अधिकार केवल कुलीन वर्ग के लोगों के पास था। प्राचीन काल में उच्च वर्ग के लोगों के हितों को ध्यान में रखकर कानून बनाए जाते थे। ये कानून गरीबों (प्लीबियों) पर जबरदस्ती थोपे जाते थे। अतः प्लीबियनों ने अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष आरंभ कर दिया। इसके पश्चात् तो रोम की सरकार ने 10 लोगों की एक समिति को कानूनों को लिपिबद्ध करने के काम पर लगाया। 454 ई.पू. में कानूनों को 12 लकड़ी की पट्टियों पर लिखकर नगर के चौराहे पर लटका दिया गया। ये कानून 12 तख्तियों के कानून कहलाते थे।

प्राचीन काल में रोम में दो प्रकार के कानून प्रचलित थे– पहले वे कानून थे जो रोमनों पर लागू होते थे। इन्हें जुस सिविलिस कहा जाता था। दूसरे वे कानून थे जो विदेशियों तथा रोमनों पर समान रूप से लागू होते थे, उन्हें जुस जेण्टिअम् कहकर पुकारा जाता था। इन कानूनों के अनुसार न्याय का कार्य न्यायाधीश या पेंटर तथा सम्राट आदि करते थे।

जूलियस सीजर का जन्म 100 ई.पू. में एक कुलीन परिवार में हुआ था। उसके ह्रदय में जनसाधारण के प्रति अगाध प्रेम था तथा उनके हितों की रक्षा के लिए वह हमेशा तैयार रहता था। वह एक प्रसिद्ध रोमन सेनापति मारियस का भतीजा था। मारियस की पत्नी उसकी मौसी थी। वह योद्धा व महत्त्वाकांक्षी युवक था। 15 वर्ष की आयु में ही वह पादरी के लिए मनोनीत किया गया था। उसने एण्टोनियम जैसे प्रसिद्ध विद्वान (गुरु) से शिक्षा ग्रहण की थी। उसका उत्कर्ष एक साधारण सेनापति के रूप में हुआ था। उसने इसमें काफी प्रसिद्धि प्राप्त की थी तथा उसे वीरता का पदक मिला था। 68 ई.पू. में वह मजिस्ट्रेट बना तथा उसके बाद वह कई महत्त्वपूर्ण पदों पर रहा। अपनी प्रतिभा के बल पर वह स्पेन का गवर्नर बन गया था। रोम में विद्रोह को कुचल कर 46 ई.पू. में रोम का अधिनायक बन गया। सीनेट की बैठक में भाग लेते समय उसके साथी ब्रुटस व अन्य सीनेटरों ने उसकी हत्या करवा दी।

टिप्पणी

रोमन समाज स्पष्ट रूप से पदानुक्रमित था। इसमें कानूनी रूप से परिभाषित विशेषाधिकारों को विभिन्न वर्गों में आवंटित किया गया था और रोजमर्रा की जिंदगी में वर्गों के प्रति दृष्टिकोण में अनगिनत अनौपचारिक अंतर थे। विश्व के प्राचीन धर्मों की ही तरह रोम के प्राचीन धर्म में भी प्रकृति तथा उसकी विभिन्न शक्तियों की पूजा की जाती थी। रोमनों ने प्रकृति की विभिन्न शक्तियों का मानवीयकरण करके उनकी पूजा करना सिखाया। उनका विश्वास था कि देवता की विधिपूर्वक पूजा करने पर तथा भेंट चढ़ाने पर देवता प्रसन्न होता है तथा पूजा करने वाले को वांछित फल देता है। धर्म (रिलीजन) शब्द लैटिन भाषा के रिलिजियो से बना है जिसका अर्थ होता है विधि–विधान के अनुसार सम्पन्न किया गया कर्मकांड अथवा रिचुअल। रोम के धर्म में आध्यात्मिकता का अभाव था।

रोमन समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार थी। यह एक सुदृढ़ सामाजिक व आर्थिक संस्था थी। रोमन परिवार पितृसत्तात्मक था। पिता की आज्ञा का पालन परिवार के सभी सदस्यों को करना पड़ता था। पिता (मुखिया) घर के किसी भी सदस्य को दण्ड भी दे सकता था, यहां तक कि उसे बेचकर गुलाम बना सकता था।

लौहकालीन रोमन समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी। यद्यपि रोमन समाज पितृ प्रधान था और स्त्रियों के अधिकार कानून के द्वारा रक्षित नहीं थे, फिर भी परिवार में स्त्रियों का बहुत सम्मान किया जाता था। रोम की स्त्रियों में तीन गुणों की अपेक्षा की जाती थी– सतीत्व की रक्षा करना, पिता अथवा संरक्षक की आज्ञा का पालन करना तथा घर के कामकाज को सुन्दर ढंग से निपटाना। रोमन समाज में विवाह का उद्देश्य पुत्र उत्पन्न करना माना जाता था। रोमन माताएं स्वयं अपने बच्चे का पालन–पोषण करती थीं। सम्पत्ति पर भी स्त्रियों का पूर्ण अधिकार होता था। उस समय समाज में पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं थी। स्त्रियां सभी धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़कर भाग लेती थीं। उन्हें शिक्षा का अधिकार था। रोमन समाज में स्त्री की पवित्रता पर बल दिया जाता था। उस समय दहेज प्रथा भी प्रचलित थी। रोम में विवाह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न किए जाते थे। परन्तु तलाक लेने का अधिकार केवल पुरुषों को ही प्राप्त था। समाज में यह नियम था कि प्रत्येक स्त्री का कोई न कोई पुरुष संरक्षक होना चाहिए, भले ही वह पति हो, पिता हो, पति या निकट अथवा दूर का संबंधी।

रोम के लोगों में नैतिकता की भावना विद्यमान थी। प्रत्येक व्यक्ति अपने से बड़ों का आदर करता था तथा उनसे सलाह लेना व उसके अनुसार आचरण करना अपना धर्म मानते थे। प्लीबियन व दासों को अपनी मर्यादाओं की चेतना थी तथा वे अभिजात वर्ग का आदर करते थे। नागरिकों को बचपन से ही अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाता था। बच्चे अपने पिता के मार्गदर्शन में ही सदाचार, अनुशासन, खेलकूद, शस्त्राभ्यास, खेती व इतिहास एवं संस्कृति की शिक्षा लेते थे। इस प्रकार समाज में नैतिकता विद्यमान थी।

रोमन लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। रोम में खेती का कार्य पुरुष, स्त्रियां, लड़के तथा लड़कियां मिलकर करते थे। रोमन लोगों के खेत चौकोर होते थे। प्रत्येक किसान के पास लगभग तीन–चार एकड़ भूमि होती थी। प्राचीन काल में युद्धों के द्वारा

जीती गई भूमि पर भी कृषकों का अधिकार माना जाता था। परन्तु साम्राज्य काल में भूमि पर बड़े–बड़े जमींदारों का अधिकार हो गया। उन्होंने किसानों से भूमि खरीद ली। जमींदार किसानों तथा दासों से कृषि कार्य कराते थे।

टिप्पणी

रोम के लोग बहुदेववादी थे। प्रत्येक कुल या घर का अपना अलग देवता होता था। समाज में मूर्ति–पूजा, पशु–बलि, बाह्याडम्बरों तथा जादू–टोनों इत्यादि का बोलबाला था। रोमन लोगों को धर्म में बहुत विश्वास था। आरम्भ में रोम के निवासी बहुदेववादी होते हुए भी एक ईश्वर की उपासना करते थे। परन्तु जैसे ही वे यूनानियों के सम्पर्क में आए उनमें एक देवता के स्थान पर विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा का प्रचलन हो गया। इसके अतिरिक्त रोम के लोग देवता के रूप में राजा की पूजा करना भी अपना धर्म समझते थे। रोमन देवता भी मानव थे। अतः यूनानियों की तरह रोमनों ने भी अपने देवताओं को प्रसन्न करने तथा उनकी पूजा के लिए बड़े–बड़े मंदिरों का निर्माण करवाया था जिनमें बड़े हर्षोल्लास से पूजा की जाती थी। उनका विश्वास था कि देवता की विधिवत पूजा करने से और भेंट चढ़ाने से देवता प्रसन्न होते हैं तथा भेंट चढ़ाने वाले की इच्छा पूरी करते हैं। इसलिए देवताओं की पूजा बड़े धूम–धाम से की जाती थी। रोम में सार्वजनिक पूजा भी जोरों पर प्रचलित थी। मंदिरों में देवताओं की उपासना के लिए मूर्तियां बनाई जाती थीं। रोमन सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता धार्मिक उदारता एवं सहिष्णुता थी। रोम में सभी धर्मों के देवी–देवताओं का सम्मान किया जाता था।

लौहकालीन रोमन साम्राज्य ने विज्ञान के क्षेत्र में विशेष प्रगति नहीं की। वे इस क्षेत्र में भी यूनानियों के ऋणी हैं। रोम में विज्ञान के बारे में यह उक्ति प्रचलित थी, "रोमनों ने विज्ञान का उपयोग किया, अध्ययन नहीं।" रोमनों ने चिकित्सा शास्त्र में उल्लेखनीय प्रगति की। उन्होंने प्रसिद्ध यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेटीज की रचनाओं से व्यापक लाभ उठाया। आधुनिक अस्पतालों के संगठन की कल्पना रोमनों की देन है। रोम के प्रत्येक नगर में चिकित्सालय थे। रोम पहला सभ्य देश था, जहां निर्धन रोगियों को मुफ्त दवाइयां देने की व्यवस्था की गई। वे स्वास्थ्य एवं सफाई पर विशेष ध्यान देते थे। नगरों की सफाई, शुद्ध जल का प्रबंध, रोगियों के लिए अस्पताल की व्यवस्था आदि पर सरकार बहुत ध्यान देती थी। नगरों में शुद्ध जल प्राप्त हो, इस उद्देश्य से बड़े–बड़े ढके हुए हौज बने होते थे, जिनमें साफ किया हुआ पानी संचित किया जाता था। जूलियस सीजर चिकित्सकों पर विशेष कृपा रखता था और उन्हें विशेष अधिकार प्रदान करता था। सैनिकों की देखभाल के लिए भी अस्पताल और योग्य चिकित्सकों की व्यवस्था रहती थी। चिकित्सा विज्ञान संबंधी रोमनों के सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। प्रायः सभी नगरों तथा कस्बों में सरकारी अस्पताल और डाक्टर होते थे। चार्ल्स लिंगर के अनुसार यह रोम की एक बहुत बड़ी देन है। रोमन चिकित्सक गैलन ने चिकित्सा शास्त्र पर एक विश्वकोष बनाया और रक्त प्रवाह का पता लगाया। उसने चिकित्सा विज्ञान पर 150 पुस्तकें लिखीं। इसमें शरीर के विभिन्न अंगों का विस्तृत विवरण है। सेल्सस ने चीर–फाड़ (शल्य चिकित्सा) के बारे में लिखा। सोरेनस रोम का स्त्री रोग विशेषज्ञ था।

टिप्पणी

रोमनों ने एक नई, अलग संस्कृति विकसित नहीं की, बल्कि अन्य सभ्यताओं से केवल विषयों को आत्मसात किया। रोमन राज्य बनने के बाद से रोमन लोग यूनानियों से सांस्कृतिक रूप से हीन महसूस करते थे। भवन निर्माण कला, कला की एक शाखा थी, जिस पर रोम के लोगों ने सबसे उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था, जो शक्तिशाली हेलेनिक और एट्रसकेन प्रभावों के अंतर्गत विकसित हुई थी। रोमनों ने छठी शताब्दी ई.पू. में एस्टूरिया से लिखने की कला व लिपि प्राप्त कर ली थी परन्तु वहां साहित्यिक गतिविधियां देर से प्रारंभ हुई। रोमनों ने यूनानियों से वर्णमाला का ज्ञान प्राप्त किया था। इस वर्णमाला के आधार पर लैटिन वर्ण माला का विकास हुआ। लैटिन प्राचीन रोम की प्रसिद्ध भाषा थी। लैटिन का ज्ञान किए बिना कोई व्यक्ति प्रशासन में ऊंचा पद प्राप्त नहीं कर सकता था। रोमनों की यह भाषा यूरोप की आधुनिक भाषाओं की जननी कही जाती है। यूनानी प्रभाव के बाद रोमनों को शिक्षा के महत्त्व का ज्ञान हुआ। रोम के लोगों को साम्राज्य विस्तार के कारण सबसे पहले संवाद व सम्पर्क स्थापित करने के लिए साहित्य एवं दार्शनिक विचारों की शिक्षा की आवश्यकता थी। इसलिए यूनानी तथा रोमन साहित्य एवं दर्शन की शिक्षा की व्यवस्था की गई। अभी तक शिक्षा धनी लोगों तक सीमित थी जो घर पर ही अपने बच्चों को शिक्षा दिलवाते थे। बाद में यूनानी सम्पर्क के कारण कानून, इतिहास, विज्ञान, ज्योतिष एवं संगीत आदि की शिक्षा का प्रावधान हुआ। वास्तुकला चिकित्सा आदि विषयों की भी शिक्षा दी जाने लगी। साम्राज्य में बड़ी संख्या में स्कूल थे। रोम के सम्राट शिक्षा के विकास के लिए राज्य की तरफ से खूब अनुदान देते थे। निर्धन छात्रों को मुफ्त में शिक्षा दी जाती थी। लड़कियों को गृह कार्यों की शिक्षा दी जाती थी। 17 वर्ष का लड़का शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् रोम का नागरिक बन जाता था। रोम तथा एथेन्स उस समय के शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र थे।

4.7 मुख्य शब्दावली

- **प्लीबियन** : एक सामान्य व्यक्ति जो संरक्षक वर्ग का नहीं है।
- **पैट्रिशियन** : रोम के मूल कुलीन भूमि–स्वामी परिवारों के सदस्य।
- **सीनेट** : प्रतिष्ठित पुरुषों का एक समूह जिसने कौंसिल को सलाह दी। ज्यादातर मामलों में कौंसिल ने वही किया जो सीनेट ने सिफारिश की थी।
- **प्रेटर** : रोमन सरकार में एक उच्च स्तर का अधिकारी।
- **क्वेइस्टर** : रोमन सरकार का एक अधिकारी जो विभिन्न वित्तीय मामलों की देखरेख करता था।
- **ट्रिब्यून** : प्राचीन रोम में विभिन्न निर्वाचित अधिकारियों की उपाधि थी।
- **ग्लेडिएटर** : एक व्यक्ति जो रोमन दर्शकों के मनोरंजन के लिए लड़ता था।
- **ईसाई धर्म** : पूर्वी धर्म जो अंततः आधिकारिक रोमन धर्म बन गया।
- **कालीजीयम** : रोम की सबसे प्रसिद्ध इमारतों में से एक है।
- **लैटिन** : रोमन साम्राज्य की भाषा। यह मध्य युग में शिक्षा की भाषा भी थी।

टिप्पणी

- **क्वेस्टर** : रोम में सार्वजनिक अधिकारी जो आमतौर पर वित्त और प्रशासन के प्रभारी थे।
- **कोलोसियम** : कोलोसियम या कोलिसियम इटली देश के रोम नगर के मध्य निर्मित रोमन साम्राज्य का सबसे विशाल एलिप्टिकल एंफीथियेटर है।
- **अक्षांश** : किसी स्थान का अक्षांश (latitude), धरातल पर उस स्थान की "उत्तर से दक्षिण" की स्थिति को प्रदर्शित करता है।
- **देशान्तर** : किसी स्थान का देशांतर (Longitude), धरातल पर उस स्थान की "पूर्व से पश्चिम" की स्थिति को प्रदर्शित करता है।
- **पेपीरस** : पेपीरस से आशय पेपीरस के पौधों से बने मोटे कागज से है। इस कागज पर लिखे दस्तावेजों को भी पेपीरस ही कहते हैं।

4.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. प्राचीन रोम की राज्य संरचना के प्रमुख अंशों का परिचय दीजिए।
2. जूलियस सीजर द्वारा लागू किए गए सुधारों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
3. प्राचीन रोम में महिलाओं की स्थिति के बारे में बताइए।
4. रोम में लैटिन भाषा की महत्ता पर प्रकाश डालिए।
5. निम्न पर संक्षिप्त नोट लिखिए–
   (क) आचरण और व्यवहार
   (ख) संगीत कला
   (ग) सड़कों का निर्माण

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. प्राचीन रोमन साम्राज्य की राज्य संरचना एवं राजनीतिक इतिहास का विश्लेषण कीजिए।
2. प्राचीन रोम की सामाजिक आर्थिक तथा धार्मिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. प्राचीन रोम में विज्ञान एवं संस्कृति के विकास का विवेचन कीजिए।
4. जूलियस सीजर की उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।
5. निम्न की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
   (क) आगस्टस : रोमन इतिहास का स्वर्ण काल
   (ख) रोमन कानून
   (ग) राजकीय पंचांग में सुधार

टिप्पणी

4.9 सहायक पाठ्य सामग्री

1. मैरी बियर्ड, 2016, "ए हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट रोम" पेपरबैक, लिब्राईट
2. साइमन बेकर, 2007, "प्राचीन रोम : एक साम्राज्य का उदय और पतन", बीबीसी फिजिकल ऑडियो
3. रॉबर्ट डेवेलिन, 1985, "रोम में राजनीति का अभ्यास (366–167 ईसा पूर्व)", ब्रसेल्स : लैटोमस
4. एंड्रयू लिंटॉट, 1999, "रोमन गणराज्य का संविधान" ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
5. वर्नर एके, 2003, "अगस्टस का युग" ऑक्सफोर्ड : ब्लैकवेल प्रकाशन
6. डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी, 1967, "विश्व – इतिहास (प्राचीन काल)", हिंदी समिति (सूचना विभाग), उत्तर प्रदेश
7. अमार फारूकी, 2001, "अर्ली सोशियल फॉर्मेशन्स", द्वितीय संस्करण, मानक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
8. डॉ. गोपाल प्रसाद, 2013, "प्राचीन एवं मध्यकालीन विश्व", लक्ष्मी पब्लिशिंग हाऊस, रोहतक
9. डॉ. यशवीर सिंह एवं डॉ. उषा पंडित, 2019, "प्राचीन एवं मध्यकालीन विश्व", लक्ष्मी पुस्तक डिपो, भिवानी
10. डॉ. के.सी. श्रीवास्तव एवं डॉ. मोहम्मद जुनैद खां, 1990, "विश्व सभ्यता का इतिहास (आदिकाल से प्राचीन की समाप्ति तक)", उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
11. राजेश्वर प्रसाद, नारायण सिंह, 1982, "मध्य–पूर्व की प्राचीन जातियां और सभ्यताएं" भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
12. श्रीराम गोयल, 1955, "विश्व की प्राचीन सभ्यताएं", विश्वविद्यालय प्रकाशन
13. स्टैनफोर्ड मैक क्रूस, "रोमन साम्राज्य में जीवन", ब्रेन बुकस्टोर मक्राउज
14. उपेंद्र नारायण मुखर्जी, "विश्व सभ्यता का इतिहास", प्रकाशन केंद्र
15. एडकिंस, लेस्ली एंड रॉय, 1998, "प्राचीन रोम में जीवन के लिए हैंडबुक" ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

इकाई 5 प्राचीन चीन की सभ्यता

टिप्पणी

संरचना

5.0 परिचय
5.1 उद्देश्य
5.2 प्राचीन चीन की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास
  5.2.1 राज्य संरचना
  5.2.2 राजनीतिक इतिहास
5.3 प्राचीन चीन की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां
  5.3.1 शांग वंश
  5.3.2 चाऊ वंश
5.4 विज्ञान एवं संस्कृति
  5.4.1 विज्ञान
  5.4.2 संस्कृति
5.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
5.6 सारांश
5.7 मुख्य शब्दावली
5.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
5.9 सहायक पाठ्य सामग्री

5.0 परिचय

चीनी सभ्यता के निर्माण में शांग वंश एवं चाऊ वंश के शासकों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। शांग वंश के शासकों ने 1557 से 1050 ई.पू. या 1766 से 1122 ई.पू. तक शासन किया। चाऊ वंश (1050 ई.पू. अथवा 1122 ई.पू. से 249 ई.पू.) ने शांग वंश को पराजित करके एक विस्तृत राज्य का गठन किया। छोटे–छोटे राज्यों के पारस्परिक संघर्ष के कारण 249 ई.पू. में चाऊ वंश का पतन हो गया और चिन नामक एक नए राजवंश का उदय हुआ। इसी राजवंश के नाम पर इस देश का नाम चीन पड़ गया।

दूसरी सहस्त्राब्दि ई.पू. के मध्य से लेकर शताब्दी के अन्त तक चीन में शांग सभ्यता पहली ऐसी सभ्यता थी जिसमें एक प्रमुख सभ्यता की सभी विशेषताएं थीं। जिसमें धातु शोधन प्रक्रिया, शहरी बस्तियां, साथ ही ऐतिहासिक इमारतें, स्पष्ट रूप से स्तरीकृत समाज, जिसमें राजा, कुलीन वर्ग, जनसाधारण, एक राजनीतिक, धार्मिक राज्य तथा पहली बार चीन में लेखन मौजूद था। यह प्रथम ऐसी सभ्यता थी जिसके पुरातात्विक साक्ष्य और लिखित दस्तावेज एक दूसरे से मिलते–जुलते थे। अनेक विशेषताएं जो सैकड़ों सालों से चीनी सभ्यता के लिए जानी जाती थीं उनका मूल विकास शांग काल में ही हुआ। जिसमें प्रतीकात्मक (logographic) लिपि, पितृपूजा, विशालकाय परियोजनाओं में श्रमिकों की बड़े स्तर पर लामबंदी, नौकरशाही की शुरुआत और साठ दिनों पर आधारित परम्परागत कैलेण्डर सम्मिलित हैं।

प्रस्तुत इकाई में हम प्राचीन चीन की सभ्यता के विकास में शांग व चाऊ वंश की भूमिका, चीन की राज्य संरचना, राजनीतिक इतिहास, वहां की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्थितियां तथा चीन के विज्ञान एवं संस्कृति का अध्ययन करेंगे।

टिप्पणी

5.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- चीन के शांग वंश की राजनीतिक संरचना एवं इतिहास का वर्णन कर पाएंगे;
- चाऊ वंश की राजनीतिक संरचना एवं इतिहास को समझ पाएंगे;
- चीन की शांगकालीन और चाऊकालीन सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक स्थितियों को समझ पाएंगे;
- चीन की प्राचीन सभ्यता में विज्ञान के क्षेत्र में हुए विकास का अध्ययन कर पाएंगे;
- प्राचीन चीन के सांस्कृतिक जीवन को समझ पाएंगे।

5.2 प्राचीन चीन की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास

चीन की सभ्यता में दो राजवंशों, शांग वंश व चाऊ वंश का विशेष योगदान रहा है। चीन के इन्हीं दो वंशों की राज्य संरचना तथा राजनीतिक इतिहास को क्रमशः इस प्रकार समझा जा सकता है–

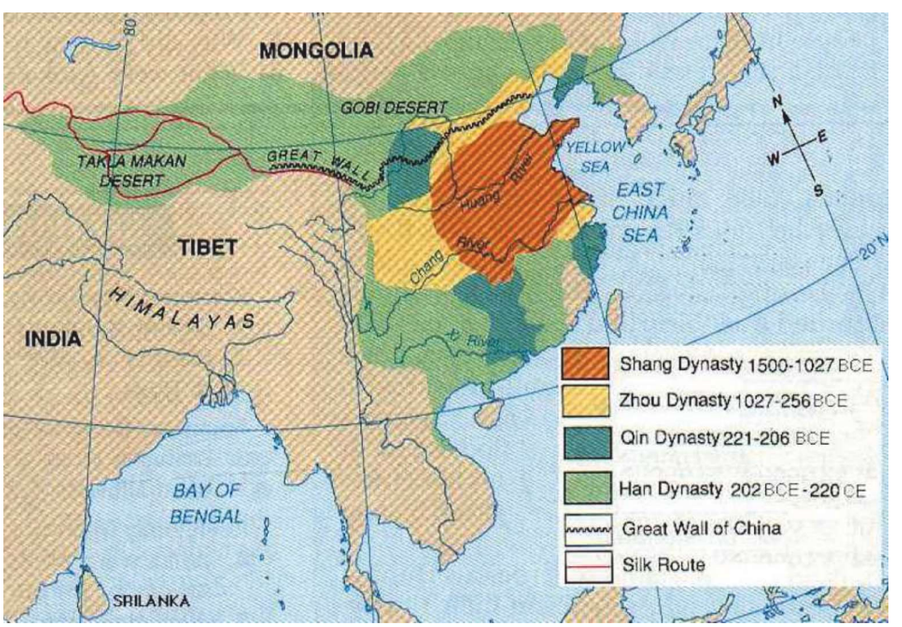

5.2.1 राज्य संरचना (State Structure)

चीनी सभ्यता के अंतर्गत शांग एवं चाऊ वंश की राज्य संरचना का वर्णन यहां किया जा रहा है–

• शांग वंश की राज्य संरचना (State Structure of Shang Dynesty)

मूल रूप से जिया राजवंश (21वीं – 17वीं शताब्दी ईसा पूर्व) के दौरान पीली नदी के निचले क्षेत्रों में रहने वाली एक जनजाति, शांग राजवंश की स्थापना 1675 ईसा पूर्व में 'जी' के अत्याचारी शासन, (जिया के अंतिम सम्राट) को उखाड़ फेंकने के बाद की गई

थी। शांग की राजधानी हमेशा यिन (हेनान प्रांत के आन्यांग शहर में जियाओतुन गांव) में स्थित थी, इसे 'यिन शांग' के नाम से भी जाना जाता है।

टिप्पणी

चीन के उत्तरी भाग पर शांग राजाओं द्वारा शासन किया गया था। शांग वंश की सरकार में राजा की प्रमुख भूमिका थी। राजा को अधिकारियों के एक पदानुक्रम द्वारा समर्थित किया गया था जिनके विशेष कार्य होते थे। स्थानीय अभिजात वर्ग और जनजातीय प्रमुखों ने राजा के अनुमोदन से राज्य के केंद्र से दूर स्थित केंद्रों पर नियंत्रण किया। शांग राजवंश एक वंशानुगत राजतंत्र था जिसकी अध्यक्षता एक राजा करता था। सरकार लोकतंत्र का एक रूप थी जिसमें राजा की मुख्य भूमिका धार्मिक थी। शांग राजा भौतिक दुनिया और परमात्मा के बीच सबसे महत्वपूर्ण था। शांग ने उच्च देव की पूजा की, और राजा को वह व्यक्ति माना गया जो अपने शाही पूर्वजों के माध्यम से देवता के साथ संवाद कर सकता था। इस प्रकार, अनुष्ठानों ने राजा के शासन में एक बड़ी भूमिका निभाई–विशेष रूप से, दिव्य चूक और संकेतों की व्याख्या शाही निर्णय लेने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी।

राजशाही का उत्तराधिकारी पुरुष होता था। आमतौर पर राजशाही पिता से पुत्र और बड़े भाई से छोटे भाई तक जाती थी। राजा और उसका वंश शांग राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक संरचना के केंद्र में था, और लोग राज्य या उसके संस्थानों की बजाय राजा के प्रति वफादार थे। राजा सरकार के मामलों को अपना निजी व्यवसाय मानता था और सार्वजनिक अधिकारी शासक की व्यक्तिगत सेवा के रूप में अपने कार्यों को अंजाम देते थे।

इस प्रकार की सरकार में शामिल लोग, राजा और उनके कुलीन, भाग्य बताने वाले और राज्यपाल थे। शांग राजा प्राचीन विश्व के कई शासकों (उदाहरण के लिए, मेसोपोटामिया में पाए जाने वाले), उच्च पुजारियों के साथ–साथ राजनीतिक और सैन्य नेताओं की तरह थे। जैसा कि ओरेकल हड्डी के शिलालेखों से पता चलता है, राजा के मुख्य कार्यों में से एक अपने शाही पूर्वजों के लिए बलिदान देना था। शांग राजवंश अपने महलों और मंदिरों के साथ, सरकार के एक धार्मिक समारोह केंद्र के रूप में काम करता था। यह अपनी कार्यशालाओं और घरों के साथ शाही राजधानी के दिल में स्थित होता था, जो पूरी तरह से एक मुद्रांकित दीवार से घिरा हुआ था। राजधानी और भूमि जो इसे घेरती थी, सीधे राजा द्वारा नियंत्रित की जाती थी। इसके अलावा, बहुत सी भूमि अधीनस्थ प्रभुओं के अधीन थी, जो राजा की आज्ञा मानते थे। शांग साम्राज्य आसपास के राज्यों और प्रमुखों का एक परिसंघ था जिसने उत्तरी चीन के अधिकांश हिस्से पर कब्जा किया । अपने चरम पर, यह एक दुर्जेय शक्ति रही होगी। शांग राजाओं ने समय–समय पर अपनी राजधानी स्थानांतरित की। पुरातत्वविद शांग राजवंश की पहली राजधानियों में से एक के साथ 'झेंग्झौ' शहर की पहचान करते हैं, शायद राजधानी को पारंपरिक रूप से 'बो' या 'एओ' के रूप में जाना जाता है।

कुलीनों को यह सुनिश्चित करना था कि राजा को भेंट देने के लिए धन इकट्ठा किया गया और राजधानी भेजा गया या नहीं। उन्होंने शाही सेना के लिए सैनिक प्रदान किए और मजदूरों को शाही परियोजनाओं पर काम करने के लिए भेजा, जैसे मंदिरों या शाही महलों का निर्माण, या बाढ़ से बचाव आदि। राजा को सलाह देने का कर्तव्य भी कुलीनों का था कि उन्हें किन नीतियों का पालन करना चाहिए। शांग सेना ने

टिप्पणी

पड़ोसी एशियाई बर्बरों के साथ लगातार युद्ध लड़े, जिसमें आंतरिक एशियाई मैदानों से खानाबदोश शामिल थे। ओरेकल हड्डियों पर शिलालेख बार–बार ऐसे बर्बर लोगों के बारे में चिंता व्यक्त करते हैं, जो शांग और उनके सहयोगियों की सभ्य दुनिया की सीमाओं से परे रहते थे। ऐसा लगता है कि शांग राजाओं ने अपनी राजधानी में लगभग एक हजार सैनिकों की एक सेना को बनाए रखा था और व्यक्तिगत रूप से इस बल का लड़ाई में नेतृत्व करते थे।

जब एक बड़ी ताकत की आवश्यकता होती थी, तो राजा अपने कुलीनों से अपने क्षेत्रों से सेना जुटाने और शाही सेना में योगदान देने का आह्वान करते थे। सभी आवश्यक उपकरणों, कवच और हथियारों के साथ इन सैनिकों को प्रस्तुत करने के लिए कुलीनों को बाध्य किया गया था। अधीनस्थ राजाओं और प्रमुखों को भी आकस्मिक योगदान करने के लिए कहा जाता था। इस तरह शांग जल्दी से दस हजार से अधिक सेनाओं को एकत्र करने में सक्षम थे। इनमें से अधिकांश सैनिकों को एक अभियान की अवधि के लिए सैनिकों के रूप में नियुक्त किया जाता था। वे पैदल सेना, विभिन्न प्रकार के पत्थर और कांस्य हथियारों से लैस थे, जिनमें भाले, पोल–कुल्हाड़ी, मिश्रित धनुष और चमड़े के हेलमेट शामिल थे।

राजा के पास प्रत्येक नगर–राज्य पर शासन करने के लिए कुलीनों को नियुक्त करने की शक्ति थी। इसके अतिरिक्त, राजा को यह कहने की शक्ति थी कि फसलों को कब बोया जा सकता है। इसके अलावा, कुलीनों को आक्रमणकारियों से शहर के राज्य की रक्षा के लिए सैनिकों की भर्ती करने का अधिकार था। सिंहासन हासिल करने का एकमात्र तरीका उत्तराधिकार था जो राजा के छोटे भाई या सबसे बड़े बेटे होने के नाते मिलता था। एक प्रसिद्ध शासक 'वू डिंग' था। वह अन्य सम्राटों की तुलना में अधिक सफल था जो 'पान गेंग' (शांग राजवंश में एक सम्राट) के बाद बना था, क्योंकि वह लोगों के प्रति दयालु और सम्मानजनक था। इसके अलावा, उसने शांग राजवंश के साम्राज्य का विस्तार किया और अनेक युद्धों के माध्यम से भूमि प्राप्त की। उसके शासनकाल में ज्योतिष और चिकित्सा में सुधार हुआ। आम लोगों के साथ कुछ साल बिताने के बाद, यह व्याख्या की जा सकती है कि उसके द्वारा लागू किए गए कानून लोगों की दैनिक समस्याओं में मदद करेंगे। अंत में, उसका शीर्ष सलाहकार 'गण पान' था। एक अन्य प्रसिद्ध सम्राट राजा 'झोउ' था। वह अत्याचारी था और वासना से भरा था। उसके शासन में साम्राज्य का पतन हो गया। झोउ स्वार्थी था और उसने अपनी नैतिकता को छोड़ दिया। इसे ध्यान में रखते हुए, उसने ऐसे कानून बनाए जो उच्च करों और खर्चों को लागू करते थे। दाजी, झोउ की पत्नी, उसकी सलाहकार थी, और उसने अपने नकारात्मक प्रभाव वाले कार्यों से सम्राट को प्रोत्साहित किया। वह किसी और की नहीं सुनता था।

• चाऊ वंश की राज्य संरचना (State Structure of Zhou Dynesty)

श्रीराम गोयल के अनुसार राजनीतिक तौर पर संघर्षरत होते हुए भी परवर्ती चाऊ युग सांस्कृतिक व्यवस्थापन, प्रगति तथा प्रसार का युग था। इस युग में एक राजा के नेतृत्व में एक शक्तिशाली केंद्रीय सरकार थी। समस्त शासन व्यवस्था का केंद्र बिंदु सम्राट होता था। इस काल में राज्य को एक विशाल परिवार, अधीन राज्यों को उसकी शाखाएं

तथा राजा को पिता के समान समझा जाता था। राजा आदर एवं श्रद्धा का पात्र होता था। लोग उसे ईश्वर पुत्र कहकर उसके प्रति असीम भक्ति रखते थे।

टिप्पणी

राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि समझा जाता था। वह निरंकुश था और उसकी इच्छा सर्वोपरि होती थी, किंतु वह निरंकुश होते हुए भी स्वेच्छाचारी नहीं था। वह देश की प्रथाओं का खयाल रखता था। राजा की सहायता के लिए एक प्रधानमंत्री और 6 सामान्य मंत्री होते थे। राजा ईश्वरीय अनुमति और 'ते' के कारण शासन करता था। शुरू में 'ते' का अर्थ जादुई शक्ति था। कन्फ्यूशियस के धर्म में इसको वांग और उसके पूर्वजों द्वारा ईश्वरीय आज्ञाओं के अनुकरण द्वारा अर्जित 'पुण्य' के अर्थ में लिया गया। व्यावहारिक तौर पर वांग की सत्ता उसकी योग्यता पर निर्भर थी। असल में केवल कुछ प्रारंभिक राजा ही अपने पद के साथ इंसाफ कर पाए। उनके उत्तराधिकारी तो केवल धर्माधीश रह गए। वास्तविक सत्ता तो उनके अधीन सामंतों ने हथिया ली। परंतु चाऊ शासकों की उपाधि 'वांग' को धारण करने का साहस चौथी शताब्दी ई.पू. तक कोई नहीं कर पाया।

साम्राज्य की विशालता के कारण चाऊ शासकों ने अपने संपूर्ण साम्राज्य को विभिन्न प्रांतों में विभक्त किया। प्रत्येक प्रांत में एक गवर्नर होता था जो राजा द्वारा नियुक्त किया जाता था। गवर्नर अपने समस्त कार्यों के लिए सम्राट के प्रति उत्तरदायी होता था। आमतौर पर गवर्नर के पद पर शासक के परिवार के सदस्य ही नियुक्त हुआ करते थे, क्योंकि उन्हीं पर शासक, अन्य लोगों की तुलना में ज्यादा विश्वास कर सकता था। प्रांत में गवर्नर के कार्य लगभग वही हुआ करते थे जो केंद्र में सम्राट के होते थे, अर्थात अपने प्रांतों में शांति स्थापित करना, प्रजा को न्याय प्रदान करना, प्रजा से कर एकत्रित करना तथा अपनी प्रजा की शत्रुओं से रक्षा करना आदि। प्रांत में सेना भी रखी जाती थी जो गवर्नर के अधीन होती थी। इन प्रांतों को स्वायत्त शासन (Autonomy) के अधिकार थे। चूंकि यातायात और संचार के साधन बहुत ही सीमित थे, अतः प्रांतीय शासक केंद्रीय सरकार के खिलाफ जल्दी–जल्दी विद्रोह करते थे। प्रांतों में गवर्नर के अतिरिक्त अन्य बहुत से कर्मचारी होते थे जो अपने समस्त कार्यों के लिए कुछ राजा के प्रति तथा कुछ गवर्नर के प्रति उत्तरदायी होते थे। जो कर्मचारी सम्राट के प्रति उत्तरदायी होते थे, वे सम्राट द्वारा नियुक्त किए जाते थे। इनका कार्यक्षेत्र गवर्नर की तरह विस्तृत होता था। यही कर्मचारी एक ओर अपने विभाग से संबंधित कार्यों को देखते थे, तो दूसरी ओर गवर्नर पर अंकुश रखते थे तथा उसकी प्रत्येक गतिविधि की सूचना राजा को देते थे। इस प्रकार गवर्नर स्वतंत्र होते हुए भी राजा के अंकुश में रहता था। प्रशासन के कार्य को राजा बड़े–बड़े पदाधिकारियों की सहायता से चलाता था। ये पदाधिकारी अधिकतर सामंत वर्ग के होते थे। परंतु उन लोगों की नियुक्ति एक प्रतियोगिता परीक्षा द्वारा की जाती थी। कहा जाता है कि प्रशासकीय अधिकारियों की नियुक्ति के लिए एक लोक सेवा आयोग होता था। इन परीक्षाओं में राजनीति, तर्कशास्त्र, आचार–शास्त्र, कविता आदि विषयों पर प्रश्न पूछे जाते थे। कोई भी व्यक्ति इसमें उत्तीर्ण होकर सरकारी पद प्राप्त कर सकता था। योग्यता ही इसके लिए एक मात्र अनिवार्य वस्तु थी। एक आधुनिक चीनी विद्वान ने इस व्यवस्था पर टिप्पणी करते हुए लिखा है, "जब प्राचीन चीन में अफसरों की नियुक्ति और कर्तव्यों की व्यवस्था का अध्ययन करते हैं तो हमें पूर्वजों की भावना और योग्यता की प्रशंसा करनी पड़ती है।"

टिप्पणी

राजनीतिक व्यवस्था में नगर सबसे छोटी इकाई थी। नगर का प्रमुख अधिकारी नगराधिकारी होता था। इनकी नियुक्ति शासक द्वारा की जाती थी। शासक उसी व्यक्ति को नगराधिकारी नियुक्त करता था जो शिक्षित होता था तथा जिसे शासन का अनुभव होता था। कन्फ्यूशियस की बुद्धिमत्ता से लाभान्वित होने के लिए शासक ने उसको नगराधिकारी नियुक्त किया था। नगराधिकारी को नगर में लगभग वे सारे अधिकार मिले हुए थे जो प्रांत में गवर्नर को प्राप्त होते थे। नगर में शांति और सुव्यवस्था स्थापित करना, जनता की आवश्यकताओं से संबंधित वस्तुओं का प्रबंध करना, न्याय करना, करों की वसूली करना, अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर नियंत्रण रखना आदि नगराधिकारी के कर्तव्य थे। नगराधिकारी अपने समस्त कार्यों के लिए शासक के प्रति उत्तरदायी होता था। अपने अधीन विभिन्न कर्मचारियों की नियुक्ति नगराधिकारी स्वयं करता था।

चाऊ युग में कानून बहुत कम तथा दंड कठोर थे। युद्ध में बहुत शौर्य प्रदर्शन किया जाता था। संभवतः बर्बर जातियों पर विजय हासिल करने के पश्चात शत्रुओं के मृत भक्षण करने की प्रथा प्रचलित थी। हालांकि चीनियों के पारस्परिक युद्धों में ऐसा नहीं किया जाता था। सामंतवादी युग में युद्धों के नियम कुछ स्थिर हो गए थे। चीनी शासक यद्यपि साम्राज्यवादी प्रवृत्ति के शासक नहीं थे और न ही उन्होंने कभी चीन की सीमा से बाहर किसी देश पर आक्रमण किया, फिर भी चीनी शासक अपने साम्राज्य में अनुशासित और प्रशिक्षित सेना रखते थे। वास्तव में चीनी सम्राट अपने साम्राज्य में सेना का संगठन दो कारणों से करते थे– एक तो अपने राज्य की आक्रमणकारियों से रक्षा के लिए तथा दूसरे विभिन्न प्रांतों के गवर्नरों को अपने नियंत्रण में रखने और विद्रोह करने वालों को दंडित करने के लिए। सम्राट की सेना दो भागों में विभक्त थी– घुड़सवार सेना तथा पैदल सेना। पैदल सेना की तुलना में घुड़सवार सेना का ज्यादा महत्व था। युद्ध में पैदल सैनिक आगे की पंक्ति में होते थे तथा घुड़सवार सैनिक शत्रु के चारों ओर चक्रव्यूह बनाकर आक्रमण करते थे। चाऊ शासकों के काल में सैनिक प्रशिक्षण के लिए सैनिक विद्यालयों की स्थापना की गई थी।

चाऊ शासकों ने सामंत शाहों की शक्तियों को कुचल दिया था, लेकिन इसके बावजूद कुछ सामंतों ने अपनी शक्ति बनाए रखी। देश को जिलों में बांटा गया था और सबसे छोटे जिले का मुख्याधिकारी ड्यूक (Duke) होता था। पांच जिलों का एक मुख्याधिकारी होता था, जिसे चांग (Chang) कहते थे, जबकि दस जिलों के एक मुख्याधिकारी को सिऊ (Siu) कहते थे। तीस जिलों के मुखिया को सुपीरियर (Superior) कहते थे। सभी उच्च तथा उत्तरदायी प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति केंद्र सरकार द्वारा होती थी। न्याय देने के लिए सामंत जिम्मेदार थे। चाऊ शासक समय–समय पर अपने साम्राज्य का दौरा करते थे।

5.2.2 राजनीति इतिहास (Political History)

चीनी सभ्यता के अंतर्गत शांग एवं चाऊ वंश के राजनीतिक इतिहास को क्रमशः इस प्रकार समझा जा सकता है–

• शांग वंश का राजनीतिक इतिहास (Political History of Shang Dynesty)

शांग राजवंश पहला चीनी शाही राजवंश है जिसके लिए हमारे पास वास्तविक दस्तावेजी सबूत हैं। चूंकि शांग वंश बहुत प्राचीन है, इसलिए स्रोत अस्पष्ट हैं। हमें यह

टिप्पणी

भी पता नहीं है कि शांग राजवंश ने चीन की पीली नदी घाटी पर अपना शासन कब शुरू किया। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह ईसा पूर्व 1700 के आसपास था, जबकि अन्य इसे बाद का मानते हैं, अर्थात 1558 ई.पू. का। जो भी हो, जिया राजवंश के पश्चात् शांग राजवंश ने शासन किया जो लगभग 2070 ईसा पूर्व से लगभग 1600 ई.पू. तक एक प्रसिद्ध शासक परिवार था। हमारे पास जिया के लिए कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं है, हालांकि उनके पास शायद एक लेखन प्रणाली थी। एर्लिटौ साइटों से पुरातात्विक साक्ष्य इस विचार को समर्थन देते हैं कि इस समय उत्तरी चीन में एक जटिल संस्कृति पहले से ही उत्पन्न हुई थी।

सौभाग्य से हमारे लिए, शांग ने अपने जिया पूर्ववर्तियों की तुलना में कुछ स्पष्ट रिकॉर्ड छोड़ दिए हैं। शांग युग के पारंपरिक स्रोतों में बम्बू एनल्स और सिमा कियान द्वारा लिखित रिकाड्र्स ऑफ द ग्रैंड हिस्टोरियन शामिल हैं। ये रिकॉर्ड शांग काल की तुलना में बहुत बाद में लिखे गए थे; लगभग 145 से 135 ईसा पूर्व तक सिमा कियान का जन्म भी नहीं हुआ था। नतीजतन, आधुनिक इतिहासकारों ने शांग राजवंश के अस्तित्व के बारे में तब तक काफी संदेह किया जब तक कि पुरातत्व ने चामत्कारिक रूप से कुछ प्रमाण प्रदान नहीं किया।

20वीं शताब्दी की शुरुआत में, पुरातत्वविदों ने कछुए के गोले या बैलों के कंधे की ब्लेड जैसी बड़ी, सपाट जानवरों की हड्डियों पर अंकित चीनी लेखन का एक प्रारंभिक रूप (या दुर्लभ मामलों में चित्रित) पाया। इन हड्डियों को तब आग में डाल दिया गया था, और गर्मी से विकसित होने वाली दरारें भविष्य के बारे में भविष्यवाणी करने या अपने ग्राहक को यह बताने में मदद करेगी कि क्या उनकी प्रार्थना का जवाब दिया जाएगा।

इन हड्डियों को दैवीय हड्डियां कहा जाता है, इन जादुई दैव्य उपकरणों ने हमें सबूत दिया कि शांग राजवंश वास्तव में मौजूद था। कुछ साधक जिन्होंने ओरेकल हड्डियों के माध्यम से देवताओं के प्रश्न पूछे थे, वे स्वयं सम्राट थे या दरबार के अधिकारी थे।

कई मामलों में, शांग राजवंश की हड्डियों के प्रमाण उस समय के बारे में दर्ज की गई परंपरा से काफी मेल खाते थे, जो उस समय के बम्बू एनल्स और ग्रैंड हिस्टोरियन के रिकॉर्ड के बारे में थे। फिर भी, इस बात से किसी को आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए कि शांग राजवंश के शासकों की सूची में अभी भी अंतराल और विसंगतियां हैं। आखिरकार, शांग राजवंश ने बहुत पहले चीन पर शासन किया।

• चाऊ वंश का राजनीतिक इतिहास (Political History of Zhou Dynesty)

शांग वंश के पश्चात चीन में चाऊ वंश का शासन आरंभ हुआ। चीन के इतिहास में इस युग का विशेष स्थान है क्योंकि इस समय चीन का सर्वतोमुखी विकास हुआ। इस राजवंश में लगभग 37 सम्राट हुए जिन्होंने 100 वर्ष तक शासन किया। अनेक कारणों से इस राजवंश के काल को चीनी इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता था। इस काल में सभ्यता और संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। दर्शन के क्षेत्र में यह युग अत्यंत प्रसिद्ध है। धातुओं के प्रयोग, कागज, छपाई तथा बारूद के आविष्कार तथा कला–कौशल, ज्ञान–विज्ञान के लिए यह राजवंश इतिहास में अमर माना जाता है।

टिप्पणी

विश्वविख्यात विचारक लाओत्से (Laotse) और कन्फ्यूशियस (Confucius) इसी युग में पैदा हुए थे। तानयुनसान नामक आधुनिक विद्वान ने चाऊ वंश की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि, 'जब हम चाऊ वंश में लिखित 'चाऊ ली' नामक पुस्तक पढ़ते हैं तो हमें अपने पूर्वजों की भावना और योग्यता की प्रशंसा करनी पड़ती है।"

चाऊ वंश के उत्थान से चीन के इतिहास पर प्रकाश डालने वाले स्रोत प्रचुरतर तथा ज्यादा विश्वसनीय होने लगते हैं। इस वंश की स्थापना 1122 या 1050 ई.पू. में वू–वांग ने की थी। चाऊ मूलतः वेई नदी घाटी का एक राज्य था। यह उस समय चीन की पश्चिमी सीमा पर था, इसलिए वू–वांग को 'पश्चिमी नरेश' कहा जाता था। चाऊ राजाओं ने अपने साम्राज्य और चीनी सभ्यता के प्रभाव क्षेत्र को विस्तृत किया। उनके इतिहास को दो युगों में विभाजित किया जा सकता है– प्रारंभिक और परवर्ती। प्रारंभिक चाऊ युग (1122 या 1050 से लगभग 750 ई.पू.) में चाऊ सम्राट बहुत शक्तिशाली थे। उनकी राजधानी पश्चिम में वेई की घाटी में चंगान (आधुनिक शियान–फू) के पास थी, इसलिए इस युग को पश्चिमी चाऊ युग भी कहते हैं। परंतु दसवीं शताब्दी ई.पू. से उनकी शक्ति सामंतों एवं जागीरदारों की महत्वाकांक्षा और बर्बर आक्रमणों के कारण घटने लगी। अतः परिणामस्वरूप 750 ई.पू. के लगभग बर्बरों के आक्रमणों से सुरक्षा के लिए राजधानी पूर्व से हटाकर पश्चिम में लोयांग (आधुनिक होनान–फू के पास) में स्थापित की गई। इसलिए परवर्ती चाऊ युग को (लगभग 750 से 249 ई.पू.) पूर्वी चाऊ युग भी कहा जाता है।

अपनी प्रगति जांचिए

1. शांग राजवंश की स्थापना कब हुई थी?

   (क) 1672 ई.पू. (ख) 1675 ई.पू.

   (ग) 1677 ई.पू. (घ) 1678 ई.पू.

2. चाऊ काल में तीस जिलों के मुखिया को क्या कहा जाता था?

   (क) ड्यूक (ख) सिऊ

   (ग) सुपीरियर (घ) चांग

5.3 प्राचीन चीन की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियां

सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दृष्टिकोण से चाऊ युग में चीन में सामंतवादी व्यवस्था प्रचलित थी। उन दिनों चीन में विदेशी आक्रमण बहुत हुआ करते थे। बाहरी आक्रमण से देश की रक्षा करने के लिए एक निश्चित व्यवस्था की जरूरत थी। अतः इस कार्य को कुछ वीर एवं साहसी पुरुषों को सौंप दिया गया। फलस्वरूप इन लोगों के हाथ में सैनिक और देश नियंत्रण संबंधी अधिकार आ गए। इस वर्ग का प्रभाव बढ़ता चला गया। कालांतर में ये लोग सामंत और सरदार कहलाने लगे। ये सामंत इतने शक्तिशाली हो गए कि केंद्रीय सत्ता छिन्न–भिन्न होकर समाप्त–सी हो गई। चाऊ राजवंश पतन की ओर अग्रसर हो गया। देश अनेक छोटे–छोटे सामंती राज्यों में विभक्त हो गया। फलस्वरूप चाऊ वंश के अधीन बहुत थोड़ा भू–भाग रह गया और उससे

कहीं शक्तिशाली अनेक अर्द्ध–स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गए। इन राज्यों के लोग चाऊ सम्राट को परमाधीश्वर मानते थे। चाऊकालीन धर्म में स्वर्ग की आज्ञा की अवधारणा (Mandate of Heaven) विकसित की गई थी।

टिप्पणी

5.3.1 शांग वंश (Shang Dynesty)

चीन का क्रमबद्ध इतिहास शांग वंश से ही आरंभ होता है। इस वंश का शासनकाल 1766 से 1122 ई.पू. तक माना जाता है। इसी काल से सभ्यता का विकास आरंभ हुआ। इस राजवंश में 28 शासक हुए जिन्होंने लगभग 644 वर्षों तक शासन किया। यह चीन में कांस्ययुगीन सभ्यता का समय था। इस वंश के काल में चीन ने बहुत उन्नति की।

सामाजिक स्थिति (Social Condition)

शांगकालीन समाज को 6 वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। इसमें राजा एवं उसके संबंधी, कुलीन एवं सेना, कारीगर, व्यापारी, किसान एवं दास सम्मिलित थे। उनकी सामाजिक व्यवस्था पितृसत्तात्मक थी। शांग शासक अपने पूर्वजों की पूजा करने के लिए अनेक अनुष्ठान करते थे। इस एक अनुष्ठान के लिए वे अनेक पशुओं की बलि चढ़ा देते थे। ये अपने पूर्वजों की पूजा अपनी रक्षा के लिए तथा दूरदर्शिता जाग्रत करने के लिए करते थे। शांग शासक सारी भूमि पर नियंत्रण रखते थे। अपनी शक्ति का विस्तार करने के लिए राजा अपने छोटे भाइयों और भतीजों के अधीन छोटे–छोटे राज्य स्थापित करते थे। राजा की मृत्यु होने पर सत्ता उसके छोटे भाई को प्राप्त हो जाती थी। कभी–कभी राजा के पुत्र को भी उसका साम्राज्य मिल जाता था। प्राचीन चीन के सामाजिक पिरामिड में राजा एवं उसका परिवार सबसे ऊपर था। समाज में इनका सर्वाधिक सम्मान था। शांग शासक भव्य राजमहलों का निर्माण करते थे। इनमें कई बड़े–बड़े हॉल होते थे जिनमें सबसे बड़ा 180 फीट लंबा तथा 30 फीट चौड़ा था। महलों के नीचे बड़े–बड़े तहखाने होते थे जिनमें बहुत मात्रा में अनाज व अन्य सामान का भंडारण किया जाता था। जब राजा की मृत्यु होती थी तो उसे एक बहुत विशाल कब्र में नक्काशीदार पत्थर के टुकड़ों तथा सोने, कांसे आदि से बनी वस्तुओं के साथ दफना दिया जाता था। इसके अतिरिक्त शाही कब्र में अनेक दासों को जिंदा या सिर काट कर दफनाया जाता था।

राजा के पश्चात कुलीन वर्ग एवं सेना को समाज में दूसरा स्थान प्राप्त था। कुलीन वर्ग शांग राजधानी अंगयांग में केंद्रित था तथा आस–पास के क्षेत्रों की देखभाल करता था। यह वर्ग युद्धबंदियों को दास बनाकर उनसे कार्य करवाता था। यह वर्ग दासों और किसानों की मेहनत पर जीता था तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता था। शांग सेना का उनके कौशल के कारण बहुत सम्मान किया जाता था। शांग सेना के दो उपभाग थे– पैदल सेना एवं रथ सेना। रथ सेना शिकार एवं युद्ध कौशल के लिए जानी जाती थी। पुरातात्विक साक्ष्य यह सिद्ध करते हैं कि परवर्ती शांग काल में युद्ध में घोड़ों का प्रयोग होता था।

शांग समाज के मध्यम वर्ग में कारीगर सम्मिलित थे। इनका सबसे बड़ा योगदान कांसे के काम में था जिसे चीन के लोगों ने 1500 ई.पू. के आस–पास विकसित कर लिया था। साधारणतः कांसे के हथियार और मृदभांड बनाए जाते थे परंतु कांसे की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृतियां अनुष्ठान वाहिकाएं एवं खजाना थीं। 1920 एवं 1930 के

टिप्पणी

दशक में पुरातात्विक खोजों में ये कृतियां काफी संख्या में प्राप्त हुई थीं। कांसा बहुत महंगी धातु थी जिसके निर्माण पर कुलीनों का नियंत्रण था। ऐसा माना जाता है कि शांग कुलीन एवं शाही वर्ग को कांसे की वस्तुओं विशेष रूप से शराब वाहिकाओं एवं अलंकृत संरचनाओं के साथ दफनाया जाता था। शांगकालीन व्यापारी वर्ग के विषय में हमारी जानकारी बहुत सीमित है। प्राप्त स्रोतों से ज्ञात होता है कि व्यापारी विभिन्न अन्य सभ्यताओं (जैसे हड़प्पा सभ्यता) के साथ लंबी दूरी का व्यापार करते थे। हड़प्पा सभ्यता के कुछ स्थलों पर शांगकालीन मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं। व्यापार के कारण पीली नदी घाटी एवं यांगत्सि नदी घाटी के बीच संबंधों में वृद्धि हुई। पाल एवं बेहतर नौकायान तकनीक के आविष्कार के कारण व्यापार को उत्तर में कोरिया तक विस्तृत किया जा सका। व्यापारी वर्ग मूर्तिकारों व अन्य कारीगरों द्वारा निर्मित वस्तुओं का व्यापार करते थे। इसके अतिरिक्त शांगकालीन व्यापारी रेशम का व्यापार भी करते थे।

किसानों का एक बहुत बड़ा वर्ग गांवों में धनी भू–स्वामियों के यहां किरायेदार के रूप में रहता था। उनकी सेवाओं के बदले में उनके स्वामी उन्हें कृषि करने के लिए थोड़ी–सी भूमि दे देते थे तथा उनकी सुरक्षा करते थे। किसानों को कृषि के लिए परंपरागत उपकरण दिए जाते थे जिससे बहुत कम उत्पादन होता था। उत्पादन का कुछ हिस्सा किसानों को दिया जाता था। किसान नवपाषाणिक ढंग के बने मकानों में रहते थे। किसानों का जीवन अभावों तथा कठोर परिस्थितियों के बीच ही गुजरता था।

शांग वंश के काल में दासों की एक बड़ी संख्या होती थी। ज्यादातर दास युद्ध बंदी होते थे। कृषि कार्य तथा बड़े–बड़े भवन बनाने में ये कड़ी मेहनत किया करते थे। दासों के साथ बहुत ही अमानुषिक व्यवहार किया जाता था। काम करवाते समय इनकी गर्दन में रस्सी डाली जाती थी तथा इनके पीछे कोड़े लिए निरीक्षक रहते थे। इनको भोजन में मोटे से मोटा अनाज दिया जाता था तथा इनके स्वामी अपनी इच्छा से इनकी कभी भी हत्या कर सकते थे। स्वामी की मृत्यु होने पर अक्सर उसके दासों को नर बलि के तौर पर पशु बलि के साथ जिन्दा दफना दिया जाता था। कुल मिलाकर दासों की स्थिति शोचनीय थी।

आर्थिक स्थिति (Economic Condition)

शांगकालीन अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। कृषि कार्य में हल का प्रयोग होने लगा था। कृषि के विकास में उर्वर भूमि तथा सिंचाई की सुविधाओं ने अभूतपूर्व योगदान दिया। बाढ़ से बचाव के लिए नदियों पर बांध बने थे। शांग काल में बाजरा मुख्य फसल थी परंतु गेहूं और चावल की खेती भी की जाती थी। रेशम उत्पादन में उस समय चीन पूरे विश्व में विख्यात था। शाही भूमि में कृषि के अतिरिक्त उत्पादन से शाही राजवंश एवं अन्य उच्च वर्गों का काम चलता था। बड़े–बड़े शाही चरागाहों से बलि और मांस के लिए पशु मिल जाते थे। शांग लोग पशुपालन भी करते थे तथा कुत्ता, सूअर और भेड़ पालते थे। सामंतों द्वारा चालित हस्तशिल्प उद्योग भी बहुत समृद्धशील था। कांसे का काम शांग सभ्यता का प्रतीक था। बड़ी–बड़ी कार्यशालाओं में उच्च स्तर का प्रयोग करके वस्तुएं तैयार की जाती थीं। शांग वंश के काल में लोगों ने मृदभांड एवं चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने की बेहतर तकनीक का आविष्कार कर लिया था। लोगों ने कताई में भी महारत हासिल कर ली थी। शांग वंश के अंतिम काल में नगरों में हर प्रकार के

कारोबार में लगे हुए व्यापारी अस्तित्व में आए। मछली पालन भी एक उद्योग के रूप में विकसित हुआ।

टिप्पणी

शाही कारखानों में कांसे के बर्तन एवं अन्य उपकरणों को बनाने के लिए काफी मजदूर भरे होते थे। कांसे के वाद्य यंत्र, औजार, हथियार आदि बनाए जाते थे। पुरातात्विक उत्खननों से बहुत से शांगकालीन कारखानों का पता चला है जो अधिकांशतः नगर के बाहर होते थे। कुछ स्थलों से लोहे के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। उस काल में कांसे की वस्तुएं तैयार करना आधुनिकता का प्रतीक माना जाता था क्योंकि इससे लोग कलाकारी और रचनात्मकता के उच्च स्तर तक पहुंच पाते थे। कपड़ा उद्योग में कारीगरों ने एक ऐसे करघे का आविष्कार किया जो उत्तम कोटि के रेशमी कपड़े का निर्माण करता था। इसके अतिरिक्त शांग लोगों ने चिकित्सा, यातायात एवं खगोल विद्या में भी उल्लेखनीय प्रगति की। इस काल के दौरान महत्वपूर्ण घटनाओं को कछुए के खोल एवं पशुओं की हड्डियों पर ओरेकल लिपि द्वारा अंकित किया जाता था।

धार्मिक स्थिति (Religious Condition)

शांगकालीन धर्म दो विश्वासों का सम्मिश्रण था– जीवात्मा एवं पूर्वजों की उपासना। जीवात्मा एक ऐसा विश्वास है जिसके अनुसार प्राकृतिक संसार में सभी वस्तुओं में आत्मा होती है। पूर्वजों की उपासना एक ऐसा विश्वास है जिसके अनुसार किसी भी परिवार के मृत सदस्यों की आत्मा उसके परिवार और संबंधियों के चारों ओर विद्यमान रहती है तथा जीवित सदस्यों को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त ये पूर्वज जीवित वंशज एवं शक्तिशाली देवताओं के मध्य बिचौलिये का काम करते थे। पूर्वजों को उनकी वरीयता के अनुसार स्थान दिया जाता था। क्योंकि ये पूर्वज अपने वंशजों को नुकसान भी पहुंचा सकते थे और लाभ भी, इसलिए उनके क्रोध से बचने के लिए तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनको संतुष्ट करना अति आवश्यक था। पूर्वजों की स्मृति में बड़ी–बड़ी दावतें दी जाती थीं।

शांग युग के लोग एकेश्वरवादी नहीं थे। यद्यपि वे एक शक्तिशाली अजगर में विश्वास करते थे जो नदियों, झीलों तथा समुद्रों में रहता था। कालांतर में यह अजगर चीनी शासकों का प्रतीक बन गया। इसके अतिरिक्त उस समय वायु, सूर्य, चंद्र आदि देवताओं की उपासना भी की जाती थी। शांग युग के लोग 'शांगदी' नामक महान देवता को भी पूजते थे जो मानव भाग्य एवं प्राकृतिक शक्तियों को नियंत्रित करता था। शांग शासक अकसर बलि चढ़ाकर शांगदी देवता को प्रसन्न करने के लिए अपने पूर्वजों का आह्वान करते थे। सार्वजनिक त्योहारों पर शांग लोग इन देवताओं को सम्मानित करते थे। गांववासी वसंत के समय अच्छी फसल के लिए तथा पतझड़ में देवताओं को भरपूर एवं अच्छी फसल का धन्यवाद करने के लिए त्योहार मनाते थे।

शांग धर्म में पुजारियों का बहुत महत्व था। कुछ पुजारी तो पूर्वजों की आत्माओं के दैव्य संदेशों की व्याख्या करके भविष्यवाणी करने का प्रयास करते थे। ऐसा करने के लिए ये लोग ओरेकल हड्डियों का प्रयोग करते थे। पुजारी इन हड्डियों को गर्म करते थे तथा इनमें उत्पन्न हुई दरारों की राजा की मदद से व्याख्या करते थे। कुछ विद्वानों का मत है कि इसमें राजा का नाम भी शामिल होता था। अतः इन हड्डियों से शांगकालीन इतिहास को समझने में बहुत सहायता मिली है।

टिप्पणी

शांगकालीन धर्म में बलि का बहुत महत्व था। पूर्वजों को प्रसन्न करने के लिए अधिकांशतः पशुओं की बलि दी जाती थी। हालांकि नर बलि भी प्रचलित थी। शांग युग के लोग अलंकृत कब्रें बनाते थे। इन कब्रों में ये अकसर कुछ वस्तुएं जैसे बर्तन, हथियार इत्यादि रख देते थे क्योंकि उनका विश्वास था कि ये वस्तुएं मृत व्यक्ति के आगामी जीवन में काम आ सकती हैं। शासक की कब्र में तो कभी–कभी मनुष्य और घोड़ों को भी दफनाया जाता था। शांगकाल की हजारों ऐसी कब्रों को उत्खनन से खोजा गया है जो उनकी संस्कृति की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं। अतः शांग लोग पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे।

5.3.2 चाऊ वंश (Zhou Dynesty)

शांग वंश के पश्चात चीन में चाऊ वंश का शासन आरंभ हुआ। चीन के इतिहास में इस युग का विशेष स्थान है क्योंकि इस समय चीन का सर्वांगीण विकास हुआ। इस राजवंश में लगभग 37 सम्राट हुए जिन्होंने सौ वर्ष तक शासन किया। अनेक कारणों से इस राजवंश के काल को चीनी इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता था। इस काल में सभ्यता और संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से चाऊ युग में चीन में सामंतवादी व्यवस्था प्रचलित थी।

सामाजिक स्थिति (Social Condition)

चीन के अन्य किसी शाही पदक्रम की तरह चाऊ वंश ने भी सामाजिक वर्गों या लोगों के बीच कठोर श्रेणी की व्यवस्था अपनाई। इस व्यवस्था के अनुसार सम्राट सबसे ऊंची श्रेणी पर था तथा वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति था। इसके पश्चात अन्य शाही सदस्य आते थे। तत्पश्चात सामंत तथा अन्य वर्गों के लोग आते थे।

चाऊ वंश में राजा या सम्राट सबसे ऊपर था। सम्राट के बाद केवल उसके पुत्र या सगे–संबंधी ही शासक बन सकते थे। साम्राज्य में सम्राट के पास सर्वाधिक शक्ति, सर्वाधिक संपत्ति तथा सर्वाधिक सम्मान होता था। चीन की शाही व्यवस्था में सम्राट के पास ही सर्वाधिक अधिकार एवं जिम्मेदारियां होती थीं और उसे ईश्वर का पुत्र माना जाता था। सम्राट अंतिम निर्णयकर्ता होता था तथा उसके निर्णय पर कोई प्रश्न नहीं उठा सकता था।

सम्राट के पश्चात शाही पदक्रम में राजकुमार का स्थान आता था। वह चीन के सम्राट का उत्तराधिकारी होता था तथा उसे अपने भविष्य में उपयोगी सभी प्रकार के विशेष प्रशिक्षण दिए जाते थे। केवल सम्राट की मृत्यु की स्थिति में या सम्राट के द्वारा अपनी शक्तियां सौंपने के निर्णय की स्थिति में ही राजकुमार सम्राट बनकर साम्राज्य पर शासन कर सकता था। इसके पश्चात सामंतों का स्थान था। उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वे आजीवन सम्राट की सेवा करें। उन्हें विशेष शक्तियां एवं अधिकार दिए जाते थे। सामंतों में भी एक सामाजिक पदक्रम व्यवस्था अपनाई जाती थी जो इस प्रकार है–

- **गोंग** : चीनी सामंतों के ये प्रथम सदस्य होते थे जो शांग राजवंश से आए थे।
- **होऊ** : चाऊ वंश में इस देवता को होऊ का दर्जा दिया गया था।
- **बो** : यह शाही श्रेणी 'किन' नामक देवता को दी जाती थी।

- **जी** : यह श्रेणी 'चू' देवता को प्रदान की गई थी।
- **नान** : चाऊ राजवंश में सामंतों में यह सबसे निम्न श्रेणी होती थी।

टिप्पणी

चाऊ समाज की मूल इकाई परिवार थी। चाऊ युग में समाज तीन तरह के परिवारों में विभाजित था– सम्राट और उसका परिवार, सामंत परिवार तथा कृषक परिवार। प्रत्येक वर्ग के परिवार से यह अपेक्षित था कि वह अन्य वर्गों को अपनी सेवाएं देकर अपना सदाचार प्रदर्शित करे। सम्राट यह सदाचार सामंत परिवारों को भूमि प्रदान करके प्रदर्शित करते थे। सामंत को प्रदान की जाने वाली भूमि को फीफ कहा जाता था। यह सामंत परिवारों की ही संपत्ति होती थी जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे जाती थी। इस भूमि के बदले में सामंत परिवार सम्राट को भेंट देकर उसके प्रति अपनी निष्ठा प्रकट करते थे। यह भेंट या तो बहुमूल्य उपहार देकर या युद्ध के दौरान सम्राट के लिए सेना भेजकर दी जाती थी।

किसान सामंतों की भूमि पर अपना जीवन व्यतीत करते थे। कुछ भू–स्वामी बहुत लालची होते थे तथा किसानों की हैसियत से ज्यादा उन्हें देने के लिए बाध्य करते थे। यद्यपि किसान दास नहीं थे तथा कभी भी भूमि छोड़ सकते थे। चीनी कविता की प्रारंभिक पुस्तक 'बुक ऑफ सांग्स' (गीतों का ग्रंथ) में एक किसान ने भू–स्वामी की शिकायत की है। चीन में किसानों का जीवन बहुत हद तक राज्य द्वारा नियंत्रित होता था। उनके विवाह आदि तथा ज्यादातर उत्सव एवं त्योहार बसंत ऋतु में मनाए जाते थे। उच्च वर्ग के लोगों का जीवन साधारण किसानों के जीवन से बहुत भिन्न था। उच्च वर्ग के सदस्य या तो छोटे जागीरदार और सामंत थे या राजकर्मचारी, लिपिक, ज्योतिष और पुजारी। वे बहुत से कुलों में विभक्त थे। प्रत्येक कुल का कोई काल्पनिक आदिपूर्वज– कोई देवता, प्राचीन योद्धा, राजा आदि होता था। एक ही कुल के लड़के–लड़कियों के बीच विवाह निषेध था। परंतु मामा की पुत्री या बुआ की पुत्री से विवाह करना स्वीकार्य था क्योंकि उनके कुल भिन्न होते थे। आमतौर पर चीनी युवक अपने मातृ कुल की किसी लड़की से विवाह करते थे। कुल का बंधन प्रादेशिक नहीं था बल्कि धार्मिक था। परिवार का प्रधान पिता होता था, हालांकि प्राचीनतर मातृसत्तात्मक प्रथा के चिह्न भी मिलते हैं। अपने परिवार की हर प्रकार से रक्षा करना, परिवार के लिए भोजन की व्यवस्था करना, बच्चों की शिक्षा का प्रबंध करना आदि पुरुषों का कर्तव्य था। घर का प्रबंध सुव्यवस्थित ढंग से करना, शिशु जनना, उनका पालन–पोषण करना गृहिणी के कार्य थे। इसके अतिरिक्त स्त्रियां सूत कातना, कपड़ा बुनना, कपड़ा रंगना, रेशम के कीड़े पालना, रेशमी कपड़ों का निर्माण करना, पशुपालन आदि कार्य करती थीं। समाज में स्त्री में विनम्रता, आज्ञाकारिता, दयालुता, लज्जा, परिश्रम आदि गुणों का होना आवश्यक समझा जाता था। उच्च वर्ग की स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार था। कई पढ़ी–लिखी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है। आजीवन अविवाहित रहना अनैतिक समझा जाता था। विवाह आवश्यक था और पुत्रोत्पत्ति मनुष्य का प्रधान लक्ष्य होता था। विवाह कुल और परिवार के नैरन्तर्य के लिए आवश्यक होने के कारण धूमधाम से मनाए जाते थे। उस समय उप–पत्नियां रखने की प्रथा भी प्रचलित थी। बच्चों को उनके जन्मदिन के अनुसार भाग्यशाली या दुर्भाग्यशाली समझा जाता था। अनेक माता–पिता अशुभ दिन पर उत्पन्न हुए बच्चे को त्याग देते थे।

टिप्पणी

चाऊ समाज में आमोद–प्रमोद का विशेष महत्व था। इसके अनेक कारण थे– प्रथम शारीरिक विकास के लिए, द्वितीय देवी–देवताओं की पूजा करने के लिए तथा तृतीय मनोरंजन के लिए। आखेट, तैराकी, कुश्ती, मुक्केबाजी, फुटबाल, मछली पकड़ना, नृत्य, संगीत आदि आमोद के मुख्य साधन थे, जिनमें सभी चीनी स्त्री–पुरुष भाग लेते थे। आखेट आमोद का प्रमुख साधन था। इसमें ज्यादातर शासक, संभ्रांत तथा धनी वर्ग के व्यक्ति भाग लेते थे। भाला, तीर कमान, तलवार, बरछा आदि की सहायता से आखेट किया जाता था। बत्तख, हंस, जंगली सूअर, हिरन, जंगली सांड, लोमड़ी, खरगोश आदि का शिकार किया जाता था। जाल तथा शिकारी कुत्तों का भी प्रयोग किया जाता था। आखेट में भाग लेना राजा का प्रमुख कर्तव्य माना जाता था क्योंकि यह एक ओर शासक को हमेशा चुस्त और सजग रखता था, तो दूसरी ओर यह आमोद का भी एक साधन था।

आखेट के अतिरिक्त नृत्य आमोद का दूसरा प्रमुख साधन था। इसमें स्त्री–पुरुष, धनी–निर्धन, शासक तथा प्रजा, सभी भाग लेते थे। नृत्य की शिक्षा विभिन्न विद्यालयों में दी जाती थी। चाऊ युग में कई प्रकार के नृत्य प्रचलित थे। प्रथम, पंखों को छितरा कर। यह नृत्य झाड़–फूंक के लिए किया जाता था। दूसरा, पंखों को मिलाकर नृत्य किया जाता था। यह नृत्य देवी–देवताओं की पूजा के समय किया जाता था। दुम नृत्य, जिसमें नर्तक बैल की दुम लेकर नृत्य करते थे। यह नृत्य सूखे आदि के अभिशाप का प्रभाव दूर करने के लिए तथा कृषि की देवी को प्रसन्न करने के लिए किया जाता था। डोल नृत्य इस बात का प्रतीक था कि चीनी नागरिक अपनी सुरक्षा के प्रति सजग हैं। कुल्हाड़ी नृत्य इस बात का द्योतक था कि चीनवासी युद्ध के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। उक्त नृत्य तत्कालीन चीनी सभ्यता की समाप्ति तक जीवित रहें। नृत्य में शरीर के प्रत्येक भाग का उचित ढंग से प्रयोग किया जाता था। हाथ–पैर तथा अन्य अंगों को एक साथ संगीत की लय पर संचालित किया जाता था। संगीत में त्रितुरी बाजा, बांसुरी आदि वाद्य यंत्र प्रचलित थे। तत्कालीन सभ्यता में संगीत की उन्नति तथा उसके विकास की जिम्मेदारी शासक की थी। महान दार्शनिक कन्फ्यूशियस तथा ताडो ने भी संगीत की शिक्षा को विशेष महत्व दिया है।

आखेट एवं नृत्य के अतिरिक्त फुटबाल भी आमोद का एक प्रमुख साधन था। वैसे तो इस खेल में आम प्रजा भाग ले सकती थी परंतु सैनिकों को इस खेल के लिए विशेष तौर पर प्रोत्साहित किया जाता था। इस खेल में लकड़ी के खंभों तथा जाल का प्रयोग किया जाता था। गेंद चमड़े की बनी होती थी। इसके अतिरिक्त कुश्ती, तैराकी, व्यायाम आदि भी आमोद के साधन थे। समय–समय पर इसकी प्रतियोगिताएं भी होती थीं। मछली पकड़ना भी आमोद का एक साधन था। मछली पकड़ने के लिए जाल, कांटा तथा नाव आदि का प्रयोग किया जाता था। पुरुषों के समान स्त्रियां भी आमोद–प्रमोद में हिस्सा लेती थीं, परंतु इस क्षेत्र में उनका दायरा सीमित था। वे अधिकतर नृत्य, संगीत तथा तैराकी में भाग लेती थीं। बच्चों के लिए भी खिलौने होते थे तथा यौवनावस्था तक पहुंचते–पहुंचते उनको लिंग के अनुसार खेलों का चयन करना सिखाया जाता था। मनोरंजन को सैन्य प्रशिक्षण का एक अंग माना जाता था। इसलिए चीनी वासियों को नृत्य, संगीत, घुड़सवारी, तीरंदाजी की शिक्षा दी जाती थी तथा इसके लिए विद्यालयों की विशेष व्यवस्था थी। इन क्षेत्रों में दक्षता हासिल करना एक प्रकार से सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रमाण पत्र के बराबर था।

टिप्पणी

चाऊ समाज के लोग भोजन में अन्न तथा फलों के अतिरिक्त मांस का भी प्रयोग करते थे। भोजन अधिकतर स्त्रियां ही पकाती थीं। परंतु शासक तथा सामंत के रसोईघरों में स्त्रियों के अतिरिक्त पुरुष भी भोजन पकाया करते थे। विशेष अवसरों पर सामूहिक भोज भी किया जाता था। आभूषणों का प्रयोग करना लोग अपना मूल अधिकार समझते थे। इनके आभूषण विभिन्न धातुओं, मूल्यवान पत्थरों तथा लकड़ी के बने होते थे। आभूषणों पर विभिन्न प्रकार के चित्र बनाए जाते थे। स्त्री–पुरुष दोनों ही आभूषणों का प्रयोग करते थे। इनके वस्त्र अधिकांशतः रेशमी होते थे परंतु सूती कपड़ों का प्रयोग भी किया जाता था। वस्त्र ढीले–ढाले होते थे। घरों में फर्नीचर का प्रयोग किया जाता था। घर के आगे उद्यान होते थे जिनमें विभिन्न प्रकार के फलदार वृक्ष होते थे। शासकों के महलों के चारों ओर उद्यान होते थे जिनकी देखभाल करना मालियों का कर्तव्य होता था। माली सरकारी कर्मचारी होते थे तथा राजकीय कोष से उनको वेतन दिया जाता था। धनी लोग भी मालियों की सेवाएं प्राप्त करते थे।

आर्थिक स्थिति (Economic Condition)

चाऊ युगीन चीनियों के मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन थे। चीन बड़ी–बड़ी नदियों और विस्तृत तलहटियों का देश है। अतः यह प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान देश रहा है। चाऊ युग में किसान चावल, गेहूं, जौ और फल आदि की पैदावार करते थे। परंतु चीन की खेती प्राकृतिक प्रतिकूलता के कारण सदैव क्षतिग्रस्त रहती थी। वर्षा का अभाव तथा नदियों में बाढ़ से फसल की रक्षा के लिए शासकों को विशेष प्रबंध करना पड़ता था। सिंचाई की व्यवस्था और बांध का निर्माण करके वे इस कार्य को पूरा करते थे। चीन की भूमि इतनी उपजाऊ थी और सिंचाई का इतना उत्तम प्रबंध था कि किसान साल में दो–तीन फसलें पैदा करते थे।

किसान बहुत ही परिश्रमी और कुशल खेतीहर होते थे। कृषि में हल, फावड़ा, हंसिया आदि उपकरणों का प्रयोग किया जाता था। ये लोग वृषभों एवं अश्वों की सहायता से हल चलाया करते थे। फावड़े की मदद से गुड़ाई का कार्य किया जाता था तथा फसल काटने के लिए हंसियों का प्रयोग होता था। अन्न की मड़ाई के लिए बैलों की सहायता ली जाती थी। कृषि के यंत्र लोहे और पत्थर के बने होते थे। अनाज को सुरक्षित रखने के लिए कोठरियां बनाई जाती थीं। भूमि संबंधी कार्य किसान ही करते थे परंतु यह जरूरी नहीं था कि भूमि के मालिक वे ही हों। आमतौर पर भूमि सामंतों के अधिकार में होती थी तथा किसान सामंत वर्ग के नौकर के रूप में कृषि करते थे। हालांकि कुछ किसान भूमि के स्वयं मालिक भी होते थे। प्राचीन चीन में सामंत वर्ग किसानों पर उस प्रकार के अत्याचार नहीं करते थे जैसा कि अन्य सभ्य देशों में दासों पर होते थे, जो अधिकांशतया कृषि करते थे। परंतु सामंतों और किसानों में भारी अंतर था। ऐसा संभव है कि सामंत ज्यादातर शासक जाति के रहे हों और किसान शासित जाति के।

परंपरा के अनुसार गांवों में भूमि का विभाजन 'चिंग–तियेन' विधि के अनुसार किया जाता था। इसके अनुसार उपजाऊ भूमि के एक खंड को नौ टुकड़ों में बांटा जाता था। बीच के टुकड़े में आठ परिवार रहते थे और सामूहिक रूप से खेती करते थे। चारों ओर स्थित शेष आठ टुकड़ों में उनके व्यक्तिगत खेत होते थे। सामूहिक टुकड़े की उपज

से राजस्व अदा किया जाता था। सैद्धांतिक रूप में भूमि पर सम्राट का अधिकार माना जाता था। कृषि के अतिरिक्त लोग पशुपालन भी करते थे।

टिप्पणी

आंतरिक व्यापार भी चाऊ अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख आधार था। व्यापार जल तथा थल दोनों मार्गों से होता था। चीनी स्त्रियां अपने घरों में मिट्टी, लकड़ी तथा धातुओं के खिलौने, यंत्र, फर्नीचर बनाती थीं। इसी प्रकार वे सूत कातना, कपड़ा बुनना, कपड़ा रंगना, ऊन बुनना, रेशम के कीड़े पालना, रेशमी वस्त्र बनाना आदि कार्य भी करती थीं। इन वस्तुओं को पुरुष बाजार में बेचते थे तथा उनसे जरूरी वस्तुएं खरीदते थे। आंतरिक व्यापार सामान्यतः व्यापारी वर्ग के हाथों में था। आरम्भ में आंतरिक व्यापार वस्तु–विनिमय के सिद्धांत पर होता था लेकिन बाद में सिक्कों का प्रचलन हो गया। व्यापार में पूर्णतया ईमानदारी बरती जाती थी। छल–कपट करने वाले व्यक्ति को कठोर दंड दिया जाता था। आंतरिक व्यापार पर सरकार का पूरा नियंत्रण था।

विदेशी व्यापार के क्षेत्र में चीनीवासी अधिक प्रगतिशील नहीं थे और इसका प्रमुख कारण चीन का स्थल रूद्ध (बंदरगाह विहीन) देश (Land locked country) होना था। फिर भी चीनी व्यापारी भारत के अतिरिक्त मंगोलिया, रोम, फारस, अफगानिस्तान व अन्य देशों से व्यापार करते थे। ये लोग मुख्यतः रेशम, नमक और लोहे का निर्यात करते थे तथा कपास, बांस आदि का आयात करते थे। विदेशी व्यापार पर भी चीनी सरकार का पूरा नियंत्रण था। सरकार व्यापारियों से आयात एवं निर्यात कर वसूल करती थी। चाऊ युग में नगरों का उदय और उनके साथ उद्योग–धंधों और नमक, अनाज, रेशम, घोड़ों तथा पशुओं आदि के व्यापार का विकास हुआ। रेशम उद्योग में चीनियों की सफलता विश्वविख्यात है। चाऊ युग में रेशम की मांग बढ़ी और लोग दूर–दूर तक इन रेशमी वस्त्रों को बेचने के लिए जाने लगे। परंतु गरीब तथा नीची जाति वाले लोगों के लिए यह काल बहुत कठिनाई का काल था। चाऊ युग का एक सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह रहा कि कृषि योग्य भूमि का बंटवारा लोगों में हुआ।

धार्मिक स्थिति (Religious Condition)

चाऊ राजवंश (1046–226 ईसा पूर्व) में स्वर्ग की आज्ञा की अवधारणा (Mandate of Heaven) विकसित की गई थी। स्वर्ग की आज्ञा यह विश्वास था कि 'शांगदी' ने शासन करने के लिए एक निश्चित सम्राट या राजवंश को जिम्मेदारी दी और जब तक वे उसे प्रसन्न करते थे, तब तक शासन करने की अनुमति दी। अगर शासक जिम्मेदारी से लोगों की देख–भाल नहीं कर पाते थे तो ये कहा जाता था कि उन्होंने यह जनादेश खो दिया है और उसको दूसरे के द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता था। आधुनिक विद्वानों ने इसे केवल एक शासन को बदलने के औचित्य के रूप में देखा है, लेकिन उस समय के लोग इस अवधारणा में विश्वास करते थे। ऐसा माना जाता था कि देवता लोगों पर नजर रखते हैं और सम्राटों पर उनका विशेष ध्यान होता है। लोगों ने आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अपनी पसंद के देवता या पूर्वजों के तावीज धारण करने की उस प्रथा को जारी रखा जो शांग राजवंश के अंत में शुरू हुई थी, और सम्राट ने भी ऐसा ही किया। चाऊ राजवंश के विघटन और पतन के कारण इन धार्मिक प्रथाओं में बदलाव आया, लेकिन धार्मिक गहने पहनने का चलन जारी रहा।

चाऊ राजवंश को दो अवधियों में विभाजित किया गया है : पश्चिमी चाऊ (1046–771 ईसा पूर्व) और पूर्वी चाऊ (771–226 ईसा पूर्व)। पश्चिमी चाऊ अवधि के

दौरान चीनी संस्कृति और धार्मिक प्रथाओं का विकास हुआ, लेकिन पूर्वी चाऊ के दौरान टूटना शुरू हो गया। देवत्व, पूर्वज पूजा, और देवताओं के लिए वंदना की धार्मिक प्रथाएं जारी रहीं, लेकिन वसंत और शरद काल (772–476 ईसा पूर्व) के दौरान दार्शनिक विचारों ने प्राचीन मान्यताओं को चुनौती देना शुरू कर दिया।

टिप्पणी

कन्फ्यूशियस (551–479 ई.पू.) ने पूर्वजों की पूजा को अपने अतीत को याद रखने और सम्मानित करने के तरीके के रूप में प्रोत्साहित किया लेकिन विकल्प बनाने में लोगों की व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जोर दिया और अलौकिक शक्तियों पर अति–निर्भरता की आलोचना की। मेन्कियस (372–289 ई.पू.) ने कन्फ्यूशियस के विचारों को विकसित किया, और उनके काम के परिणामस्वरूप दुनिया का अधिक तर्कसंगत और संयमित दृष्टिकोण सामने आया।

लाओ–त्जु (500 ई.पू.) के कार्य और ताओवाद के विकास को कन्फ्यूशियस के सिद्धांतों की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। यह बहुत अधिक संभावना है कि ताओवाद चीन के लोगों की मूल प्रकृति/लोक धर्म से विकसित हुआ था, न कि छठी शताब्दी ई.पू. के दार्शनिकों द्वारा बनाया गया था। इसलिए, यह कहना अधिक सटीक है कि कन्फ्यूशियस का तर्कवाद संभवतः उन पूर्व मान्यताओं के भाववाद और आध्यात्मिकता की प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुआ।

अपनी प्रगति जांचिए

3. शांगकालीन अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार क्या था?

(क) कृषि (ख) व्यापार

(ग) पशुपालन (घ) इनमें से कोई नहीं

4. चाऊ समाज में मनोरंजन का मुख्य साधन क्या था?

(क) आखेट (ख) तैराकी

(ग) मछली पकड़ना (घ) ये सभी

5.4 विज्ञान एवं संस्कृति

चीन में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का इतिहास बहुत पुराना एवं समृद्ध है। प्राचीन काल से ही विश्व के अन्य देशों एवं सभ्यताओं से स्वतंत्र रूप से चीन के दार्शनिकों ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, गणित, खगोल आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की थी। चीन हमेशा से अपनी संस्कृति, कला, वास्तुकला, विश्वास, दर्शन आदि के लिए दुनिया में आकर्षण का एक केन्द्र रहा है।

5.4.1 विज्ञान (Science)

चीन ने गणित, चिकित्सा विज्ञान, ज्यामिति, ज्योतिष शास्त्र तथा विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में बहुत प्रगति कर ली थी। चीनी लोगों ने चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण का अध्ययन कर लिया था। उन्होंने एक पंचांग भी बनाया था। सौर–चांद पंचांग सर्वप्रथम चीन में प्रचलित हुआ। धूपघड़ी से ये समय का पता लगा सकते थे। चीन ने अच्छी किस्म के

टिप्पणी

कागज का आविष्कार किया। चीन में कागज का आविष्कार ईसा की आरंभिक सदियों में हुआ। इसके आविष्कार का श्रेय त्साइ–लुन नामक व्यक्ति को दिया जाता है, जो प्राचीन चीन के पूर्वी हान वंश (20–220 ई.) के राजदरबार में वस्तुओं के उत्पादन का अधिकारी था। त्साइ–लुन ने पेड़ों की छाल, सन के चिथड़ों और मछली पकड़ने के जालों से कागज बनाया। कागज की लोकप्रियता केवल चीन तक सीमित न रही। विश्व में प्रत्येक स्थान पर इसका प्रचार–प्रसार हुआ। चीन से अरबवालों ने कागज बनाना सीखा और यूरोप में उसका प्रचार किया।

छापाखाना या मुद्रण के आविष्कार और विकास का श्रेय चीन को जाता है। यूरोपियनों से पांच शताब्दी पहले वे पुस्तकें छापा करते थे। वे जिस कागज पर अपनी पुस्तकें छापा करते थे वह संसार का सर्वप्रथम वास्तविक कागज था। 105 ई. में त्साइ–लुन ने कागज का आविष्कार किया और 712 ई. में चीन में सीमाबद्ध एवं स्पष्ट ब्लॉक प्रिंटिंग की शुरुआत हुई। इसके लिए लकड़ी का ब्लॉक बनाया गया। चीन में ही 650 ई. में हीरक सूत्र नामक विश्व की पहली मुद्रित पुस्तक प्रकाशित की गई। 1041 ई. में चीन के पाई शेंग नामक व्यक्ति ने चीनी मिट्टी की सहायता से अक्षरों को तैयार किया। इन अक्षरों को आधुनिक टाइपों का आदि रूप स्वीकारा जा सकता है। चीन में ही विश्व का पहला मुद्रण स्थापित हुआ, जिसमें लकड़ी के टाइपों का प्रयोग किया गया था। टाइपों के ऊपर स्याही जैसी वस्तु को पोतकर कागज के ऊपर दबाकर छपाई का कार्य किया जाता था। पुस्तकों की बहुलता इसी कारण से हो सकी कि चीनियों ने अरबों द्वारा यूरोपीय लोगों को छापेखाने की कला सिखा दी थी।

व्यक्ति की पहचान के लिए उंगलियों के छाप के महत्व को समझने वाले सर्वप्रथम लोग भी चीनी ही थे। चीन में चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी बहुत अधिक विकास हुआ। चाऊ युग में 'चिकित्सा के सिद्धांत' नामक एक पुस्तक की रचना की गई जिसमें बीमारियों के नाम और उनको दूर करने वाली औषधियों का वर्णन किया गया था तथा अनेक अंगों के कार्य लिखे गए थे। इसमें अनेक लोगों के नाम भी लिखे गए हैं और उनके उपचार का भी वर्णन है। दवा का निर्माण भी चीन में होता था। चीर–फाड़ के क्षेत्र में इन्होंने बहुत उन्नति कर ली थी। चीन के चिकित्सकों को नाड़ी की गति का ज्ञान भी हो गया था। दूसरी शताब्दी में चीन के चिकित्सक ने टाइफाइड बुखार की औषधि का आविष्कार किया। इतना सब कुछ होते हुए भी चीनी लोग अंधविश्वासी थे इसलिए वे बीमारियों का उपचार जादू–टोने से ही करते थे। पारम्परिक चीनी औषधि, एक्युपंचर तथा आयुर्वेदिक औषधियों का चीन में प्राचीन काल से प्रचलन है।

बारूद का आविष्कार भी चीनियों ने ही किया था। इसका आविष्कार कब हुआ, इसका ठीक से पता नहीं लगता। रोजर बेकन के लेखों में बारूद का उल्लेख मिलता है, पर ऐसा लगता है कि बारूद के प्रणोदक गुणों का उनको पता नहीं था। बारूद एक विस्फोटक मिश्रण है। इसे गन पाउडर (Gun Powder) या काला बारूद (black powder) भी कहते हैं। इसका प्रयोग पटाखों एवं आग्नेयास्त्रों (firearms) में किया जाता है। वर्तमान काल में बारूद को कमजोर विस्फोट के रूप में जाना जाता है। अरब में यह बारहवीं तथा यूरोप में यह चौदहवीं सदी में प्रचलन में आया।

कुतुबनुमा या दिक्सूचक (compass) दिशा का ज्ञान कराता है। सर्वप्रथम दिक्सूचक का आविष्कार चीन के हान राजवंश ने किया था। यह एक बड़ी चम्मच की

तरह चुंबकीय वस्तु थी जो कांसे की तस्तरी पर मैग्नेटाइट अयस्क को बिठा कर बनाई गई थी। इसका प्राथमिक कार्य एक निर्देशित दिशा की ओर संकेत करना है, जिससे अन्य दिशाएं ज्ञात की जाती हैं। ज्योतिर्विदों और पर्यवेक्षकों के लिए सामान्य निर्देशित दिशा दक्षिण है एवं अन्य व्यक्तियों के लिए निर्देशित दिशा उत्तर है। अगर भू–समान्वेषकों के पथप्रदर्शन के लिए कुतुबनुमा नहीं होता तो उनकी जल व स्थल यात्राएं असंभव हो जातीं। विमान चालकों, नाविकों, गवेषकों व अन्य लोगों को कुतुबनुमा की आवश्यकता होती है। इसकी भी संभावना है कि अरबवासियों ने कुतुबनुमा का उपयोग चीनियों से ही सीखा हो और उन्होंने इसको यूरोप में प्रचलित किया हो।

चीन रेशम की जन्मभूमि है। रेशम कीट पालन (Sericulture) का इतिहास 6000 वर्ष से भी पुराना है। एक कथा के अनुसार चीन के एक शासक की पत्नी सी–लिन–शी एक बार शहतूत के वृक्ष के नीचे बैठकर चाय का सेवन कर रही थी कि उसके प्याले में कच्चे रेशम का कोकुन (cocoon) आ गिरा। उसने देखा कि ये कोकुन एक मजबूत सफेद धागे की कताई कर रहा था। तभी रानी ने सोचा कि इस धागे का बुनाई में प्रयोग किया जा सकता है। अतः एक उद्योग का जन्म हुआ। उसने लोगों को रेशम का कीड़ा पालना सिखाया तथा बाद में करघे का निर्माण किया। शांग वंश के काल में रेशम का उत्पादन शिल्प कौशल के उच्च स्तर पर पहुंच गया। परंतु लगभग 2000 वर्ष तक रेशम के उत्पादन को चीनियों ने स्वयं तक सीमित रखा। अगर कोई भी व्यक्ति रेशम के कीड़ों के अंडों, कोकुन या शहतूत के बीजों की तस्करी करता हुआ पकड़ा जाता था तो उसे मृत्यु दंड दिया जाता था। परंतु जैसे–जैसे व्यापार और यात्राओं में वृद्धि हुई, रेशम कीट पालन की कला धीरे–धीरे बाहरी दुनिया तक पहुंच गई। सबसे पहले कोरिया, फिर जापान, भारत तथा अंततः यूरोप। प्लेट व जीन का कहना है कि चीन की वैज्ञानिक प्रगति पहले तो तेज रही किन्तु बाद में मंद पड़ गई।

5.4.2 संस्कृति (Culture)

प्राचीन काल में चीन में भाषा शिक्षा, साहित्य, दर्शन तथा कला का बहुत अधिक विकास हुआ। चीन के सांस्कृतिक जीवन की विशेषताएं इस प्रकार थीं–

भाषा, शिक्षा और साहित्य (Language, Education and Literature)

चीनी मत के अनुसार, उनकी भाषा ईश्वर प्रदत्त है, जिसमें 40000 चिह्न हैं। लेकिन उनमें से 4000 चिह्न ही काम आते हैं। प्रत्येक विचार को व्यक्त करने के लिए एक चिह्न था। चीन की लिपि चित्रात्मक थी। इस लिपि में 40000 चिह्न होने के कारण उसको याद करना बहुत कठिन था। इसलिए वहां शिक्षा का विकास नहीं हो सका और अधिकांश जनता अशिक्षित रही। चीन में अधिकांश साहित्य पद्य में लिखा गया है। यहां के कवि सुन्दर कविताओं की रचना करते थे लेकिन श्रेष्ठ कविता वही समझी जाती थी जो कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भावों की अभिव्यक्ति कर सके। कन्फ्यूशियस का कविता संग्रह काव्य कला की दृष्टि से अद्वितीय है। उसकी रचनाएं चीन के साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उसने अपनी पुस्तक 'शी चिंग' में 305 गीत लिखे हैं। उस समय चीन का एक और प्रसिद्ध कवि ताई ली यो था, जिसने 30 ग्रंथों की रचना की। उसने अपनी पुस्तक तू–फू में करुणा भरे गीत लिखे। चीन में गद्य साहित्य में लेख और

कहानियां लिखी जाती थीं। मंगोलों के आक्रमण के समय चीन में गद्य साहित्य के क्षेत्र में बहुत उन्नति हुई।

टिप्पणी

दर्शन (Philosophy)

दर्शन के क्षेत्र में चीन ने सराहनीय प्रगति की। इस क्षेत्र में चीन की किसी अन्य देश से तुलना करना कठिन है। 1250 ई.पू. में यू तिज नामक चीनी दार्शनिक ने दर्शन को निम्न शब्दों में व्यक्त किया– "वह जो ख्याति को छोड़ देता है उसे दुःख नहीं होता।" चाऊ वंश के काल में दार्शनिकों ने स्थान–स्थान पर घूमकर अपने विचारों का प्रचार किया। इस कार्य में उन्हें चीन के प्रान्तीय शासकों और धनी व्यापारियों ने बहुत सहयोग दिया। ईसा से छठी शताब्दी चीन में कन्फ्यूशियस की विचारधारा का काफी प्रभाव पड़ा। उसका लोकसत्ता का सिद्धांत तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि बीसवीं सदी की बात है। लाओ–से प्राचीन चीन का एक प्रसिद्ध दार्शनिक था, जो ताओ ते चिंग नाम के मशहूर उपदेश के लेखक के रूप में जाना जाता है। उसकी विचारधाराओं पर आधारित धर्म को ताओ धर्म कहते हैं। इतिहासकारों में इसकी जीवनी को लेकर विवाद है। कुछ कहते हैं कि वह एक काल्पनिक व्यक्ति है, कुछ कहते हैं कि इसे बहुत से महान व्यक्तियों को मिलकर एक व्यक्तित्व में दर्शाया गया है और कुछ कहते हैं कि वह वास्तव में चीन के चाऊ काल के दूसरे भाग में झगड़ते राज्यों के काल में (यानी पांचवीं या चौथी सदी ईसा पूर्व में) रहता था। मोत्सू ने विश्व प्रेम के आधार पर एक विश्व साम्राज्य की कल्पना की थी। इससे तो आज के विश्वसंघ की याद आती है। उसने युद्ध की कड़े शब्दों में आलोचना की थी। ऐसा प्रतीत होता है कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर पर कुछ बोल रहा है। इसी प्रकार मेन्सियस के राजनीतिक विचार क्रांतिकारी प्रतीत होते हैं। वह प्रजातंत्र को अच्छा शासन समझता था, इसलिए उसने युद्ध की निंदा की। उसने अत्याचारी राजा के खिलाफ विद्रोह करना जन्मसिद्ध अधिकार बताया था। चीनी लोग विश्व बंधुत्व के सिद्धांत में विश्वास करते थे। इतिहासकार बेन फीगर ने लिखा है कि "चीनी दार्शनिक मनुष्यों को आपस में प्रेम करना, सहयोग देना, सहनशीलता का पाठ सिखाते थे। ये लोग शत्रु से भी शिक्षा लेते थे।"

कला (Art)

प्राचीन काल में चीन में वास्तुकला, संगीत कला, मूर्ति कला और चित्रकला का बहुत विकास हुआ।

वास्तुकला (Architecture)

चीन में वास्तुकला के क्षेत्र में बहुत अधिक विकास हुआ। यहां की 18000 मील लम्बी दीवार विश्व के 7 अजूबों में से एक है। चीन की विशाल दीवार मिट्टी और पत्थर से बनी एक किलेनुमा दीवार है जिसे चीन के विभिन्न शासकों के द्वारा उत्तरी हमलावरों से रक्षा के लिए पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर सोलहवीं शताब्दी तक बनवाया गया। इसकी विशालता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस मानव निर्मित ढांचे को अन्तरिक्ष से भी देखा जा सकता है। प्रसिद्धतम दीवारों में से एक 220–206 ई.पू. में चीन के प्रथम सम्राट शी ह्वांग टी ने बनवाई थी। उस दीवार के अंश के कुछ ही अवशेष बचे हैं।

जब चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार होने लगा तो वहां पर अनेक बौद्ध मंदिरों तथा विहारों का निर्माण किया जाने लगा। पेकिंग के निकट महात्मा बुद्ध का एक मंदिर (पैगोडा) उस युग की स्थापत्य कला का शानदार नमूना है।

टिप्पणी

मूर्तिकला (Sculpture)

प्राचीन काल में चीन में मूर्तिकला के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई। शांग वंश तथा चाऊ वंश के काल में कांसे के बर्तनों पर पशुओं की सुंदर मूर्तियां बनाई जाती थीं। चीन में बौद्ध धर्म के प्रचार के समय महात्मा बुद्ध की सुंदर मूर्तियों का निर्माण किया गया।

चित्रकला (Painting)

चीन में चित्रकला के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई। चीनी चित्रकला की दो मुख्य विशेषताएं थीं। पहली, चित्रों में भावों को प्रधानता देना और उनका प्रदर्शन रेखाओं द्वारा करना। दूसरी विशेषता, प्राकृतिक दृश्यों के चित्र बनाना। यहां के चित्रकार प्रारम्भ में पशुओं के चित्र ही बनाते थे, परन्तु बौद्ध धर्म के प्रचार के बाद वे मानव आकृतियों के चित्र भी बनाने लगे। यहां पर मिट्टी के बर्तनों पर भी सुंदर चित्र बनाए जाते थे। हान वंश के काल में चित्रकला अपनी उन्नति की चरम सीमा पर थी। इस वंश के प्रसिद्ध चित्रकार कुनाई, दौगवि, लिंसी और हु गता आजु थे, जिन्होंने लगभग 40000 सुन्दर चित्रों का निर्माण किया। प्रसिद्ध चित्रकार कुनाई ने श्रृंगार दान के ढक्कन पर एक पक्षी का सुंदर चित्र बनाया था, जो उस समय की चित्रकला का सुंदर नमूना है।

संगीत कला (Art of Music)

चीन ने संगीत कला के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति की। चीनियों का मानना था कि संगीत ही जीवन है। संगीत को वो मानसिक तनाव से मुक्ति का साधन मानते थे। यद्यपि चीन में 5000 वर्ष पूर्व संगीत का आविष्कार हो चुका था, परन्तु प्रारम्भ में वे दर्शन शास्त्र के आधार पर संगीत की रचना करते थे। कुछ समय पश्चात उन्होंने उच्च कोटि के संगीत की रचना की।

अपनी प्रगति जांचिए

5. प्राचीन चीन में कागज के आविष्कार का श्रेय किसको जाता है?

   (क) पाई शेंग (ख) त्साइ–लुन

   (ग) यू तिज (घ) मोत्सू

6. चीन में ताओ धर्म की स्थापना किसने की?

   (क) शी ह्वांग टी (ख) मोत्सू

   (ग) लाओ–से (घ) कुनाई

5.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (ख)
2. (ग)

टिप्पणी

3. (क)
4. (घ)
5. (ख)
6. (ग)

5.6 सारांश

चीन के उत्तरी भाग पर शांग राजाओं द्वारा शासन किया गया था। शांग वंश की सरकार में राजा की प्रमुख भूमिका थी। राजा को अधिकारियों के एक पदानुक्रम द्वारा समर्थित किया गया था जिनके विशेष कार्य होते थे। स्थानीय अभिजात वर्ग और जनजातीय प्रमुखों ने राजा के अनुमोदन से राज्य के केंद्र से दूर स्थित केंद्रों पर नियंत्रण किया। शांग राजवंश एक वंशानुगत राजतंत्र था जिसकी अध्यक्षता एक राजा करता था। सरकार लोकतंत्र का एक रूप थी जिसमें राजा की मुख्य भूमिका धार्मिक थी। शांग राजा भौतिक दुनिया और परमात्मा के बीच सबसे महत्वपूर्ण था।

राजनीतिक तौर पर संघर्षरत होते हुए भी परवर्ती चाऊ युग सांस्कृतिक व्यवस्थापन, प्रगति तथा प्रसार का युग था। इस युग में एक राजा के नेतृत्व में एक शक्तिशाली केंद्रीय सरकार थी। समस्त शासन व्यवस्था का केंद्र बिंदु सम्राट होता था। इस काल में राज्य को एक विशाल परिवार, अधीन राज्यों को उसकी शाखाएं तथा राजा को पिता के समान समझा जाता था। राजा आदर एवं श्रद्धा का पात्र होता था। लोग उसे ईश्वर पुत्र कहकर उसके प्रति असीम भक्ति रखते थे।

चाऊ युग में कानून बहुत कम तथा दंड कठोर थे। युद्ध में बहुत शौर्य प्रदर्शन किया जाता था। संभवतः बर्बर जातियों पर विजय हासिल करने के पश्चात शत्रुओं के मृत भक्षण करने की प्रथा प्रचलित थी। हालांकि चीनियों के पारस्परिक युद्धों में ऐसा नहीं किया जाता था। सामंतवादी युग में युद्धों के नियम कुछ स्थिर हो गए थे। चीनी शासक यद्यपि साम्राज्यवादी प्रवृत्ति के शासक नहीं थे और न ही उन्होंने कभी चीन की सीमा से बाहर किसी देश पर आक्रमण किया, फिर भी चीनी शासक अपने साम्राज्य में अनुशासित और प्रशिक्षित सेना रखते थे। वास्तव में चीनी सम्राट अपने साम्राज्य में सेना का संगठन दो कारणों से करते थे– एक तो अपने राज्य की आक्रमणकारियों से रक्षा के लिए तथा दूसरे विभिन्न प्रांतों के गवर्नरों को अपने नियंत्रण में रखने और विद्रोह करने वालों को दंडित करने के लिए।

शांग राजवंश पहला चीनी शाही राजवंश है जिसके लिए हमारे पास वास्तविक दस्तावेजी सबूत हैं। चूंकि शांग वंश बहुत प्राचीन है, इसलिए स्रोत अस्पष्ट हैं। हमें यह भी पता नहीं है कि शांग राजवंश ने चीन की पीली नदी घाटी पर अपना शासन कब शुरू किया। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह ईसा पूर्व 1700 के आसपास था, जबकि अन्य इसे बाद का मानते हैं, अर्थात 1558 ई.पू. का। जो भी हो, जिया राजवंश के पश्चात् शांग राजवंश ने शासन किया जो लगभग 2070 ईसा पूर्व से लगभग 1600 ई.पू. तक एक प्रसिद्ध शासक परिवार था। हमारे पास जिया के लिए कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं है, हालांकि उनके पास शायद एक लेखन प्रणाली थी। एर्लिटौ साइटों से

पुरातात्विक साक्ष्य इस विचार को समर्थन देते हैं कि इस समय उत्तरी चीन में एक जटिल संस्कृति पहले से ही उत्पन्न हुई थी।

टिप्पणी

चाऊ वंश के उत्थान से चीन के इतिहास पर प्रकाश डालने वाले स्रोत प्रचुरतर तथा ज्यादा विश्वसनीय होने लगते हैं। इस वंश की स्थापना 1122 या 1050 ई.पू. में वू–वांग ने की थी। चाऊ मूलतः वेई नदी घाटी का एक राज्य था। यह उस समय चीन की पश्चिमी सीमा पर था, इसलिए वू–वांग को 'पश्चिमी नरेश' कहा जाता था। चाऊ राजाओं ने अपने साम्राज्य और चीनी सभ्यता के प्रभाव क्षेत्र को विस्तृत किया। उनके इतिहास को दो युगों में विभाजित किया जा सकता है– प्रारंभिक और परवर्ती। प्रारंभिक चाऊ युग (1122 या 1050 से लगभग 750 ई.पू.) में चाऊ सम्राट बहुत शक्तिशाली थे। उनकी राजधानी पश्चिम में वेई की घाटी में चंगान (आधुनिक शियान–फू) के पास थी, इसलिए इस युग को पश्चिमी चाऊ युग भी कहते हैं।

चीन का क्रमबद्ध इतिहास शांग वंश से ही आरंभ होता है। इस वंश का शासनकाल 1766 से 1122 ई.पू. तक माना जाता है। इसी काल से सभ्यता का विकास आरंभ हुआ। इस राजवंश में 28 शासक हुए जिन्होंने लगभग 644 वर्षों तक शासन किया। यह चीन में कांस्ययुगीन सभ्यता का समय था। इस वंश के काल में चीन ने बहुत उन्नति की।

शांग युग के लोग एकेश्वरवादी नहीं थे। यद्यपि वे एक शक्तिशाली अजगर में विश्वास करते थे जो नदियों, झीलों तथा समुद्रों में रहता था। कालांतर में यह अजगर चीनी शासकों का प्रतीक बन गया। इसके अतिरिक्त उस समय वायु, सूर्य, चंद्र आदि देवताओं की उपासना भी की जाती थी। शांग युग के लोग 'शांगदी' नामक महान देवता को भी पूजते थे जो मानव भाग्य एवं प्राकृतिक शक्तियों को नियंत्रित करता था। शांग शासक अकसर बलि चढ़ाकर शांगदी देवता को प्रसन्न करने के लिए अपने पूर्वजों का आह्वान करते थे। सार्वजनिक त्योहारों पर शांग लोग इन देवताओं को सम्मानित करते थे। गांववासी वसंत के समय अच्छी फसल के लिए तथा पतझड़ में देवताओं को भरपूर एवं अच्छी फसल का धन्यवाद करने के लिए त्योहार मनाते थे।

चाऊ युगीन चीनियों के मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन थे। चीन बड़ी–बड़ी नदियों और विस्तृत तलहटियों का देश है। अतः यह प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान देश रहा है। चाऊ युग में किसान चावल, गेहूं, जौ और फल आदि की पैदावार करते थे। परंतु चीन की खेती प्राकृतिक प्रतिकूलता के कारण सदैव क्षतिग्रस्त रहती थी। वर्षा का अभाव तथा नदियों में बाढ़ से फसल की रक्षा के लिए शासकों को विशेष प्रबंध करना पड़ता था। सिंचाई की व्यवस्था और बांध का निर्माण करके वे इस कार्य को पूरा करते थे। चीन की भूमि इतनी उपजाऊ थी और सिंचाई का इतना उत्तम प्रबंध था कि किसान साल में दो–तीन फसलें पैदा करते थे।

कन्फ्यूशियस (551–479 ई.पू.) ने पूर्वजों की पूजा को अपने अतीत को याद रखने और सम्मानित करने के तरीके के रूप में प्रोत्साहित किया लेकिन विकल्प बनाने में लोगों की व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जोर दिया और अलौकिक शक्तियों पर अति–निर्भरता की आलोचना की। मेन्कियस (372–289 ई.पू.) ने कन्फ्यूशियस के विचारों को विकसित

किया, और उनके काम के परिणामस्वरूप दुनिया का अधिक तर्कसंगत और संयमित दृष्टिकोण सामने आया।

टिप्पणी

चीन में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का इतिहास बहुत पुराना एवं समृद्ध है। प्राचीन काल से ही विश्व के अन्य देशों एवं सभ्यताओं से स्वतंत्र रूप से चीन के दार्शनिकों ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, गणित, खगोल आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की थी। चीन हमेशा से अपनी संस्कृति, कला, वास्तुकला, विश्वास, दर्शन आदि के लिए दुनिया में आकर्षण का एक केन्द्र रहा है।

5.7 मुख्य शब्दावली

- **ओरेकल** : एक पुजारी द्वारा प्रकट की गई भविष्यवाणी।
- **सामंतवादी प्रथा** : एक ऐसी प्रथा जिसमें आम लोगों की अधिकांश आबादी के पास बहुत कम पैसा और अवसर था, जबकि कुलीनों और सम्राटों ने सभी पर शासन किया।
- **ड्यूक** : एक उच्च सामाजिक श्रेणी का व्यक्ति होता है।
- **खानाबदोश** : वे लोग जिनका कोई स्थायी निवास नहीं होता और जिसके कारण वे हमेशा एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं।
- **कन्फ्यूशियसवाद** : कन्फ्यूशियस नामक चीनी दार्शनिक द्वारा प्रतिपादित दर्शन या धर्म।
- **लोगोग्राफ** : एक लिखित चिह्न जो किसी शब्द या वाक्यांश को प्रदर्शित करता है।
- **वंश** : एक ही परिवार के शासकों का क्रम।
- **स्थलरुद्ध देश** : वह देश जिसकी सभी सीमाएं या तटरेखा सिर्फ स्थल या फिर किसी बंद सागर से मिलती हैं। दूसरे शब्दों में चारों ओर सिर्फ स्थल से घिरे देश को स्थलरुद्ध देश कहा जाता है।
- **चिंग तियेन** : चाऊ शासनकाल में गांवों में भूमि के विभाजन की पद्धति।
- **ताओवाद** : ताओवाद या डाओवाद, चीनी मूल की एक दार्शनिक परंपरा है जो ताओ के साथ सद्भाव में रहने पर जोर देती है।
- **ओरेकल हड्डियां** : ओरेकल हड्डियां बैल स्कैपुला या कछुए प्लास्ट्रॉन के टुकड़े हैं, जो कि प्राचीन चीन में, मुख्य रूप से शांग वंश के दौरान दैविक रूप से उपयोग की जाती थीं।
- **एक्यूपंक्चर** : दर्द से राहत दिलाने, शल्य–चिकित्सीय संज्ञाहरण प्रवृत्त करने और चिकित्सा प्रयोजनों के लिए शरीर के विशिष्ट क्षेत्रों की परिधीय नसों में सुई छेदने का चीनी अभ्यास।
- **कोकुन** : रेशम कीटों द्वारा बनाए गए सुरक्षात्मक आवरण, जो पतंगों में बदलने से पहले बनते हैं। रेशम के कीड़ों से बने रेशों का उपयोग रेशम बनाने के लिए किया जाता है।

- **बारूद** : एक महत्वपूर्ण आविष्कार जो बम और बंदूक जैसे आतिशबाजी और हथियारों के लिए इस्तेमाल किया गया था।
- **पैगोडा** : एक धार्मिक मंदिर जो कई स्तरों और छतों के साथ एक टॉवर के रूप में बनाया गया है।
- **मंगोल** : उत्तर के खानाबदोश लोग जो अकसर चीन पर छापा मारते थे। चंगेज और कुबलाई खान के तहत उन्होंने कुछ समय के लिए चीन पर कब्जा कर लिया।

टिप्पणी

5.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. विश्वविख्यात विचारक लाओत्से और कन्फ्यूशियस किस युग में पैदा हुए थे?
2. चीन का क्रमबद्ध इतिहास किस वंश से आरंभ होता है?
3. चीन के सांस्कृतिक जीवन की मुख्य विशेषताएं क्या थीं?
4. चीनी वास्तुकला का वर्णन कीजिए।
5. शांग वंश की स्थापना का श्रेय किसको प्राप्त है?
6. चीनी सभ्यता में चाऊ वंश का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. शांग एवं चाऊ वंश की राज्य संरचना का विश्लेषण कीजिए।
2. चाऊ एवं शांग वंश के राजनीतिक इतिहास की चर्चा कीजिए।
3. शांग राजवंश के काल की अर्थव्यवस्था का वर्णन कीजिए ।
4. चाऊ युग में चीन की आर्थिक व्यवस्था का विस्तार से उल्लेख कीजिए।
5. चाऊ वंश के शासनकाल में धर्म की विवेचना कीजिए।
6. चीन की प्राचीन सभ्यता में विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति का उल्लेख कीजिए।
7. चीनी सभ्यता में दर्शन के विकास पर टिप्पणी लिखिए।

5.9 सहायक पाठ्य सामग्री

1. जॉन किंग फेयरबैंक एंड मेरले गोल्डमैन, 1992, "चाईना ए न्यू हिस्ट्री", सैकेंड एन्लारण्ड एडीशन, यू.एस.ए.।
2. जिंगपी युआन, वेनमिंग यान, चुआंक्सी झांग एवं यूली लोऊ, 2012, "दि हिस्ट्री ऑफ चाईनीज सिविलाइजेशन", फॉर वाल्यूम सेट, केम्ब्रिज ।
3. जेम्स एडगर स्वेन, 1963, "ए हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड सिविलाइजेशन", सैकेंड एडीशन, यूरेशिया पब्लिशिंग हाऊस मैक्ग्राहिल बुक कंपनी।

टिप्पणी

4. चाईना नॉलेज सीरीज, 1958, "एन आऊटलाईन हिस्ट्री ऑफ चाईल्ड", फॉरेन लैंगूएज प्रेस, पीकिंग।
5. सुई ची, 1947, "ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ चाईनीज सिविलाइजेशन", विक्टर गोलैंक्ज।
6. आर.के. मजूमदार एवं ए.एन. श्रीवास्तव, 1989, "चीन का इतिहास एक सरल अध्ययन", सुरजीत बुक डिपो, दिल्ली।
7. जैक्स जरनेट, 1982, "ए हिस्ट्री ऑफ चाईनीज सिविलाइजेशन", केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. डॉ. शान्तिलाल नागौरी, 1982, "विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास", बाफना बुक डिपो, जयपुर